पालि-महाव्याकरण

भिक्षु जगदीश काश्यप



पालि महाव्याकरण



प्रकाशकीय निवेदन

हिन्दी पाठकों के सम्मुख आज 'पालि-महाव्याकरण' उपस्थित करते हुए हमें बड़ा हर्ष हो रहा है। आज तक किसी भी भारतीय भाषा में इतना पूर्ण, और साथ ही साथ सरल, पालि-व्याकरण प्रकाशित नहीं हुआ। मेरा विश्वास है कि विद्यार्थी तथा विद्वानों को इस पुस्तक से बड़ी सहायता मिलेगी।

महाबोधि सभा ने अभी तक त्रिपिटक के कई मुख्य मुख्य ग्रन्थों का हिन्दी-अनुवाद प्रकाशित किया है, जिससे हिन्दी पाठकों को पालि-साहित्य की विभूति का परिचय मिला है। किंतु, अनुवाद मूल ग्रन्थों का स्थान नहीं ले सकते। बौद्ध साहित्य के गम्भीर अध्ययन के लिए मूल ग्रन्थों का अवलोकन करना नितान्त आवश्यक है। इस 'व्याकरण' की सहायता से अब यह आसान हो जायगा। भिक्षु जगदीश काश्यप, एम० ए० ने इस महान कार्य को करके हम सबों को अनुग्रहीत किया है।

इस पुस्तक के प्रकाशन में व्यय अधिक हुआ है, जिसका भार मैं आप विद्यानुरागी महानुभावों की सहायता के भरोसे पर ही वहन कर रहा हूँ। अभी तक जो दान प्राप्त हुआ है उसका ब्योरा निम्न प्रकार है :—

Mr. Rajah Hewavitarne, Colombo	..	50/-
Mr. P. D. Richard, Kitulgala.	..	25/-
Mr. T. J. Samarakone, Matara	..	25/-
Mr. W. James Sinno, Bisowela.	..	10/-
Collected by Mr. D. M. Kiri Banda, Rambukkana	..	10/-
Ceylon Pilgrim Party, December, 1939.	..	41/-
Mr. P. Jayatilaka, Colombo ..	..	30/-
Mr. H. M. Gunasekara, Colombo	..	20/-
Mrs. J. P. Ratnayaka, Wadduwa ..	..	10/-
Mrs. J. H. Perera, Wadduwa ..	..	10/-

Mr. & Mrs. Wijayakoon, Colombo	..	30/-
Small amounts...	.. .. ..	42/12/-

निवेदक
ब्रह्मचारी देवप्रिय वलिसिंह, बी० ए०
मन्त्री
महाबोधि सभा, सारनाथ

नमो तस्स भगवतो अरहतो सम्मासम्बुद्धस्स



पालि-महाव्याकरण

लेखक

भिक्षु जगदीश काश्यप

महाबोधि सभा, सारनाथ

बनारस

मुद्रक
जे० के० शर्म्मा
इलाहाबाद लॉ जर्नल प्रेस
इलाहाबाद

प्रथम संस्करण
१९४० ई०

प्रकाशक
महाबोधि सभा, सारनाथ
बनारस

समर्पण

जिन्होंने बड़े स्नेह से मा के समान मेरा लालन-पालन
किया, जिनकी प्रेरणा से 'तारा' को पढ़ाने के
लिए हिन्दी में पालि-व्याकरण लिखने
का संकल्प हुआ, उन्हीं दिवं-
गत 'उपासिका' की
स्मृति में।

भूमिका

पालि-व्याकरणों में 'मोग्गल्लान' अत्यन्त पूर्ण और प्रौढ़ है। इसी के सारे सूत्रों को मैं ने इस तरह सजा कर सरल भाषा में समझाने का प्रयत्न किया है, कि क्रमशः प्रवेश कर व्याकरण पर पूरा अधिकार प्राप्त कर लिया जा सके।

पुस्तक के बृहत् आकार को देख कर ऐसा न समझ लें, कि इसका स्टैण्डर्ड बहुत ऊँचा है, और यह स्कूल-कालेज के विद्यार्थियों के काम की चीज नहीं है। मूल-पुस्तक केवल २८६ पृष्ठों में समाप्त हो जाती है; और, उस में भी आधी से अधिक पाद-टिप्पणियाँ हैं। स्कूल-कालेज के विद्यार्थी इन पाद-टिप्पणियों को छोड़ कर ऊपर ही ऊपर मजे में पढ़ सकते हैं, जो उनके स्टैण्डर्ड के बिलकुल अनुकूल है। साथ ही साथ, जो कुछ गहराई से अध्ययन करना चाहते हैं, वे पाद-टिप्पणियों को भी देख सकते हैं।

प्रत्येक 'पाठ' के अन्त में एक अभ्यास दे दिया गया है, जो विद्यार्थियों के लिए बड़ा उपयोगी होगा। अभ्यास की भाषा तथा शैली को त्रिपिटक से अधिक से अधिक निकट रखने का प्रयत्न किया है। पुस्तक के अन्त में, विद्यार्थियों की सहायता के लिए, अभ्यासों के लिए संकेत भी दे दिए हैं।

  

श्री ब्रह्मचारी देवप्रिय वलिसिंह, मंत्री, महाबोधि सभा, ने पुस्तक के प्रकाशन का भार ग्रहण कर बड़ा उत्साहित किया है।

मित्रवर श्री तपस्वी जी ने आदि से अन्त तक पुस्तक लिखने, अभ्यास बनाने, तथा 'वस्तु-कथा' लिखने में बड़ी ही सहायता की।

हमारे श्रद्धेय नाना, पण्डित अयोध्या प्रसाद, वैदिक रिसर्च स्कालर, तथा राहुल जी ने अनेक सलाहें दी हैं।

परम पूज्य भाई आनन्द कौशल्यायन जी ने प्रूफ देख कर तथा भाषा में जहाँ तहाँ संशोधन कर बड़ी सहायता की है।

श्री भवानी शरण, साहित्यरत्न, मारकण्डेय शुक्ल, और जगन्नाथ प्रसाद जायसवाल प्रभृति हमारी शिष्य-मण्डली ने सूची तथा अनुक्रमणिका तैयार करने में काफी परिश्रम किया है।

सभी को इस उपकार के लिए मैं हृदय से धन्यवाद देता हूँ।

भिक्षु जगदीश काश्यप

सारनाथ

२६-४-४०

वस्तु-कथा



नमो तस्स भगवतो अरहतो सम्मासम्बुद्धस्स



पालि-व्याकरण की वस्तु-कथा

पहला खण्ड

बुद्धत्व लाभ करने के बाद से भगवान् ४५ साल तक कोसी-कुरुक्षेत्र तथा हिमाचल-विंध्य के भीतर घूम-घूम कर अपने धर्म का प्रचार करते रहे। साधारण से साधारण मनुष्य से लेकर उस समय के बड़े से बड़े राजकुमार तक अपना सर्वस्व त्याग भगवान् के संघ में सम्मिलित हुए। जिस प्रकार सभी दिशाओं से नाना नदियाँ बह कर आती हैं, और समुद्र में एक हो जाती हैं, उसी तरह नाना प्रान्त के, नाना जाति के, नाना मत के, तथा नाना गोत्र के कुलपुत्र, परम शान्त निर्वाण के उद्देश्य से भगवान् के संघ में आ, एक हो कर विहार करते थे।

भगवान् जहाँ कहीं भी चारिका करते थे, बड़ी-बड़ी संख्या में उनकी शिष्य-मण्डली साथ रहती थी। तत्कालीन मगधराज बिम्बिसार ने भी भगवान् के धर्म को स्वीकार कर लिया था, और बड़ी श्रद्धा से बुद्ध तथा संघ के निमित्त एक सुरम्य विहार बनवा दिया था; जो 'वेळुवनाराम' नाम से प्रसिद्ध हुआ। श्रावस्ती के विख्यात श्रेष्ठी अनाथपिण्डिक ने भी उसी तरह, बुद्ध तथा संघ के लिए श्रावस्ती से कुछ हट कर एक रम्य स्थान में जेतवनाराम बनवाया था। इस तरह, बुद्ध तथा संघ के एक सिरे से दूसरे सिरे तक घूमने से सारा उत्तर भारत एक हो रहा था।

बुद्ध का धर्मोपदेश करने का तरीका अत्यन्त सरल था। तैयारी और आडम्बर के बिना ही, जहाँ कहीं जब कभी उचित अवसर आता था, बुद्ध अत्यन्त सरल भाषा में,-अत्यन्त सरल ढंग से गम्भीर तथा लोकोत्तर धर्मोपदेश करते थे। उनके शिष्य उन उपदेशों को कण्ठ कर लिया करते थे। जब किसी भिक्षु को कुछ शंका होती थी तो वह बुद्ध के पास जाता था और अपनी शंका निवारण कर लेता था।

बुद्ध के सारे उपदेश मौखिक ही हुए थे। उन्होंने अपने उपदेशों को लिख रखने की कभी कोई बात कही हो इसका उल्लेख नहीं आता है। बुद्ध का अभिप्राय था कि उनका धर्म केवल कुछ पण्डित लोगों या भिक्षुओं की ही चीज़ हो कर न रहे। वे चाहते थे कि उनके धर्म का संदेश सूरज की किरण की तरह, झोपड़ी से लेकर प्रासाद तक समान रूप से व्याप्त हो।

मागधी

इस अभिप्राय से, सारे मध्य मण्डल में उस समय जो भाषा सामान्य रूप से बोली जाती थी, उसी में बुद्ध ने समस्त उपदेश दिए। ऊपर कहा जा चुका है कि, बुद्ध के संघ में उत्तर भारत के सभी प्रदेशों के, सभी वर्गों के कुलपुत्र प्रव्रजित हो सम्मिलित हुए थे। मगध के भी, वैशाली के भी, मिथिला के भी, काशी के भी, कोशल के भी, राजकुल के भी, श्रेष्ठी कुल के भी, शूद्र कुल के भी, सब भिक्षु समान रूप से एक साथ रहते थे। यह निश्चय है कि भिन्न-भिन्न प्रान्त और समाज के अनुसार उनकी अपनी-अपनी बोली भी भिंन्न-भिन्न रही होगी; किंतु, सभी साथ रहने पर साधारण भाषा मागधी का ही प्रयोग करते थे। आज-कल भी, यदि एक मगही, एक भोजपुरी, एक अवधी, तथा एक मैथिल एक जगह मिलें तो आपस में हिन्दी का ही प्रयोग करेंगे—मगही, या भोजपुरी का नहीं। हाँ, इतना अवश्य होगा कि, मगही की हिन्दी में कुछ न कुछ मगहिपन, और भोजपुरी की हिन्दी में कुछ न कुछ भोजपुरीपन रहेगा ही। ठीक उसी तरह, भिक्षुसंघ में सामान्य रूप से एक भाषा मागधी का व्यवहार होने पर भी, भिन्न-भिन्न प्रान्त के भिक्षु उसमें अपनी अपनी पुट लगा ही देते थे। यही कारण है कि पालि के 'नाम' तथा 'धातु' के रूपों में हम इतनी भिन्नता पाते हैं।

'कार्य' शब्द के लिए 'कय्य' तथा 'करिय' भी; 'आर्य' शब्द के लिए 'अय्य' तथा 'अरिय' भी रूप मिलते हैं। 'ह्रस्व' शब्द के लिए 'रस्स'; किंतु 'ह्रद' शब्द के लिए 'रहदो' रूप मिलता है। 'रश्मि' शब्द के लिए 'रस्मि'; किंतु, 'अस्मि' के लिए 'अम्हि' हो जाता है।

इन विभिन्नताओं को देखने से, यह बात दृढ़ होती है कि इसका कारण भिक्षुओं का भिन्न भिन्न प्रान्तों से आकर एक साथ रहना ही था। मागधी भाषा का पूरा

विकास भिक्षु-संघ में ही हुआ। यह भाषा सारे मध्य-मण्डल की एक जीवित अन्तर्प्रान्तीय भाषा थी, जिसे सभ्य समुदाय बड़े गौरव से बोलता था।

यही भाषा मगध सम्राटों की राज्य-भाषा बनी, क्योंकि मगध राज्य के विस्तार के बाद ऐसी ही व्यापक भाषा की आवश्यकता थी। राज-भाषा होने से इस भाषा का सम्मान और भी बढ़ गया; तथा मगध-राज्य की भाषा होने के कारण इसका नाम भी 'मागधी' पड़ा।

यह 'मागधी भाषा' मगध की खास अपनी भाषा न थी; किंतु सारे मध्य-मण्डल में बोली जाने वाली वह भाषा थी जिसे मगध-सम्राटों ने अधिक उपयोगी देख कर अपनी राज-भाषा बनाया था। हाँ, इतना तो जरूर हुआ कि मगध की राज-भाषा बनने के बाद इस पर 'मगध' की अपनी बोली की काफी छाप पड़ गई।

इसी मागधी भाषा को बुद्ध ने धर्म-प्रचार का सर्वोत्तम माध्यम समझ, इसी में अपने सारे उपदेश दिए।

चुल्लवग्ग ५ §६।१ में एक कथा आती है, जिससे साफ प्रकट होता है कि 'मागधी-भाषा' अपनाने में बुद्ध का क्या प्रयोजन था:—

अपनी अपनी भाषा में धर्म सीखने की आज्ञा

"उस समय यमेळ यमेळते-कुल नामक ब्राह्मण जाति के सुन्दर (=कल्याण) वचन वाले, सुन्दर वचन बोलने वाले दो भाई भिक्षु थे। वे जहाँ भगवान् थे वहाँ गए, जाकर भगवान् को अभिवादन कर एक ओर बैठे। एक ओर बैठे उन भिक्षुओं ने भगवान् से कहा—

"भन्ते! इस समय नाना नाम, गोत्र, जाति, कुल के (पुरुष) प्रव्रजित होते हैं। वह अपनी भाषा में बुद्ध वचन को (कह कर उसे) दूषित करते हैं। अच्छा हो भन्ते! हम बुद्ध-वचन को छन्द[1] में बना दें।

"भगवान् ने फटकारा—भिक्षुओ! यह अयुक्त है, अनुचित है....। भिक्षुओ! न यह अप्रसन्नों (=श्रद्धा रहितों) को प्रसन्न करने के लिए है, न प्रसन्नों की (श्रद्धा को) और बढ़ाने के लिए है; बल्कि भिक्षुओ! यह अप्रसन्नों

---

[1] वैदिक छन्द में—अट्ठकथा।

को और भी अप्रसन्न करने के लिए है, और प्रसन्नों (=श्रद्धालुओं) में से भी किसी-किसी की श्रद्धा को उल्टा करने वाला है।

"फटकार कर धार्मिक कथा कह भगवान् ने भिक्षुओं को संबोधित किया—

"भिक्षुओ! बुद्ध-वचन को छन्द[1] में न करना चाहिए। जो करेगा उसे 'दुष्कृत' अपराध लगेगा।

"भिक्षुओ! अनुमति देता हूँ अपनी भाषा में बुद्ध-वचन सीखने की।[2]"

बुद्धघोषाचार्य ने अपनी अट्ठकथा में 'सकाय निरुत्तिया' का अर्थ 'मागधी भाषा में' किया है। किंतु, स्थल को देख कर साफ़ प्रकट होता है कि यहां बुद्ध की इच्छा 'अपनी-अपनी भाषा में धर्म सीखने की अनुमति' देने की ही है। बुद्ध-संघ में बड़े-बड़े पण्डित से ले कर निरक्षर लोग तक—जिन किन्हीं को निर्वाण की उच्च प्रेरणा मिली—सम्मिलित थे। हो सकता है कि उनमें कुछ अपढ़ लोग शुद्ध 'मागधी' न बोल कर अपनी-अपनी प्रान्तीय बोली बोलते रहे हों। आज कल भी कितने ठेठ मगही या भोजपुरी दूसरे प्रान्त में जाने पर, या पढ़े लिखे लोगों के समाज में भी अपनी ही बोली बोलते हैं। उन दो शिक्षित ब्राह्मण भिक्षुओं को अपनी अपनी भाषा में बुद्ध-वचन कहना स्वाभाविक तौर पर बुरा जान पड़ा, इसी लिए उनने बुद्ध-वचनको वैदिक-छन्दों में करने का प्रस्ताव रखा। किंतु, बुद्ध तो अपनी शिक्षा को सरल से सरल और सुबोध से सुबोध बना कर जनता को देना चाहते थे। उनने उस प्रस्ताव को अस्वीकार किया, और अपनी-अपनी भाषा में धर्म सीखने की अनुमति दी।

पालि

अब प्रश्न होता है कि, इस भाषा का नाम पालि कैसे पड़ा? किसी भी ग्रन्थ में 'मागधी भाषा' के लिए 'पालि' नाम का व्यवहार नहीं हुआ है। मोग्गल्लान व्याकरण का आदि श्लोक है:—

सिद्धमिद्धगुणं साधु नमस्सित्वा तथागतं
सधम्मसङ्घं भासिस्सं मागधं सद्दलक्खणं।

---

[1] वैदिक छन्द में—अट्ठकथा।

[2] "अनुजानामि भिक्खवे, सकाय निरुत्तिया बुद्धवचनं परियापुणितुं।"

यहाँ भी ग्रन्थ का नाम 'मागध शब्द लक्षण' बताया है—'पालि-शब्द लक्षण' नहीं।

'पालि' शब्द का प्रयोग केवल मूल त्रिपिटक के लिए आता है; जैसे—दीघ निकाय पालि, उदान पालि, इत्यादि। "पालिमत्तं इध आनीतं, नत्थि अट्ठकथा इध"=यहाँ केवल पालि लाई गई है, यहाँ अर्थकथा नहीं है; "नेव पालियं न अट्ठकथायं दिस्सति"=न तो पालि में और न अर्थकथा ही में यह देखा जाता है; "इमिस्सा पन पालिया एवमत्थो वेदितब्बो"=इस पालि का यह अर्थ समझना चाहिए—इत्यादि वाक्यों के देखने से साफ मालूम होता है कि 'पालि' शब्द का प्रयोग मूल त्रिपिटक के लिए होता था।

धीरे धीरे उस भाषा का ही नाम—जिस में बुद्ध-वचन सुरक्षित था—'पालि' हो गया जान पड़ता है।

जब 'मागधी भाषा' का नाम 'पालि भाषा' हो गया, तब लोगों ने इसके विषय में तरह-तरह की हास्यास्पद कल्पनाएँ करनी आरम्भ कर दी जैसे—पालि भाषा पाटलिपुत्र की भाषा थी; इसलिए इसका नाम 'पाटलि भाषा' पड़ा; 'पाटलि भाषा' ही धीरे-धीरे बिगड़ कर 'पालि भाषा' कही जाने लगी। कुछ लोगों ने 'पालि भाषा' की व्युत्पत्ति 'पल्लि भाषा' से करने की कोशिश की; पल्लि भाषा, अर्थात् गाँव की भाषा : इत्यादि

यह स्मरण रखना चाहिए कि 'पालि' शब्द कभी भी भाषा के लिए नहीं आया है। भाषा के लिए सदैव 'मागधी' नाम ही आता है।

पालि=पंक्ति

आचार्य मोग्गल्लान तथा दूसरे वैयाकरण भी 'पालि' शब्द को 'पा' धातु से परे ण्वादि का 'लि' प्रत्यय लगा कर सिद्ध करते हैं, और उसका अर्थ पंक्ति तथा श्रेणी बताते हैं।

इसी अर्थ को ले कर, मान्य श्री विधुशेखर शास्त्री प्रभृति कुछ विद्वानों का मत है कि 'पालि' का अर्थ 'मूल ग्रन्थ की पंक्ति' है। आज कल भी, पण्डितों को जब किसी मूल ग्रन्थ का हवाला देना होता है तो झट कह देते हैं—पंक्ति में भी यह बात इस तरह है। ऐसा लोग अक्सर कहते देखे जाते हैं—गोसाईं जी की पाँत में ऐसा है।

किंतु, यह सिद्धान्त युक्ति-युक्त प्रतीत नहीं होता।

२

(१) इसका कोई प्रमाण नहीं मिलता कि राजगृह में संगीति हो जाने के बाद 'दीघनिकाय', 'मज्झिम निकाय' आदि मूल ग्रन्थ लिखे गए हों। बल्कि, भिक्षुओं में ऐसी परिपाटी थी कि वे सारे निकाय के निकाय को कण्ठ कर लेते थे। जो भिक्षु दीघनिकाय को याद कर लेता था उसे दीघ भाणक अर्थात् 'दीघ-निकाय सुनाने वाला' कहते थे। इसी तरह, मज्झिम-भाणक, अंगुत्तर-भाणक आदि हुआ करते थे। त्रिपिटक के सभी ग्रन्थ जो 'भाणवारों में विभक्त किए गए हैं, उनका उद्देश्य यही था कि उतना हिस्सा एक वार याद कर सुनाना चाहिए।

ऐसी हालत में, सम्भव नहीं है कि इन ग्रन्थों के साथ लगने वाला शब्द 'पालि' पंक्ति के अर्थ में प्रयुक्त हुआ हो। 'पंक्ति' का प्रयोग केवल उसी ग्रन्थ के साथ होना समझ में आता है जो लिखित हो। जो ग्रन्थ केवल सुना सुनाया जाता है उसके विषय में 'पंक्ति' शब्द का व्यवहार करना जँचता नहीं है।

(२) 'पालि' साहित्य में, कहीं भी 'पालि' शब्द 'ग्रन्थ की पंक्ति' के अर्थ में प्रयुक्त नहीं हुआ है। यह ध्यान देने लायक वात है कि मूल त्रिपिटक के ग्रन्थों के अन्दर कहीं 'पालि' शब्द का प्रयोग नहीं देखा जाता है। हाँ, ग्रन्थ के नाम के साथ 'पालि' शब्द लगा दिया जाता है—जैसे, उदान पालि, पाचित्तिय पालि आदि। अव, यदि 'पालि' का अर्थ 'पंक्ति' लें तो 'उदान-पंक्ति', पाराजिक-पंक्ति आदि शब्दों का कोई अर्थ ही नहीं निकलता है।

(३) यदि 'पालि' शब्द का अर्थ 'पंक्ति' होता तो उसे बहुवचन में भी प्रयुक्त होना चाहिए था; जैसे—'उदानस्स पालीसु'=उदान ग्रन्थ की पंक्तियों में, इत्यादि। किंतु, सभी जगह, 'उदान पालियं' ऐसा एक वचनान्त ही पाठ आता है।

तब, 'पालि' का क्या अर्थ है

त्रिपिटक के मूल ग्रन्थों में जगह-जगह पर बुद्ध-देशना=बुद्ध-उपदेश=बुद्ध-वचन के अर्थ में 'धम्म-परियाय' शब्द का पाठ मिलता है। जैसे:—

"परियाय"

(क) "तस्मातिह त्वं आनन्द! इमं ध म्म - प रि या यं अत्थ जालन्ति पि नं धारेहि......अनुत्तरो संगामविजयो ति पि नं धारेहि।

दीघनिकाय; ब्रह्मजाल सूत्र

अर्थात्—आनन्द! इस 'धम्म-परियाय' (=मेरे उपदेश) को अर्थजाल भी समझो....अलौकिक संग्रामविजय भी समझो।"

(ख) "एवं वुत्ते मुण्डो राजा आयस्मन्तं नारदं एतदवोच—को नु खो अयं भन्ते! ध म्म प रि या यो ति?

"सोकसल्लहरणो नाम अयं महाराज ध म्म प रि या यो ति।

"तग्घ भन्ते! सोकसल्लहरणो, तग्घ भन्ते! सोकसल्लहरणो—इमं हि मे भन्ते ध म्म प रि या यं सुत्वा सोकसल्लं पहीनन्ति।

अंगुत्तर निकाय

(P. T. S. III. 62)

अर्थात्—ऐसा कहने पर मुण्ड राजा ने आयुष्मान् नारद को कहा, "भन्ते! इस 'धम्मपरियाय' (=धर्म देशना=सूत्र) का क्या नाम है?

महाराज! इस 'धम्मपरियाय' का नाम 'शोकशल्यहरण' है।

भन्ते! ठीक है, ठीक है, यह 'शोकशल्य' हरण ही है। भन्ते! इस 'धम्म-परियाय' को सुन कर 'शोकशल्य' प्रहीण हो गया।"

ऊपर के उद्धरणों से यह साफ मालूम होता है कि 'परियाय' का अर्थ बुद्धोपदेश=सूत्र है।

पलियाय

अशोक ने भी, इसी अर्थ में अपने धर्म-लेख में इस शब्द का प्रयोग किया है। जैसे:—

भब्रू शिला लेख

पियदसि लाजा मागधं संघं अभिवादनं आहा, अपाबाधतं च फासु-विहालतं चा। विदितं वे भंते आवतके हमा बुधसि धंमसि संघसीति

गलवे च पसादे च ए केचि भंते भगवता बुधेन भासिते सवे से सुभासिते वा ए चु खो भंते हमियाये दिसेया देवं सधंमे चिलठितीके होसतीति अलहामि हकं तं वतवे। इमानि भंते धं म-प लि या या नि विनयसमुकसे, अलियवसानि, अनागतभयानि, मुनिगाथा, मोनेयसूते, उपतिसपसिने ए चा लाहुलोवादे मुसावादं अधिगिच्य भगवता बुधेन भासिते। एतान भंते धं म-प लि या या नि इछामि। किं ति वहुके भिखुपाये च भिखुनिये चा अभिखिनं सुनयु चा उपधालेयेयु चा। हेवं हेवा उपासका चा उपासिका चा एतेनि भंते इमं लिखापयामि अभिहेतं म जानंतति।

ऊपर के मूल शिला-लेख का पालि-रूपान्तर इस प्रकार होगा:—

पियदसी राजा मागधं संघं अभिवादनं आह, अप्पावाधतं च फासुविहारतं च। विदितं वो भन्ते! यावतको अम्हाकं बुद्धस्मि, धम्मस्मि संघस्मि गारवो च पसादो च। यो कोचि भन्ते! भगवता बुद्धेन भासितो (धम्मपलियायो), सब्बो सो सुभासितो एव। यो तु खो भन्ते अम्हेहि देसेय्यो, हेवं सद्धम्मो चिरट्ठितिको हेस्सतीति, अरहामि अहं तं वत्तवे।

इमानि भन्ते! धम्म-पलियायानि:—विनय-समुकसो, अरियवंसा, अनागतभयानि, मुनिगाथा, मोनेय्यसुत्तं, उपतिस्स-पसिनो (पञ्हो), ये च राहुलोवादे मुसावादं अधिकिच्च।

भगवता बुद्धेन भासितो (धम्मपलियायो)।

एतानि भन्ते! धम्म-पलियायानि इच्छामि किं ति बहुका भिक्खवो भिक्खुनियो च अभिक्खणं सुनेय्युं च उपधारेय्युं च; हेवं हेव उपासका च उपासिका च। एतेन भन्ते! इमं लेखापयामि अभिहेतं मे जानन्तू ति।

अर्थात्—प्रियदर्शी (=हितकामी) राजा मगध के संघ को अभिवादन करता है, तथा उनका कुशल-मंगल चाहता है। भन्ते! आप को मालूम ही है कि बुद्ध, धर्म, तथा संघ के प्रति मेरे हृदय में कितना आदर और श्रद्धा है। भन्ते! भगवान् ने जो कुछ कहा है सभी सुन्दर ही कहा है। भन्ते! जो कुछ मुझे कहना है उसे कहता हूँ, जिससे सद्धर्म चिरस्थायी हो।

भन्ते! ये धम्म-पलियाय हैं:—

१. विनय समुत्कर्ष, २. आर्यवंश, ३. अनागत भय, ४. मुनिगाथा, ५. मोनेय्य

सूत्र, ६. उपतिष्य-प्रश्न, और ७. 'राहुलोवाद' सूत्र में भगवान् ने जो मृषावाद के विषय में उपदेश दिया है भन्ते ! मैं चाहता हूँ कि सभी भिक्षु, भिक्षुणियाँ, उपासक तथा उपासिकायें इन्हें सदा सुनें और पालन करें। भन्ते ! इसी लिए मैं यह लेख लिखवा रहा हूँ—ऐसा समझें।

पालियाय=पालि

इससे साफ प्रकट होता है कि बुद्ध-वचन के अर्थ में ही 'परियाय=पलियाय' शब्द का प्रयोग किया गया है।

पालि भाषा में बहुधा परि या 'पटि' उपसर्ग का दीर्घ हो कर 'पारि' या 'पाटि' हो जाता है। जैसे:—

परि+लेय्यकं=पारिलेय्यकं

पटि+कङ्खा=पाटिकङ्खा

पटि+भोगो=पाटि भोगो इत्यादि

इसी तरह, 'पलियाय' शब्द का रूप धीरे-धीरे 'पालियाय' हो गया। बाद में, इसी शब्द का लघु-रूप 'पालि' हो गया; और इसका अर्थ हुआ 'बुद्धवचन'।

'दीघनिकाय-पालि', 'उदानपालि', 'पाचित्तिय-पालि' आदि कहने से यह मतलब है कि ये ग्रन्थ 'बुद्धवचन' हैं। 'पालि' का अर्थ 'बुद्धवचन' होने से, यह शब्द केवल मूल त्रिपिटक ग्रन्थों के लिए ही प्रयुक्त हुआ है, अट्ठकथा के लिए नहीं।

मागधी भाषा के आधार पर बुद्ध की अपनी शैली की छाप लग कर पालि भाषा का विकास हुआ। पीछे, जनता में त्रिपिटक के साथ-साथ पालि भाषा का खूब प्रचार हुआ।

ए. बेरियेडल कीथ महोदय लिखते हैं:—

The speech of the Buddha, which is assumed to be reproduced in the canon, was doubtless the educated lingua franca which had been devised for the needs of the intercourse of learned men in India.

'Ceylon Daily News', May 1939.

अर्थात्—बुद्ध-भाषा, जो त्रिपिटक में आती है, निस्सन्देह शिक्षित समाज

की बोलचाल की भाषा थी; जिसका गठन भारत के शिक्षित समुदाय के व्यवहार की आवश्यकता की दृष्टि से ही हुआ था।

रायस डेविड्स और गाइगर दोनों विद्वान् इस से बिलकुल सहमत हैं।

लंका में जब त्रिपिटक के साथ 'पालि' शब्द पहुँचा, उस समय 'परियाय=पलियाय=पालियाय' से इसका सम्बन्ध छूट चुका था, और लोगों को यह एक पृथक् नया शब्द मालूम हुआ। वैयाकरणों ने इसका अर्थ 'पा=रक्खणे' धातु से करना प्रारम्भ किया। जैसे:—"पा—पालेति रक्खतीति पालि=पंक्ति[1]।"

---

[1] 'पंक्ति' का अर्थ यहाँ 'श्रेणी' है। खींच-खाँच कर इसका अर्थ 'ग्रन्थ-पंक्ति' भी किया जा सकता है।

दूसरा खण्ड

पालि और वैदिक भाषा

वैदिक भाषा बोलचाल की भाषा थी। वैदिक काल में आर्यों का जहाँ जहाँ प्रसार हुआ सभी जगह यह भाषा गई। उस समय, भाषा ने व्याकरण की बेड़ी नहीं पहनी थी। बोलने के समय लोगों को गल्ती हो जाने का डर नहीं लगा रहता था। भावों की अधिक से अधिक अभिव्यञ्जना ही भाषा का अभिप्राय था। यही जीती जागती भाषा का प्रथम लक्षण होता है।

भाषा की स्वतंत्रता

जैसे जैसे आर्य लोग आगे बढ़ते गए इस भाषा का विस्तार होता गया। फलतः, नियम में बाँध रखने वाले एक व्याकरण के अभाव में—भाषा में तरह तरह के नये रूप धड़ल्ले से आने लगे। 'भवति' को कोई 'भवाति' कोई 'भवत्' कोई 'भवात्', जिसको जैसा मन होता था, बोलता था। अर्थ समझा देना भर उनका प्रयोजन था। वैसे ही, कोई षष्ठी के स्थान में चतुर्थी का, तो कोई चतुर्थी के स्थान में षष्ठी का व्यवहार करता था।

वैदिक भाषा की स्वतंत्रता तथा व्यापकता दिखाते हुए पाणिनि सूत्रों के भाष्य-कार पतञ्जलि लिखते हैं:—

व्यत्ययो बहुलम् ३।१। ८५। योग-विभागः कर्त्तव्यः। छन्दसि विषये सर्वे विधयो भवन्तीति। सुपां व्यत्ययः। तिङां व्यत्ययः। वर्ण-व्यत्ययः। लिङ्ग-व्यत्ययः। पुरुष-व्यत्ययः। काल-व्यत्ययः। आत्मनेपद-व्यत्ययः। परस्मैपद-व्यत्ययः इति।

सुपाम् व्यत्ययः—. . . दक्षिणायाः—दक्षिणस्याम् इति प्राप्ते। तिङां व्यत्ययः. . . . तक्षति—तक्षन्ति इति प्राप्ते।

वर्णव्यत्ययः—...शुभितम्...—शुधितम् इति प्राप्ते। लिङ्गव्यत्ययः—मधो—मधुनः इति प्राप्ते। पुरुषव्यत्ययः—......वि यू या—वियूयात् इति प्राप्ते। कालव्यत्ययः—......श्वः सोमेन य क्ष्य मा णे न—यष्टेता इति प्राप्ते। आत्मनेपद व्यत्ययः—......इ च्छ ते—इच्छति इति प्राप्ते। परस्मैपद व्यत्ययः—......यु ध्य ति—युध्यते इति प्राप्ते।

नाम-विभक्तियों का, क्रिया-विभक्तियों का, वर्णों का, लिङ्गों का, पुरुषों का, काल का, आत्मने पद का, तथा परस्मैपद का व्यत्यय (=उल्टा-पुल्टा) होता है।

सुप्-तिङ्-उपग्रह-लिङ्ग-नराणां काल-हल्-अच्-स्वर-कर्त्तृ-यङां च। व्यत्यय मिच्छति शास्त्र-कृद् एषां सोपि च सिध्यति बाहुलकेन ॥१॥

(महा भाष्य)

नाम-विभक्ति, क्रिया-विभक्ति, उपग्रह, लिङ्ग, पुरुष, काल, व्यञ्जन, स्वर, वैदिक स्वर (Accent), कर्त्तृ (कारकादि एवं वाच्यादि), यङन्त इत्यादि का व्यत्यय, (उल्टा-पुल्टा, व्यतिक्रम) होना पाणिनि-आदि व्याकरण-शास्त्रकार निर्देश करते हैं। वह व्यत्यय भी कहाँ और कैसे होगा इसका कोई नियम नहीं है।

नाम-विभक्तियों के प्रयोग में स्वच्छन्दता

वैदिक भाषा में नाम-विभक्यों के प्रयोग में कितनी स्वतंत्रता थी उसका पता हमें 'महाभाष्य' से मिलता है :—

सुपां सुलुक्पूर्वसवर्णाच्छेयाडाड्यायाजालः ७।१।३९ सुपां च सुपो भवन्तीति वक्तव्यम्॥ तिङां च तिङो भवन्तीति वक्तव्यम्॥ इयाडियाजीकाराणामुपसंख्यानम्॥ आङ्याजयारां चोपसंख्यानं कर्तव्यम्॥

नाम-विभक्तियों के स्थान में सु[1] (प्रथमा), लुक् (भिक्ति-लोप), पूर्व-सवर्ण

---

[1] सु शब्द को आदेश कहने का अभिप्राय यह है, कि सु प्रत्यय आदेश होने पर अन्य नाम-विभक्तियाँ नहीं होंगीं। यह सब 'व्यत्ययो बहुलम्' इसके अनुसार भी व्यत्यय से सिद्ध हो सकता है। (कैयट)।

(पूर्व-सवर्ण-दीर्घ), आ, आत् शे, या, डा, ड्या, या आल् [शे=ए। या, याच्, ड्या=या। डा, आल्, आ, (आत्)=आ] इन प्रत्ययों का आदेश होता है।[1]
नाम-विभक्तियोंमें व्यत्यय होने के उदाहरण—

ऋजवः सन्तु पन्था: (पन्थान:)। परमे व्योमन् (व्योमनि)। लोहिते चर्मन् (चर्मणि)। आर्द्रे चर्मन् (चर्मणि)। धीती (धीत्या), मती (मत्या)। या सुरथा रथी-तमा दिविस्पृशा अश्विना (यौ सुरथौ दिविस्पृशौ अश्विनौ)। नताद् ब्राह्मणम् (नतंब्राह्मणम्)। यादेव (यमेव) विद्म तात्त्वा (तंत्वा)। युष्मे। (युष्मासु)। अस्मे (अस्मभ्यम्) इन्द्राबृहस्पती। उरुया (उरुणा), धृष्णुया (धृष्णुना) नाभा (नाभौ) पृथिव्या:। साधुया (साधु)। वसन्ता यजेत (वसन्ते यजेत)।

उर्विया (उरुणा), दार्विया (दारुणा), सुक्षेत्रिया (सुक्षेत्रिणा–इति)। सुगात्रिया (सुगात्रेण)। दृतिं नशुष्कं सरसी शयानम् (सप्तमी एक वचन के स्थान में ईकार का आदेश)।

प्र वाहवा (वाहुना)। स्वप्नया (स्वप्नेन)। नावया (नावा)।

(महाभाष्य—सिद्धान्त-कौमुदी)

काल तथा लकार की स्वच्छन्दता

वैदिक भाषा में काल तथा लकार के प्रयोग में बड़ा अनियम था। एक-एक क्रिया-पद के लिए कितने अधिक रूप व्यवहृत होते थे, उसे देख कर माथा चकरा जाता है। जैसे:—

---

[1]इया, डियाच्, (इया, डियाच्=इया), ईकार भी आदेश होते हैं।
तृतीया एक वचन में अयाच्, अयार (=अया) भी आदेश होते हैं।

(महाभाष्य)

छन्दसि लुङ्-लङ्-लिटः ।३।४।६
धात्वर्थानां सम्बन्धे सर्वकालेषु एते वास्युः ।
लुङ्-लङ्-लिट् का प्रयोग सभी काल में हो सकता है।
देवो देवेभिं आगमत् (आगच्छतु) ।

अद्य ममार (म्रियते) ।

लिङ्-अर्थे लेट् ३।४।७ उपवादऽऽशङ्कयोश्च ३।४।८। लेट् । सिब्-बहुलं लेटि ३।१।३४। सिब्-बहुलं णिद्वक्तव्यः । इतश्च लोपः परस्मैपदेषु ३।४।९७। लेटोऽड्-आटौ ३।४।९४। आगमौ स्तः स उत्तमस्य ३।४।९८। लोपो वा स्यात् ।

लेट् का धातुरूप

प्रथम पुरुष एक वचन में

भवति, भवाति । भवत्, भवात् । भवते, भवाते । भविषति, भाविषति । भविषत्, भाविषत् । भविषाति, भाविषाति । भविषात्, भाविषात् । भविषते, भाविषते, भविषाते, भाविषाते ।

इस तरह, प्रथम तथा मध्यम पुरुष में ५४।५४ रूप, एवं उत्तम पुरुष में २७+ १२ (व, म) कुल १४७ रूप होंगे।
पताति विद्युत् (विद्युत पतेत्) । प्रियःसूर्य्ये प्रियो अग्ना भवाति (भवेत्) ।

लेट् लकार (Subjunctive mood) ऋग्वेद और अथर्व-वेद में बहुतायत से आता है। विधि लिङ् (optative) की अपेक्षा यह तिगुणा अथवा चारगुणा अधिक प्रयुक्त हुआ है ।

निमित्तार्थक प्रत्यय

निमित्तार्थक (तुं-प्रत्यय प्रत्यय के स्थान में) वैदिक भाषा में विभिन्न प्रत्यय पाये जाते हैं, परन्तु संस्कृत भाषा में केवल तुं-प्रत्यय का प्रयोग होता है ।

निमित्तार्थक प्रत्यय

तुमर्थक प्रत्यय	वैदिक उदाहरण[1]	ऋक् तथा यजुर्वेद में प्रत्यय-प्रयोग-संख्या[2]
तुं	कर्त्तुं, गन्तुं, दातुं	२६
से[3], असे[3]	चक्षसे, जीवसे, वक्षे	१८३
ध्यै[3], अध्यै[3]	पृणध्यै, पिवध्यै, यजध्यै	१०१
अः[3] तोः[3]	निमिषः, गन्तोः, हन्तोः, कर्त्तोः, विलिखः	३३
अं[3]	शुभं, प्रतिधां, समिधं	७२
ए[3]	दृशे, भुवे, परादै, प्रमे	३४८
तये	पीतये, सातये,	३३६
वने, मने	त्रामणे, दावने, विद्मने	५२
त्यै	इत्यै	४
तवे[3], तवै[3]	कर्त्तवे, गन्तवे दातवे, मन्तवै, पातवै, दातवै,	२८४
अये	चितये युद्धये	५५
इ, सनि	दृशि, बुधि; नेषणि, अभिभूषणि, गृणीषणि	२८

[1] 'A.A. Macdonell's Vedic Grammar for Students' से उद्धृत।

[2] 'E.V. Arnold's Historical Vedic Grammar' से संकलित।

[3] तुमर्थे से-सेन्-असे-असेन्-कसे-कसेन्-अध्यै-अध्यैन्-कध्यै-कध्यैन् शध्यै-शध्यैन्-तवै-तवेङ्-तवेनः ३।४।९......३।४।१३

(अष्टाध्यायी)

कृत्य

उसी तरह, 'कृत्य' प्रत्यय भी वैदिक भाषा में 'तवै', 'केन', 'केन्य', 'त्वेन' यह चार व्यवहृत होते थे। जैसे :—

कृत्यार्थे तवै–केन–केन्य–त्वनः ३।४।१४ न म्लेच्छितवै (=न म्लेच्छितव्यम्)। अवगाहे (अवगाहितव्यम्, अवगाढयम्)। दिदृक्षेण्यः (=द्रष्टव्यः)। कर्त्वम् (=कृत्यम्)। अवचक्षे (=अवख्यातव्यम्)।

प्रयोगों की विभिन्नता का कारण

ऊपर के उदाहरणों में हमने जो वैदिक भाषा में स्वच्छन्दता, अनियमितता, तथा प्रयोगों की विभिन्नता देखी है, उसका कारण भाषा बोलने वालों के प्रान्त तथा समाज की विषमता ही हो सकती है। यों तो कहने के लिए आज हम कह देते हैं कि विहार तथा युक्तप्रान्त की भाषा हिन्दी है; किन्तु, यदि इन प्रान्तों की भिन्न भिन्न जगहों की सच्ची बोलचाल की भाषाओं को देखें, तो उसके अनेक रूप मिलेंगे। एक ही शब्द के उच्चारण के कई भेद मिलेंगे। 'मैं जाता हूँ', इसी एक वाक्य के रूप मगध में 'हम जा ही', मिथिला में 'हम जाई छी', तथा भोजपुर में 'हम जात वानी, जातानि, जाताणि' आदि होंगे। भाषा मूलतः एक ही है, किन्तु प्रान्त तथा समाज के भेद से उसके इतने रूप हो गए। ठीक उसी तरह, वैदिक भाषा मूलतः एक होने पर भी, प्रान्त-भेद से उसमें इतने व्यत्यय, तथा एकार्थक विभिन्न प्रत्यय दीखते हैं।

व्याकरण से मँजी 'खड़ी वोली' की तरह उस समय कोई एक भाषा नहीं वनी थी; अतः, सभी तरह के प्रयोग भाषा में मिलते जाते थे। धीरे धीरे एक एक प्रत्यय के लिए—जैसे हमने अभी ऊपर देखा है—चार चार पाँच पाँच प्रत्यय व्यवहृत होने लगे। सभी के उदाहरण वेद में मिलते हैं।

भाषा में इतनी अधिक विभिन्नता होने का एक और प्रवल कारण रहा। जब आर्य लोग सिन्धु देश में फैल रहे थे, तब उनका समागम वहाँ के मूल-निवासियों से हुआ। एक जगह साथ रहने से उनकी भाषा का प्रभाव वैदिक भाषा पर कुछ न कुछ अवश्य पड़ा; ठीक उसी तरह, जैसे अँगरेजी साहित्य में लाठी, लूट, राजा, जनाना, पर्दा, आदि वहुत शब्द प्रयुक्त होने लगे हैं। यदि अँगरेजी भाषा का

केन्द्र (इंगलैण्ड) बाहर नहीं होता, तो निश्चय है कि अँगरेज़ी भाषा का रूप आज बिल्कुल दूसरा ही हो गया होता। वैदिक भाषा का केन्द्र कहीं बाहर नहीं, किन्तु यहीं था; इसलिए इस भाषा पर यहाँ की मूल भाषा का प्रभाव अत्यन्त अधिक पड़ा होगा, जिससे इसमें इतनी विभिन्नता आ गई।

जब बाहर से भारतवर्ष में मुसलमान आए और यहीं रहने लगे, तो उनकी भाषा और यहाँ की भाषा मिल कर एक तीसरी भाषा 'उर्दू' का जन्म हुआ। यदि वही लोग इस देश में बस न जा कर, अपने देश ही से यहाँ का शासन करते, तो एक नई भाषा 'उर्दू' का जन्म न हो कर, उनकी भाषा फ़ारसी ही में संस्कृत के कुछ शब्द आ कर रह जाते, जैसा अँगरेज़ी में हुआ।

उच्चारण में परिवर्तन

उसी तरह, जब आर्य लोग यहाँ बाहर से आए और यहीं बस गए, तो वैदिक भाषा और यहाँ की मूल भाषाओं के मिलने से कई छोटी मोटी भाषाओं की उत्पत्ति हुई। आर्य लोग विजयी, और यहाँ वाले विजित थे; इसलिए, इन भाषाओं में प्राधान्य वैदिक भाषा का ही रहा। यहाँ वाले वैदिक भाषा के क्लिष्ट शब्दों को सरल तथा मुलायम करके बोलने लगे। 'अग्नि' का अग्गि', 'रश्मि' का 'रंसि', 'भार्या' का 'भरिया', 'कृत्य' का 'किच्च', 'सिंह' का 'सीह', 'व्याघ्र' का 'व्यग्घ', 'संस्थान' का 'संठान' आदि आदि रूप हो गए। यह विकास किन्हीं खास नियमों के आधार पर नहीं हुआ। जहाँ जिनको जैसा सरल प्रतीत हुआ बोलते गए।

वैदिक भाषा के शब्द किस तरह बदल कर बोले जाने लगे उसके कुछ उदाहरण नीचे दिए जाते हैं।

१. 'ऋ' कहीं-कहीं 'अ' कर दिया गया। जैसेः—

कृतं—कतं। घृतं—घतं। ऋक्षः—अच्छो। नृत्यं—नच्चं।

२. 'ऋ' कहीं-कहीं 'इ' कर दिया गया। जैसेः—

ऋणं—इणं। कृत्यं—किच्चं। दृष्टं—दिट्ठं।

३. 'ऋ' कहीं-कहीं 'उ' कर दिया गया। जैसेः—

ऋतु—उतु। ऋजु—उजु। वृष्टि—वुट्ठि।

४. 'ऐ' का 'ए', 'इ', तथा 'ई' हो गया। जैसे:—वैमानिकः—वेमानिको। ऐश्वर्यं—

इस्सरियं। ग्रैवेय्यं—गीवेय्यं।

५. 'औ' का 'ओ' तथा 'उ' हो गया। जैसे—

पौरः—पोरो; मौद्गल्लायनः—मोग्गलायनो। औद्धत्यं—उद्धच्चं; औद्देशिकः—उद्देसिको।

६. 'श' तथा 'ष' के वदले 'स' का ही व्यवहार होने लगा। जैसे:—

शिष्यः—सिस्सो। श्रमणः—समणो।

७. शब्द के अन्तस्थित व्यञ्जन को लोप कर देने लगे। जैसे:—

गुणवान्—गुणवा। कश्चित्—कोचि। यावत्—याव। तावत्—ताव।

८. अकारान्त शब्दों से परे विसर्ग का 'ओ', तथा इकारान्त या उकारान्त शब्दों से परे विसर्ग का लोप होने लगा। जैसे:—

देवः—देवो। कः—को। अग्निः—अग्गि। धेनुः—धेनु।

९. विसर्ग से परे यदि स, श, या ष हुआ तो विसर्ग के स्थान में 'स' हो गया। जैसे:—

दुःसह—दुस्सहो। निःशोकः—निस्सोको।

१०. संयुक्त वर्ण से पूर्व दीर्घ स्वर का ह्रस्व हो गया। जैसे:—

मार्दवं—मद्दवं। तीर्थं—तित्थं। धार्मिकः—धम्मिको। शून्यं—सुञ्ञं।

११. रेफ का लोप हो गया; तथा रेफ वाले वर्ण का द्वित्व हो गया। जैसे:—

कर्म—कम्मं। निर्जलः—निज्जलो। सर्वः—सब्बो। वर्गः—वग्गो।

१२. 'ह' के साथ रेफ का 'र' हो गया। जैसे:—

तर्हि—तरहि। एतर्हि—एतरहि।

१३. पद के आदि वर्ण में संयुक्त 'र' का लोप हो गया। जैसे:—

क्रीतः—कीतो। क्रुध्यति—कुज्झति। ग्रामः—गामो। त्रिपिटकं—तिपिटकं। श्रावकः—सावको।

१४. पद के मध्य में किसी व्यञ्जन के साथ संयुक्त 'र' का लोप हो गया, तथा कहीं-कहीं उस व्यञ्जन का द्वित्व हो गया। जैसे:—

प्रक्रमः—पक्कमो। सूत्रं—सुत्तं। समुद्रः—समुद्दो। इन्द्रः—इन्दो।

१५. 'र्य' का कहीं-कहीं 'रिय' हो गया। जैसे:—

कार्यं—करियं। कदर्यं—कदरियं।

१६. पद के आदिस्थित 'क्ष' का 'ख' हो गया। जैसे:—

क्षीरं—खीरं। क्षेमः—खेमो।

१७. पद के मध्य में 'क्ष' का कहीं-कहीं 'क्ख' या 'च्छ' हो गया। जैसे:—

दक्षिणः—दक्खिणो। मोक्षः—मोक्खो। पक्षः—पच्छो। अक्षि—अच्छि, अक्खि।

१८. पद के आदिस्थित 'द्य' का 'ज', तथा मध्यस्थित का 'ज्ज' हो गया। जैसे:—

द्युतिः—जुति। अद्य—अज्ज। विद्यते—विज्जते।

१९. पद के आदिस्थित 'ध्य' का 'झ', तथा मध्यस्थित का 'ज्झ' हो गया। जैसे:—

ध्यानं—झानं। बुध्यते—बुज्झते।

२०. पद के आदिस्थित 'त्य' का 'च', तथा मध्यस्थित का 'च्च' हो गया। जैसे:—

त्यजति—चजति। प्रत्ययः—पच्चयो। नृत्यं—नच्चं। सत्यं—सच्चं। अत्ययः—अच्चयो।

२१. 'न्य' तथा 'ण्य' का 'ञ्ञ' हो गया। जैसे:—

धान्यं—धञ्ञं। शून्यं—सुञ्ञं। हीरण्यं—हिरञ्ञं।

२२. पद के आदिस्थित 'ज्ञ' का 'ञ', तथा मध्यस्थित का 'ञ्ञ' हो गया। जैसे:—

ज्ञातिः—ञाति। ज्ञानं—ञाणं। संज्ञा—सञ्ञा। प्रज्ञा—पञ्ञा।

२३. 'ष्ट' या 'ष्ठ' के स्थान में 'ट्ठ'; 'स्त' के स्थान में 'थ' या 'त्थ', या 'त्त' हो गया। जैसे:—

तुष्टः—तुट्ठो। षष्ठः—छट्ठो। स्तम्भः—थम्भो। हस्ती—हत्थी। दुस्तरं—दुत्तरं।

२४. कुछ गौण परिवर्तनों के उदाहरणः—

स्थूलः—थूलो। स्थानं—ठानं। अस्थि—अट्ठि। मत्स्यः—मच्छो। उल्का—उक्का। जल्पः—जप्पो। फल्गु—फग्गु। ग्लानः—गिलानो। क्लेशः—किलेसो। ज्वलति—जलति।

पक्वं—पक्क। अध्वा—अद्धा। ह्रस्वः—रस्सो। जिह्वा—जिव्हा। स्कन्धः—खन्धो। निष्क्रमः—निक्खमो। शुष्कं—सुक्खं। पश्चात्—पच्छा। अप्सरा—अच्छरा। स्पृशति—फुसति। पुष्पं—पुप्फं। देयं—देय्यं। श्रेयः—सेय्यो। भुक्तं—भुत्तं। सप्त—सत्त। लवण—लोणं। स्नेहः—सिनेहो। शक्नोति—सक्कोति। चन्द्रमा—चन्दिमा। असूया—उसूया। मातृका—मेत्तिका। गुरु—गरु। पुरुषः—पुरिसो। कीलः—खीलो। मूकः—मूगो। प्रसेनजित्—पसेनदि। प्रति—पटि। पृथिवी—पठवी। वहति—डहति।

व्याकरण की आवश्यकता

भिन्न-भिन्न प्रान्त तथा समाज में आ कर विकास का यह प्रवाह फूट कर कई दिशाओं में बहने लगा। कहीं-कहीं वर्णों का लोप हो गया; कहीं-कहीं उनका विपर्यास हो गया; कहीं-कहीं व्यञ्जन-वर्णों के स्थान में स्वर-वर्ण हो गया; कहीं-कहीं कुछ वर्णों का आगम हुआ इत्यादि। इस तरह, यही आगे चल कर पालि तथा प्राकृत भाषाओं के रूप में प्रकट हुआ।

बोल-चाल की भाषा में रूपों की विभिन्नता हद से ज्यादा बढ़ गई। यहाँ तक, कि समाज को दैनिक व्यवहार में बड़ी कठिनाई पड़ने लगी। लोगों को अनुभव होने लगा कि यदि भाषा की इस उच्छृङ्खलता को रोक कर उसमें कुछ नियमन न किया गया, तो कुछ समय के बाद सामाजिक जीवन असंभव हो जायगा। यही 'संस्कृत भाषा' के निर्माण का कारण हुआ।

शब्द-शास्त्र के पण्डितों ने इधर काफी ध्यान दिया; और वे भाषा को काट-छाँट कर हलका तथा उपयोगी बनाने के फेर में पड़ गए। भाषा का व्याकरण बनने लगा। विभिन्न प्रयोगों में से अधिक प्रचलित कुछ एक-दो ही रखे गए, और बाकी छोड़ दिए गए। वैयाकरणों के कई वर्षों तक परिश्रम करते रहने के बाद लगभग ईसा-पूर्व ४०० में (बुद्ध से प्रायः ३५० वर्ष बाद) पाणिनि ने इस शास्त्र को सर्वाङ्ग-

पूर्ण बनाया। भाष्यकार पतञ्जलि, पाणिनि के सूत्र 'भूवादयो धातवः' १।३।१ का भाष्य करते हुए लिखते हैं कि पाणिनि के समय लोगों में—'आणवयति' (=आज्ञा देना), वट्टति (=वर्तमान होना), वड्डयति (=बढ़ना) आदि क्रिया के रूप बोले जाते थे; तथा 'कृषि' के अर्थ में 'कसि', 'दृशि' के अर्थ में 'दसि' का प्रयोग करते थे। व्याकरण के निर्माण के समय इन प्रयोगों को गौण समझ कर छोड़ दिया।

[यह ध्यान देने लायक बात है कि ये तमाम प्रयोग पालि भाषा में व्यवहृत होने वाले बड़े ही साधारण रूप हैं]

उपयोगी समझ कर, लोगों ने व्याकरणानुकूल बोलने लिखने पर बड़ा जोर दिया। धीरे-धीरे लोगों में यह भाव बड़ा पुष्ट हो गया, और वे व्याकरण के अननुकूल किसी प्रयोग को त्याज्य और हीन समझने लगे। आज तक वह भाव पण्डितों में वैसा ही है। संस्कृत का बड़ा से बड़ा विद्वान भी संस्कृत बोलते समय डरता है कि कहीं व्याकरण की अशुद्धि न हो जाय। यदि कभी कोई अशुद्ध प्रयोग मुँह से निकल जाय तो उसके लिए उसे लज्जित होना पड़ता है।

संस्कृत भाषा के निर्माण से यह तो लाभ हुआ कि भाषा की उच्छृङ्खलता दूर हो गई, तथा उसमें नियमन आया। किंतु, साथ ही साथ यह भी हुआ कि भाषा बँध कर जकड़ी गई, और कठिन होने तथा प्रगतिशील न होने के कारण बोल-चाल की भाषा न रह सकी। बोल-चाल की भाषा न रहने पर भी इसके सम्मान में कोई अन्तर नहीं हुआ। पण्डित विद्वानों की यही भाषा रही। ग्रन्थ लिखने तथा शिष्ट व्यवहार के लिए पण्डितों ने संस्कृत का ही प्रयोग किया।

वैदिक, पालि, संस्कृत

देश तथा अवस्था के प्रभाव से वैदिक भाषा की संतान पालि तथा प्राकृत भाषाएँ हुईं। इन भाषाओं में शब्दों के उच्चारण मुलायम तो हुए, किंतु प्रत्ययों के व्यवहार वैसे ही बने रहे। इसके विपरीत, संस्कृत व्याकरण ने वैदिक शब्दों को—मुलायम न होने दे—ज्यों के त्यों ले लिया; किंतु एक ही अर्थ में आने वाले अनेक प्रत्ययों में से केवल प्रचलित एक-दो को छोड़ सभी को रद्द कर दिया।

वैदिक, पालि, तथा संस्कृत के रूपों का तुलनात्मक अध्ययन करने के लिए निम्न तालिका देखें:—

१. व्यत्यय

वैदिक	पालि	संस्कृत
व्यत्ययो बहुलम् ३।१।८५ १. सुपां व्यत्ययः। वेद में सुबन्त विभक्तियों के प्रयोग में उलट पलट हो जाया करता है। जैसे :—सप्तमी के स्थान पर षष्ठी का; सप्तमी के स्थान पर प्रथमा का, इत्यादि। २. तिङां व्यत्ययः। वेद में तिङन्त के प्रयोग में उलट पलट हो जाया करता है। जैसे :— "चषालं ये अश्वयूपाय तक्षति।" यहाँ 'तक्षन्ति' बहुवचन के स्थान पर एक वचन हो गया है। ३. वर्णव्यत्ययः। वेद में किसी वर्ण के स्थान में कभी कभी कोई दूसरा वर्ण चला आता है। जैसे :—"शुभितम्"—शुधितम् इति प्राप्ते।" "तमसो गा अदुक्षत्"—अधुक्षत् इति प्राप्ते। "गृभाय"—गृहाण इति प्राप्ते इत्यादि। ४. काल व्यत्ययः। वेद में एक काल के स्थान में दूसरे काल का भी कहीं कहीं प्रयोग हो जाता है।	१. पालि में भी, वेद के समान ही सुबन्त प्रत्ययों का व्यत्यय हो जाता है। जैसे :—"एकं समयं" (=एकस्मिं समयस्मि)। "तेन समयेन" (तस्मि समयस्मि)। "अचिरपक्कंतस्स भगवतो" (अचिरपक्कंते भगवति)। "तेलस्स पिवित्वा" (=तेलं पिवित्वा)। "तस्स पटिसुत्वा" (=तं पटिसुत्वा)। २. पालि में भी वेद के समान ही तिङन्त प्रत्ययों का व्यत्यय हो जाता है। जैसे :—"अत्थि इमस्मिं काये केसा लोमा नखा इत्यादि"। यहाँ 'सन्ति' बहुवचन के स्थान पर एक वचन हो गया है। ३. पालि में भी वेद के समान ही वर्णों का व्यत्यय हो जाया करता है। जैसे :—'बुद्धेभि' (=बुद्धेहि)। "दुक्कट" (=दुक्कतं)। "ञाणं" (=ञानं)। "पलिघो" (=परिघो) इत्यादि। ४. पालि में भी वेद के समान ही अक्सर काल का व्यत्यय देखा जाता है। जैसे :—भूतकाल के अर्थ में—पुरे अधम्मो दिप्पति। "अनेक जाति संसारं सन्धाविस्सं"—भूतकाल के अर्थ में भविष्यकाल। "अति वेलं नमस्सिस्सति"—वर्तमान के अर्थ में भविष्यत्काल।	संस्कृत में ऐसे व्यत्यय नहीं होते हैं; क्योंकि इन व्यत्ययों को रोकने के लिए ही संस्कृत व्याकरण का निर्माण हुआ था।

वैदिक प्रयोग	पाणिनीय वैदिक प्रक्रिया के सूत्र	वैदिक प्रत्यय	ऋक्+अथर्व वेद में प्रत्यय-प्रयोग संख्या†	पालि समानता	संस्कृत
१. देवासः	७।१।५०	असुक	१७३८	देवासे। धम्मासे। बुद्धासे।	प्रथमा बहुवचन का यह रूप है। संस्कृत व्याकरण के निर्माण के समय यह रूप नहीं लिया गया।
२. देवेभिः	७।१।८	एभिः	९२०	देवेभि।* सदा यह रूप होता है।	तृतीया बहुवचन का यह रूप है।०
३. गोनाम्	७।१।५७	नाम्	३६	गोनं। गुन्नं।	'गो' शब्द के षष्ठी बहुवचनका रूप।०
४. पतिना	१।४।६	ना	.....	समान	संस्कृत व्याकरण ने इस प्रयोग को छोड़ दिया।

द्रष्टव्य—शेश्छन्दसि बहुलम् ६।१।७०। छन्दसि नपुंसकस्य पुंवद्भावो वक्तव्यः—इति महाभाष्ये। वैदिक भाषा में नपुंसक लिङ्ग के शब्द का बहुधा पुल्लिङ्ग रूप हो जाता है।

पालि में भी ऐसा होता है। 'फल' शब्द के प्रथमा बहुवचन में 'फला' और 'फलानि' दोनों रूप होते हैं। संस्कृत व्याकरण के निर्माण के समय यह रूप छोड़ दिया गया। ऋग्वेद और अथर्ववेद में ऐसे रूप २५७२ वार प्रयुक्त हुए हैं।

† E. V. Arnold's Historical Vedic Grammar से

* वैदिक प्रक्रिया के सूत्र ३।१।८४ के अनुसार 'ह' के स्थान में 'भ' हो जाता है। जैसे:—गृहाण=गृभाय।
पालि में भी ऐसा 'भ-ह' का परिवर्तन होता है। जैसे:—देवेहि=देवेभि।
संस्कृत व्याकरण ने ऐसे परिवर्तन को रोक दिया।

विशेष द्रष्टव्यः—चतुर्थ्यर्थे बहुलं छन्दसि २।३।६२। षष्ठ्यर्थे चतुर्थीति वाच्यम् (वार्तिक)। वेद में बहुधा चतुर्थी के अर्थ में षष्ठी, तथा षष्ठी के अर्थ में चतुर्थी होती है।

पालि में चतुर्थी तथा षष्ठी के रूप प्रायः समान रहते हैं। जैसे:—ब्राह्मणस्स धनं वाति। ब्राह्मणस्स सिस्सो। संस्कृत व्याकरण ने इस अदल-बदल को रोक दिया।

३. क्रिया

वैदिक प्रयोग	वैदिक प्रक्रिया के सूत्र	पालि-समानता	संस्कृत
इच्छते	३।१।८५ परस्मैपद व्यत्ययः। 'इच्छति' इति प्राप्ते।	समान	संस्कृत व्याकरण ने इस व्यत्यय को रोक कर, धातु के पद का निश्चय कर दिया।
युध्यति	,, आत्मनेपद व्यत्ययः। 'युध्यते' इति प्राप्ते।	समान	
शृणुधी	६।४।१०२ अनुज्ञा मध्यम पुरुष एक वचन का रूप है। इसी तरह, 'कृधि', 'अपावृधि' इत्यादि।	सुणुहि। पालि में यह रूप बड़ा साधारण है।	संस्कृत व्याकरण ने इस प्रयोग को छोड़ दिया।
शृणोत	७।१।४५ अनुज्ञा मध्यम पुरुष बहुवचन का रूप है।	सुणोथ। ,,	संस्कृत व्याकरण ने इस प्रयोग को छोड़ दिया।
एमसि	७।१।४६ वर्तमान काल उत्तम पुरुष बहुवचन का रूप है।	एमसे। भवामसे।	संस्कृत व्याकरण ने इस प्रयोग को छोड़ दिया।
बधीं	७।१।४० लुङ लकार में उत्तम पुरुष एक वचन का रूप है।	बधिं। पालि में यह रूप बड़ा साधारण है।	संस्कृत व्याकरण ने इस प्रयोग को छोड़ दिया।
बधीं	६।४।७५ लुङ् लकार में उत्तम पुरुष एक वचन का रूप है। इस लकार में धातु के पहले जो 'अ' का आगम होता है, वह वेद में विकल्प से नहीं भी होता है।	बधिं। वैदिक भाषा और पालि में यह बड़ी भारी समानता है।	संस्कृत व्याकरण ने इस प्रयोग को छोड़ दिया।

वैदिक प्रयोग	वैदिक प्रक्रिया के सूत्र	पालि-समानता	संस्कृत
वर्धन्तु वर्धयन्तु	३।४।११७ वेद में सार्वधातुक तथा आर्धधातुक दोनों ही नियमों के अनुसार धातु-प्रत्यय जोड़े जाते हैं।	बड्ढन्तु बड्ढयन्तु } समान	संस्कृत व्याकरण ने इस प्रयोग को छोड़ दिया।
दाति ददाति	२।४।७५-७६ वेद में द्वित्व होने वाले धातुओं का द्वित्व विकल्प से होता है।	समान	संस्कृत व्याकरण ने द्वित्व न होनेवाले प्रयोग को छोड़ दिया।
भेदति मरति	३।१।८५ विकरण व्यत्ययः।	समान	संस्कृत व्याकरण ने 'विकरण व्यत्यय' रोक दिए।
हनति	२।४।७२-७३।	समान	संस्कृत व्याकरण ने इस प्रयोग को छोड़ दिया।

विशेष द्रष्टव्यः—'लुङ्' का प्रयोग ब्राह्मणों में तथा Classical Sanskrit (नवीन निर्मित) संस्कृत में प्रायः लुप्त हो गया, जो सभी जानते ही हैं। वैदिक भाषा में 'लुङ्' का प्रयोग बड़ा साधारण है। 'लुङ' का प्रयोग ऋग्वेद और अथर्ववेद में ५५१८ बार हुआ है; जो 'लिट्' तथा 'लङ्' लकार से भी अधिक है।

E. V. Arnold's Historical eadic Garmmar Page 323.

पालि में भी 'लुङ्' (=अज्जतनी=भूत) का प्रयोग वैदिक भाषा ही की तरह प्रचुरता से पाया जाता है। जैसे :—अहोसि। अकासि। अगच्छि।

नीचे E. V. Arnold के Histotical Vedical Grammar से वैदिक-धातु-प्रयोग के आँकड़े दिये गये हैं, जिनसे उनके आपेक्षिक प्रयोग मालूम हो जायेंगे।

क्रिया	ऋक् तथा अथर्व वेद में धातु-प्रयोग-संख्या	विवरण
वर्तमान काल (लट्)	१३४२१	परस्मै पद ६५७६ आत्मने पद ३८४२
भूत काल (लुङ्)	५५१८	पालि में बहुत अधिक प्रयोग है।
,, ,, (लिट्)	७६	पालि में बहुत कम प्रयोग।
भविष्यत् काल (लृट्)	७६५	पालि में भी प्रयोग।
,, ,, (लुट्)	०	पालि में भी नहीं। किंतु संस्कृत में प्रयोग होता है।
सप्तमी लिङ्	१८१७	पालि में अधिक प्रयोग।
(लेट्)	८६२	पालि, प्राकृत, संस्कृत में प्रयोग नहीं होता है।
कालातिपत्ति (लृङ्)	०	पालि, संस्कृत में प्रयोग।
प्रेरणार्थक (आय)	२७१३	पालि में प्रयोग।
,, (आप)	१४८	पालि में समान रूप से प्रयोग।
नामधातु	६३८	पालि में प्रयोग।
सनन्त (इच्छार्थक)	४३०	पालि में कम प्रयोग।
यङन्त	५२०	पालि में बहुत कम प्रयोग।
भाव-कर्म वाचक (लुङ् को छोड़कर)	१७७७	पालि में प्रयोग।
निमित्तार्थक	१३४५	पालि में अधिक प्रयोग।
पूर्वकालिक	२२२७	पालि में अधिक प्रयोग।

भूतकालिक क्रियापद के आदि में 'अकार' का आगम ८१४० स्थान पर हुआ है, और १७०४ स्थान पर नहीं हुआ है। पालि तथा प्राकृत में भी अकार का आगम विकल्प से होता है। संस्कृत में ऐसा नहीं है।

५. कृदन्त

वैदिक प्रयोग के उदाहरण	प्रत्यय	किस अर्थ में	वैदिक प्रक्रिया के सूत्र	पालि समानता	संस्कृत
दातवै, दातवे	तवै, तवे	निमित्तार्थक	३।४।८। वेद में निमित्तार्थक और १४ प्रत्यय हैं। जैसे—से, सेन, असे, असेन, कसे, कसेन, अध्यै, अध्यैन, कध्यै, कध्यैन, शध्यै, शध्यैन, तवेन तुं।	दातवे। पालि में 'दातुं' रूप भी होता है। किंतु, शेष प्रत्यय नहीं होते। वेद में निमित्तार्थक प्रत्ययों की संख्या आश्चर्यजनक अधिक है। भिन्न भिन्न प्रान्तों में ये रूप व्यवहृत होते होंगे।	संस्कृत व्याकरण ने केवल एक 'तुं' प्रत्यय को रख कर बाकी सभी को छोड़ दिया।
परिधापयित्वा	त्वा	पूर्वकालिक	७।१।३८। ल्यप के स्थान में भी 'त्वा' का प्रयोग होता है।	समान। पालि में 'ल्यप' के स्थान में 'त्वा का प्रयोग बहुत साधारण है।	संस्कृत में ऐसा नहीं होता है।
गत्वाय	त्वाय	,,	७।१।४७। 'त्वा' से परे 'य' का आगम होता है।	गत्वान। त्वा से परे 'न' का आगम होता है।	संस्कृत व्याकरण ने इस प्रयोग को छोड़ दिया।
इष्ट्वीन	त्वीन	,,	७।१।४८। इष्ट+त्वीन	कातून। पालि में 'त्वीन' का 'तून' हो गया	संस्कृत व्याकरण ने इस प्रयोग को छोड़ दिया।
जनित्वन	त्वन	भावार्थक	Macdonell §218। यह प्रत्यय ऋक् और अथर्व वेद में ३३ वार प्रयुक्त हुआ है।	जायत्तन। त्वन' का 'त्तन' हो गया है।	संस्कृत व्याकरण ने इस प्रयोग को छोड़ दिया।

वेद और अशोक-पालि

१. वेद में ह्रस्वान्त क्रिया-पदों का कभी कभी दीर्घ हो जाता है। ६।३।१३५। जैसे:—विद्मा—विद्मइति प्राप्ते। चक्रा—चक्रइति प्राप्ते।

विद्मा तें अग्ने त्रेधा त्रयाणि
विद्मा ते धाम विभृता पुरुत्रा
विद्मा ते नाम परमं गुहा यद्
विद्मा तमुत्सं यत आजगंथ।

ऋ० मं० १०। सू० ४५। मं० २

अशोक-पालि में भी इसी तरह दीर्घ होता है। जैसे:—

"पियदसि लाजा मागधं संघं अभिवादनं आहा (=आह)। अपा बाधतं च फासु विहालतं चा"—भाब्रू शिला-लेख।

संस्कृत व्याकरण ने इस तरह के प्रयोग छोड़ दिए।

निपातस्य च ६।३।१३६—यह बताता है कि वैदिक भाषा में निपात का भी दीर्घ हो जाता है। जैसे:—

"एवा (=एव) हि ते"

अशोक-पालि में भी इस तरह निपात का दीर्घ होता है। जैसे:—

"अपाबाधतं च फासु विहालतं चा"।

संस्कृत व्याकरण ने इस तरह निपात का दीर्घ होना रोक दिया।

× × ×

ऊपर की तालिकाओं को देख कर हम इसका कुछ अनुमान कर सकते हैं, कि भिन्न-भिन्न प्रान्तों में बोली जाने वाली वैदिक भाषाओं की अगाध विभिन्नताओं को ले, उनका नियमन करने में संस्कृत व्याकरण बनाने वाले आचार्यों को कितनी कठिनाई का सामना करना पड़ा होगा। व्याकरण ऐसा होना चाहिए था, कि जो सरल तथा उपयोगी होने के साथ-साथ तमाम वैदिक प्रयोगों को भी सिद्ध कर सके।

संस्कृत व्याकरण ने इस कठिनाई का सामना मुख्यतः दो प्रकार से किया:—

१. प्रयोगों की विभिन्नता के विषय में स्पष्ट उल्लेख कर, कि अमुक प्रयोग इस प्रान्त में व्यवहृत होते हैं। जैसे:—

इति प्राचाम्; इति उदीचाम्।

२. धातु-पाठ में सभी धातुओं का संकलन कर, जो कहीं न कहीं प्रयुक्त होते थे। इसी लिए, धातु-पाठ में हम ऐसे धातु अधिक पाते हैं, जिनका उपयोग संस्कृत में बिल्कुल नहीं मिलता।

वेद में ऐसे-ऐसे मन्त्र आते हैं, जो साधारण वैदिक भाषा से बिल्कुल भिन्न भाषा में लिखे मालूम होते हैं। वह अवश्य किसी गौण प्रान्तीय भाषा का उदाहरण हैं, जो साधारण भाषा से बहुत दूर मालूम होती है।

संस्कृत-व्याकरण का ऐसा होना आवश्यक था जो इस प्रकार के सभी प्रयोगों को सिद्ध कर सके।

उदाहरण के लिए, हम नीचे ऋग्वेद के मन्त्र देते हैं, जो देखने में बड़े विलक्षण मालूम होते हैं; किंतु जिन्हें सायणाचार्य ने पाणिनीय व्याकरण से ही सिद्ध किया है।

सृण्येव जर्भरी तुर्फरीतू नैतोशेव तुर्फरी पर्फरीका।
उदन्यजेव जेमना मदेरू ता मे जराय्वजरं मरायु॥
पज्रेव चर्चरं जारं मरायु क्षद्मेवार्थेषु तर्तरीथ उग्रा
ऋभू नापत्खरमज्रा खरज्रुर्वायुर्न पर्फरत्क्षयद्रयीणाम्

मं० १०। अ० ९। सू० १०६

———



तीसरा खण्ड

पालि के विकृत रूप

धीरे-धीरे भिन्न-भिन्न प्रान्तों में वहाँ की अपनी बोली का प्रभाव शुद्ध पालि पर पड़ने लगा, और अशोक के काल तक एक ही पालि के अनेक विकृत रूप हो गए। इन्हीं विकृत रूपों को हम अशोक के भिन्न-भिन्न शिला-लेखों में पाते हैं। किसी एक ही लेख के कई पाठों को देखने से स्पष्ट पता चलता है कि वे एक ही भाषा के भिन्न रूप हैं, जो वहाँ-वहाँ की प्रान्तीय बोली के प्रभाव के कारण विकृत हो गई है। किंतु, सभी उसे साधारण रूप से समझते होंगे। ठीक वैसे ही, जैसे आज भी मगही, भोजपुरी, मैथली, तथा अवधी आपस में काफी भिन्नता रखतीं हैं, तो भी सभी की समझ में आ जाती हैं। उदाहरण के लिए, हम अशोक के एक लेख को लें, जो तीन भिन्न-भिन्न स्थानों में मिलता है:—

क

गिरनार का प्रथम शिला-लेख

(पश्चिम)

इयं धंमलिपी देवानं प्रियेन प्रियदसिना राञा लेखापिता। इध न किंचि जीवं आरभित्पा प्रजूहितव्यं। न च समाजो कतव्यो। बहुकं हि दोसं समाजम्हि पसति देवानं प्रियो प्रियदसि राजा। अस्ति पितु एकचा समाजा साधुमता देवानं प्रियस प्रियदसिनो राञो। पुरा महानसम्हि देवानं प्रियस प्रियदसिनो राञो अनुदिवसं बहूनि प्राणसतसहस्रानि आरभिसु सूपाथाय। से अज यदा अयं धंमलिपि लिखिता ती एव प्राणा आरभरे सूपाथाय—द्वे मोरा, एको मगो। सोपि मगो न ध्रुवो। एतेपि त्री प्राणा पछा न आरभिसरे।

ख

जौगढ़ में उसी लेख का दूसरा पाठ

(पूर्व)

इयं धम्मलिपि खपिंगलसि पवतसि देवानं पियेन लाजिना लिखापिता। हिद नो किछि जीवं आलभितु पजोहितविये, नापि समाज कटविये। बहुकं हि दोसं समाजस दखति देवानं पिये पियदसि लाजा। अथि चु एकतिया समाजा साधुमता देवानं पियस पियदसिने लाजिने। पुलुवं महानससि देवानं पियस पियदसिने लाजिने अनुदिवसं बहूनि पानसत सहसानि आलभियिसु सुपठाये। से अज अदा इयं धंमलिपी लिखिता तिनि येव पानानि आलभियंति—दुवे मजुला एक मिगे। से पि चु मिगे नो धुवं। एतानि पि चु तिनि पानानि पछा नो आलभियिसंति।

ग

मनसेहर में उसी लेख का तीसरा पाठ

(उत्तर)

अयि ध्रमदिपि देवन प्रियेन प्रियद्रशिन राजिन लिखपित। हिद नो किचि जिवे आरभितु प्रयुहोतविये। नो पिच समज कटविय। बहुक हि दोष समजस देवनं प्रिये प्रियदर्शि रज देखति। अस्ति पिचु एकतिय समज साधुमत देवनं प्रियस प्रियदर्शिने राजिने। पुर महनससि देवनं प्रियस प्रियदर्शिस राजिने अनुदिवसं बहुनि प्रणशत-सहस्रानि आरभिसु सुपथये। से इदनि यद अपि ध्रमदिपि लिखित तद तिनि येव प्रणनि अरभियंति—दुवे मजर एके म्रिगे। से पि चु म्रिगे नो ध्रुवं। एतनि पि चु तिनि प्रणनि पच नो आरभिसंति।

पालि और गाथा-संस्कृत

पालि भाषा से बिल्कुल मिलती-जुलती, संस्कृत का कुछ स्वरूप लिए एक सुन्दर भाषा में लिखे 'महावस्तु', 'ललित विस्तर' आदि अनेक ग्रन्थ प्राप्त होते

हैं, जिनके विषय तथा रंग-ढंग त्रिपिटक के ही हैं। त्रिपिटक की प्राचीनता तथा मौलिकता का प्रभाव इन ग्रन्थों पर भी वैसा ही है। त्रिपिटक के कितने सूत्र तथा गाथा इन ग्रन्थों में हूबहू वैसे ही मिलते हैं। केवल, उनकी भाषा पर थोड़ा संस्कृत का रंग चढ़ा है। इस भाषा को 'गाथा संस्कृत' कहते हैं।

गाथा-संस्कृत का उदाहरण निम्न पदों में देखिए, जो पालि धम्मपद से एकदम मिलते हैं:—

सहस्र मपि वाचानां अनर्थपदसंहिता।
एका अर्थवती श्रेया यां श्रुत्वा उपशाम्यति ॥
यो शतानि सहस्राणां संग्रामे मनुजा जये।
यो चैकं जये आत्मानं स वै संग्रामजित् वरः ॥
यत्किंचिदिष्टं च हुतं च लोके,
संवत्सरं यजति पुण्यप्रेक्षी।
सर्वं पि तं न चतुर्भागमेति,
अभिवादनं उज्जुगतेषु श्रेयं ॥

('पेरिस' से प्रकाशित) महावस्तु, पृष्ठ-४३४-४३५

इन्हीं गाथाओं का पालि धम्मपद में निम्न प्रकार पाठ है:—

सहस्समपि चे वाचा अनत्थपदसंहिता
एकं अत्थपदं सेय्यो यं सुत्वा उपसम्मति ।८।१
यो सहस्सं सहस्सेन सङ्गामे मानुसे जिने
एकं च जेय्यमत्तानं स वे सङ्गामजुत्तमो ॥८।४
यं किंचि यिट्ठं च हुतं च लोके
संवच्छरं यजेथ पुञ्ञपेक्खो।
सब्बम्पि तं न चतुभागमेति,
अभिवादना उज्जुगतेसु सेय्यो ॥८।९

पालि और अर्धमागधी

जैन धर्म के ग्रन्थ अर्धमागधी में लिखे हैं, अतः उसे जैन-मागधी भी कहते हैं। जैन-मागधी त्रिपिटक पालि से भाषा और शैली दोनों में घनिष्ठ समानता रखती है।

किसी जैन सूत्र को देखने से मालूम पड़ता है, कि इसमें वही शैली वर्ती गई है जो पालि सूत्रों में है। उदाहरण के लिए:—

मूल

१. सुयं मे, आवुसं ! तेण भगवया एवं अक्खायं। इहं एगेसिं नो सन्ना भवति। एवं एगेसिं नो नातं भवति। तं जहा:—"के अहं आसी ? के वा इओ चुए पेच्चा भविस्सामि ?"

(आचारंग-सुत्ते—सत्थ परिन्ना)

२. ततो णं सक्के देविन्दे देवराया सणियं सणियं जान-विमाणं पट्ठवेइ। पट्ठवेत्ता सणियं सणियं जान-विमाणाओ पच्चोतरति। पच्चोतरित्ता जेनेव समणे भगवं महावीरे, तेणेव उवागच्छति। तेणेव उवागच्छित्ता समणं भगवं महावीरं तिक्खुत्तो आदाहिणं पदाहिणं कारेति। कारेत्ता वन्दति, नमस्सति।

३. ततो णं समणस्स भगवओ महावीरस्स एतेणं विहारेणं विहरमाणस्स बारस वासा वितिक्कन्ता। तेरसमस य वासस्स परियाए वत्तमाणस्स[1]........साल-रुक्खस्स अदूर-सामन्ते,........निव्वाणे कसिणे पडिपुण्णे निरावरणे अनुत्तरे समुपन्ने।

४. से भगवं अरहा जिणे जाए सव्वञ्ञू सव्वभाव-दरिसी सव्वदेव-मणुयासुरस्स लोयस्स पज्जाये जाणती। तं जहा:—आगतिं, गतिं, ठितिं, चवणं, उववायं, आवि-कम्मं, रहोकम्मं जाणमाणे पासमाणे एवं विहरइ।

(आचारंग-सुत्ते—भावना)

५. तहा विमुक्कस्स परिन्नचारिणो।
धितीमतो दुक्ख-खमस्स भिक्खुणो॥
विसुज्झती जंसि मलं पुरे कडं।
समीरियं रुप्पमलं व जोतिणा॥१॥
इमम्मि लोए परतो य दोसु वि।
न विज्जती बन्धणं जस्स किंचि वि॥

सेहु निरालम्बयो अप्पतिट्ठिते।
कलं-कली-भाव-पहं विमुच्चइ ॥२॥
(आचारंग-सुत्ते—विमुत्ती)

मूलकी पालि-छाया

१. सुतं मे (मया), आवुसो! तेन भगवता एवं अक्खातं। इह एकेसं नो सञ्ञा भवति। एवं एकेसं नो ञातं भवति। तं यथा:—"को अहं आसिं? को वा इतो चुतो पेच्चा भविस्सामि?

(आचारंग-सुत्ते—सत्थपरिञ्ञा)

२. ततो णं सक्को देविन्दो देवराजा सनिकं सनिकं यान-विमानं पट्ठपेति। पट्ठपेत्वा, सनिकं सनिकं यान-विमानतो पच्चोतरति। पच्चो तरित्वा, येनेव समणो भगवं महावीरो, तेनेव उपागच्छति। तेनेव उपागच्छित्वा समणं भगवन्तं महावीरं तिक्खत्तुं आवाहिणं पदाहिणं (पदक्खिणं) कारेति। कारेत्वा वंदति, नमस्सति।

३. ततो णं समणस्स भगवतो महावीरस्स एतेन विहारेण विहरमानस्स, बारस वस्सा वितिक्कन्ता। तेरसमस्स च वस्सस्स परियायो वत्तमान— साल-रुक्खस्स अदूर-सामन्ते, निब्बाणं कसिणं परिपुण्णं निरावरणं अनुत्तरं समुप्पं।

४. सो भगवं अरहा जिनो जातो, सब्बञ्ञू सब्बभाव-दस्सी सब्ब-देव-मनुज-असुरस्स लोकस्स पञ्ञाय जानाति। तं यथा:—'आगतिं, गतिं, ठितिं, चवनं, उपपादं, आविकम्मं, रहोकम्मं जानमानो पस्समानो एवं विहरति।

(आचारंग-सुत्ते—भावना।)

५. तथा विमुत्तस्स परिञ्ञ-चारिणो।
धीतिमतो दुक्ख-खमस्स भिक्खुनो॥
विसुज्झति यस्मिं (येन) मलं पुरे कतं।
समीरितं रुप्प-मलं व जोतिना ॥१॥

इमम्हि लोके परतो च द्वेसु पि।
न विज्जति बन्धनं यस्स किं चि पि॥
सो हि निरालम्बने अप्पतिट्ठिते।
कथं-कथी-भाव-पहं विमुच्चति ॥२॥

(आचारंग-सुत्ते—विमुत्ति)

चौथा खण्ड

साहित्य

बुद्ध के अपने सारे उपदेश मौखिक ही थे। उनके शिष्य उन उपदेशों को याद कर लेते थे। जब किसी को कुछ शंका होती थी तो स्वयं बुद्ध के पास जा कर उसका निवारण कर लेता था।

त्रिपिटक

बुद्ध के महापरिनिर्वाण प्राप्त कर लेने पर महाकाश्यप, आनन्द आदि उनके प्रमुख शिष्यों ने आपस में तै किया कि सभी बड़े-बड़े स्थविर भिक्षुओं की एक सभा बुलाई जाय और भगवान् के सारे उपदेशों का संग्रह कर लिया जाय। उस सभा के लिए पाँच सौ अर्हत् स्थविर चुने गए। सभा के लिए राजगृह की सप्तपर्णी गुहा ठीक की गई। प्रथम मास में स्थान की मरम्मत आदि सारी तैयारियाँ कर ली गईं; और दूसरे मास में बैठक शुरू हुई। यही बैठक प्रथम संगीति के नाम से प्रसिद्ध है। सौ वर्ष बाद वैशाली में इसी तरह की दूसरी, और अशोक की प्रेरणा से पाटलिपुत्र में तीसरी संगीति हुई।

भगवान् के सारे उपदेश संग्रह कर लिए गए। इस संग्रह का नाम 'त्रिपिटक', अर्थात् तीन पिटारी है:—१. सुत्तपिटक, २. विनयपिटक, ३. अभिधम्म पिटक। जब सम्राट् अशोक के पुत्र कुमार महेन्द्र भिक्षु बन कर प्रचार के उद्देश्य से लंका गए तो उन्होंने वहाँ इसी त्रिपिटक का उपदेश दिया। लंका के विख्यात राजा वट्टगामनी के संरक्षण में त्रिपिटक के सारे ग्रन्थ लिख लिए गए।

लंका, बर्मा, स्याम आदि बौद्ध राष्ट्रों में त्रिपिटक का स्थान सर्वोच्च है। वहां इन ग्रन्थों का प्रचार तथा आदर उतना ही अधिक है जितना भारतवर्ष में आज रामायण-महाभारत का है। उन देशों ने त्रिपिटक के मूल पालि-ग्रन्थों को

अपनी-अपनी लिपि में कर लिया है। त्रिपिटक के प्रति बौद्ध राष्ट्रों की श्रद्धा का अन्दाजा तब लगता है, जब हम देखते हैं कि वर्मा के राजा मैण्डुम ने महाभारत से तिगुने बड़े त्रिपिटक के सारे ग्रन्थों को पत्थल की पट्टियों पर खुदवा कर सुरक्षित रख दिया है।

पश्चिम देशों में भी आज-कल इन ग्रन्थों का प्रचार खूब हो रहा है। रायस डेविड्स जैसे पालि-विद्वानों की प्रेरणा से लन्दन में एक समिति स्थापित की गई थी, जिसका नाम 'पालि-टेक्स्ट सोसाइटी' है। इस सोसाइटी ने त्रिपिटक के प्रायः सारे ग्रन्थों को रोमन लिपि में प्रकाशित कर दिया है। पालि-भाषा के और भी अनेक ग्रन्थ तथा अंगरेजी अनुवाद मुद्रित कर इस सोसाइटी ने पालि-पाण्डित्य की बड़ी सेवा की है।

आज संसार के प्रायः सभी बड़े-बड़े विश्वविद्यालयों में पालि-भाषा की पढ़ाई होती है। अमेरिका के हरवर्ट विश्वविद्यालय से पालि-ग्रन्थों के मूल तथा अनुवाद का सुन्दर प्रकाशन हो रहा है। हौलेण्ड के विश्वविद्यालय से पालि की एक पाण्डित्यपूर्ण डिक्शनरी निकाली जा रही है। पेरिस, बर्लिन, मास्को आदि सभी विश्वविद्यालयों में पालि भाषा की ऊँचे दर्जे की पढ़ाई है।

भारतवर्ष में, पालि-भाषा की पढ़ाई केवल कलकत्ता तथा बम्बई विश्वविद्यालयों में है। बिहार तथा युक्त-प्रान्त के—ठीक वहीं जहाँ पालि भाषा का जन्म तथा विकास हुआ—विश्वविद्यालयों में पालि की पढ़ाई नहीं के बराबर है। किमाश्चर्य्यं अतः परं!

नव अङ्ग

त्रिपिटक में जगह-जगह पर साहित्य के नव अङ्गों का जिक्र आता है। (१) सूत्र—भगवान् के दिए हुए धार्मिक उपदेश, जो गद्य में संग्रह किए गए हैं। (२) गेय्य—उपदेश जो गद्य-पद्य में संग्रह किए गए हैं। (३) वेय्याकरण—व्याख्या, भाष्य। (४) गाथा—पद-बद्ध संग्रह। (५) उदान—भावातिरेक के कारण सन्तों के मुँह से अनायास निकले वाक्य। (६) इतिवुत्तक—छोटी-छोटी भगवान् की उक्तियों का संग्रह। (७) जातक—भगवान् के पूर्व-जन्म की कथाएँ। (८) अब्भुतधम्म—यौगिक सिद्धियों का वर्णन। (९) वेदल्ल—प्रश्न-उत्तर के ढंग पर लिखे गए।

इन नव अंगों का जिक्र आने से पता चलता है कि त्रिपिटक के निर्माण के समय यह सारे अंग मौजूद थे। ये सभी नव अङ्ग 'सूत्र पिटक' ही में मिलते हैं।

१. सुत्त पिटक

सूत्र पिटक में पाँच निकाय हैं—१. दीघ निकाय, २. मज्झिम निकाय, ३. संयुत्त निकाय, ४. अङ्गुत्तर निकाय, और ५. खुद्दक निकाय। खुद्दक निकाय में पन्द्रह ग्रन्थ हैं—१. खुद्दक पाठ, २. धम्मपद, ३. उदान, ४. इतिवुत्तक, ५. सुत्तनिपात, ६. विमानवत्थु, ७. पेतवत्थु, ८. थेरगाथा, ९. थेरीगाथा, १०. जातक, ११. निद्देस, १२. पटिसम्भिदामग्ग, १३. अपदान, १४. बुद्धवंस, १५. चरियापिटक।

सूत्रों की शैली

सूत्र-पिटक के प्रायः सभी सूत्र भगवान् के दिए उपदेश हैं। सारिपुत्र, मोग्गल्लान आदि भगवान् के प्रधान शिष्यों के द्वारा भी उपदिष्ट कुछ सूत्र शामिल कर लिए गए हैं, जिनका अनुमोदन भगवान् ने अंत में कर दिया है। प्रत्येक सूत्र के प्रारम्भ में उस स्थान का नाम दे दिया जाता है, जहाँ भगवान् ने उसका उपदेश दिया; जैसे—"एकं समयं भगवा सावत्थियं विहरति जेतवने अनाथपिण्डिकस्स आरामे।" धर्म्मोपदेश शुरू करने के पूर्व, इस बात का सविस्तार वर्णन रहता है कि किस अवसर पर किस सिलसिले में वह उपदेश दिया गया था। उपदेश के समय जो प्रश्नोत्तर होते थे उनका भी पूरा-पूरा हवाला मिलता है। उपदेश के अन्त में श्रद्धा से गद्गद हो कर श्रावक जो संतोष प्रकट करता था उसके बारे में भी बड़े सुन्दर वाक्य आते हैं; जैसे—

"अभिक्कन्तं भो गोतम, अभिक्कन्तं भो गोतम, सेय्यथापि भो गोतम निक्कुज्जितं वा उक्कुज्जेय्य, पतिच्छन्नं वा विवरेय्य, मूळ्हस्स वा मग्गं आचिक्खेय्य, अन्धकारे वा तेलपज्जोतं धारेय्य, चक्खुमन्तो रूपानि दक्खन्तीति......।

अर्थात्—हे गौतम! आप ने खूब कहा! जैसे उल्टे को सीधा कर दे, ढके को खोल दे, भटके को राह दिखा दे, अन्धकार में तेल-प्रदीप जला दे कि आँख वाले रूपों को देख लें.........।

कुछ सूत्रों के अन्त में ऐसा भी आता है—"इदमवोच भगवा। अत्तमना ते

भिक्खू भगवतो भासितं अभिनन्दुं ति।" अर्थात्—भगवान् ने यह कहा। संतुष्ट हो कर उन भिक्षुओं ने भगवान् के कहे का अभिनन्दन किया।

सूत्रों की भाषा

साधारणतः सभी सूत्र गद्य में हैं, किंतु कहीं-कहीं गाथाएँ भी काफी आती हैं। कितने सूत्र तो पद्य ही में हैं। भाषा बड़ी सजीव और प्रभावपूर्ण है।

'धम्मचक्क पवत्तन सूत्र' में भोगवाद की निन्दा करते हुए भगवान् कहते हैं—"....यो चायं भिक्खवे! कामेसु कामसु सुखल्लिकानुयोगो हीनो, गम्मो, पोथुज्जनिको, अनरियो, अनत्थसंहितो....।" अर्थात्—भिक्षुओ! जो यह खाओ-पीओ-मौज करो का सिद्धान्त है वह हीन है, ग्राम्य है, अनार्य, अनर्थंकर है....।

सतिपट्ठान सूत्र उपदेश करते हुए भगवान् कहते हैं—"एकायनो अयं भिक्खवे मग्गो, सत्तानं विसुद्धिया, सोकपरिद्दवानं समतिक्कमाय, दुक्खदोमनस्सानं अत्थङ्गमाय, ञाणस्स अधिगमाय, निब्बाणस्स सच्छिकिरियाय, यदिदं चत्तारो सतिपट्ठाना"।

अर्थात्, भिक्षुओ! यही अकेला एक मार्ग है—जीवों की विशुद्धि के लिए, शोक और व्याकुलता के समतिक्रमण के लिए, दुःख और दौर्मनस्य को अस्त करने के लिए, ज्ञान की प्राप्ति के लिए, तथा निर्वाण को साक्षात्कार करने के लिए—जो यह चार स्मृति-उपस्थान हैं।

राजा से, एक साधारण सिपाही से, वेश्या से, डाकू से, विद्यार्थी से, तर्क करने के लिए आए बड़े-बड़े पण्डितों से, अपनी जाति के अभिमान में चूर ब्राह्मणों से, भिखमंगे कोढ़ी से, मुक्ति के लिए लालायित सत्यगवेषकों से, सभी से जो बुद्ध की बात-चीत हुई है उसे पढ़ने से उसमें बड़ी जान मालूम होती है। भाषा इतनी सरल और सहज है कि कृत्रिमता की उसमें गन्ध तक नहीं आती।

ऊपर कहा जा चुका है कि ये ग्रन्थ लिखे नहीं जाते थे। आचार्य-शिष्य परम्परा से निकाय के निकाय भिक्षुओं को कण्ठ रहते थे। भाषा की सब से बड़ी विशेषता यह है कि सूत्रों को कण्ठ करना बड़ा आसान है। मिलने, विदा लेने, कुशल क्षेम पूछने, विगड़ने, आश्चर्य करने, परिताप करने, लोगों से सम्मानित होने, आदि साधारण-साधारण अवसरों पर जो वाक्य या वाक्यावली आती हैं वह सभी जगहों पर एक ही ढंग की होती हैं। वही वाक्य बार-बार आने से अना-

यास ही जीभ पर चढ़ जाता है। जैसे सूत के गोले को फेकने से वह उघरता हुआ बढ़ता जाता है, वैसे ही पाली के सूत्रों को पढ़ने से आगे के वाक्य स्वयं जीभ पर आने लगते हैं। शायद इसी लिए इस भाषा-शैली को "तन्ति"=तन्त्री=सूत कहते हैं।

पेय्यालं

प्रायः, किसी एक ही वाक्य के बार-बार आने पर सरलता के लिए एक दो शब्द लिखने के बाद "पेय्यालं" लिख कर छोड़ देते हैं, जिससे समझ लिया जात. है कि इसका पाठ ऊपर बार-बार आए वाक्य के समान ही होगा। 'पेय्यालं' का अर्थ लंका में करते हैं, "पातुं अलं"—अर्थात्, इतने से वाक्य समझ लिया जा सकता है, और यह पाठ को बचाए रखने के लिए पर्याप्त है।

रायस डेविड्स अपनी डिक्शनरी में इस शब्द का अर्थ लिखते हुए कहते हैं—" 'परियाय' शब्द का मागधी स्वरूप"। हमने 'पालि' शब्द की जो उत्पत्ति बताई है उससे रायस डेविड्स का अर्थ बिलकुल मिल जाता है। 'पालि' और 'पेय्याल' एक ही चीज है जो मूल बुद्ध-वचन को बोध करता है।

पाँच निकाय

सूत्र-पिटक के ग्रन्थों को पाँच निकायों में विभक्त करने में सूत्रों के विषय का नहीं, किंतु उनके आकार-प्रकार का विचार किया गया है। लम्बे-लम्बे सूत्रों का संग्रह करके उसका नाम 'दीघनिकाय' रक्खा गया। उसी तरह, मध्यम प्रमाण के सूत्रों के संग्रह को 'मज्झिम निकाय', तथा छोटे-छोटे सूत्रों के संग्रह को 'खुद्दक निकाय' कहा। कुछ छोटे बड़े दोनों प्रकार के सूत्रों के संग्रह का नाम 'संयुत्त निकाय' रक्खा गया। संयुत्त निकाय में पाँच वर्ग हैं; १. सगाथ वर्ग, २. निदान वर्ग, ३. स्कन्ध वर्ग, ४. षडायतन वर्ग, ५. महावर्ग। इसी निकाय के भीतर वर्गों का विभाजन विषय की दृष्टि से किया गया है। दूसरे निकायों में भाग या वर्ग का विभाजन विषय की नहीं, किंतु सूत्रों के आकार की ही दृष्टि से किया गया है।

एकक निपात, द्विक निपात, तिक निपात आदि अङ्गुत्तर निकाय में ग्यारह निपात हैं। एक-एक धर्म बताने वाले सूत्र एकक निपात में, दो-दो धर्म बताने

वाले सूत्र द्विक निपात में—तथा ग्यारह-ग्यारह धर्म बताने वाले सूत्र एकादस निपात में हैं। जैसे:—

एकक निपात—

नाहं भिक्खवे अञ्ञं एकधम्मम्पि समनुपस्सामि, यो एवं महतो अनत्थाय संवत्तति, यदिदं भिक्खवे पापमित्तता। पापमित्तता भिक्खवे महतो अनत्थाय संवत्तति।"

अर्थात्—भिक्षुओ ! मैं किसी भी दूसरी चीज को नहीं देखता हूँ, जो इतनी ज्यादा अनर्थंकर हो, जितनी 'पाप मित्रता'। भिक्षुओ ! पापमित्रता बहुत अनर्थकारी है।

द्विक निपात—

"द्वे मे भिक्खवे, असनिया फलन्तिया न सन्तसन्ति। कतमे द्वे ? भिक्खू च खीणासवो, सीहो च मिगराजा। इमे० खो भिक्खवे, द्वे असनिया फलन्तिया न सन्तसन्तीति।"

अर्थात्—भिक्षुओ ! बिजली कड़कने पर दो ही प्राणी चौंक नहीं पड़ते हैं। कौन से दो ? क्षीणाश्रव भिक्षु और मृगराज सिंह। भिक्षुओ ! यही दो बिजली कड़कने पर चौंक नहीं पड़ते[1]।

२. विनय-पिटक

विनय-पिटक में भगवान् की उन शिक्षाओं का संग्रह है जो उन्होंने समय-समय पर संघ-संचालन को नियमित करने के लिए दी थीं। प्रव्रज्या की दीक्षा कैसे देनी चाहिए, शिष्य तथा आचार्य का परस्पर व्यवहार कैसा होना चाहिए, भिक्षुओं को कैसे रहना चाहिए, कैसे भिक्षाटन के लिए गाँव में जाना चाहिए, कैसे उठना-बैठना, खाना-पीना चाहिए, क्या दोष करने से भिक्षु को क्या दण्ड देना चाहिए,

---

[1] क्षीणाश्रव भिक्षु नहीं चौंक पड़ता है, क्योंकि उसका 'अहं-भाव' बिलकुल निरुद्ध हुआ रहता है। मृगराज सिंह नहीं चौंक पड़ता है, क्योंकि उसका 'अहं-भाव' अत्यन्त प्रबल होता है; चौंकने के बदले वह और गरज उठता है कि कौन दूसरा उसकी बराबरी करने आ रहा है।

किन-किन चीज़ों का व्यवहार भिक्षु को विहित है और किन-किन चीज़ों का निषिद्ध, आदि-आदि दैनिक जीवन की छोटी-छोटी बातों तक के विषय में भगवान् की शिक्षाएँ इस पिटक में मिलती हैं। जैसे राज्य के शासन के लिए 'पेनल कोड' है, वैसे ही संघ-शासन के लिए यह विनय-पिटक है। किस किस अवसर पर तथा परिस्थिति में ये शिक्षाएँ बनीं, रद्द की गईं, या संशोधित की गईं—इसका भी विशद वर्णन किया गया है।

विनय-पिटक में निम्नलिखित ग्रन्थ हैं:—

१. महावग्ग
२. चुल्लवग्ग
३. पाचित्तिय
४. पाराजिक
५. परिवार

प्रकरणों को छोड़, इन ग्रन्थों से केवल मूल शिक्षापदों का भी एक संग्रह कर दिया गया है, जिसका नाम 'पातिमोक्ख' है। भिक्षुओं के लिए उपदिष्ट शिक्षा-पदों का संग्रह 'भिक्खु-पातिमोक्ख', तथा भिक्षुणियों के लिए उपदिष्ट शिक्षापदों का संग्रह 'भिक्खुनी पातिमोक्ख' कहा जाता है। शिक्षापदों की संख्या कुल २२७ है।

३. अभिधम्म पिटक

अभिधम्म पिटक में सात ग्रन्थ हैं:—

१. धम्मसङ्गणी, २. विभङ्ग, ३. धातुकथा, ४. पुग्गलपञ्ञत्ति, ५. कथावत्थु, ६. यमक, ७. पट्ठान।

अभिधम्म-पिटक में चित्त, चैतसिक, आदि धर्मों का विशद विश्लेषण किया गया हैं। विज्ञान क्या है, संस्कार क्या है, वेदना क्या है, संज्ञा क्या है आदि आध्यात्मिक विषयों पर दार्शनिक गवेषणा की गई है, और आस्रवहीन निर्वाण की प्राप्ति का साधन बताया गया है। सूत्र-पिटक में भगवान् ने जो धर्म बताया है उसी का यह दर्शन-शास्त्र है।

त्रिपिटक से अन्य ग्रन्थ

अट्ठकथा :—जैसे, वेदों के अर्थ स्पष्ट करने के लिए सायणाचार्य ने वृहद् भाष्य लिखा है, वैसे ही आचार्य बुद्धघोष तथा दूसरे आचार्यों ने सारे त्रिपिटक पर सुन्दर भाष्य लिखे हैं जिन्हें 'अट्ठकथा' कहते हैं। भिन्न-भिन्न ग्रन्थों की अट्ठकथा के नाम भिन्न-भिन्न हैं। जैसे:—

सूत्रपिटक—दीघनिकाय—सुमङ्गल विलासिनी
मज्झिम निकाय—पपंच सूदिनी
अंगुत्तर निकाय—मनोरथ पूरणी
संयुत्त निकाय—सारत्थपकासिनी

खुद्दक निकाय के ग्रन्थों पर भी अट्ठकथा लिखी है।

विनय-पिटक—समन्तपासादिका
पातिमोक्ख—कङ्खावितरणी
धम्मसंगणी—अट्ठसालिनी
विभङ्ग—सम्मोह विनोदिनी
धातुकथा—धातुकथाप्पकरण अट्ठकथा
पुग्गलपञ्ञत्ति—पकरण-अट्ठकथा
कथावत्थु—कथावत्थुप्पकरण अट्ठकथा
यमक—यमकप्पकरण अट्ठकथा
पट्ठान—पट्ठानप्पकरण अट्ठकथा

बौद्ध देशों में अट्ठकथा को भी उसी गौरव की दृष्टि से देखते हैं जिससे पालि को। अट्ठकथा की भाषा अत्यन्त सुन्दर तथा सरल है। तत्कालीन भारतीय संस्कृति, राजनीति, समाज आदि ऐतिहासिक बातों की खोज के लिए त्रिपिटक तथा अट्ठकथा दोनों में प्रचुर सामग्री है। हमारे गुरुभाई भिक्षु नागार्जुन ने त्रिपिटक-युग की आर्थिक अवस्था पर एक खोज-पूर्ण लेख महाबोधि सभा, सारनाथ से प्रकाशित होने वाले बौद्ध मासिक पत्र 'धर्मदूत' के ३।८ अंक में लिखा है।

विसुद्धिमग्गो :—यह ग्रन्थ भी आचार्य बुद्धघोष द्वारा लिखा गया है। लंका के स्थविरों ने इनकी परीक्षा लेने के लिए इनको संयुत्त निकाय की दो गाथाएँ

दीं, और उन्हीं पर एक ग्रन्थ लिखने के लिए कहा। वे दो गाथाएँ यह थीं—

प्रश्न—अन्तो जटा बहि जटा,
जटाय जटिता पजा।
तं तं गोतम पुच्छामि,
को इमं विजटये जटन्ति ?

अर्थात्—भीतर भी जटा है, बाहर भी जटा है, जटा से मनुष्य बेतरह जकड़ा हुआ है। अतः, हे गौतम ! मैं आप से पूछता हूँ—कौन इस जटा को सुलझा सकता है ?

भगवान् का उत्तर—

सीले पतिट्ठाय नरो सपञ्ञो,
चित्तं पञ्ञञ्च भावयं,
आतापी निपको भिक्खु
सो इमं विजटये जटन्ति॥

अर्थात्—शील पर प्रतिष्ठित हो, अपने चित्त के क्लेशों को तपाने वाला, पण्डित भिक्षु चित्त और प्रज्ञा की भावना करते हुए इस जटा को सुलझा सकता है।

इन्हीं दो गाथाओं पर आचार्य बुद्धघोष ने 'विसुद्धिमग्गो' लिखा है। ग्रन्थ का विषय योगाभ्यास है। योगाभ्यास की तैयारी से ले कर सिद्धि तक की सारी बातें सुन्दर ढंग से समझाई गई हैं। पातञ्जल योग सूत्र में योग विषयक सिद्धान्त भर दिए हैं; अभ्यास कैसे शुरू करना चाहिए और उसे धीरे-धीरे कैसे बढ़ाना चाहिए यह नहीं बताया गया है। 'विसुद्धिमग्गो' प्रथम तैयारी के दिन से ले कर सिद्धि तक गुरु के ऐसा निर्देश करता जाता है।

बौद्ध देशों में इस ग्रन्थ का सम्मान उतना ही है जितना त्रिपिटक का।

मिलिन्द पञ्हो :—

बौद्ध धर्म का अध्ययन करने वालों के मन में जिस प्रकार की शंकायें उठती हैं, कुछ वैसी शंकायें आज से कोई डेढ़ हज़ार वर्ष पहले ग्रीस (यवन देश) के राजा 'मिलिन्द' के मन में उठी थीं। राजा को अपनी बुद्धि का बड़ा अभिमान था। वह अपने समय के विद्वानों से बहुत चकरा देने वाले प्रश्न किया करता था।

इस ग्रंथ में महा स्थविर 'नागसेन' ने उस राजा के प्रश्नों के मुँहतोड़ उत्तर दिये हैं। सिंहल, बरमा, श्याम आदि बौद्ध देशों में यह ग्रंथ बुद्ध के अपने उपदेशों की तरह मान्य है।

अन्य ग्रन्थ :—पालि भाषा में जितने ग्रन्थ मिलते हैं, सभी का सीधे, या घुमा फिरा कर बौद्ध धर्म से सम्वन्ध है। लंका के इतिहास पर स्थविर महानाम-कृत 'महावंस' नामक एक सुन्दर ग्रन्थ मिलता है, जो पद्य-मय है। लंका के इतिहास के साथ-साथ इसमें भारतवर्ष के इतिहास का भी वह अंश चला आया है, जो बौद्ध सम्राटों से सम्वन्ध रखता है।

काशी, विद्यापीठ से प्रकाशित होने वाली मासिक पत्रिका 'विद्यापीठ' के १९९३ आश्विन पौष-चैत्र अंक में 'पालि वाङ्मय की अनुक्रमिका' शीर्षक एक सुन्दर लेख हमारे ज्येष्ठ गुरुभाई पूज्य भदन्त आनन्द कौसल्यायन जी ने लिखा है। उसमें उनने पालि वाङ्मय के ग्रन्थों का सुन्दर परिचय दिया है।

पाँचवाँ खण्ड

व्याकरण

(क)

जिस तरह ऐन्द्र, चान्द्र, पाणिनीय, सारस्वत आदि संस्कृत भाषा के सर्वाङ्ग व्याकरण हैं, वैसे ही कच्चान, मोग्गलान, सद्दनीति आदि पालि भाषा के सर्वाङ्ग व्याकरण हैं। संज्ञा, परिभाषा, विधि, नियम, अतिदेश, तथा अधिकार—इन छः प्रकार के सूत्रों से जैसे संस्कृत व्याकरण रचे गये हैं, वैसे ही पालि-व्याकरण भी।

पालि सरल तथा उस समय की बोल-चाल की भाषा होने के कारण, उसके व्याकरण में उतने अधिक सूत्र नहीं हैं जितने संस्कृत व्याकरण में। पालि भाषा के कच्चान व्याकरण में ६७५ सूत्र, मोग्गलान में ८१७ सूत्र, तथा सद्दनीति में १३९१ सूत्र हैं।

पालि-व्याकरण का क्षेत्र

पालि भाषा, वैदिक भाषा की तरह, जीवित बोलचाल की भाषा थी। वैदिक भाषा के सभी प्रयोगों को पाणिनि ने अपने व्याकरण के सूत्रों में संगृहीत करने का प्रयत्न किया; किंतु जीवित भाषा होने के कारण इतने अधिक अपवाद निकल आते थे कि सूत्र उनको नियम में न ला सके। अतः, 'बहुलं', 'नाम-व्यत्यय', 'क्रिया व्यत्यय' करके छोड़ दिया। ठीक उसी तरह, पालि व्याकरण में भी 'क्वचि', 'बहुलं', 'वा', तथा 'विभाषा' से अधिक काम लिया गया है। व्याकरण ही अधिक पढ़ कर कोई यदि पालि-भाषा के सभी प्रयोगों से परिचित होना चाहे तो यह सम्भव नहीं।

'सरो लोपो सरे १.२६—इस सूत्र से पर्व स्वर का लोप होता है; जैसे—

सद्धा+इध=सद्ध्+इध=सद्धिध। ठीक उसके बाद आने वाले सूत्र 'परो क्वचि' १.२७ से पर स्वर का लोप होता है; जैसे:—सो+एव=सोंव।

अब, कोई प्रश्न कर सकता है कि—किन-किन स्थानों में पूर्व स्वर का, और किन-किन स्थानों में पर स्वर का लोप होता है? इसके उत्तर में यही कहा जा सकता है कि इसका ज्ञान साहित्य-अवलोकन से होगा। व्याकरण, भाषा के गठन तथा आकृति भर को बताता है। उसमें प्रवेश करने के लिए, साहित्य का अध्ययन अनिवार्य है।

व्याकरणकार

ऐसा जिक्र आता है कि भगवान् बुद्ध के प्रधान शिष्य महाकच्चान ने भी एक व्याकरण बनाया था; किंतु वह नहीं मिलता है। बोधिसत्त और सब्बगुणाकर नाम के भी दो प्राचीन व्याकरण थे, जो आजकल उपलब्ध नहीं हैं। आज-कल, कच्चान, मोग्गल्लान, और सद्दनीति—इन्हीं तीन व्याकरणों का अधिक प्रचार है। इन तीनों में अधिक प्राचीन 'कच्चान' व्याकरण है, जो शायद लंका ही में लिखा गया था। यह व्याकरण बड़े सरल ढंग से लिखा गया है।

पालि व्याकरण के कुछ और ग्रन्थों के नाम ये हैं:—रूपसिद्धि। बालावतार। महानिरुत्ति। चूलनिरुत्ति। निरुत्ति पिटक। सम्बन्ध चिन्ता। सद्दसारत्थजालिनी। कच्चान भेद। सद्दत्थ भेद चिन्ता। कारिका। कारिका-वुत्ति। विभत्यत्थ। गन्धत्थी। वाचकोपदेस। नयलक्खण विभावनी। निरुत्तिसंगह। सद्दवुत्ति। कारकपुप्फ मञ्जरी। गूलत्थदीपनी। मुखमत्तसार। सद्दबिन्दु। सद्दकलिका। सद्दविनिच्छिय इत्यादि।

मोग्गल्लान

मोग्गल्लान व्याकरण आज से प्राय: ७५० वर्ष पहले, प्रथम पराक्रम बाहु के समय लंका में लिखा गया था। व्याकरण-कर्ता मोग्गल्लान महाथेर अपने समय के संघ-राज थे। वे अनुराधपुर के थूपाराम विहार में रहते थे, जहाँ ही सम्भवतः यह व्याकरण लिखा गया होगा। मोग्गल्लान की गिनती पाणिनि, चान्द्र, कात्यायन आदि महान् वैयाकरणों में है।

पालि-व्याकरणों में, 'मोग्गल्लान' व्याकरण पूर्णता तथा गम्भीरता में श्रेष्ठ है।

इस व्याकरण का प्रचार लंका और बर्मा दोनों जगह समान रूप से है। मोग्गल्लान व्याकरण के इर्द-गिर्द आगे चल कर कई ग्रन्थ लिखे गए—जैसे, पियदस्सी महाथेर-कृत 'पद-साधन'; संघराज श्री सारिपुत्र-कृत 'पदावतार'; संघराज संघरक्खित महाथेर-कृत 'सुसद्दसिद्धि'; 'सम्बन्ध चिन्ता' और 'सारत्थविलासनी'; संघराज वनरत्न महाथेर-कृत 'पयोगसिद्धि'; संघराज श्री राहुल-कृत 'बुद्धिप्पसादनी टीका'; और 'पञ्जिका प्रदीप' इत्यादि।

साधारणतः, वैयाकरण सूत्र ही लिख कर छोड़ देते थे; बाद में कोई दूसरा उन पर वृत्ति लिखा करता था। किंतु, मोग्गलान महा थेर ने स्वयं सूत्र लिख कर उन पर वृत्ति भी लिखी, और फिर उस वृति पर 'पञ्चिका' (=व्याख्या) भी। इसी से मोग्गलान व्याकरण इतना पुष्ट तथा पूर्ण है।

अभी हाल तक 'मोग्गल्लान व्याकरण सूत्र-वृत्ति' तो मिलता था, किंतु 'पञ्चिका' लुप्त थी। हमारे दादा-गुरु आचार्य श्री धम्माराम नायक महाथेर ने १८९६ ई० में 'पञ्चिका प्रदीप' का सम्पादन करते हुए भूमिका में लिखा था, "मोग्गलान व्याकरण के अध्ययन करने में जो विद्यार्थियों का उत्साह इतना बढ़ रहा है उसमें 'पञ्चिका' का खो जाना बड़ा बाधक हो रहा है।" सौभाग्य से हमारे गुरु परमपूज्य विद्वद्वर श्री धर्मानन्द नायक महास्थविर को ताल-पत्र पर लिखी 'पञ्चिका' की एक पुरानी पुस्तक लंका के किसी विहार में मिल गई। उन्होंने उसे सम्पादित कर विद्यालंकार परिवेण, लंका से प्रकाशित कराया। बड़े परिश्रम से उनने इसमें गण-पाठ, ण्वादिपाठ (उणादि पाठ) आदि सुन्दर ढंग से दिया है। पालि-व्याकरण का पाण्डित्य-पूर्ण अध्ययन करने के लिए यह ग्रन्थ परम आवश्यक है।

मोग्गल्लान व्याकरण में इन विशेषताओं को देख कर ही, मैंने अपनी इस पुस्तक में उसीका अनुसरण किया है। हर एक नियम के साथ, उसका सूत्र दे दिया है, तथा सूत्र की संख्या भी लिख दी है।

मोग्गल्लान व्याकरण के अन्तिम पृष्ठ पर एक गाथा आती है:—

सुत्त-धातु-गणो-ण्वादि
नामलिङ्गानुसासनं।
यस्स तिट्ठति जिव्हग्गे
सो व्याकरणकेसरी॥

अर्थात्—जिसकी जीभ के अग्र भाग पर सूत्र-पाठ, धातु-पाठ, गण-पाठ,

'ण्वादि-पाठ', तथा कोष उपस्थित रहता है वही व्याकरण-केशरी है।

'सूत्र पाठ', 'धातु पाठ', 'गण पाठ', तथा 'ण्वादि पाठ' हमने पुस्तक के अन्त में दे दिए हैं।

कोष के लिए, सब से उत्तम ग्रन्थ 'अभिधानप्पदीपिका' है जो बम्बई से नागरी अक्षरों में प्रकाशित हो गया है।

(ख)

अआदयो तितालीस वण्णा १.१ :—पालि में 'अ' आदि ४३ वर्ण हैं।

दसादो सरा १.२ :—आदि के १० स्वर हैं

अ आ, इ ई, उ ऊ, ऍ (ह्रस्व) ए, ऑ (ह्रस्व) ओ।

द्वे द्वे सवण्णा १.३ :—दो दो स्वर सवर्ण्ण कहे जाते हैं।

पुब्बो रस्सो १.४ :—उनके (=सवर्णों के) पूर्व वर्ण ह्रस्व हैं। जैसे:— अ, इ, उ, ऍ, ऑ।

"संयुक्त अक्षर के पूर्व आने वाले 'ए' तथा 'ओ' ह्रस्व होते हैं।" मोग्गलान

परो दीघो १.५:—उनके (=सवर्णों के) दूसरे वर्ण दीर्घ होते हैं। जैसे:— आ, ई, ऊ, ए, ओ।

कादयो व्यञ्जना १.६ :—'क' आदि ३३ वर्ण व्यञ्जन हैं। जैसे:—

क ख ग घ ङ

च छ ज झ ञ

ट ठ ड ढ ण

त थ द ध न

प फ ब भ म

य, र, ल, व, स, ह, ळ, अं।

नवीन संस्कृत ने 'ळ' वर्ण को छोड़ दिया।

पञ्च पञ्चका वग्गा १.७ :—पाँच-पाँच के पाँच वर्ग हैं। जैसे:— कवर्ग, चवर्ग, टवर्ग, तवर्ग, पवर्ग।

बिन्दु निग्गहीतं १.८ :—'अं' को निग्गहीत कहते हैं।

नमो तस्स भगवतो अरहतो सम्मा सम्बुद्धस्स

पालि महाव्याकरण

विषय-सूची

वस्तु कथा

पहला खण्ड

दूसरा खण्ड

तीसरा खण्ड

चौथा खण्ड

पाँचवाँ खण्ड

पहला काण्ड

१ पाठ

नाम-प्रकरण

(पहला भाग—साधारण शब्द)

२ पाठ

नाम-प्रकरण

(दूसरा भाग—साधारण शब्द)

३ पाठ

सर्वनाम-प्रकरण

(पहला भाग—साधारण सर्वनाम)

५

४ पाठ

विभक्ति-प्रकरण

(पहला भाग—साधारण नियम)

५ पाठ

अव्यय-प्रकरण

(पहला भाग—साधारण प्रयोग)

दूसरा काण्ड

१ पाठ

क्रिया-प्रकरण

(पहला भाग—वर्तमान काल)

२ पाठ

सर्वनाम-प्रकरण

(दूसरा भाग)

३ पाठ

क्रिया-प्रकरण

(दूसरा भाग—भविष्यत्काल)

४ पाठ

नाम-प्रकरण

(तीसरा भाग—विशेष शब्द)

५ पाठ

क्रिया-प्रकरण

(तीसरा भाग—परिसमाप्त्यर्थक भूत)

६ पाठ

नाम-प्रकरण

(चौथा भाग—शेष शब्द)

७ पाठ

अव्यय-प्रकरण

(दूसरा भाग—उपसर्ग)

तीसरा काण्ड

१ पाठ

क्रिया-प्रकरण

(चौथा भाग—गण विचार)

२ पाठ

क्रिया-प्रकरण

(पाँचवाँ भाग—विधिलिङ्ग, अनुज्ञा)

३ पाठ

विभक्ति-प्रकरण

(दूसरा भाग—शेष नियम)

४ पाठ

कृदन्त-प्रकरण

(पहला भाग—निष्ठा)

५ पाठ

कृदन्त-प्रकरण

(दूसरा भाग—तव्य, तुं, त्वा)

६ पाठ

विशेषण-प्रकरण

७ पाठ

सर्वनाम-प्रकरण

(तीसरा भाग—संख्या-वाचक)

चौथा काण्ड

१ पाठ

वाच्य-प्रकरण

२ पाठ

क्रिया-प्रकरण

(छठा भाग—अनद्यतन, परोक्ष, हेतु० भूत)

३ पाठ

'वाला'-वाचक प्रत्यय

(क)

(कृदन्त-प्रकरण—तीसरा भाग)

(ख)

(तद्धित-प्रकरण—पहला भाग)

४ पाठ

भाववाचक प्रत्यय

(क)

(कृदन्त-प्रकरण—चौथा भाग)

(ख)

(तद्धित-प्रकरण—दूसरा भाग)

५ पाठ

क्रिया-प्रकरण

(सातवाँ भाग—प्रेरणार्थक)

(ख)

(विभक्ति-प्रकरण—तीसरा भाग)

६ पाठ

अव्यय-प्रकरण

(तीसरा भाग—अव्यय)

(तद्धित प्रकरण—तीसरा भाग)

पाँचवाँ काण्ड

१ पाठ

सन्धि-प्रकरण

२ पाठ

क्रिया-प्रकरण

(आठवाँ भाग—सनन्त)

३ पाठ

क्रिया-प्रकरण

(नवाँ भाग—नाम धातु)

४ पाठ

स्त्री-प्रत्यय

छठा काण्ड

१ पाठ

(क)

तद्धित-प्रकरण

(चौथा भाग—शेष प्रत्यय)

२ पाठ

(ख)

तद्धित-प्रकरण

३ पाठ

समास-प्रकरण

४ पाठ

समासान्त-प्रत्यय

नमो तस्स भगवतो अरहतो सम्मासम्बुद्धस्स

पालि महाव्याकरण

पहला काण्ड

पहला पाठ

नाम-प्रकरण

(पहला भाग—साधारण शब्द)

§ १. जैसे, हिन्दी में कारक प्रकट करने के लिए, शब्द के आगे 'ने', 'को', 'से', 'के लिए' इत्यादि, कारक के चिन्ह व्यवहृत होते हैं, उसी तरह, पालि में—कारक तथा वचन प्रकट करने के लिए—शब्द से परे 'सि', 'यो', 'अं' इत्यादि विभक्तियाँ लगती हैं। विभक्तियों के लगने से शब्द के जो रूप बनते हैं, उन्हें 'पद' कहते हैं।

साधारणतः, 'पठमा' विभक्ति कर्ता में, 'दुतिया' कर्म में, 'ततिया' करण में, 'चतुत्थी' सम्प्रदान में, 'पञ्चमी' अपादान में, 'छट्ठी' सम्बन्ध में, 'सत्तमी' अधिकरण में, तथा 'आलपन' सम्बोधन में प्रयुक्त होती हैं।

विभक्तियों के लगने से शब्द के रूप निम्न प्रकार होते हैं :—

§२. अकारान्त पुल्लिङ्ग शब्द[1]

बुद्ध

	एकवचन	अनेकवचन
पठमा	बुद्धो[2] (बुद्धे[3])	बुद्धा[4]
दुतिया	बुद्धं	बुद्धे[4]
ततिया	बुद्धेन[5]	बुद्धेहि,[6] बुद्धेभि[7]
चतुत्थी	बुद्धाय,[8] बुद्धस्स[9]	बुद्धानं[10]
पञ्चमी	बुद्धा,[11] बुद्धम्हा,[7] बुद्धस्मा	बुद्धेहि, बुद्धेभि
छट्ठी	बुद्धस्स	बुद्धानं
सत्तमी	बुद्धे[11] बुद्धम्हि,[7] बुद्धस्मि	बुद्धेसु[9]
आलपन	बुद्ध,[12] बुद्धा[13]	बुद्धा

---

१. द्वेद्वेकानेकेसु नामस्मा सियो अंयो नाहि सनं स्माहि सनं स्मिसु २.१—नामसे परे, ये विभक्तियाँ होती हैं। जैसे :—

	एकवचन	अनेकवचन
पठमा } आलपन }	सि (ग)	यो
दुतिया	अं	यो
ततिया	ना	हि
चतुत्थी	स	नं
पञ्चमी	स्मा	हि
छट्ठी	स	नं
सत्तमी	स्मि	सु

२. सिस्सो २.१११—अकारान्त पुल्लिङ्ग नाम से परे, 'सि' विभक्ति का 'ओ' आदेश हो जाता है। जैसे:—बुद्ध+सि=बुद्ध+ओ=बुद्धो।

३. क्वचे वा २.११२—अकारान्त पुल्लिङ्ग नाम से परे, 'सि' विभक्ति का कहीं कहीं विकल्पसे 'ए' आदेश हो जाता है। जैसे:—"वनप्पगुम्बे यथा फुस्सितग्गे" ('खुद्दक-पाठ', 'रतन' सूत्र)।

४. अतो यो नं टा टे २.४३—अकारान्त नाम से परे, पठमा की 'यो' विभक्ति का 'टा' (='आ'), तथा दुतिया की 'यो' विभक्ति का 'टे' (='ए') आदेश हो जाता है। जैसेः—*पठमाः*—वुद्ध+यो=वुद्ध+आ=बुद्धा। *दुतियाः*—बुद्ध+यो=वुद्ध+ए=बुद्धे।

५. अतेन २.११०—अकारान्त नाम से परे, 'ना' विभक्ति का 'एन' आदेश हो जाता है। जैसेः—वुद्ध+ना=वुद्ध+एन=बुद्धेन।

६. सु हि स्व स्से २.१००—'सु' तथा 'हि' विभक्तियों के आने से, नाम के अन्त्य 'अ' का 'ए' हो जाता है। जैसेः—वुद्ध+सु=बुद्धेसु। वुद्ध+हि=बुद्धेहि।

७. स्मा हि स्मि न्नं म्हा भि म्हि २.९९—नाम से परे, 'स्मा', 'हि', तथा 'स्मिं' विभक्तियों का, विकल्प से क्रमशः 'म्हा', 'भि', तथा 'म्हि' आदेश हो जाता है। जैसेः—बुद्धम्हा=बुद्धस्मा। बुद्धेहि=बुद्धेभि। बुद्धम्हि=बुद्धस्मिं।

८. स स्सा य चतुत्थि या २.४६—'चतुत्थी' में, अकारान्त नाम से परे, 'स' विभक्ति का विकल्प से 'आय' आदेश हो जाता है। जैसेः—वुद्ध+स=वुद्ध+आय=बुद्धाय; . बुद्धस्स।

९. सुञ् स स्स २.५३—नाम से परे, 'स' विभक्ति का 'स्स' आदेश हो जाता है। जैसेः—वुद्ध+स=बुद्धस्स।

१०. सुनं हि सु २.९१—'सु', 'नं' तथा 'हि' विभक्तियों के आने से, नाम के अन्त्य स्वर का कहीं कहीं दीर्घ होता है। जैसेः—मुनीसु। मुनीनं; बुद्धानं। अग्गीहि।

११. स्मा स्मि न्नं २.४५—अकारान्त नाम से परे, 'स्मा' तथा 'स्मिं' विभक्तियों का विकल्प से क्रमशः 'टा' (='आ') तथा 'टे' (='ए') आदेश हो जाता है। जैसेः—वुद्ध+स्मा=वुद्ध+आ=बुद्धा; बुद्धस्मा। वुद्ध+स्मिं=वुद्ध+ए=बुद्धे; बुद्धस्मिं।

१२. ग सी नं २.११९—यदि और कोई दूसरी विधि न की गई हो, तो 'ग' तथा 'सि' विभक्तियों का लोप होता है। जैसेः—

वुद्ध+सि (=ग)=बुद्ध! दण्डी+सि=दण्डी।

१३. अयूनं वा दीघो २.६१—तीनों लिङ्गों में, अकारान्त, इकारान्त, तथा उकारान्त नाम से परे, 'ग' (=सि) विभक्ति आने पर, नामका अन्त्य स्वर विकल्प से दीर्घ हो जाता है। जैसेः—बुद्ध+ग=बुद्धा; बुद्ध! हे मुनी; मुनि! हे भिक्खू; भिक्खु!

शब्दावली :—सुर, असुर, नर, उरग, नाग, यक्ख (=यक्ष), गन्धब्ब (=गन्धर्व), किन्नर, मनुस्स, पिसाच, पेत, मातङ्ग (=हाथी), तुरङ्ग, वराह, सीह (=सिंह), ब्यग्घ (=बाघ), अच्छ (=भालू), कच्छप, सोन (=कुत्ता), आलोक, लोक, निलय, चाग, (=त्याग), योग, वायाम (=व्यायाम), गाम (=गाँव), निगम (=कस्बा), धम्म (=धर्म), संघ, ओघ (=बाढ़), पटिघ (=द्वेष), सारम्भ (=झगड़ा), थम्भ (=स्तम्भ), पमाद (=प्रमाद), मक्ख (=कंजूसी), रुक्ख (=वृक्ष), इत्यादि अकारान्त पुल्लिङ्ग शब्द के रूप 'बुद्ध' शब्द के समान होते हैं।

§ ३. अकारान्त नपुंसकलिङ्ग शब्द—फल

	एकवचन	अनेकवचन
पठमा	फलं[14]	फला,[15] फलानि[16]
दुतिया	फलं	फले,[15] फलानि[16]
आलपन	फल, फला	फलानि

शेष रूप 'बुद्ध' शब्द के समान

शब्दावली—चित्त, पुञ्ञ (=पुण्य), पाप, रूप, सोत (=कान), घाण (=घ्राण), सुख, दुक्ख, कारण, दान, सील, धन, झान (=ध्यान), लोचन, मूल,

---

१४. अं नपुंसके २.११३—नपुंसक लिङ्ग अकारान्त नाम से परे, 'सि' विभक्ति का 'अं' आदेश हो जाता है। जैसे—फल+सि=फलं।

१५. नीनं वा २.४४—नपुंसक लिङ्ग अकारान्त नाम से परे, विकल्प से 'पठमा' के 'नि' का 'टा' (='आ'), तथा 'दुतिया' के 'नि' का 'टे' (='ए') आदेश हो जाता है। जैसे:—फल+नि=फल+आ=फला। फल+नि=फल+ए=फले।

१६. योनं नि २.११४—नपुंसक लिङ्ग अकारान्त नाम से परे, 'यो' विभक्ति का 'नि' आदेश हो जाता है। जैसे:—फल+यो=फलानि।

योलोपनिसु दीघो २.६०—'यो' विभक्ति के लोप होने, अथवा 'नि' परे होने से, नाम का अन्त्य स्वर दीर्घ हो जाता है। जैसे:—मुनि+यो=मुनी। फलानि। अट्ठीनि। आयूनि।

कुल, वल, जाल, मङ्गल, लिङ्ग, मुख, अङ्ग, जल, पुलिन, धञ्ञ (=धान), हिरञ्ञ (=सोना), अमत (=अमृत), पदुम (=कमल), पण्ण (=पत्ता), सुसान (=स्मशान), वन, आयुध (=अस्त्रशस्त्र), हदय (=हृदय), चीवर (=काषाय वस्त्र), वत्थ (=वस्त्र), इन्द्रिय, नयन, वदन, यान (=रथ), ओदन (=भात), सोपान (=सीढ़ी), पाण (=प्राण), भवन, भुवन, तुण्ड (=चोंच), अण्ड, पीठ (=पीढ़ा), मरण, ञाण (=ज्ञान), आरम्मण (=आलम्बन), अरञ्ञ (=जंगल), नगर, तगर (=एक सुगन्ध), छत्त (=छाता), छिद्द (=छेद), उदक (=पानी), इत्यादि अकारान्त नपुंसक लिङ्ग शब्द के रूप 'फल' शब्द के समान होते हैं।

§ ४. इकारान्त पुल्लिङ्ग शब्द

मुनि (=साधु)

	एकवचन	अनेकवचन
पठमा	मुनि	मुनी,[१७] मुनयो[१८]
दुतिया	मुनिं	मुनी, मुनयो
ततिया	मुनिना	मुनीहि, मुनीभि
चतुत्थी	मुनिनो,[१९] मुनिस्स	मुनीनं
पञ्चमी	मुनिना,[२०] मुनिम्हा, मुनिस्मा	मुनीहि,[२१] मुनीभि
छट्ठी	मुनिनो, मुनिस्स	मुनीनं[२२]
सत्तमी	मुनिम्हि, मुनिस्मि	मुनिसु, मुनीसु[२३]
आलपन]	मुनि, मुनी	मुनी, मुनयो

---

१७. लोपो २.११६—'झ' (='इ', 'ई') तथा 'ल' (='उ', 'ऊ') से परे, 'यो' विभक्ति का लोप होजाता है। जैसे:—मुनि+यो=मुनी। अट्ठी। दण्डी। आयू।

१८. योसु झिस्स पुमे २.९५—'यो' विभक्ति आने से, पुल्लिङ्ग शब्द के अन्त्य 'इ' का विकल्प से 'अ' हो जाता है। जैसे:—मुनि+यो=मुनयो।

१९. झला सस्स नो २.८३—'झ' तथा 'ल' से परे, 'स' विभक्ति का विकल्प से 'नो' आदेश हो जाता है। जैसे:—मुनिनो। दण्डिनो। भिक्खुनो। सयम्भुनो।

शब्दावली—पाणि (=प्राणी), गण्ठि (=गाँठ), मुट्ठि (=मुक्का), कुच्छि (=पेट), सालि (=एक चावल), वीहि (=धान), व्याधि (=रोग), सन्धि (=जोड़), रासि (=राशि), दीपि (=बाघ), इसि (=ऋषि), मणि, धनि, गिरि, रवि, कवि, कपि, असि, मसि (=राख), निधि, विधि, अहि (=साँप), किमि (=कीड़ा), पति, हरि, अरि, कलि (=काला), बलि, जल-निधि, गहपति (=गृहपति), वरमति (=श्रेष्ठ बुद्धि वाला), अधिपति, इत्यादि इकारान्त पुल्लिङ्ग शब्द के रूप 'मुनि' शब्द के समान होते हैं।

§ ५. इकारान्त नपुंसकलिङ्ग शब्द

अट्ठि (=हड्डी)

	एकवचन	अनेकवचन
पठमा	अट्ठि	अट्ठीनि,[२२] अट्ठी[२२]
दुतिया	अट्ठि	अट्ठीनि,[२२] अट्ठी
आलपन	अट्ठि	अट्ठीनि, अट्ठी

शेष रूप 'मुनि' शब्द के समान

---

२०. ना स्मास्स २.८४—'झ' (='इ', 'ई') तथा 'ल' (='उ', 'ऊ') से परे, 'स्मा' विभक्ति का विकल्प से 'ना' आदेश हो जाता है। जैसे:—मुनि+स्मा =मुनिना। दण्डिना, दण्डिस्मा। भिक्खुना, भिक्खुस्मा। सयम्भुना, सयम्भुस्मा।

२१. सुनंहिसु २.९१—'सु', 'नं' तथा 'हि' विभक्तियों के आने से, नाम के अन्त्य स्वर का दीर्घ हो जाता है। जैसे:—मुनीसु। मुनीनं। मुनीहि।

२२. झला वा २.११५—नपुंसक लिङ्गमें, 'झ' (='इ', 'ई') तथा 'ल' (='उ', 'ऊ') से परे, 'यो' विभक्ति का विकल्प से 'नि' आदेश हो जाता है। जैसे:—अट्ठि+यो=अट्ठीनि; अट्ठी। आयूनि; आयू।

लोपो २.११६—'झ' (='इ', 'ई') तथा 'ल' (='उ', 'ऊ') से परे, 'यो' विभक्ति का विकल्प से लोप हो जाता है। जैसे:—अट्ठी, दण्डी, आयू, अग्गी, भिक्खू।

शब्दावली—दधि (=दही), वारि (=पानी), अक्खि (=आँख), अच्चि (=आँच) आदि इकारान्त नपुंसक लिङ्ग शब्द के रूप 'अट्ठि' शब्द के समान होते हैं।

§ ६. उकारान्त पुल्लिङ्ग शब्द

भिक्खु (=*भिक्षु*)

	एकवचन	अनेकवचन
पठमा	भिक्खु	भिक्खू, भिक्खवो[23] *
दुतिया	भिक्खुं	भिक्खू, भिक्खवो
ततिया	भिक्खुना	भिक्खूहि, भिक्खूभि
चतुत्थी	भिक्खुनो, भिक्खुस्स	भिक्खूनं
पञ्चमी	भिक्खुना, भिक्खुस्मा, भिक्खुम्हा	भिक्खूहि, भिक्खूभि
छट्ठी	भिक्खुनो, भिक्खुस्स	भिक्खूनं
सत्तमी	भिक्खुस्मि, भिक्खुम्हि	भिक्खुसु, भिक्खूसु
आलपन	भिक्खु	भिक्खू, भिक्खवे, भिक्खवो[24] *

शब्दावली—सेतु (=पुल), केतु (=पताका), भानु (=सूर्य), राहु, उच्छु (=ईख), वेलु (=बाँस), मच्चु (=मार, मृत्यु), सिन्धु (=समुद्र), मधु, मेरु (=पहाड़), सत्तु (=शत्रु), कारु (=विश्वकर्मा), हेतु, जन्तु, पटु, आदि उकारान्त पुल्लिङ्ग शब्द के रूप 'भिक्खु' शब्द के समान होते हैं।

---

२३. ला योनं वो पुमे २.८५—पुल्लिङ्ग 'ल' (='उ', 'ऊ') से परे, 'यो' विभक्ति का विकल्प से 'वो' आदेश होता है। जैसेः—भिक्खु+यो=भिक्खवो, भिक्खू। सयम्भूवो, सयम्भू।

२४. पुमालपने वेवो २.९८—यदि आलपन में 'यो' विभक्ति आवे, तो पुल्लिङ्ग उकारान्त शब्द से परे, उसका 'वे' तथा 'वो' आदेश होता है। जैसेः—हे भिक्खवे, भिक्खवो!

*वेवोसु लुस्स २.९६—पुल्लिङ्ग उकारान्त शब्द से परे, यदि 'वे' या 'वो' आवे, तो उसके 'उ' का 'अ' हो जाता है। जैसेः—भिक्खवे, भिक्खवो।

§ ७. उकारान्त नपुंसकलिङ्ग शब्द

आयु

	एकवचन	अनेकवचन
पठमा	आयु	आयूनि, आयू
दुतिया	आयुं	आयूनि, आयू
आलपन	आयु	आयूनि, आयू

शेष रूप 'भिक्खु' शब्द के समान

शब्दावली—चक्खु (=आँख), वसु (=धन), धनु (=तीर), दारु (=लकड़ी), तिपु (=सीसा), मधु, वत्थु (=कहानी), जतु (=लाह), अम्बु (=पानी), अस्सु (=आँसू) आदि उकारान्त नपुंसकलिङ्ग शब्द के रूप 'आयु' शब्द के समान होते हैं।

§ ८. विशेषण

विशेष्यमें जो लिङ्ग, विभक्ति, और वचन होते हैं, वही लिङ्ग, विभक्ति, और वचन उसके विशेषणमें भी होते हैं। जैसे :—

लिङ्ग में

पुल्लिङ्ग	इत्थिलिङ्ग	नपुंसकलिङ्ग
सुन्दरो बालको	सुन्दरी बालिका	सुन्दरं फलं

विभक्ति में

पठमा	सुन्दरो बालको
दुतिया	सुन्दरं बालकं
ततिया	सुन्दरेन बालकेन
चतुत्थी	सुन्दराय बालकाय इत्यादि

वचन में

	एकवचन	अनेकवचन
पठमा	सुन्दरो बालको	सुन्दरा बालका
दुतिया	सुन्दरं बालकं	सुन्दरे बालके इत्यादि

विशेषण—शब्दावली—अखिल (=सारा), अगाध, अटल, अतीत (=बीता हुआ), अब्भुत (=अद्‌भुत), अधम (=नीच), अनुत्तर (=सर्वोत्तम), अनुरत्त (=राग में पड़ा हुआ), अन्ध (=अन्धा), अलस (=आलसी), अप्प (=अल्प), अड्ढ (=धनी), अज्झत्तिक (=आध्यात्मिक), उग्ग (=उग्र), उच्च (=ऊँचा), उस्सुक (=उत्सुक), उम्मत्त (=पागल), उण्ह (=गर्म), उजु (=सीधा), एकच्च (=कोई), कटुक (=कड़ुआ), काण (=काना), कन्त (=प्रिय), कुटिल (=टेढ़ा), कपण (=कृपण), गभीर या गम्भीर (=गहरा), गरु (=भारी), गोल (=गोला), घोर (=भयङ्कर), चञ्चल, चपल, चारु (=सुन्दर), जटिल (=जटाधारी, उलझा), दारुण, दिब्ब (=दिव्य), दुग्गम (=दुर्गम), दुब्बल (=दुर्बल), दुक्कर (=दुष्कर), धम्मिक (=धार्मिक), धुत्त (=व्यसनी), नग्ग (=नंगा), नव-नवीन (=नया), निच्च (=नित्य), निसित (=तेज), नूतन (=नया), पक्क (=पका हुआ), पटु (=चालाक), पोराण (=पुराना), पुथु (=फैला हुआ), पेत्तिक (=पैतृक), पगब्भ (=प्रगल्भ), पहूत (=अधिक), पाकट (=प्रसिद्ध), पिय (=प्रिय), फरुस (=कठोर), बधिर (=बहरा), बहु (=बहुत), भस्सर (=चमकीला), भीरु (=डरपोक), भुस (=बहुत), मत (=मृत), मनञ्ञ (=मनोज्ञ), मलिन, (=मैला), महं (=बड़ा), महग्घ (=कीमती), मूग (=गूँगा), मुदु (=मृदु), रम्म (=रम्य), रस्स (=ह्रस्व), रित्त (=रिक्त), रुग्ण (=रुग्न), लहु (=हलका), विचक्खण (=होशियार), विचित्त (=विचित्र), विनीत, विसाल, वित्थत (=विस्तृत), सन्त (=शान्त), सीतल (=शीतल), सुक्क (=उजला), सुचि (=पवित्र), सुभ (=शुभ), सुक्ख (=सूखा), सुञ्ञ (=शून्य), सेत (=उजला), सकल (=सभी), सफल, समान, सित (=उजला), सुगम, हट्ठ (=प्रसन्न) इत्यादि विशेषण हैं।

पुल्लिङ्ग में—अकारान्त विशेषण के रूप 'वुद्ध' शब्द के समान, इकारान्त विशेषण के रूप 'मुनि' शब्द के समान, तथा उकारान्त विशेषण के रूप 'भिक्खु' शब्द के समान होंगे। नपुंसक लिङ्ग में—अकारान्त विशेषण के रूप 'फल' शब्द के समान, इकारान्त विशेषण के रूप 'अट्ठि' शब्द के समान, तथा उकारान्त विशेषण के रूप 'आयु' शब्द के समान होंगे। जैसे :—

पुल्लिङ्ग:—अतीतो भूपो; अतीता भूपा। सुचि कूपो, सुचयो कूपा। मुदु बालको, मुदवो बालका।

नपुंसक:—अतीतं नगरं, अतीतानि नगरानि। सुचि जलं, सुचीनि जलानि। मुदु फलं, मुदूनि फलानि।

[स्त्रीलिङ्ग विशेषण शब्द के रूप के लिए देखिए—पृ० १५८]

१. अभ्यास

१. हिन्दी में अनुवाद कीजिए—

(क) बुद्धानं सासनं। बुद्धानं धम्मो। बुद्धस्स सावको। देवानं इन्दो। बुद्धस्स सरणं। धम्मस्स सरणं। सङ्घस्स सरणं। बुद्धो देवानं च मनुस्सानं च नायको। ब्राह्मणानं गामो। बुद्धस्स सावका। सङ्घाय दानं। निब्बाणाय धम्मो। देवानं झानानि।

(ख) मुनयो बुद्धस्स सावका। भिक्खूनं सङ्घो। इसीनं झानं। अट्ठीनं संघातो। आयुनो खयो। भिक्खुस्स दानं। झाना निब्बाणं। आयुनो संहानि।

(ग) बुद्धो विहरति (=विहार करते हैं)। देवा नन्दन्ति (=आनन्द करते हैं)। भिक्खू झायन्ति (=ध्यान करते हैं)। मनुस्सा पसंसन्ति (=प्रशंसा करते हैं)। सक्को देवानं इन्दो बुद्धं नमस्सति (=प्रणाम करता है)। मुनयो वदन्ति (=बोलते हैं)। फलानि पतन्ति (=गिरते हैं)। भिक्खवो सज्झायन्ति (=पाठ करते हैं)।

(घ) बुद्धो भिक्खूनं धम्मं देसेति (=उपदेश करते हैं)। देवा बुद्धस्स सरणं गच्छन्ति (=जाते हैं)। बुद्धो धम्मं पकासेति (=प्रकाशित करते हैं)। भिक्खू अरञ्ञे झायन्ति (=ध्यान करते हैं)। बुद्धो निब्बाणाय भिक्खूनं धम्मं देसेति (=उपदेश करते हैं)। भिक्खवो सङ्घे वसन्ति (=वास करते हैं)। मुनयो बुद्धं नमस्सन्ति (=प्रणाम करते हैं)। सावका बुद्धस्स सरणं गच्छन्ति (=जाते हैं)। देवा देवे पस्सन्ति (=देखते हैं)। मनुस्सा फलानि खादन्ति (=खाते हैं)। देवा सग्गं गच्छन्ति (=जाते हैं)। भिक्खू झानं भावेन्ति (=भावना करते हैं)। सावका भिक्खुना सह गच्छन्ति (=जाते हैं)।

२. ऊपर काले अक्षरों में छपे पदों के रूप पठमा, ततिया तथा छट्ठी विभक्ति में लिखिए।

३. पालि में अनुवाद कीजिए—

बुद्धों का धर्म। देवों का ध्यान। बुद्धों की शरण। भिक्खुओं का नायक। देवों का सङ्घ। ऋषियों का ध्यान। बुद्ध के श्रावकों का ग्राम। भिक्खुओं के

लिए दान। सङ्घ के लिए दान। निर्वाण के लिए बुद्धों का शासन। देवों के लिए बुद्ध का धर्म्म। ग्राम से ग्राम को। विहार से विहार को। बुद्धों के शासन में लगन (=योगो)।

भिक्षु लोग ध्यान करते हैं (=झायन्ति)। मनुष्य लोग बुद्ध को नमस्कार करते हैं (=नमस्सन्ति)। बुद्ध धर्म्म को प्रकाशित करते हैं (=पकासति)। ऋषि लोग स्वर्ग के लिए ध्यान करते हैं (=झायन्ति)। मुनि लोग बुद्धों के धर्म की प्रशंसा करते हैं (=पसंसन्ति)। देवता बुद्ध को नमस्कार करते हैं (=नमस्सन्ति)। बुद्ध के साथ भिक्षु लोग जाते हैं (=गच्छन्ति)।

४. नीचे काले अक्षरों में छपे पदों को विभक्ति बताइए—

ब्राह्मणानं गामा। भिक्खु **गामा** आगच्छति (=आता है)। देवो **देवेहि** आगच्छति (=आता है)। भिक्खू **देवे** पसंसन्ति (=प्रशंसा करते हैं)। भिक्खू **विहारे** वसन्ति (=वास करते हैं)। मनुस्सा **विहारे** पस्सन्ति (=देखते हैं)। देवा **सग्गा** आगच्छन्ति (=आते हैं)। **भिक्खू भिक्खू** नमस्सन्ति (=प्रणाम करते हैं)। **मुनी मुनी** पसंसन्ति (=प्रशंसा करते हैं)। **झानं झानं** वड्ढेति (=बढ़ाता है)। **भिक्खूनं** दानं देति (=देता है)। **भिक्खूनं झानं**।

५. ऊपर काले अक्षरों में छपे पदों के पठमा तथा दुतिया विभक्ति में रूप लिखिए, और उनका वाक्यों में प्रयोग कीजिए।

६. निम्नलिखित शब्दों से वाक्य बनाइए—

नाम-पदानि—बुद्धो, धम्मं, भिक्खूनं सङ्घे, देवा, देवानं लोकेसु, सावका, मनुस्सानं लोके, सरणं, निब्बाणाय झानं, सग्गाय दानं।

क्रिया-पदानि—देसेति (=उपदेश करता है), पकासेति (=प्रकाशित करता है), गच्छन्ति (=जाते हैं), करोन्ति (=करते हैं), देन्ति (=देते हैं), भावेति-न्ति (=भावना करना)।

पहला काण्ड

दूसरा पाठ

नाम-प्रकरण

(दूसरा भाग—साधारण शब्द)

§ ९. आकारान्त स्त्रीलिङ्ग शब्द

लता

	एकवचन	अनेकवचन
पठमा	लता[1]	लता,[2] लतायो
दुतिया	लतं	लता,[2] लतायो
ततिया	लताय[3]	लताहि, लताभि
चतुत्थी	लताय[3]	लतानं
पञ्चमी	लताय[3]	लताहि, लताभि
छट्ठी	लताय[3]	लतानं

---

१. गसीनं २.११९—यदि कोई दूसरी विधि न हो, तो 'ग' तथा 'सि' का लोप हो जाता है। जैसे:—लता+सि=लता। मुनि। दण्डी। भिक्खु। वधू। गो।

२. जन्तुहेत्वीघपेहि वा २.११७—'जन्तु', 'हेतु', ईकारान्त शब्द, तथा 'घ' (='आ') और 'प' (='इ', 'ई', 'उ', 'ऊ') से परे, 'यो' विभक्ति का विकल्प से लोप होता है। जैसे—जन्तू, जन्तुयो। हेतू, हेतुयो। दण्डी, दण्डियो। लता, लतायो। रत्ती, रत्तियो। इत्थी, इत्थियो। धेनू, धेनुयो। वधू, वधुयो।

३. घपतेकस्मिं नादीनं यया २.४७—'घ' (='आ') तथा 'प' (='इ', 'ई', 'उ', 'ऊ') से परे, 'ना' आदि एकवचन की विभक्तियों का क्रमशः 'य' तथा 'या' आदेश हो जाता है। जैसे:—लताय। रत्तिया। इत्थिया। धेनुया। वधुया।

सत्तमी	लतायं[४], लताय[४]	लतासु
आलपन	लते[५]	लता, लतायो

शब्दावली—अग्गता (=अग्रता), अच्छरा (=अप्सरा), अञ्ञा (=परमज्ञान), अनुद्दया (= अनुकम्पा), अभिज्झा (=लोभ), अम्मा (=माता), अविज्जा (=अविद्या), आणा (=फरमान), आसा (= इच्छा), ईहा (=चेष्टा), उक्का (=उल्का), उपवा (=वैना), उम्मा (=अतसी), एजा (=कंपन), कच्छा (=कांख), कन्धरा (=कंधा), करका (=ओला), करुणा (=करुणा), कुच्छा (=घृणा), कुहणा (=ढोंग), गाथा (=श्लोक), चन्दिमा (=चन्द्रमा), छाया जटा, जिगुच्छा (=घृणा), तण्हा (=तृष्णा), दयिता (=प्यारी), नावा (=नौका), पटिपदा (=मार्ग), पिच्छिला (=पछला), पुच्छा (=हालचाल पूछना), बाहा (=वाहु), वुद्धा (=वृद्धि), मेत्ता (=मित्रता), सुणिसा (=पतोहू), सभा, आदि आकारान्त स्त्रीलिङ्ग शब्दों के रूप 'लता' के समान होते हैं।

§ १०. इकारान्त स्त्रीलिङ्ग शब्द

रत्ति (=*रात्रि*)

	एकवचन	अनेकवचन
पठमा	रत्ति	रत्ती, रत्तियो, रत्यो[६]
दुतिया	रत्तिं	रत्ती, रत्तियो, रत्यो[६]

---

४. यं २.१०५—'घ' (='आ') तथा 'प' ('इ', 'ई', 'उ', 'ऊ') से परे, 'स्मिं' विभक्ति का विकल्प से 'यं' आदेश हो जाता है। जैसे:—लतायं, लताय। रत्तियं, रत्तिया। वधुयं, वधुया। सब्बायं, सब्बाय। अमुयं, अमुया।

५. घब्रह्मादितो ए २.६२—'घ' (='आ') तथा 'ब्रह्म' आदि शब्दों से परे, 'ग' विभक्ति का विकल्प से 'ए' आदेश हो जाता है। जैसे:—हे लते, लता! भो ब्रह्मे, ब्रह्म! भो कत्ते, कत्त! भो इसे, इसि! भो सखे, सख! [देखिए—तीसरा परिशिष्ट]

	एकवचन	अनेकवचन
ततिया	रत्तिया, रत्या[6]	रत्तीहि, रत्तीभि
चतुत्थी	रत्तिया, रत्या	रत्तीनं
पञ्चमी	रत्तिया, रत्या	रत्तीहि, रत्तीभि
छट्ठी	रत्तिया, रत्या	रत्तीनं
सत्तमी	रत्तियं, रत्यं,[6] रत्या, रत्तिं, रत्तो,[7] रत्तिया	रत्तीसु, रत्तिसु
आलपन	रत्ति	रत्ती, रत्तियो, रत्यो

शब्दावली—युत्ति (=युक्ति), वुत्ति (=खबर), कित्ति (=कीर्ति), मुत्ति (=मुक्ति), तित्ति (=तृप्ति), खन्ति (=सहनशीलता), सन्ति (=शान्ति), सिद्धि, सुद्धि, इद्धि (=ऋद्धि), वुद्धि (=वृद्धि), बुद्धि, बोधि (=ज्ञान), भूमि, जाति, पीति (=प्रीति), नन्दि (=तृष्णा), सन्धि, कोटि (=करोड़), दिट्ठि (=मत), वुट्ठि (=वृष्टि), तुट्ठि (=संतोष), यट्ठि (=लाठी), पालि (=पंक्ति), सति (=स्मृति), धूलि, आदि इकारान्त स्त्रीलिङ्ग शब्द के रूप 'रत्ति' शब्द के समान होते हैं।

§ ११. ईकारान्त स्त्रीलिङ्ग शब्द

इत्थी (=स्त्री)

	एकवचन	अनेकवचन
पठमा	इत्थी	इत्थी, इत्थियो
दुतिया	इत्थियं, इत्थिं[8]	इत्थी, इत्थियो

---

६. ये पस्सिवण्णस्स २.११८:—यकार परे हो, तो स्त्रीलिङ्ग नाम के अन्त्य 'इ' तथा 'ई' का विकल्प से लोप होता है। जैसे:—

रत्ति+यो=रत्यो। रत्ति+ना (घपतेकस्मिं नादीनं यया २.४७)= रत्ति+या=रत्या। रत्ति+स्मिं=(यं २.१०५)=रत्ति+यं=रत्यं।

७. रत्यादीहि टो स्मिनो २.५७—'रत्ति' आदि [देखिए—तीसरा परिशिष्ट] शब्दों से परे, 'स्मिं' विभक्ति का विकल्प से 'ओ' आदेश होता है। जैसे:—

रत्ति+स्मिं=रत्तो, रत्तियं। आदो, आदिस्मिं।

	एकवचन	अनेकवचन
ततिया	इत्थिया	इत्थीहि, इत्थीभि
चतुत्थी	इत्थिया	इत्थीनं
पञ्चमी	इत्थिया	इत्थीहि, इत्थीभि
छट्ठी	इत्थिया	इत्थीनं
सत्तमी	इत्थियं, इत्थिया	इत्थीसु
आलपन	इत्थि	इत्थी, इत्थियो

शब्दावली—नदी, मही (=पृथ्वी), वेतरणी, वापी (=कूँआ), पाटली, कदली, नारी, कुमारी, तरुणी, वारुणी, ब्राह्मणी, सखी, गन्धब्बी (=गन्धर्व स्त्री), किन्नरी, नागी, देवी, यक्खी (=यक्ष स्त्री), अजी (=बकरी), मिगी (=मृगी), वानरी, सूकरी, सीही (=सिंही), हंसी, कुक्कुटी (=मुर्गी) इत्यादि ईकारान्त स्त्रीलिङ्ग शब्द के रूप 'इत्थी' शब्दके समान होते हैं।

§ १२. उकारान्त स्त्रीलिङ्ग शब्द

धेनु (=*गाय*)

	एकवचन	अनेकवचन
पठमा	धेनु	धेनू, धेनुयो
दुतिया	धेनुं	धेनू, धेनुयो
ततिया	धेनुया	धेनूहि, धेनूभि
चतुत्थी	धेनुया	धेनूनं
पञ्चमी	धेनुया	धेनूहि, धेनूभि

---

८. यं पीतो २.७५—स्त्रीलिङ्ग ईकारान्त शब्द से परे, 'अं' विभक्ति का विकल्प से 'यं' आदेश हो जाता है। जैसे:—इत्थी+अं=इत्थियं; इत्थिं।

एकवचनयोसु अघोनं २.६६—तीनों लिङ्गों के एक वचन में, तथा 'यो' विभक्ति आने से, 'घ' और ओकारान्त शब्दों को छोड़, दूसरे शब्दों के अन्त्य स्वर का ह्रस्व हो जाता है। जैसे:—दण्डिनं, दण्डि, दण्डिनो, दण्डिना, दण्डिस्मा। इत्थिं, इत्थिया, इत्थियो। वधुं, वधुया, वधुयो। सयम्भुं, सयम्भुना, सयम्भुवो।

	एकवचन	अनेकवचन
छट्ठी	धेनुया	धेनूनं
सत्तमी	धेनुयं, धेनुया	धेनूसु
आलपन	धेनु	धेनू, धेनुयो

शब्दावली—धातु, यागु (=यवागु), कासु (=गड्ढा), दद्दु (=दाद), कच्छु (=खाज), रज्जु (=रस्सी), आदि उकारान्त स्त्रीलिङ्ग शब्द के रूप 'धेनु' शब्द के समान होते हैं।

§ १३. ऊकारान्त स्त्रीलिङ्ग शब्द

वधू (=बहू)

	एकवचन	अनेकवचन
पठमा	वधू	वधू, वधुयो
दुतिया	वधुं	वधू, वधुयो
ततिया	वधुया	वधूहि, वधूभि
चतुत्थी	वधुया	वधूनं
पञ्चमी	वधुया	वधूहि, वधूभि
छट्ठी	वधुया	वधूनं
सत्तमी	वधुयं, वधुया	वधूसु
आलपन	वधु	वधू, वधुयो

शब्दावली—जम्बू (=जामुन), सरभू (=नदीका नाम, छिपकिली), सुतनू (=सुन्दरी), चमू (=सेना), वामोरू (=स्त्री) इत्यादि ऊकारान्त स्त्रीलिङ्ग शब्द के रूप 'वधू' शब्द के समान होते हैं।



२. अभ्यास

१. हिन्दी में अनुवाद कीजिए—

बुद्धानं गाथा। भिक्खूनं सद्धा। मेत्ताय झानं। वाचाय संवरो। छायाय इच्छा। बुद्धस्स पूजा। मनुस्सानं देवता। देवानं परिसा। मनुस्सानं सभा।

बुद्धानं कथाय विज्जा उप्पज्जति (=उत्पन्न होती है)। बुद्धानं गाथाय सद्धा उप्पज्जति (=उत्पन्न होती है)। गङ्गायं देवता नहायति (=नहाता है)। कञ्ञायो बुद्धं नमस्सन्ति (=प्रणाम करते हैं)। इत्थियो देवताय मन्दिरं गच्छन्ति (=जाते हैं)। भिक्खुनी सद्धाय सङ्घं नमस्सन्ति (=प्रणाम करती हैं)। गाथासु देवतानं परिसाय कथा विज्जति (=है)। भिक्खवो परिसायं निसीदन्ति (=बैठते हैं)। कञ्ञायो भिक्खुनीसु सद्धं संठपेन्ति (=स्थापित करते हैं)। सद्धाय च पञ्ञाय च बुद्धस्स पूजा होति। मेत्ताय भावनाय देवानं तुट्ठि होति। पञ्ञाय भावनाय विमुत्ति होती। नदिया दिसायं धेनू चरन्ति।

२. ऊपर काले अक्षरों में छपे पदों के द्वितिया तथा सत्तमी विभक्ति में रूप लिखिए।

३. पालि में अनुवाद कीजिए—

देवता की विद्या। प्रज्ञा की इच्छा। मैत्री की भावना। कन्या की श्रद्धा। देवता के लिए माला। भूमि में वास। लड़कियों की श्रद्धा बुद्ध की पूजा में है। पृथ्वी पर छाया है। देवता की पूजा से लोगों (पजा) की श्रद्धा बढ़ती है।

४. काले अक्षरों में छपे पदों में लिङ्ग, वचन और विभक्तियाँ बताइए—

विज्जाय पञ्ञा वड्ढति (=बढ़ती है)। विज्जाय इच्छा पञ्ञं वड्ढति (=बढ़ाती है)। भिक्खुनियो कञ्ञायो वाचेन्ति (=पढ़ाती हैं)। कञ्ञायो मालायो इच्छन्ति (=चाहती हैं)। इत्थियो भिक्खुनिया सह गच्छन्ति (=जाती हैं)। भिक्खुनिया दानं देन्ति (=देते हैं)। भिक्खुनिया धम्मदेसना होति। भिक्खुनिया (भिक्खुनियं) इत्थियो पसन्नायो होन्ति।

५. निम्नलिखित शब्दों से वाक्य बनाइए—

नाम-पदानि—कञ्ञायो, भिक्खुनिया गाथं, पीतिया, पालियं, देवता, मेत्ताय, पञ्ञाय भावना, विमुत्तिया, पठवियं।

क्रिया-पदानि—गायन्ति (=गाते हैं)। नच्चन्ति (=नाचते हैं), भासन्ति (=कहते हैं)। भावेति (=भावना करती है)। होति (=होता है)। कीळति-न्ति (=खेलना)। लभति-न्ति। पठति-न्ति। निपज्जन्ति (=लेटती हैं।)

६. (क) अकारान्त पुल्लिङ्ग तथा नपुंसक लिङ्ग शब्दों के रूप में क्या क्या अन्तर हैं ?

(ख) इकारान्त पुल्लिङ्ग, नपुंसक लिङ्ग, तथा स्त्रीलिङ्ग शब्दों के रूप में क्या क्या अन्तर हैं ?

(ग) उकारान्त पुल्लिङ्ग, नपुंसक लिङ्ग तथा स्त्रीलिङ्ग शब्दों के रूप में क्या क्या अन्तर हैं ?

———

पहला काण्ड

तीसरा पाठ

सर्वनाम-प्रकरण

(पहला भाग—साधारण सर्वनाम)

§ १. सब्ब[1] (=सभी)

पुल्लिङ्ग

	एकवचन	अनेकवचन
पठमा	सब्बो	सब्बे[2]
दुतिया	सब्बं	सब्बे
ततिया	सब्बेन	सब्बेहि, सब्बेभि

अपवाद

१. न अञ्ञञ्च नामप्पधाना २.१४१—'सब्ब' आदि कोई शब्द यदि नाम के ऐसा प्रयुक्त हो, या अप्रधान हो, तो उसके रूप सर्वनाम शब्द के समान नहीं होंगे। जैसे—ते सब्बा=वे 'सब्ब' लोग। ते पियसब्बा=वे सभी के प्रिय (यहाँ 'सब्ब' अप्रधान है)। ते अतिसब्बा।

ततियत्थयोगे २.१४२—तृतीयार्थ के योग में, 'सब्ब' आदि शब्दों के रूप सर्वनाम शब्द के समान नहीं होते हैं। जैसे—मासेन पुब्बानं—मासपुब्बानं (यहाँ सर्वनाम शब्द के समान 'पुब्बेसं या पुब्बेसानं' नहीं हुआ)।

चत्थसमासे २.१४३—द्वन्द समास (=चत्थ) होने पर भी, 'सब्ब' आदि शब्दों के रूप सर्वनाम शब्द के समान नहीं होते हैं। जैसे—दक्खिणुत्तरपुब्बानं (यहाँ भी, सर्वनाम शब्द के समान 'पुब्बेसं' नहीं हुआ)।

२. योनमेट् २.१४०—अकारान्त 'सब्ब' आदि शब्दों से परे, 'यो' विभक्ति का 'ए' आदेश होता है। जैसे—सब्बे तिट्ठन्ति। सब्बे पस्स।

	एकवचन	अनेकवचन
चतुत्थी	सब्बस्स	सब्बेसं, सब्बेसानं
पञ्चमी	सब्बम्हा, सब्बस्मा	सब्बेहि, सब्बेभि
छट्ठी	सब्बस्स	सब्बेसं, सब्बेसानं
सत्तमी	सब्बम्हि, सब्बस्मि	सब्बेसु
आलपन	सब्ब, सब्बा	सब्बे

नपुंसक लिङ्ग

	एकवचन	अनेकवचन
पठमा	सब्बं	सब्बानि[4]
दुतिया	सब्बं	सब्बे, सब्बानि
आलपन	सब्ब, सब्बा	सब्बानि

शेष पुल्लिङ्ग के समान

स्त्रीलिङ्ग

	एकवचन	अनेकवचन
पठमा	सब्बा	सब्बा, सब्बायो
दुतिया	सब्बं	सब्बा, सब्बायो
ततिया	सब्बाय	सब्बाहि, सब्बाभि

वेद् २.१४४—जो 'सब्ब' आदि शब्दों से परे 'यो' विभक्ति का 'ए' आदेश किया गया है, वह द्वन्द समास होने पर विकल्प से होता है। जैसे—पुब्बुत्तरे; पुब्बुत्तरा।

३. सब्बादीनं नम्हि च २.१०१—'नं', 'सु', तथा 'हिं' विभक्तियों के आने से, अकारान्त 'सब्ब' आदि शब्दों के अन्त्य स्वर का 'ए' हो जाता है। जैसे—सब्बेसं। सब्बेसु। सब्बेहि।

संसानं २.१०२—'सब्ब' आदि शब्दों से परे, 'नं' विभक्ति का 'सं' तथा 'सानं' आदेश हो जाता है। जैसे—सब्बेसं, सब्बेसानं।

४. सब्बादीहि २.१३९—'सब्ब' आदि शब्दों से परे, 'नि' का 'आ' आदेश नहीं होता है। जैसे—सब्ब+नि=सब्बानि। पुब्बानि। ['सब्बा' नहीं होगा]

	एकवचन	अनेकवचन
चतुत्थी	सब्बस्सा,[5] सब्बाय	सब्बासं, सब्बासानं
पञ्चमी	सब्बाय	सब्बाहि, सब्बाभि
छट्ठी	सब्बस्सा, सब्बाय	सब्बासं, सब्बासानं
सत्तमी	सब्बस्सं,[6] सब्बायं	सब्बासु
आलपन	सब्बे	सब्बा, सब्बायो

कतर, कतम, उभय, इतर, अञ्ञ, अञ्ञतर, तथा अञ्ञतम शब्दों के रूप 'सब्ब' शब्द के समान होंगे।

§ २. पुब्बादीहि छहि २.१४५—पुब्ब (=पहला), पर, अपर, दक्खिण (=दक्षिण), उत्तर, तथा अधर (=नीचा), इन छ शब्दों के रूप 'सब्ब' शब्द के समान ही होंगे; किंतु, पठमा अनेक वचन में इनके दो दो रूप होंगे। जैसे—

पुब्बे, पुब्बा। परे, परा। अपरे, अपरा। दक्खिणे, दक्खिणा। उत्तरे, उत्तरा। अधरे, अधरा।

§ ३. किं[7] (=कौन)

पुल्लिङ्ग

	एकवचन	अनेकवचन
पठमा	को	के
दुतिया	कं	के
ततिया	केन	केहि, केभि

---

५. घपा सस्स स्सा वा २.१०३—स्त्रीलिङ्ग 'सब्ब' आदि शब्दों से परे, 'स' विभक्ति का विकल्प से 'स्सा' आदेश होता है। जैसे—सब्बा+स=सब्बस्सा। सब्बाय।

६. स्मिनो स्सं २.१०४—स्त्रीलिङ्ग 'सब्ब' आदि शब्दों से परे, 'स्मिं' विभक्ति का विकल्प से 'स्सं' आदेश होता है। जैसे—सब्बस्सं; सब्बायं। अमुस्सं, अमुया।

७. किस्स को सब्बासु २.२००—सभी विभक्तियों में, 'किं' शब्द का 'क' आदेश हो जाता है। जैसे—को, के। का, कायो। कं, कानि।

	एकवचन	अनेकवचन
चतुत्थी	कस्स, किस्स[८]	केसं, केसानं
पञ्चमी	कम्हा, कस्मा, किस्मा	केहि, केभि
छट्ठी	कस्स, किस्स	केसं, केसानं
सत्तमी	कम्हि, किम्हि, कस्मिं, किस्मिं	केसु

नपुंसक लिङ्ग

	एकवचन	अनेकवचन
पठमा	किं,[९] कं	के, कानि
दुतिया	किं, कं	के, कानि

स्त्रीलिङ्ग

	एकवचन	अनेकवचन
पठमा	का	का, कायो
दुतिया	कं	का, कायो
ततिया	काय	काहि, काभि
चतुत्थी	कस्सा, काय	कासं, कासानं
पञ्चमी	काय	काहि, काभि
छट्ठी	कस्सा, काय	कासं, कासानं
सत्तमी	कस्सं, कायं	कासु

§ ४. 'य' (=जो) शब्द के रूप, तीनों लिङ्गों में, 'क' शब्द के समान ही होते हैं। जैसे :—

पुल्लिङ्ग—यो, ये; यं, ये; येन, येहि येभि; यस्स, येसं येसानं; यम्हा यस्मा, येहि येभि; यस्स, येसं येसानं; यम्हि यस्मिं, येसु।

---

८. किसस्मिंसु वानित्थियं २.२०१—पुल्लिग और नपुंसक लिङ्ग में, 'स' तथा 'स्मिं' विभक्तियों के आने से, 'किं' शब्द का विकल्प से 'कि' आदेश होता है। जैसे—कस्स; किस्स। कस्मिं; किस्मिं।

९. किमंसिसु सह नपुंसके २.२०२—नपुंसक लिङ्ग में, 'अं' तथा 'सि' विभक्तियों के साथ, 'किं' शब्द का रूप 'किं' होता है।

नपुंसक—यं, ये यानि; यं, ये यानि—शेष पुल्लिङ्ग के समान।

स्त्रीलिङ्ग—या, या यायो; यं, या यायो; याय, याहि याभि; यस्सा याय, यासं यासानं; याय, याहि याभि; यस्सा याय, यासं यासानं; यस्सं यायं, यासु।

§ ५० त, त्य (=वह)

पुल्लिङ्ग

	एकवचन	अनेकवचन
पठमा	सो, स्यो[10]	ते, ने[11]
दुतिया	तं, नं	ते, ने
ततिया	तेन, नेन	तेहि, नेहि, तेभि, नेभि
चतुत्थी	तस्स, नस्स, अस्स[12]	तेसं, नेसं, तेसानं, नेसानं
पञ्चमी	तम्हा, अम्हा, नम्हा, तस्मा, नस्मा, अस्मा	तेहि, नेहि, तेभि, नेभि
छट्ठी	तस्स, नस्स, अस्स[12]	तेसं, नेसं, तेसानं, नेसानं
सत्तमी	तम्हि, अम्हि, नम्हि, तस्मिं, नस्मिं, अस्मिं	तेसु, नेसु

---

१०. त्यतेतानं तस्स सो २.१३०—'सि' विभक्ति आने से, पुल्लिङ्ग तथा स्त्रीलिङ्ग में, 'त्य', 'त' तथा 'एत' शब्दों के तकार का सकार हो जाता है। जैसे—स्यो पुरिसो। स्या इत्थी। सो पुरिसो। सा इत्थी। एसो। एसा।

११. ततस्स नो सब्बासु २.१३३—सभी विभक्तियों में, 'त' शब्द के तकार का विकल्प से नकार हो जाता है। जैसे—ते ने। तेन नेन। तेहि नेहि।

१२. ट सस्मास्मिंस्सायस्संस्सास्संम्हाम्हिस्विमस्स च २.१३४—'स', 'स्मा', 'स्मिं', 'स्साय', 'स्सं', 'स्सा', 'सं', 'म्हा', तथा 'म्हि' परे हों, तो 'त' तथा 'इम' शब्दों का विकल्प से 'अ' आदेश होता है। जैसे—तस्स, अस्स। तस्मा, अस्मा। तस्मिं, अस्मिं। तस्साय, अस्साय। तस्सं, अस्सं। तस्सा अस्सा। तासं, आसं। तम्हा, अम्हा। तम्हि, अम्हि।

इम—इमस्स, अस्स। इमस्मा, अस्मा। इमस्मिं, अस्मिं। इमिस्साय, अस्साय इत्यादि।

नपुंसक लिङ्ग

	एकवचन	अनेकवचन
पठमा	तं, नं	ते, ने, तानि, नानि
दुतिया	तं, नं	ते, ने, तानि, नानि

शेष पुल्लिङ्ग के समान

स्त्रीलिङ्ग

	एकवचन	अनेकवचन
पठमा	सा, स्या	ता, ना, तायो, नायो
दुतिया	तं, नं	ता, ना, तायो, नायो
ततिया	ताय, नाय, तस्सा,[13] तिस्सा[14]	ताहि, नाहि, ताभि, नाभि
चतुत्थी	तिस्साय,तस्साय[15] अस्साय तिस्सा, तस्सा,[13] ताय	तासं, आसं, तासानं

---

१३. स्सा वा तेतिमामूहि २.४८—स्त्रीलिङ्ग 'ता', 'एता', 'इमा', तथा 'अमू' शब्दों से परे, 'ना' आदि एकवचन की विभक्तियों का विकल्प से 'स्सा' आदेश हो जाता है। जैसे—तस्सा कतं। तस्सा दीयते। तस्सा निस्सरणं। तस्सा परिग्गहो। तस्सा पतिट्ठितं। विकल्प से 'ताय' भी होता है।

एतिस्सा। एताय।

इमिस्सा। इमाय।

अमुस्सा। अमुया।

१४. ताय वा २.५५—'स्सं', 'स्सा, तथा 'स्साय' से पूर्व, 'ता' शब्द का विकल्प से 'ति' आदेश हो जाता है। जैसे—तस्सं, तिस्सं। तस्सा, तिस्सा। तिस्साय, तस्साय।

१५. तेतिमातो सस्स स्साय २.५६—'ता', 'एता', तथा 'इमा' शब्दों से परे, 'स' विभक्ति का विकल्प से 'स्साय' आदेश होता है। जैसे—तस्साय, ताय। एतिस्साय, एताय। इमिस्साय, इमाय।

घो स्सं स्सा स्साय तिंसु २.६५—'स्सं' आदि आने से, 'घ' (='आ') ह्रस्व हो जाता है। जैसे—तस्सं, तस्सा, तस्साय, तं, सभतिं, परिसतिं।

	एकवचन	अनेकवचन
पञ्चमी	ताय, नाय, तस्सा	ताहि, नाहि, ताभि, नाभि
छट्ठी	तिस्साय, तस्साय, अस्साय	
	तिस्सा, तस्सा, अस्सा, ताय	तासं, आसं, तासानं
सत्तमी	तिस्सं, तस्सं, अस्सं, तायं, तस्सा, तिस्सा	तासु

§ ६. सर्वनाम २७ हैं—सब्ब (=सर्व), कतर (=कौन), कतम (=कौन), उभय (=दोनों), इतर (=दूसरा), अञ्ञ (=अन्य), अञ्ञतर (=कोई), अञ्ञतम (=अन्यतम), पुब्ब (=पूर्व), पर, अपर, दक्खिण (=दक्षिण), उत्तर, अधर (=अधः), य (=जो), त—स्य (=वह), एत (=यह), इम (=यह), किं (=कौन), एक, उभ, द्वि, ति (=तीन), चतु (=चार), तुम्ह (=तू), अम्ह (मैं)।

संख्या, अतुल्य, असहाय तथा अन्य (=कोई कोई)—इतने अर्थों में 'एक' शब्द प्रयुक्त होता है। जैसे—एको बालको=एक लड़का। बुद्धो एको व लोके=लोक में बुद्ध अतुल्य हैं। अहं एको व अरञ्ञे विहरामि=मैं जंगल में अकेला विहार करता हूँ। एके एवं वदन्ति=कोई कोई लोग ऐसा कहते हैं।

संख्या के अर्थ में, 'एक' शब्द एकवचन में ही होता है। तीनों लिङ्गों में इसके रूप 'सब्ब' शब्द के समान होते हैं।

[संख्या वाचक शब्दों के लिए देखिए—पृ० १६४]

३. अभ्यास

१. हिन्दी में अनुवाद कीजिए—

सब्बे सङ्खारा दुक्खा। सब्बे धम्मा अनत्ता सन्ति (=हैं)। सब्बे पाणा दण्डस्स तसन्ति (=डरते हैं)। बुद्धो सब्बानि झानानि जानाति (=जानता है)। सब्बे देवा सग्गे विचरन्ति (=विचरण करते हैं)। सब्बायो भिक्खुनियो बुद्धं वन्दन्ति (=प्रणाम करते हैं)। सब्बासु दिसासु भिक्खु मेत्तं भावेति (=भावना करता है)।

केन ञाणेन, कस्स भिक्खुस्स, कम्हि ठाने, किं झानं होति? का भिक्खुनी, काय भावनाय, काय पत्तिया, कायं कुटिकायं विहरति (=विहार करती है)? कानि झानानि भिक्खु लभति (=प्राप्त करता है)? कानि झानानि भिक्खुस्स होन्ति? यो सीलं रक्खति सो झानं लभति (=लाभ करता है)। येहि धम्मेहि सम्बोधिया पत्ति होति, ते धम्मा अनुत्तरा होन्ति।

२. ऊपर काले अक्षरों में छपे पदों के ततिया छट्ठी तथा सत्तमी विभक्ति में रूप लिखिए, और उनका वाक्यों में प्रयोग कीजिए।

३. पालि में अनुवाद कीजिए—

सब मनुष्य मरण-धर्म्मा हैं (=सन्ति)। सब देवता स्वर्ग में विचरण करते हैं (=विचरन्ति)। सभी भिक्षुओं का शरण बुद्ध है (=अत्थि)। जो दान देता है (=देति), वह स्वर्ग को जाता है (=गच्छति)। जिसकी प्रज्ञा नहीं है (=नत्थि), उसकी विद्या अल्प होती है (=होति)। कौन देवता, किस मनुस्स को, किस फल के लिए, किस धर्म्म का उपदेश करता है (=देसति)?

३. काले अक्षरों में छपे पदों में लिङ्ग, वचन तथा विभक्तियाँ बताइए—

सब्बाय विज्जाय वायामो। सब्बाय देवताय विचारो। सब्बाय दिसाय भिक्खु मेत्तं भावेति (=भावना करता है)। सब्बे देवा सब्बे बुद्धे नमस्सन्ति (=प्रणाम करते हैं)। काय विज्जाय काय पञ्ञाय पत्ति होति?

४. निम्नलिखित शब्दों से वाक्य बनाइए—

सर्वनाम-पदानि—सब्बे देवा, सब्बे मनुस्से, सब्बानि फलानि, सब्बे दारका, सब्बानि पोत्थकानि, सब्बेसु धम्मेसु।

क्रिया-पदानि—नमस्सन्ति (=प्रणाम करते हैं), वदन्ति (=बोलते हैं), खादन्ति (=खाते हैं), पठन्ति (=पढ़ते हैं), विहरति (=विहार करता है)।

५. निम्नलिखित शब्दों का वाक्य में प्रयोग कीजए—

सब्बेन सब्बं, सब्बथा सब्बं (=सब प्रकार से)। अञ्ञमञ्ञं (=एक दूसरे को)। येन भगवा तेन (=जहाँ भगवान थे वहाँ)। तेन, तस्मा (=तिस कारण से)। येन, यस्मा (=जिस कारण से)।

६. (क) अकारान्त नाम तथा सर्वनाम शब्दों के रूप में क्या २ अन्तर हैं?

(ख) आकारान्त नाम तथा सर्वनाम शब्दों के रूप में क्या २ अन्तर हैं?

पहला काण्ड

चौथा पाठ

विभक्ति-प्रकरण

(पहला भाग—साधारण नियम)

१. पठमा विभत्ति

§ १. प ठ मा त्थ म त्ते २.३९—कर्तृवाच्य के कर्ता में, या केवल अर्थ प्रगट करने में, 'पठमा विभत्ति' होती है। जैसे—समणो झायति=श्रमण ध्यान लगाता है। अग्गि। कञ्आयो। फलानि।

§ २. आ म न्त णे २.४०—आमन्त्रण करने के अर्थ में, 'आलपन विभत्ति' होती है। 'आलपन' में भी, 'पठमा' ही की विभक्तियाँ लगती हैं। जैसे—आवुसो सुमन सामणेर ! रे धुत्ता ! हे कञ्ञे ! जे अय्ये !

२. दुतिया विभत्ति

§ ३. क म्मे दु ति या २.२—कर्तृवाच्य के कर्म में 'दुतिया विभत्ति' होती है। जैसे—सूदो ओदनं पचति। सप्पो जने डंसति।

§ ४. का ल द्धा न म च्च न्त सं यो गे २.३—क्रिया, गुण, तथा द्रव्य के लगातार होने से, समय तथा दूरी वाचक शब्द में 'दुतिया विभत्ति' होती है। जैसे—*समय में*—सामणेरो मासं विनयं पठति=श्रामणेर महीना भर (लगातार) विनय पढ़ता है। दिवसं गेहो सुञ्ञो तिट्ठति=दिन भर घर सूना रहता है। मासं गुळधाना=महीने भर गुड़-धान की मिठाई चलती रही।

दूरी में—भच्चो कोसं गच्छति=भृत्य कोस भर जाता है। कोसं कुटिला नदी=कोस भर नदी टेढ़ी-मेढ़ी है। कोसं पब्बतो=कोस भर पहाड़ ही पहाड़ है।

§ ५. 'धि' (=धिक्कार), 'अन्तरा' (=बीच), 'पति' (=प्रति), तथा 'विना' शब्दों के योग में 'दुतिया विभत्ति' होती है। जैसे—

धि अलसं सिस्सं=आलसी शिष्य को धिक्कार है। अन्तरा च राजगहं अन्तरा च नाळन्दं=राजगृह और नालन्दा के बीच। लोका पसन्ना बुद्धं पति=लोग बुद्ध के प्रति बड़ी श्रद्धा रखते हैं। न सिज्झति धम्मो विरियं विना=विना वीर्य के धर्म सफल नहीं होता है।

३. ततिया विभत्ति

§ ६. कत्तुकरणेसु ततिया २.१८—भाववाच्य तथा कर्म-वाच्य के कर्त्ता में, करण कारक में, तथा क्रियाविशेषण में, 'ततिया विभत्ति' होती है।

जैसे—पुरिसेन गम्मति=पुरुष के द्वारा चला जाता है। बालकेन चन्दो दिस्सति=वालक के द्वारा चाँद देखा जाता है (देखिए—पृ० १७८)।

करण कारक में—दण्डेन सप्पं पहरति=लाठी से साँप मारता है।

क्रियाविशेषण में—गोत्तेन गोतमो=गोत्र से गौतम है। सुमेधो नाम नामेन=नाम से सुमेध। इसी तरह—विसमेन धावति, समेन धावति, द्विदोणेन धञ्ञं किणाति, पञ्चकेन पसवो किणाति। इत्यादि

§ ७. सहत्थेन २.१९—साथ होने के अर्थ में 'ततिया विभत्ति' होती है।

जैसे—सिस्सेहि सह=सद्धिं=समं आगच्छति आचरियो=शिष्यों के साथ आचार्य आता है।

§ ८. तुल्यत्थेन वा ततिया २.४२—तुल्य के अर्थ में 'ततिया विभत्ति' होती है, और छट्ठी भी।

जैसे—आचरियेन सदिसो सिस्सो=आचार्य के सदृश ही शिष्य है। जनकेन तुल्यो पुत्तो=पिता के तुल्य ही पुत्र है। आचरियस्स सदिसो सिस्सो। जनकस्स तुल्यो पुत्तो।

४. चतुत्थी विभत्ति

§ ९. चतुत्थी सम्पदाने २.२६—सम्प्रदान में 'चतुत्थी विभत्ति' होती है।

जैसे—याचकस्स भिक्खं ददाति=भिखमंगे को भीख देता है। ब्राह्मणानं भोजनं ददाति=ब्राह्मणों को भोजन देता है।

§ १०. तादत्थ्ये २.२७—'उसके लिए', इस अर्थ में 'चतुत्थी विभत्ति' होती है।

जैसे—लोकहिताय बुद्धो धम्मं देसेति=लोक के हित के लिए, बुद्ध धर्म का उपदेश करते हैं। न समत्थो दारभरणाय=स्त्री के पालन करने में समर्थ नहीं है। सूदो पाकाय भोजनघरं गच्छति=रसोइया पकाने के लिए भोजन-गृह जा रहा है। माणवकानं अनज्झायो रुच्चति=विद्यार्थियों को अनध्याय अच्छा लगता है। भच्चो अमच्चस्स सतं धारेति=भृत्य अमात्य को सौ रुपए धारता है। पापिट्ठस्स (पापिट्ठाय) धम्मेन किं=पापी को धर्म से क्या दरकार? जीवितं तिणाय अपि न मञ्ञति=जीवन को तृण भर भी नहीं समझता है।

५. पञ्चमी विभत्ति

§ ११. पञ्चम्यवधिस्मा २.२८—अवधि-वाचक शब्द में 'पञ्चमी विभत्ति' होती है।

जैसे—गामस्मा गच्छति=गाँव से जाता है। चोरस्मा भायति=चोर से डरता है। चोरस्मा रक्खति=चोर से बचाता है।

६. छट्ठी विभत्ति

§ १२. छट्ठी सम्बन्धे २.४१—सम्बन्ध में 'छट्ठी विभत्ति' होती है।

जैसे—आचरियस्स पुत्तो=आचार्य का पुत्र। गामस्स मनुस्सा=गाँव के मनुष्य। पहरतो पिट्ठिं ददाति=मारने वाले की ओर पीठ फेर देता है। दिवसस्स तिक्खत्तुं=दिन में तीन वार।

कृदन्त शब्दों के साथ भी बहुधा छट्ठी विभक्ति होती है। जैसे—साधु सम्मतो बहुजनस्स=बहुत लोगों का मान्य। तिट्ठन्ति धम्मस्स ञातारो=धर्म के जानने वाले मौजूद हैं।

§ १३. यतो निद्धारणं २.३८—जाति, गुण, तथा क्रिया से, जहाँ बहुतों में से एक का निर्धारण किया जाय, वहाँ 'छट्ठी विभत्ति' होती है, और 'सत्तमी' भी।

जैसे—मनुस्सानं, मनुस्सेसु वा खत्तियो सेट्ठो=मनुष्यों में, क्षत्रिय (जाति) श्रेष्ठ है। कण्हा गावीनं, गावीसु वा सम्पन्नखीरतमा=काली गौवों में अधिक दूध देने वाली होती हैं। दानानं, दानेसु वा धम्मदानं सेट्ठं=दानों में, धर्म्मदान श्रेष्ठ है।

§ ७. सत्तमी विभत्ति

§ १४. सत्तम्याधारे २.३४—क्रिया के आधार में 'सत्तमी विभत्ति' होती है। जैसे—पब्बते तिट्ठति=पर्वत पर रहता है। कुम्भे ओदनं पचति=हांडी में भात पकाता है। आकासे सकुणा विचरन्ति=आकाश में पक्षी विचरण करते हैं। तिलेसु तेलं वत्तति=तिल में तेल है।

§ १५. निमित्ते २.३५—निमित्त के अर्थ में 'सत्तमी विभत्ति' होती है। जैसे—अजिनम्हि मिगं हञ्ञति=चर्म के निमित्त से मृग को मारता है। मुसावादे पाचित्तियं=मृषा-वाद से 'पाचित्तिय' अपराध होता है।

§ १६. यब्भावो भावलक्खणं २.३६—जहाँ, एक काम के होने पर दूसरे काम का होना जाना जाता है, वहाँ 'सत्तमी विभत्ति' होती है। जैसे—आचरिये आगते सिस्सा उट्ठहन्ति=आचार्य के आने पर शिष्य खड़े हो जाते हैं।

§ १७. छट्ठी चानादरे २.३७—ऊपर के ही अर्थ में, यदि अनादर का भाव मालूम हो, तो 'छट्ठी विभत्ति' भी होती है।

जैसे—"आकोटयन्तो सो नेति सिविराजस्स पेक्खतो"=शिविराज के देखते ही देखते, वह उसे पीटते हुए ले जाता है। "मच्चु गच्छति आदाय पेक्खमाने महाजने"=इतने लोगों के देखते ही देखते, मृत्यु ले कर चली जाती है।

[ऊपर के उदाहरणों में, शिविराज तथा महाजन के प्रति अनादर का भाव प्रगट होता है।]

४. अभ्यास

१. हिन्दी में अनुवाद कीजिये—

सक्क-पञ्ह-सुत्तं

एकं समयं भगवा (भगवान्) मगधेसु विहरति इन्दसाल-गुहायं। तेन खो पन समयेन, सक्कस्स देवानं इन्दस्स उस्सुक्कं उदपादि (=उत्पन्न हुआ) भगवन्तं दस्सनाय। अथ खो (=तव) सक्को देवानं इन्दो देवेहि तावतिंसेहि परिवुतो भगवन्तं दस्सनाय अगमासि (=गया)। पञ्चसिखो पि खो गन्धव्व-पुत्तो वीणं आदाय (=लेकर) सक्कस्स अनुचरियं उपागमि (=आया)। अथ खो (=तव) सक्को इन्दसाल-गुहं पविसित्वा (=प्रवेश करके) भगवन्तं अभिवादेत्वा (=प्रणाम करके) एकमन्तं (=एक किनारे) अट्ठासि। देवा पि एकमन्तं अट्ठंसु (=खड़े हो गए)। तेन खो पन समयेन, अन्धकारगुहायं आलोको उदपादि (=उत्पन्न हुआ), यथा तं देवानं देवानुभावेन।

अथ खो सक्को देवानं इन्दो भगवन्तस्स धम्म-देसनं सुत्वा (=सुन कर), वेद-पटिलाभं सोमनस्स-पटिलाभं च पत्तो (=प्राप्त कर) भगवन्तं आह—

"अभिजानामि (=याद करता हूँ), भन्ते! इतो (=इससे) पुब्बे एव-रूपं सोमनस्स-पटिलाभं" ति।

"भूत-पुब्बं भन्ते! देवासुर-सङ्गामो अहोसि (=हुआ था)। तस्मिं सङ्गामे देवा जिनिंसु (=जीत गए), असुरा पराजिंसु (=हार गए)। 'या च दिब्बा ओजा या च असुर-ओजा—उभयं एतं देवा परिभुञ्जिस्सन्ती'ति चिन्तेत्वा, (=भोग करेंगे, ऐसा विचार कर) सोमनस्स-पटिलाभो मे जातो। यो खो पन मे भन्ते! सो वेद-पटिलाभो सोमनस्स-पटिलाभो, सो न निब्बिदाय न संबोधाय न निब्बाणाय संवत्तति। यो खो पन मे अयं भन्ते! भगवन्तस्स धम्मं सुत्वा, वेद-पटिलाभो सोमनस्स-पटिलाभो, सो एकन्त-निब्बिदाय संबोधाय, निब्बाणाय संव-त्तती"ति।

अथ खो सक्को देवानं इन्दो पाणिना पठविं परामसित्वा (=छू कर) तिक्खत्तुं (=तीन वार) उदानं उदानेसि—

"नमो तस्स भगवतो (=भगवन्तस्स) अरहतो (=अरहन्तस्स) सम्मा-सम्बुद्धस्सा"ति। इमस्मिं च पन वेय्याकरणस्मिं भञ्ञमाने (=कहे जाने पर) सक्कस्स देवानं इन्दस्स धम्म-चक्खु उदपादि (=उत्पन्न हुआ)—'यं किं चि समुदय-धम्मं सब्बं तं निरोध-धम्मं'ति।

२. निम्नलिखित वाक्यों का हिन्दी में अनुवाद कीजिए; तथा, काले अक्षरों में छपे पदों के कारक बताइए—

कायस्स भेदा, परं मरणा, सुगतिं सग्गं लोकं उपपज्जति (=उत्पन्न होता है)। भिक्खु रत्तिया पच्छिमं यामं पच्चुट्ठाय (=उठ कर) चङ्कमेन आवरणेहि धम्मेहि चित्तं परिसोधेति (=शुद्ध करता है)। सिक्खापदेसु सिक्खति। सुजाता तस्सा दासिया वचनं सुत्वा (=सुनकर), पुण्णं दासिं सब्बं अलङ्कारं अदासि (=दे दिया)। तस्मिं समये मारो देव-पुत्तो मार-घोसनं घोसापेत्वा (=घोषित करा के) मारबलं आदाय (=लेकर) निक्खमि (=निकल गया)। मारबले पन बोधिमण्डं उपसङ्कमन्ते उपसङ्कमन्ते, (=पास जाते हुए), तेसं एको पि ठातुं नासक्खि (=ठहर नहीं सका)। सुद्धोदन-पुत्तेन सिद्धत्थेन सदिसो (=सदृश) अञ्ञो पुरिसो नाम नत्थि। जातिया खो सति (=होने पर) जरा-मरणं होति। विञ्ञाणे खो सति (=होने पर), नाम-रूपं होति। आसवेहि चित्तं विमुच्चि (=मुक्त हो गया)।

३. पालि में अनुवाद कीजिए—

भिक्षु लोग एक वन-खण्ड (=वन-सण्ड) में विहार करते थे (=विहरिंसु)। वे भगवान के दर्शन के लिए श्रावस्ती (सावत्थी) गये (=अगमिंसु)। उन के साथ एक परिव्राजक संन्यासी भी गया (=अगमि)।

जो मनुष्य शील की रक्षा करता है (=रक्खति), वह मर जाने के बाद देह छूट जाने पर स्वर्ग लोक में उत्पन्न होता है (=उप्पज्जति)। उस भगवान् सम्यक् सम्बुद्ध को नमस्कार है। चित्त के आस्रव (मल) क्षय होने पर चित्त विमुक्त हो जाता है (=विमुच्चति)। सङ्घ को दान देने से, बहुत पुण्य होता है (=बहु पुञ्ञं पसंवति)। शील से ध्यान उत्पन्न होता है। (=उप्पज्जति)। ध्यान से प्रज्ञा उत्पन्न होती है (=उप्पज्जति)। प्रज्ञा से विमुक्ति होती है (=होति)।

४. निम्नलिखित पालि-मुहावरों को याद कर लीजिए, तथा उनसे वाक्य बनाइये—

पच्छा-भत्तं=भोजन करने के बाद। पिण्डपातो=भिक्षा। पटिसल्लानं=ध्यान। सम्मोदनीयं कथं साराणीयं वीतिसारेत्वा=कुशल-क्षेम की बातचीत समाप्त करके। पुब्बण्ह-समयं निवासेत्वा=पूर्वाह्न समय पहन कर। पत्त-चीवरं आदाय=पात्र तथा चीवर (कन्था) को लेकर। पिण्डाय पाविसि=भिक्षा के लिए प्रवेश किया। अत्त-मना अभिनन्दि=प्रसन्न होकर अभिनन्दन किया।

पहला काण्ड

पाँचवाँ पाठ

अव्यय-प्रकरण

(पहला भाग—साधारण प्रयोग)

§ १. अव्यय शब्द सदा 'एक-रूप' रहते हैं। लिङ्ग, वचन, तथा विभक्ति के कारण, उनमें कोई अन्तर नहीं होता है। मोग्गल्लानाचार्य ने 'अव्यय' का नाम 'असंख्य'[1] रक्खा है; क्योंकि, उसमें संख्या नहीं होती है। "न विज्जते संख्या यस्स तं असंख्यं" मोग्गलान पञ्जिका ३.२.।

साधारणत: अव्यय पाँच प्रकार के होते हैं—(१) उपसर्ग, (२) निमित्तार्थक, (३) पूर्वकालिक, (४) तद्धितान्त, और (५) रूढ़ि।

१. उपसर्ग

§ २. उपसर्ग बीस हैं—प, परा, नि, नी, उ, दु, सं, वि, अव, अनु, परि, अभि, अधि, पति, सु, आ, अति, अपि, अप, उप। उपसर्ग के लगने पर, क्रिया के अर्थ में कभी तो कुछ विशेषता हो जाती है, कभी भिन्न, और कभी बिल्कुल उल्टा ही अर्थ हो जाता है। [देखिए—दूसरा काण्ड, सातवाँ पाठ] जैसे—

जहति=छोड़ता है........पजहति=एकदम छोड़ देता है
किरति=बिखेरता है......विप्पकिरति=चारों ओर बिखेर डालता है
हरति=हरण करता है..... पहरति=मारता है
गच्छति=जाता है........आगच्छति=आता है

---

१. असंख्ये हि सब्बासं २.१२०—'असंख्य' शब्दों से परे, सभी विभक्तियों का लोप होता है। जैसे—च, वा, एव, एवं।

२. निमित्तार्थक

§ ३. 'यह करने के लिए', इस अर्थ में निमित्तार्थक अव्यय होता है। जैसे—भोत्तुं गच्छति=भोजन करने के लिए जाता है। कातुं=करने के लिए। सोतुं=सुनने के लिए। दट्ठुं=देखने के लिये। युज्झितुं=युद्ध करने के लिए। वत्तुं=बोलने के लिए। रुज्झितुं=रोकने के लिए [देखिए—पृ० १५२]।

३. पूर्वकालिक

§ ४. 'इस काम को करके', इस अर्थ में पूर्वकालिक अव्यय होता है। जैसे—

विहारं गन्त्वा बुद्धं वन्दति=विहार जा कर बुद्ध को प्रणाम करता है। कत्वा=करके। सुत्वा=सुन कर। पस्सित्वा=देख कर [देखिए—पृ० १५४]।

४. तद्धितान्त

§ ५. नाम तथा सर्वनाम से परे, तद्धित के कुछ प्रत्यय लगने से, अव्यय बन जाता है। जैसे—सब्ब—सब्बत्थ=सभी जगह। य—यहिं=जहाँ। किं—कदा=कब। सतं—सतसो=शतसः [देखिए पृ० २१५-२२०]।

५. रूढ़ि

§ ६. रूढ़ि अव्यय प्रधानतः तीन प्रकार के हैं—(क) क्रियाविशेषण, (ख) संयोजकादि, (ग) विस्मयादिबोधक।

(क) *क्रियाविशेषण*—कभी कभी क्रियाविशेषण द्वितीया या तृतीया विभक्ति के एकवचन में रहता है। जैसे—

वेगं गच्छति; वेगेन गच्छति=तेज जा रहा है।

निम्न लिखित अव्यय क्रियाविशेषण की भाँति व्यवहृत होते हैं—

अग्गतो=सामने

अज्ज=आज

अद्धवत्थु=निश्चय से

अतीव=अत्यधिक

अत्थ=यहाँ

अत्थं=विनाश, अदर्शन

अत्र=यहाँ

अद्धा=निश्चय से

अधुना=इस समय
अधो=नीचे
अन्तरा=मध्य में
अन्तरेन=मध्य में, विना
अन्तो=मध्य में
अप्पेव=शायद
अप्पेव नाम=शायद
अभिक्खणं=बार बार
अभिण्हं=बार बार
अमा=साथ
अमुत्र=परलोक में
अलं=बस
अवस्सं=ज़रूर
आम=हाँ
आरका=दूर
आरा=दूर
आवि=प्रकट
इध=यहाँ
इंघ=प्रेरणा करना
इति=ऐसा
इत्थं=ऐसा
इदानि=इस समय
इह=यहाँ
ईसं=थोड़ा
उच्चं=ऊँचा
उद्धं=ऊपर
उपरि=ऊपर
एतरहि=अब
एत्तावता=अब तक
एत्थ=यहाँ
एव=निश्चय से
एवं=ऐसे
एवम्पि=ऐसे भी
कच्चि=क्या
कत्थ=कहाँ
कथं=कैसे
कथञ्चि=किसी प्रकार
कदा=कब
कदाचि=शायद
कहं=कहाँ
कामं=निश्चय से
किं=क्यों
किञ्चि=कुछ कुछ
किंसु=कैसे
कित्तावता=कब तक
कीव=कब तक, कितना
कुत्थ=कहाँ
कुदाचनं=कभी
कुहिं=कहाँ
कुहिञ्चनं=कहीं
कुत्र=कहाँ
क्व=कहाँ
चन=कुछ } अनिश्चय वाचक
चि=कुछ }
चिरं=दीर्घकाल
चिरेण=विलम्ब से
चिररत्ताय=दीर्घ काल तक
चिरस्सं=चिरकाल

जातु=कभी, निश्चय से
तं=उस हेतु से
तग्घ=निश्चित रूप से
ततो=उस हेतु से
तत्थ=वहाँ
तत्र=वहाँ
तथरिव=तथैव, वैसे ही
तथा=वैसे
तथेव=वैसे ही
तदा=तब
तदानि=तब
तहिं=वहाँ
तहं=वहाँ
ताव=तब तक
तावता=तब तक
तिरियं=तिरछा
तिरो=छिपा हुआ, उस पार
तुण्ही=चुप
तेन=उस हेतु से
दिट्ठा=प्रसन्नता से, भाग्य से
दिवा=दिन में
दुट्ठु=बुरा, बुरी तरह
दूरा=दूर
दोसो=रात में
धुवं=स्थिर, निश्चय
न=नहीं
ननु=विरोध सूचक अव्यय, क्यों
नमो=नमस्कार
नहि=नहीं
नाना=भिन्न
नीचं=थोड़ा, नीचा
नु=शायद, क्यों
नून=निश्चय से
नो=नहीं
पगे=प्रातःकाल
पतिरूपं=ठीक
परम्मुखा=पीछे की ओर
परसुवे=परसों
परितो=चारो ओर
पसय्ह=बलात्कार से
पातु=प्रकट, सामने
पातो=प्रातःकाल
पायो=प्रायः
पुथु=बिना
पुनप्पुनं=बार बार
पुरतो=सामने
पुरे=सामने
पेच्च=परलोक में
बलवं=प्रबल रूप से
बहिद्धा=बाहर
बही=बाहर
बाहिरा=बाहर
बाहिरं=बाहर
मनं=थोड़ा
मा=नहीं
मिच्छा=झूठ
मुधा=बेकार
मुसा=झूठ

मुहु=बार बार
यं=जिस कारण से
यतो=जिस हेतु से
यत्थ=जिस स्थान पर
यत्र=जहाँ
यथत्तं=ऐसा ही
यथरिव=जैसे, यथैव
यथा=जैसे
यथाच=जैसे
यथातथं=ऐसा ही
यथापि=जैसे
यथाहि=जैसे
यथेव=जैसे
यहिं=जहाँ
याव=जब तक, जितना
यावता=जब तक, जितना
येन=जिस हेतु से
रत्तं=रात्रि में
रहो=गुप्त
रिते=बिना
लहु=जल्द
विना=बिना
विय=सदृश
वे=निश्चय से
सकिं=एक बार
सच्छि=प्रत्यक्ष
सज्जु=शीघ्र, तत्काल
सदा=सर्वदा
सद्धं=अनुकूल
सद्धिं=साथ
सनं=सर्वदा
सनिकं=शीघ्र
सपदि=शीघ्र, तत्काल
सब्बतो=चारो ओर
समन्ततो=चारो ओर
समन्ता=चारो ओर
समं=साथ
सम्पति=इस समय
सम्मा=अच्छी तरह
सयं=स्वयं
सं=प्रसन्नतापूर्वक
सह=साथ
सहसा=अकस्मात्
स्वे=आगामी कल
साधु=ठीक
सामं=स्वयं
साहु=साधु
सायं=सायंकाल
सु=अथवा
सुट्ठु=अच्छी तरह
सुवत्थि=कल्याण
सुवे=कल (आगामी)
सेय्यथापि=जैसे
सेय्यथापि नाम=जैसे
हिय्यो=कल (बीता हुआ)
हेट्ठा=नीचे

(ख) संयोजकादि

'उद' =किन्नु बुद्धं सरणं गच्छसि, उद अञ्ञं सरणं ?

'उदाहु' =किन्नु बुद्धं सरणं गच्छसि, उदाहु अञ्ञं सरणं?

'किमु' =जीवितक्खये पत्ते किमु खीरभोजनं ?

'किमुत' =जीवितक्खये पत्ते किमुत खीरभोजनं ?

च=समणो बुद्धं वन्दति च सीलं रक्खति च।

चे=बुद्धो भवेय्य चे, मारं जेस्सति।

यदि=यदि बुद्धो भवेय्य, मारं जेस्सति।

सचे=सचे बुद्धो भवेय्य, मारं जेस्सति।

(ग) विस्मयादिबोधक

निम्नलिखित विस्मयादि-बोधक अव्यय हैं—अङ्ग=हे। अत्थु=ऐसा हो, ईर्ष्या का निर्देशक। एवं=हाँ। अद्धा=निश्चय से। अम्भो=हे। अरे। अहो=आश्चर्य है। जे=स्त्रियों को सम्बोधन करने में (आजकल गया-पटना जिले में इसका रूप 'गे' हो गया है। जैसे गे मैय्या! गे अव्या! गे बीबी! गे दाई!)। धि=धिक्कार। भो=हे। रे। वे=निश्चय से। साधु=स्वीकार करने के अर्थ में। हंहो=हे। हन्द=प्रेरणा द्योतक। हा=शोक द्योतक। हि=आः। हे=हे।

द्रष्टव्यः—निम्नलिखित अव्ययों का अपना कोई अर्थ नहीं है, किंतु वे वाक्यालंकार या पादपूर्ति में आते हैं। जैसे—

अस्सु। खो। चे। पन। यग्घे। सुदं। ह

तयो अस्सु धम्मा जहिता भवन्ति! तेन खो पन समयेन ?

५. अभ्यास

१. हिन्दी में अनुवाद कीजिए—

दीपङ्करो नाम जिनो पुरा अहोसि (=थे)। तस्स अपर-भागे कोण्डञ्ञो नाम बुद्धो उदपादि (=उत्पन्न हुए)। को नु हासो किं आनन्दो, निच्चं पज्जलिते सति (=होने पर)। यो च पुब्बे पमज्जित्वा (=प्रमाद करके), पच्छा सो न पमज्जति (=प्रमाद करता है); सो इमं लोकं अब्भा मुत्तो चन्दिमा विय पभासेति (=प्रकाशित होता है)। पापं चे पुरिसो कयिरा (=करे), न तं कयिरा (=करे) पुनप्पुनं। पापो पि पस्सति (=देखता है) भद्रं, याव पापं न पच्चति (=फलता है)। यदा च पच्चति (=फलता है) पापं, अथ पापो पापानि पस्सति (=देखता है)। कच्चि ते आवुसो! खमनीयं? कच्चि यापनीयं? कच्चि न किञ्चि दुक्खं ति? खमनीयं मे आवुसो! यापनीयं मे आवुसो! अपि च मे सीसे थोकं दुक्खं ति। लाभा वत मे! सुलद्धं वत मे! सत्था च मे भगवा अरहं सम्मा-सम्बुद्धो ति।

"एवं देवा" ति खो, भिक्खवे! सारथि विपस्सिस्स कुमारस्स पटिस्सुत्वा (=उत्तर दे कर) भद्रानि यानानि योजापेत्वा (=जुतवा कर) पटिवेदेसि (=सूचित किया)—"युत्तानि (=जोत लिए गए हैं) खो ते देव! यानानि, यस्स दानि कालं मञ्ञसी" ति (=समझते हैं)। अथ खो विपस्सी कुमारो भद्दं यानं अभिरुहित्वा (=चढ़ कर) भद्देहि यानेहि उय्यान-भूमिं निय्यासि (=गये)।

"अयं पन, सम्म सारथि! पुरिसो किं कतो, केसा पि'स्स न यथा अञ्ञेसं, कायो पि'स्स न यथा अञ्ञेसं" ति? 'एसो खो, देव! जिण्णो नाम'; न दानि तेन चिरं जीवितब्बं भविस्सती ति (=जीना होगा)।'

"तेन हि सम्म सारथि! अलं दानि अज्ज उय्यान-भूमिया, इतो, व अन्तेपुरं पच्चनियाहीति (=लौटा ले चलो)। धिरत्थु किर भो जाति नाम, यत्र हि नाम जातस्स जरा पञ्ञायिस्सतीति (=अनुभव करना पड़ता है)।

"किन्नु खो सो सम्म सारथि! महाजन-कायो ति?" 'एसो खो, देव! काल-कतो नामा ति। त्वञ्च देवो मयं चऽम्हा सब्बे मरण-धम्मा मरणं अनतीता ति।

"नहि नून सो ओरको धम्म-विनयो, यत्थ विपस्सी कुमारो पब्बजितो (=प्रव्रजित हुए हैं)। विपस्सी कुमारो पि नाम पब्बजिस्सति, किं अङ्ग पन मयं ति ?" महाजन-कायो विपस्सिं बोधिसत्तं अनुपब्बजिसु (=उनके साथ प्रव्रजित हो गए)। ताय सुदं परिसाय परिवुतो (=घिरा रह) बोधिसत्तो चारिकं चरति (=रमत लगाते थे)।

"न खो मे'तं पतिरूपं, यो'हं आकिण्णो (=भीड़-भड़क्के में) विहरामि। यन्नूनाहं एको गणस्मा वूपकट्ठो (=अलग) विहरेय्यं ति (=विहार करूं)" —चिन्तेत्वा (=विचार कर), बोधिसत्तो अपरेन समयेन तथरिव विहासि (=विहार करने लगे)। "किच्छं वत अयं लोको आपन्नो जिय्यति च मिय्यति च (=जन्म लेता है और मरता है)। अथ च पन इमस्स दुक्खस्स निस्सरणं नप्प. जानाति (=नहीं जानता है)। कुदा स्सु नाम तं पञ्ञायिस्सती ति (=जाना जायगा) ?"

अथ खो भगवा कारुञ्ञतं पटिच्च बुद्ध-चक्खुना लोकं विलोकेसि (=देखा)। अद्दसा खो भगवा सत्ते सेय्यथापि नाम उप्पलिनियं वा पदुमिनियं वा पुण्डरीकिनियं वा अप्पेकच्चानि उप्पलानि उदके, जातानि अन्तोनिमुग्गपोसीनि, अप्पेकच्चानि समोदकं ठितानि, अप्पेकच्चानि उदका अच्चुग्गम्म ठन्ति अनुपलित्तानि उदकेन। एवमेव खो भगवा अद्दस (=देखे) सत्ते अप्परजक्खे महारजक्खे ति।

२. निम्नलिखित अव्ययों के अर्थ लिखिए, और उनको वाक्य में प्रयोग करके दिखाइए—

(क) चिरस्सं, चिरं, चिरेन, चिररत्ताय
(ख) कदाचि, ईसं, मनं, चन, चि
(ग) सह, सद्धिं, समं, अमा
(घ) बिना, नाना, अन्तरेन, रिते, पुथु
(ङ) सुदं, खो, अस्सु, यग्घ, वे, ह
(च) यथा, तथा, यथानाम, तथाहि, सेय्यथापि नाम, सेय्यथीदं, एवमेवं, यथरिव, तथरिव, विय
(छ) आम, साहु, लहु
(ज) न, नो, अलं, मा

(झ) अधुना, इदानि, दानि, सम्पति
(ञ) तदानि, तदा, चरहि
(ट) सायं, अज्ज, सुवे, स्वे, हिय्यो, पातो, पगे
(ठ) उद्धं, उपरि, हेट्ठा, अधो
(ड) सन्तिके, सन्छि, आरा, दूरा, आरका
(ढ) सम्मुखा, परम्मुखा, सं, सामं, सयं, पुरे, अग्गतो, पुरतो
(ण) सदा, पुनप्पुनं, अभिण्हं, मुहु, अभिक्खणं

दूसरा काण्ड

पहला पाठ

क्रिया-प्रकरण

(पहला भाग—वर्तमान काल)

§ १. क्रिया के अर्थ को प्रकट करने वाले शब्द को धातु (=क्रियत्थ) कहते हैं। जैसे—भू, पठ्, गम्, वज् इत्यादि।

रूप बनाने की सुविधा के लिए, सभी धातु ९ श्रेणियों में विभक्त किए गए हैं। प्रत्येक श्रेणी को 'गण' कहते हैं। जैसे—(१) भ्वादि गण, (२) रुधादि गण, (३) दिवादि गण, (४) तुदादि गण, (५) ज्यादि गण, (६) क्यादि गण, (७) स्वादि गण, (८) तनादि गण, और (९) चुरादि गण। [कौन धातु किस गण में हैं, इसके लिए देखिए—२. परिशिष्ट]

'ति' आदि प्रत्ययों के लगने पर, धातु के रूप में, अपने अपने गण के अनुसार प्रायः कुछ न कुछ परिवर्तन हो जाता है। जैसे—

भ्वादि—पठ—पठति=पढ़ता है। पच—पचति=पकाता है।
रुधादि—रुध—रुन्धति=रोकता है। मुच—मुञ्चति=छोड़ता है।
दिवादि—दिव—दिब्बति=खेलता है। भिद—भिज्जति=टूटता है।
झा—झायति=ध्यान करता है।
तुदादि—तुद—तुदति=दुःखता है। लिख—लिखति।
ज्यादि—जि—जिनाति=जीतता है। ञा—जानाति=जानता है।
क्यादि—की—किणाति=खरीदता है। सु—सुणाति=सुनता है।
स्वादि—सु—सुणोति=सुनता है। वु—वुणोति=ढक लेता है।
तनादि—तन—तनोति=फैलाता है। कर—करोति।

चुरादि—चुर—चोरेति=चोरी करता है। अच्च—अच्चयति=पूजा करता है। [देखिए—तीसरा काण्ड : पहला पाठ]

सभी काल में, धातु के रूप—'परस्स पद' और 'अत्तनो पद'—दो तरह के होते हैं। साधारणतः, किसी भी जगह, विकल्प से परस्स पद या अत्तनो पद के रूप प्रयुक्त हो सकते हैं; किंतु, व्यवहार में अत्तनो पद के रूप बहुत कम देखे जाते हैं।

वर्तमान काल[1]

पच (=पकाना)

परस्स पद

	एकवचन	अनेकवचन
पठमपुरिस	(वह) पचति	(वे) पचन्ति
मज्झिमपुरिस	(तू) पचसि	(तुम) पचथ
उत्तम पुरिस	(मैं) पचामि[2]	(हम) पचाम[2]

---

१. वत्तमाने ति अन्ति, सि थ, मि म; ते अन्ते, से व्हे, ए म्हे ६.१— वर्तमान काल में, (सभी गण के) धातु से परे ये प्रत्यय आते हैं—

परस्स पद

	एकवचन	अनेकवचन
पठमपुरिस	ति	अन्ति
मज्झिमपुरिस	सि	थ
उत्तमपुरिस	मि	म

अत्तनो पद

	एकवचन	अनेकवचन
पठमपुरिस	ते	अन्ते
मज्झिमपुरिस	से	व्हे
उत्तमपुरिस	ए	म्हे

अत्तनो पद

	एकवचन	अनेकवचन
पठम पुरिस	पचते	पचन्ते
मज्झिम पुरिस	पचसे	पचव्हे
उत्तम पुरिस	पचे	पचाम्हे

भ्वादि गण के कुछ धातु—अच्च (अच्चति) =पूजना। अज्ज(अज्जति) =कमाना। अट (अटति)=घूमना। अद (अदति) =खाना। अव (अवति) =बचाना। अस (अत्थि)[1] =होना। इक्ख (इक्खति)=देखना। एस (एसति)

---

२. हि मि मे स्व स्स ६.५७—'हि', 'मि' तथा 'म' विभक्तियों के परे होने से, पूर्वस्थित अकार का आकार हो जाता है। जैसे—पच+हि=पचाहि। पच+मि=पचामि। पच+म=पचाम।

३. 'अस' धातु के रूप निम्न प्रकार होंगे—

	एकवचन	अनेकवचन
पठम	*अत्थि	सन्ति†
मज्झिम	‡असि	अत्थ
उत्तम	§अस्मि, अम्हि	अम्ह, अस्म

---

*तस्स थो ६.५२—'अस' धातु से परे, 'त' का 'थ' होता है। जैसे—अस+ति=अस+थि=(पररूपमयकारे ब्यञ्जने ५.९५—'य' को छोड़, कोई दूसरा व्यञ्जन परे हो, तो धातु का अन्त्य व्यञ्जन भी वही हो जाता है) अथ्थि=(चतुत्थ दुतियेस्वेसं ततियपठमा १.३५—देखिए......) अत्थि।

† न्त मा नान्ति यियुं स्वा दि लोपो ५.१३०—'न्त', 'मान', 'अन्ति', 'अन्तु', 'ईय', तथा 'इयुं' प्रत्ययों के आने से, 'अस' धातु का केवल 'स' रह जाता है। जैसे—सन्तो। समानो। अस+अन्ति=सन्ति। सन्तु। सिया। सियुं।

‡ सि हि स्व ट् ६.५३—'सि' तथा 'हि' प्रत्ययों के आने से, 'अस' धातु का 'अ' आदेश हो जाता है। जैसे—

अस+सि=अ+सि=असि। अहि।

=खोजना। कंख (कंखति)=चाहना। कड्ढ (कड्ढति)=काढ़ना। कन्द (कन्दति)=रोना। कम्प (कम्पति)=कांपना। कीळ (कीळति)=खेलना। गम (गच्छति, घम्मति)=जाना। चज (चजति)=छोड़ना। जर (जीरति, जीयति)=पुराना होना। जल (जलति)=जलना। जि (जयति)=जीतना। जीव (जीवति)=जीना। ठा (तिट्ठति)=ठहरना। तर (तरति)=पार करना। वह (वहति, डहति)=जलाना। वंस (दंसति)=डसना। दा[4] (दाति)=देना। दिस्स (पस्सति)=देखना। पा (पिवति)=पीना। ब्रू[5] (ब्रवीति, ब्रूति, [6]आह)=बोलना। भू (भवति)=होना।

---

४. दास्स दं वा मिमेस्वद्वित्ते ६.२२—द्वित्व न होने पर, 'दा' धातु का—उससे परे 'मि' तथा 'म' विभक्तियों के आने से—विकल्प से 'दं' आदेश हो जाता है। जैसे—दा+मि=दं+मि=दम्मि। दम्म।

५. ब्रूतो तिस्सीञ् ६.३६—'ति' प्रत्यय आने से, 'ब्रू' धातु से परे, विकल्प से 'ई' का आगम होता है। जैसे—ब्रू+ति=ब्रू+ई+ति=ब्रवीति। ब्रूति।

युवण्णानमेओ प्पच्चये ५.८२—प्रत्यय आने से, धातु के अन्त्य 'इ' का 'ए', तथा 'उ' का 'ओ' हो जाता है। जैसे—

ब्रू+ति=ब्रो+ई+ति=ब्रवीति।

एओनमयवा सरे ५.८९—स्वर परे हो, तो पूर्वस्थित 'ए' का 'अय', तथा 'ओ' का 'अव' हो जाता है। जैसे—

ब्रू+ति=ब्रो+ई+ति=ब्रव+ई+ति=ब्रवीति

६. त्यन्तीनं टटु ६.२०—'ब्रू' धातु का 'आह' आदेश हो जाता है; और उससे परे, 'ति' तथा 'अन्ति' का क्रमशः 'अ' तथा 'उ' आदेश होता है। जैसे—

---

१ मिमानं वा म्हिम्हा च ६.५४—'अस' धातु से परे, 'मि' तथा 'म' विभक्तियों का विकल्प से क्रमशः 'म्हि' तथा 'म्ह' आदेश हो जाता है; और, 'अस' धातु का 'अ' रह जाता है। जैसे— अस+मि=अ+मि=अ+म्हि=अम्हि; अस्मि। अस+म=अ+म्ह=अम्ह; अस्म।

ब्रू+ति=आह+ति=आह+अ=आह। ब्रू+अन्ति=आह+अन्ति=आह+उ=आहु।

युवण्णानमियङुवङ् सरे ५.१३६—स्वर परे होने से, धातु के अन्त्य 'इ' तथा 'उ' का कहीं कहीं क्रमशः 'इय' तथा 'उव' हो जाता है।

जैसे—वेदि+अ+ति=वेदियति। ब्रू+अन्ति=ब्रुवन्ति।

वर्तमान काल में नवो गणों के धातु के रूप

धातु	गण	पठम पुरिस	
		एक वचन	अनेक वचन
१. भू (=होना)	भ्वादि	भवति	भवन्ति
हू (=होना)	,,	होति	होन्ति
नी (=ले जाना)	,,	नेति, नयति	नेन्ति, नयन्ति
या (=जाना)	,,	याति	यन्ति
पच (=पकाना)	,,	पचति	पचन्ति
२. रुध (=रोकना)	रुधादि	रुन्धति	रुन्धन्ति
३. दिव (=खेलना)	दिवादि	दिब्बति	दिब्बन्ति
झा (=ध्यान करना)	,,	झायति	झायन्ति
४. तुद (=पीड़ा देना)	तुदादि	तुदति	तुदन्ति
५. जि (=जीतना)	ज्यादि	जिनाति	जिनन्ति
६. की (=खरीदना)	क्यादि	किणाति	किणन्ति
७. सु (=सुनना)	स्वादि	सुणोति	सुणोन्ति
८. तन (=फैलाना)	तनादि	तनोति	तनोन्ति
९. चुर (=चोरी करना)	चुरादि	चोरेति, चोरयति	चोरेन्ति, चोरयन्ति
कथ (=कहना)	,,	कथेति, कथयति	कथेन्ति, कथयन्ति
झप (=जलाना)	,,	झापेति, झापयति	झापेन्ति, झापयन्ति

नोट—बहुत से ऐसे धातु हैं, जिनके रूप 'न्त', 'मान' तथा 'ति' आदि जाते हैं। जैसे—गम—घम्मन्तो, घम्मानो, घम्मति। कर—करोति, कयिरति,

कैसे होंगे, यह निम्न तालिका से प्रकट होगा—

मज्झिम पुरिस		उत्तम पुरिस	
एक वचन	अनेक वचन	एक वचन	अनेक वचन
भवसि	भवथ	भवामि	भवाम
होसि	होथ	होमि	होम
नेसि, नयसि	नेथ, नयथ	नेमि, नयामि	नेम, नयाम
यासि	याथ	यामि	याम
पचसि	पचथ	पचामि	पचाम
रुन्धसि	रुन्धथ	रुन्धामि	रुन्धाम
दिब्बसि	दिब्बथ	दिब्बामि	दिब्बाम
झायसि	झायथ	झायामि	झायाम
तुदसि	तुदथ	तुदामि	तुदाम
जिनासि	जिनाथ	जिनामि	जिनाम
किणासि	किणाथ	किणामि	किणाम
सुणोसि	सुणोथ	सुणोमि	सुणोम
तनोसि	तनोथ	तनोमि	तनोम
चोरेसि, चोरयसि	चोरेथ, चोरयथ	चोरेमि, चोरयामि	चोरेम, चोरयाम
कथेसि, कथयसि	कथेथ, कथयथ	कथेमि, कथयामि	कथेम, कथयाम
झापेसि, झापयसि	झापेथ, झापयथ,	झापेमि, झापयामि	झापेम, झापयाम

प्रत्ययों के आने से कुछ बदल जाते हैं। कभी कभी उनके बिल्कुल नए रूप भी हो
कुब्बति, करुते इत्यादि। [देखिए—तीसरा काण्ड : पहला पाठ]

६. अभ्यास

१. हिन्दी में अनुवाद कीजिए—

वेरेन वेरानि न सम्मन्ति। वातो दुब्बलं रुक्खं पसहति। पापकारी सोचति। पुञ्ञकारी मोदति। पापकारी तप्पति। पुञ्ञकारी नन्दति। धीरा निब्बाणं फुसन्ति। झायी विपुलं सुखं पप्पोति। पण्डिता पमादं नुदन्ति। देवा अप्पमादं पसंसन्ति। झानेन पञ्ञा परिपूरति। मारो मग्गं न विन्दति। भिक्खु धम्मं विजानाति। बालो मिच्छा मञ्ञति। बालस्स इच्छा वड्ढति। बुद्धस्स सावको सक्कारं न अभिनन्दति। सप्पुरिसा सब्बत्थ वजन्ति। पण्डिता कल्याणे मित्ते भजन्ति। विसोकस्स परिळाहो न विज्जति। तापसो अग्गिं वने परिचरति। भिक्खु धम्म-पदं भासति। मनो पापस्मिं न रमते। सब्बे दण्डस्स तसन्ति। सब्बे मच्चुनो भायन्ति। यो भूतानि विहिंसति सो सुखं न लभते। यो अञ्ञं दुस्सति, सो दुक्खं निगच्छति। इदं रूपं भिज्जति। सरीरं जरं उपेति। राजरथा जीरन्ति।

२. पालि में अनुवाद कीजिए—

भिक्षु निर्वाण चाहता है। लड़के लोग धर्म्म सुनते हैं। ध्यानी लोग ध्यान करते हैं। हम लोग धर्म्म जानते हैं। भगवान विहरते हैं। तुम लोग हँस रहे हो। सूर्य्य चमक रहा है। लड़के किताब पढ़ रहे हैं। अवैर से वैरी को जीतता है। अक्रोध से क्रोध को जीतता है। धर्म्म से अधर्म्म को जीतता है। धर्म्म से पाप को छोड़ता है। ध्यान में प्रयत्न करता है। दुःख छोड़ता है। बुद्ध में श्रद्धा करता है। मैं धर्म्म को सुनता हूं। सङ्घ के शरण जाता हूं। चैतन्य (= सति) को बढ़ाता है। प्रमाद को छोड़ता हूं। प्रश्न पूछता हूं। ब्रह्मा आते हैं। तू भगवान को नमस्कार करता है। भगवान धर्म्म-चक्र घमाते हैं (पवत्तेति।) बुद्ध देवताओं को धर्म्म उपदेश करते हैं। ब्राह्मण लोग पाप नहीं करते हैं। सज्जन कुशल धर्म्मों का संग्रह करते हैं (उपसम्पादेन्ति)। स्वर्ग को चले जाते हैं। बुद्ध निर्व्वाण प्राप्त करते हैं (निब्बायति)। श्रावक लोग रोते हैं, चिल्लाते हैं, कलपते हैं। बुद्ध की पूजा करते हैं। मरते हैं। स्वर्ग को चले जाते हैं।

३. निम्नलिखित शब्दों से वाक्य बनाइए—

नाम-पदानि—गहपति, वन-सण्डो, रुक्खो, फलं, गामो, दारको, तापसो, तपं।

क्रिया-पदानि—पटिवसति-न्ति, चरति-न्ति, पतति-पतन्ति, आरोहति-न्ति, खादति-न्ति। [जैसे, रुक्खा फलानि पतन्ति। दारका रुक्खं आरोहन्ति। गहपतयो गामे पटिवसन्ति।]

४. निम्नलिखित क्रिया-पदों से वाक्य बनाइए—

विहरति=प्रज्ञा तथा चैतन्य की भावना में रहता है, विचरता है।
उपसङ्कमति=पास जाता है।
अभिवादेति=प्रणाम करता है।
निसीदति=बैठता है।
सम्मोदति=कुशल क्षेम पूछता है।
वीतिसारेति=व्यतीत करता है।
अधिवासेति=स्वीकार करता है।
समादियति=ग्रहण करता है।
वट्टति=(उचित) होता है।
संवत्तति=(समर्थ) होता है।
पटिपज्जति=लग जाता है।
पच्चस्सुणाति=जवाब देता है।
पटिभाति (मं)=मुझे भान होता है।

दूसरा काण्ड

दूसरा पाठ

सर्वनाम-प्रकरण

(दूसरा भाग)

'अम्ह' (=मैं) और 'तुम्ह' (=तू) शब्दों के रूप, तीनों लिङ्गों में, एक ही समान होते हैं। जैसे—अहं बुद्धप्पियो नाम माणवको। अहं धम्मविञ्ञा नाम माणविका। त्वं मम पियो भाता। त्वं मम पिया नारी इत्यादि।

§ ७. अम्ह (=मैं)

	एकवचन	अनेकवचन
पठमा	अहं[1]	मयं, अस्मा, अम्हे[2], नो[3]
दुतिया	मं, ममं[4]	अम्हं, अम्हाकं, अम्हे,[5] नो
ततिया	मया,[6] मे[7]	अम्हेहि, अम्हेभि, नो
चतुत्थी	मम,[8] मय्हं, अम्हं, ममं,[9] मे	अस्माकं अम्हाकं,[9] अम्हं, अम्हे, नो
पञ्चमी	मया[6]	अम्हेहि, अम्हेभि
छट्ठी	मम, मय्हं, अम्हं, ममं, मे	अम्हाकं, अम्हं,[9] अम्हे, नो
सत्तमी	मयि[10]	अस्मासु[11] अम्हेसु

---

१. सिम्हहं २.२१३—'सि' विभक्ति के साथ, 'अम्ह' शब्द का रूप 'अहं' होता है।

२. मयमस्माम्हस्स २.२११—'यो' विभक्ति के साथ, 'अम्ह' शब्द के रूप 'मयं, अस्मा, अम्हे' होते हैं।

३. योनं हिस्वपञ्चम्या वोनो २.२३५—पठमा, दुतिया, ततिया, चतुत्थी तथा छट्ठी के बहुवचन में, 'अम्ह' शब्द का लघुरूप 'नो', तथा 'तुम्ह' शब्द का 'वो' होता है।

अ पा दा दो प द ते क वा क्ये २.२३४—किसी गाथा के पाद के आदि में लघुरूप का प्रयोग नहीं होता है। वाक्य में, किसी पद के बाद ही, (अर्थात्, वाक्य के आदि में नहीं) ये रूप प्रयुक्त हो सकते हैं। जैसे—

तिट्ठथ वो। तिट्ठाम नो। पस्सति वो=वह तुमको देखता है। पस्सति नो=वह हम लोगों को देखता है। दीयते वो=तुम लोगों को दिया जाता है। दीयते नो। धनं वो=तुम लोगों का धन है। धनं नो। कतं वो=तुम लोगों के द्वारा किया गया है। कतं नो।

ते मे ना से २.२३६—'ना' तथा 'स' विभक्तियों के साथ, 'अम्ह' शब्द का लघुरूप 'मे', तथा 'तुम्ह' शब्द का 'ते' होता है। जैसे—

कतं ते=तेरे द्वारा किया गया है। कतं मे। दीयते ते=तुझे दिया जा रहा है। दीयते मे। धनं ते=धन तेरा है। धनं मे।

अ न्वा दे से २.२३७—एक बार 'अम्ह' या 'तुम्ह' शब्द का प्रयोग कर, उसे उसी सिलसिले में (=अन्वादेश में) फिर भी कहना हो, तो लघु-रूप का ही प्रयोग होता है। जैसे—गामो तुम्हं परिग्गहो, अथ जनपदो वो परिग्गहो=गाँव तुम्हारी मिलकियत है, और जनपद भी तुम्हारी मिलकियत है।

स पु ब्बा प ठ म न्ता वा २.२३८—यदि पूर्व में कोई प्रथमान्त शब्द विद्यमान हो, तो अन्वादेश में प्रयुक्त 'अम्ह' या 'तुम्ह' शब्दों का लघुरूप विकल्प से होता है। जैसे—गामे पटो अम्हाकं, अथो नगरे कम्बलो नो—अथो नगरे कम्बलो अम्हाकं=गाँव में हम लोगों के लिए कपड़ा है, और नगर में कम्बल।

न च वा हा हे व यो गे २.२३९—'न', 'च', 'वा', 'हा', 'हि', तथा 'एव' शब्दों के योग में, ये लघुरूप नहीं होते हैं। जैसे—गामो तव च परिग्गहो।

द स्स न त्थे ना लो च ने २.२४०—'आलोचन' शब्द को छोड़, दूसरे दर्शनार्थ शब्दों के योग में लघुरूप नहीं होते हैं। जैसे—गामो तुम्हे—अम्हे उद्दिस्सागतो=गाँव तुम्हें—हमें देखने आया है।

आलोचन शब्द के साथ लघुरूप होता है—गामो वो—नो आलोचेति।

आ म न्त णं पु ब्ब म स न्तं व २.२४१—सम्बोधन के बाद, 'तुम्ह' या 'अम्ह' शब्दों का प्रयोग, 'अन्वादेश' नहीं समझा जाता है। अतः, वहाँ लघुरूप नहीं होता है। जैसे—देवदत्त! तव परिग्गहो।

§ ८. तुम्ह (=तू)

	एकवचन	अनेकवचन
पठमा	त्वं, तुवं[१२]	तुम्हे, वो
दुतिया	तं, तवं, तुवं, त्वं	तुम्हं तुम्हाकं, तुम्हे, वो

बहुसु वा २.२४३—बहुत जगह, विकल्प से लघुरूप होता भी है। जैसे—ब्राह्मणा गुणवन्तो! तुम्हाकं परिग्गहो—वो परिग्गहो।

४. अम्हि तं मं तवं ममं २.२२९—'अं' विभक्ति के साथ, 'अम्ह' शब्द के रूप 'मं, ममं', तथा 'तुम्ह' शब्द के रूप 'तं, तवं' होते हैं।

५. दुतिये योम्हि च २.२३३—'दुतिया' में, 'यो' विभक्ति के साथ, 'अम्ह' शब्द के रूप 'अम्हं, अम्हाकं, अम्हे', तथा 'तुम्ह' शब्द के रूप 'तुम्हं, तुम्हाकं, तुम्हे' होते हैं।

६. नास्मासु तया मया २.२३०—'ना' तथा 'स्मा' विभक्तियों के साथ, 'अम्ह' शब्द का रूप 'मया', तथा 'तुम्ह' शब्द का रूप 'तया' हो जाता है।

७. तव मम तुय्हं मय्हं से २.२३१—'स' विभक्ति के साथ, 'अम्ह' शब्द के रूप 'मम, मय्हं', तथा 'तुम्ह' शब्द के रूप 'तव, तुय्हं' होते हैं।

८. नं से स्व.स्माकं ममं २.२१२—'नं' तथा 'स' विभक्तियों के साथ, 'अम्ह' शब्द के रूप क्रमशः 'अस्माकं, अम्हाकं; तथा ममं, मम' होंगे।

९. ङंङाकं नम्हि २.२३२—'नं' विभक्ति के साथ, 'अम्ह' शब्द के रूप 'अम्हं, अम्हाकं', तथा 'तुम्ह' शब्द के रूप 'तुम्हं, तुम्हाकं' होते हैं।

१०. स्मिम्हि तुम्हाम्हानं तयि मयि २.२२८—'स्मिं' विभक्ति के साथ, 'अम्ह' शब्द का रूप 'मयि', तथा 'तुम्ह' शब्द का रूप 'तयि' होता है।

११. सुम्हाम्हस्सास्मा २.२०५—'सु' विभक्ति आने से, 'अम्ह' शब्द का विकल्प से 'अस्मा' आदेश होता है। जैसे—अस्मासु। अम्हेसु। 'भत्तिरस्मासु सा तव'।

१२. तुम्हस्स तुवं त्वमम्हि च २.२१४—'सि' तथा 'अं' विभक्तियों के साथ, 'तुम्ह' शब्द के रूप 'त्वं, तुवं' होते हैं।

ततिया	त्वया,[13] तया, ते	तुम्हेहि, तुम्हेभि, वो
चतुत्थी	तव, तुम्हं, तुम्हं, ते	तुम्हाकं, तुम्हे, वो
पञ्चमी	त्वया, तया, त्वम्हा[14]	तुम्हेहि, तुम्हेभि
छट्ठी	तव, तुम्हं, तुम्हं, ते	तुम्हाकं, तुम्हे, वो
सत्तमी	त्वयि, तयि	तुम्हेसु

§ ६. एत (=यह)

पुल्लिङ्ग

	एकवचन	अनेकवचन
पठमा	एसो	एते
दुतिया	एतं, एनं[15]	एते, एने
ततिया	एतेन	एतेहि, एतेभि
चतुत्थी	एतस्स	एतेसं, एतेसानं
पञ्चमी	एतम्हा, एतस्मा	एतेहि, एतेभि
छट्ठी	एतस्स	एतेसं, एतेसानं
सत्तमी	एतम्हि, एतस्मि	एतेसु

---

१३. तयातयीनं त्व वा तस्स २.२१५—'तुम्ह' शब्द के रूप 'तया' तथा 'तयि' के तकार का विकल्प से 'त्व' हो जाता है। जैसे—त्वया, तया। त्वयि, तयि।

१४. स्माम्हि त्वम्हा २.२१६—'स्मा' विभक्ति के साथ, 'तुम्ह' शब्द का रूप विकल्प से 'त्वम्हा' होता है।

१५. इमेतानमेनान्वादेसे दुतियायं २.१९९—'दुतिया' विभक्ति में, 'इम' तथा 'एत' शब्दों का, कथितानुकथित होने से, 'एन' आदेश हो जाता है। जैसे—इमं भिक्खुं विनयमज्झापय, अथो एनं धम्ममज्झापय। इमे भिक्खू विनयमज्झापय, अथो एने धम्ममज्झापय। एतं भिक्खुं विनयमज्झापय, अथो एनं धम्ममज्झापय। एते भिक्खू विनयमज्झापय अथो एने धम्ममज्झापय।

नपुंसक लिङ्ग

	एकवचन	अनेकवचन
पठमा	एतं	एते, एतानि
दुतिया	एतं	एते, एतानि

शेष पुल्लिङ्ग के समान

स्त्रीलिङ्ग

	एकवचन	अनेकवचन
पठमा	एसा	एता, एतायो
दुतिया	एतं	एता, एतायो
ततिया	एताय	एताहि, एताभि
चतुत्थी	एतिस्साय,[16] एतिस्सा,[16] एताय	एतासं, एतासानं
पञ्चमी	एताय	एताहि, एताभि
छट्ठी	एतिस्साय, एतिस्सा, एताय	एतासं, एतासानं
सत्तमी	एतिस्सं,[16] एतस्सं, एतासं	एतासु

§ १०. इम (=यह)

पुल्लिङ्ग

	एकवचन	अनेकवचन
पठमा	अयं[17]	इमे
दुतिया	इमं	इमे

---

१६. स्सं स्सा स्साये स्वितरेकञ्ञेतिमानमि २.५४—'स्सं', 'स्सा' तथा 'स्साय' से पूर्व, 'इतर', 'एक', 'अञ्ञ', 'एत' तथा 'इम' शब्दों के अन्त्य स्वर का 'इ' होता है। जैसे—

इतरिस्सं, इतरिस्सा। एकिस्सं, एकिस्सा। अञ्ञिस्सं, अञ्ञिस्सा। एतिस्सं, एतिस्सा, एतिस्साय। इमिस्सं, इमिस्सा, इमिस्साय।

१७. सिम्हनपुंसकस्सायं २.१२९—पुल्लिङ्ग तथा स्त्रीलिङ्ग में 'सि'

	एकवचन	अनेकवचन
ततिया	अनेन,[१८] इमिना	एहि,[१९] एभि, इमेहि, इमेभि
चतुत्थी	अस्स, इमस्स	एसं,[१९] एसानं, इमेसं, इमेसानं
पञ्चमी	अस्मा, इमस्मा, इमम्हा	एहि, एभि, इमेहि, इमेभि
छट्ठी	अस्स, इमस्स	एसं, एसानं, इमेसं, इमेसानं
सत्तमी	अस्मिं, इमम्हि, इमस्मिं	एसु, इमेसु

नपुंसक लिङ्ग

	एकवचन	अनेकवचन
पठमा	इदं,[२०] इमं	इमे, इमानि
दुतिया	इदं, इमं	इमे, इमानि

शेष पुल्लिङ्ग के समान

स्त्रीलिङ्ग

	एकवचन	अनेकवचन
पठमा	अयं[१७]	इमा, इमायो
दुतिया	इमं	इमा, इमायो

विभक्ति के साथ, 'इम' शब्द का रूप 'अयं' होता है। जैसे—अयं पुरिसो। अयं इत्थी।

१८. नाम्हनिमि २.१२८—पुल्लिङ्ग तथा नपुंसकलिङ्ग में, 'ना' विभक्ति आने से, 'इम' शब्द का 'अन' तथा 'इमि' आदेश हो जाता है। जैसे—अनेन। इमिना।

१९. इमस्सानित्थियं टे २.१२७—'सु', 'नं' तथा 'हिं' विभक्तियों के आने से, पुंल्लिङ्ग तथा नपुंसकलिङ्ग में, 'इम' शब्द का विकल्प से 'ए' आदेश होता है। जैसे—एसु, इमेसु। एसं, इमेसं। एहि, इमेहि।

२०. इमस्सिदं वा २.२०३—'अं' तथा 'सि' विभक्तियों के साथ, 'इम' शब्द का रूप विकल्प से 'इदं' होता है।

	एकवचन	अनेकवचन
ततिया	इमाय	इमाहि, इमाभि
चतुत्थी	अस्साय, अस्सा, इमिस्साय, इमिस्सा, इमाय	इमासं, इमासानं
पञ्चमी	इमाय	इमाहि, इमाभि
छट्ठी	अस्साय, अस्सा, इमिस्साय, इमिस्सा, इमाय	इमासं, इमासानं
सत्तमी	अस्सं, इमिस्सं, इमायं	इमासु

§ ११. अमु (=वह)

पुल्लिङ्ग

	एकवचन	अनेकवचन
पठमा	असु,[21] अमुको	अमू,[22] अमुयो
दुतिया	अमुं	अमू, अमुयो
ततिया	अमुना	अमूहि, अमूभि
चतुत्थी	अमुस्स[23]	अमूसं, अमूसानं
पञ्चमी	अमुना, अमुम्हा, अमुस्मा	अमूहि, अमूभि
छट्ठी	अमुस्स	अमूसं, अमूसानं
सत्तमी	अमुम्हि, अमुस्मिं	अमूसु

---

२१. मस्सामुस्स २.१३१—पुल्लिङ्ग और स्त्रीलिङ्ग में, 'सि' विभक्ति आने से, 'अमु' शब्द के 'म' का 'स' हो जाता है। जैसे—असु पुरिसो। असु इत्थी।

केवा २.१३२—'क' का आगम होने से भी, 'अमु' शब्द के 'म' का विकल्प से 'स' हो जाता है। जैसे—असुको, अमुको। असुका, अमुका। असुकं, अमुकं। असुकानि, अमुकानि।

२२. लोपो मुस्मा २.८८—पुल्लिङ्ग में, 'अमु' शब्द से परे, 'यो' विभक्ति का लोप हो जाता है। जैसे—अमू पुरिसा आगच्छन्ति। अमू पुरिसे पस्स।

२३. न नो सस्स २.८९—'अमु' शब्द से परे, 'स' विभक्ति का 'नो' आदेश नहीं होता है। जैसे—अमुस्स ['अमुनो' नहीं होगा]।

नपुंसक लिङ्ग

	एकवचन	अनेकवचन
पठमा	अदुं[२४], अमुं	अमू, अमूनि
दुतिया	अदुं[२४], अमुं	अमू, अमूनि

शेष पुल्लिङ्ग के समान

स्त्रीलिङ्ग

	एकवचन	अनेकवचन
पठमा	असु, अमु	अमू, अमुयो
दुतिया	अमुं	अमू, अमुयो
ततिया	अमुया	अमूहि, अमूभि
चतुत्थी	अमुस्सा, अमुया	अमूसं, अमूसानं
पञ्चमी	अमुया	अमूहि, अमूभि
छट्ठी	अमुस्सा, अमुया	अमूसं, अमूसानं
सत्तमी	अमुस्सं, अमुयं	अमूसु

---

२४. अमुस्सादुं २.२०४—नपुंसक लिङ्ग में, 'अं' तथा 'सि' विभक्तियों के साथ, 'अमु' शब्द का रूप विकल्प से 'अदुं' हो जाता है।

७. अभ्यास

१. हिन्दी में अनुवाद कीजिए—

अम्हे बुद्धं सरणं गच्छाम। अम्हाकं बुद्धो, अम्हाकं धम्मो, अम्हाकं सङ्घो। तुम्हे कल्याणे मित्ते भजथ। इमे धम्मा होन्ति। इमस्स भिक्खुनो इमं अप्पमाद-फलं होति। तुम्हे एवं आजानाथ। तुम्हेहि कुलेसु चारित्तं न आपज्जितब्बं। इमेहि अङ्गेहि समन्नागतो भद्रो होति। एतं अत्थं विजानाति। एतदवोच (एतं+अवोच)। अयं भिक्खु अमुस्मि अरञ्ञे विहरति। इमिस्सा भिक्खुनिया अमूहि भिक्खुनीहि सद्धिं सयनासनो अत्थि। अदुं कम्मं, अमूनि कम्मानि च, सब्बानि तानि पहातब्बानि। अमुया पञ्ञाय एसो विपाको होति। असु भिक्खु, असु सामणेरो च, अदुं अरञ्ञं गच्छन्ति। असु गहपतानी अदुं कम्मं करोति। इमेसानं धम्मानं अयं विपाको होति। अम्हे च तुम्हे च, अदुं अरञ्ञं गन्त्वा, एताय भावनाय, विहरथ। अम्हाकं च तुम्हाकं च चित्तं, इमस्मि अमुस्मि वा झाने पतिट्ठापेतुं वट्टति।

२. पालि में अनुवाद कीजिए—

हम लोग प्राण नहीं मारते हैं। तुम लोगों के आचरण को हमारे आचार्य (आचरियो) पसन्द करते हैं। हमारी किताब तुम्हारे घर में है। इन भिक्षुओं का विहार उन मनुष्यों के ग्राम में है। बुद्ध इन भिक्षुओं से पूजित हैं। हमारा बुद्ध, हमारा धम्मं, हमारा संघ है। उन ब्राह्मणों के द्वारा बुद्ध के वे सब धम्मं-उपदेश (धम्मदेसनायो) सुने गए हैं (सुतायो)। उनका धम्मं तथा हमारा धम्मं एक ही है। किसका धम्मं अच्छा है? बुद्धों का शासन ही हमारा धम्मं है। सब बुद्धों का एक ही धम्मं होता है। इन धम्मों का एक ही निदान होता है।

३. निम्नलिखित शब्दों से वाक्य बनाइए—

सब्बनाम-पदानि—अम्हाकं, तुम्हाकं, अम्हेहि, तुम्हेहि, एसो, इमानि, असु, अदुं, इमिस्सा, इमासु, अमूसानं, एतानि।

नाम-पदानि—पोत्थकं, गामो, पुत्तो, रुक्खो, दारको, दारिका, धम्मो।

धातु—पठ=पढ़ना, गम=जाना, आ+रुह=चढ़ना, ओ+रुह=उतरना।

४. निम्नलिखित उदाहरणों में, 'ते', 'वो', 'नो' का प्रयोग क्यों नहीं होता?

अम्हाकं भगवा अम्हे च तुम्हे च धम्मं देसेति अम्हाक मेव हिताय सुखाय। अम्हाकं हि भगवा सत्था धम्म-राजा।

दूसरा काण्ड

तीसरा पाठ

क्रिया-प्रकरण

(दूसरा भाग—भविष्यत्काल[1])

परस्सपद

	एकवचन	अनेकवचन
पठम पुरिस	पचिस्सति[1]	पचिस्सन्ति
मज्झिम पुरिस	पचिस्ससि	पचिस्सथ
उत्तम पुरिस	पचिस्सामि	पचिस्साम

---

१. भविस्सति स्सति स्सन्ति, स्ससि स्सथ, स्सामि स्साम; स्सते स्सन्ते, स्ससे स्सव्हे, स्सं स्साम्हे ६.२—भविष्यत्काल में, धातु से परे ये प्रत्यय होते हैं। जैसे—पचिस्सति, पचिस्सन्ति इत्यादि।

नामे गरहाविम्हयेसु ६.३—यदि निन्दा या विस्मय के अर्थ में 'नाम' शब्द प्रयुक्त हो, तो भी धातु से परे ये प्रत्यय होते हैं। जैसे—*निन्दा में*—"इमे हि नाम कल्याणधम्मा पटिजानिस्सन्ति" =ये अपने को बड़ा कल्याण-कर धर्म वाले बताते हैं! "न हि नाम भिक्खवे! तस्स मोघपुरिसस्स पाणेसु अनुदया भविस्सति" भिक्षुओ! उस निकम्मे आदमी को जीवों के प्रति तनिक भी दया नहीं है! "कथं हि नाम सो भिक्खवे! मोघपुरिसो सब्बमत्तिकामयं कुटिकं करिस्सति" =भिक्षुओ! वह निकम्मा आदमी, बिलकुल मिट्टी की कुटिया क्यों बनाता है! "तत्थ नाम त्वं मोघपुरिस! मया विरागाय धम्मे देसिते सरागाय चेतेस्ससि"= अरे निकम्मा आदमी! जो मैं विराग के लिए धर्म का उपदेश करता हूँ, उसे तू राग वाला समझता है!

अत्तनोपद

	एकवचन	अनेकवचन
पठम पुरिस	पचिस्सते	पचिस्सन्ते
मज्झिम पुरिस	पचिस्ससे	पचिस्सव्हे
उत्तम पुरिस	पचिस्सं	पचिस्साम्हे

§ २. भविष्यत्काल में कुछ विशेष धातुओं के रूप—कर—करिस्सति; काहति[१]। हा—हायिस्सति; हाहति[२]। लभ—लभिस्सति, लच्छति[३]। भुज—भुञ्जिस्सति;

विस्मय में—अच्छरियं! अन्धो नाम पब्बतं आरोहिस्सति=आश्चर्य है, अन्धा भी पर्वत पर चढ़ आया!

२. अ ई स्स आ दी नं व्य ञ्ज न स्सिञ् ६.३५—धातु से परे, परोक्ष भूत, परिसमाप्त्यर्थक भूत, हेतुहेतुमद्‌भूत, तथा भविष्यत्काल में, व्यञ्जन-विभक्ति से पूर्व, विकल्प से 'इ' का आगम होता है। जैसे—पपचित्थ, पपचिरे। अपचित्थ, अपचिम्हा। अपचिस्सा, अपचिस्संसु। पचिस्सति, पचिस्सन्ति।

३. हा स्स चा ह ङ् स्से न ६.२५—हेतुहेतुमद्‌भूत तथा भविष्यत्काल में, अपने विकरण 'ओ' के साथ 'कर' धातु, तथा 'हा' धातु के अन्त्य वर्ण का, 'स्स' के साथ, विकल्प से 'आह' आदेश हो जाता है। जैसे—अकाहा, अकरिस्सा। काहति, करिस्सति। अहाहा, अहायिस्सा। हाहति, हायिस्सति।

४. ल भ व स च्छि द भि द रु दा नं च्छ ङ् ६.२६—हेतुहेतुमद्‌भूत तथा भविष्यत्काल में, 'लभ' आदि धातुओं के अन्त्य वर्ण का, 'स्स' के साथ, विकल्प से 'च्छङ्' आदेश हो जाता है। जैसे—लभ—अलच्छा, अलभिस्सा; लच्छति, लभिस्सति। वस—अवच्छा, अवसिस्सा; वच्छति, वसिस्सति। छिद—अच्छेच्छा, अच्छिन्दिस्सा; छेच्छति, छिन्दिस्सति। भिद—अभेच्छा, अभिन्दिस्सा; भेच्छति, भिन्दिस्सति। रुद—अरुच्छा, अरोदिस्सा; रुच्छति, रोदिस्सति।

दूसरी जगहों पर भी, 'छिद' धातु के अन्त्य वर्ण का विकल्प से 'छ' आदेश होता है—अच्छेच्छुं (साधारण भूत, पठम पुरिस, अनेक वचन), अच्छिन्दिसु।

दूसरे धातु के साथ भी कभी कभी—गच्छं, गच्छिस्सं।

भोक्खति[6]। हु—हेस्सति, हेहिस्सति, होहिस्सति[7]। सक—सक्खिस्सति, सक्कुणिस्सति[8]। सु—सोस्सति, सुणिस्सति[9]। ञा—ञस्सति, जानिस्सति[10]। इ—एस्सति, एहिति[11]। हन—हञ्छेति, हनिस्सति। पटिहंखति, पटिहनिस्सति[12]।

---

५. भुज मुच वच विसानं क्ख इ ६.२७—'स्स' के साथ, 'भुज' आदि धातुओं के अन्त्य वर्ण का, विकल्प से 'क्ख' आदेश होता है। जैसे—

भुज—अभोक्खा, अभुञ्जिस्सा : भोक्खति, भुञ्जिस्सति। मुच—अमोक्खा, अमुञ्चिस्सा : मोक्खति, मुञ्चिस्सति। वच—अवक्खा, अवचिस्सा : वक्खति, वचिस्सति। पा+विस—पावेक्खा, पाविसिस्सा : पवेक्खति, पविसिस्सति।

'विस' धातु के अन्त्य वर्ण का, अन्यत्र भी विकल्प से 'क्ख' होता है जैसे—पावेक्खि, पाविसि [परिसमाप्त्यर्थक भूत—पठम पुरिस, एकवचन]।

६. हु स्स हे हेहि होही स्स च्चा दो ६.३१—भविष्यत्काल में, 'हू' धातु का 'हे', 'हेहि', तथा 'होहि' आदेश हो जाता है। जैसे—हेस्सति, हेहिस्सति, होहिस्सति।

७. स्से वा ६.५१—हेतुहेतुमद्भूत तथा भविष्यत्काल में, 'सक' धातु से परे, उसके विकरण 'क्णा' का विकल्प से 'ख' आदेश हो जाता है। जैसे—

सक्खिस्सा, सक्कुणिस्सा : सक्खिस्सति, सक्कुणिस्सति।

८. ते सु सु तो क्णो क्णा नं रोट् ६.६०—परिसमाप्त्यर्थक भूत, हेतुहेतुमद्भूत, तथा भविष्यत्काल में, 'सु' धातु से परे, उसके विकरण 'क्णो' तथा 'क्णा' का विकल्प से 'रोट्' आदेश हो जाता है। जैसे—अस्सोसि, असुणि। अस्सोस्सा, असुणिस्सा। सोस्सति, सुणिस्सति।

९. ईस्स च्चा दि सु क्ना लो पो ६.६४—परिसमाप्त्यर्थक भूत तथा भविष्यत्काल में, 'ञा' धातु से परे, उसके विकरण 'क्ना' का विकल्प से लोप हो जाता है। जैसे—अञ्ञासि, अजानि। ञस्सति, जानिस्सति।

१०. ए ति स्मा ६.६६—'इ' धातु से परे, 'स्स' का विकल्प से 'हि' आदेश हो जाता है। जैसे—एहिति; एस्सति।

११. हना छेखा ६.६७—'हन' धातु से परे, 'स्स' का विकल्प से 'छे' तथा 'ख' आदेश हो जाता है। जैसे—हञ्छेम, हनिस्साम। पटिहंखामि, पटिहनिस्सामि।

५



हा—हाहति, जहिस्सति[१२]। दक्ख—दक्खति, दक्खिस्सति[१३]। गम—गमिस्सन्ति, गमिस्सन्ते, गमिस्सरे[१४]। अस—भविस्सति[१५]।

---

१२. हा तो ह ६.६८—'हा' धातु से परे, 'स्स' का विकल्प से 'ह' आदेश हो जाता है। जैसे—हाहति, जहिस्सति।

१३. दक्ख ख हेहि होही हि लो पो ६.६९—'दक्ख', 'ख', 'हेहि', तथा 'होहि' आदेश होने पर, उससे परे, 'स्स' का विकल्प से लोप हो जाता है। जैसे—दक्खति, दक्खिस्सति। सक्खति, सक्खिस्सति। हेहिति, हेहिस्सति। होहिति, होहिस्सति।

१४. गुरुपुब्बा रस्सा रे न्ते न्ती नं ६.७४—गुरु-पूर्व ह्रस्व स्वर से परे, 'न्ते' तथा 'न्ति' प्रत्ययों का विकल्प से 'रे' आदेश हो जाता है। जैसे—गम+अन्ति=गच्छन्ति, गच्छरे। गम+अन्ते=गच्छन्ते, गच्छरे। गमिस्सरे।

१५. अ आ स्स आ दि सु ५.१२९—परोक्ष-भूत, अनद्यतन-भूत, हेतुहेतुमद्भूत तथा भविष्यत्काल में, 'अस' धातु का 'भू' आदेश हो जाता है। जैसे—

अस—बभूव (परोक्ष)। अभवा (अनद्यतन)। अभविस्सा (हेतुहेतुमद्भूत)। भविस्सति (भविष्यत्काल)।

भविष्यत्काल में, नवो गणों के धातु के रूप कैसे होंगे, यह निम्न तालिका से प्रकट होगा :—

धातु	गण	पठम पुरिस		मज्झिम पुरिस		उत्तम पुरिस	
		एक वचन	अनेक वचन	एक वचन	अनेक वचन	एक वचन	अनेक वचन
१. भू	भ्वादि	भविस्सति	भविस्सन्ति	भविस्ससि	भविस्सथ	भविस्सामि	भविस्साम
हू	,,	हेस्सति, हेहिस्सति, होहिस्सति	हेस्सन्ति, हेहिस्सन्ति होहिस्सन्ति	हेस्ससि०	हेस्सथ०	हेस्सामि०	हेस्साम०
नी	,,	नेस्सति	नेस्सन्ति	नेस्ससि	नेस्सथ	नेस्सामि	नेस्साम
या	,,	यास्सति	यास्सन्ति	यास्ससि	यास्सथ	यास्सामि	यास्साम
पच	,,	पचिस्सति	पचिस्सन्ति	पचिस्ससि	पचिस्सथ	पचिस्सामि	पचिस्साम
२. रुध	रुधादि	रुन्धिस्सति	रुन्धिस्सन्ति	रुन्धिस्ससि	रुन्धिस्सथ	रुन्धिस्सामि	रुन्धिस्साम
३. दिव	दिवादि	दिब्बिस्सति	दिब्बिस्सन्ति	दिब्बिस्ससि	दिब्बिस्सथ	दिब्बिस्सामि	दिब्बिस्साम
झा	,,	झायिस्सति	झायिस्सन्ति	झायिस्ससि	झायिस्सथ	झायिस्सामि	झायिस्साम
४. तुद	तुदादि	तुदिस्सति	तुदिस्सन्ति	तुदिस्ससि	तुदिस्सथ	तुदिस्सामि	तुदिस्साम
५. जि	ज्यादि	जिनिस्सति	जिनिस्सन्ति	जिनिस्ससि	जिनिस्सथ	जिनिस्सामि	जिनिस्साम
६. की	क्यादि	किणिस्सति	किणिस्सन्ति	किणिस्ससि	किणिस्सथ	किणिस्सामि	किणिस्साम
७. सु	स्वादि	सुणिस्सति	सुणिस्सन्ति	सुणिस्ससि	सुणिस्सथ	सुणिस्सामि	सुणिस्साम
८. तन	तनादि	तनिस्सति	तनिस्सन्ति	तनिस्ससि	तनिस्सथ	तनिस्सामि	तनिस्साम
९. चुर	चुरादि	चोरेस्सति, चोरयिस्सति	चोरेस्सन्ति०	चोरेस्ससि०	चोरेस्सथ०	चोरेस्सामि०	चोरेस्साम०
कथ	,,	कथयिस्सति	कथयिस्सन्ति	कथयिस्ससि	कथयिस्सथ	कथयिस्सामि	कथयिस्साम
झप	,,	झापेस्सति	झापेस्सन्ति	झापेस्ससि	झापेस्सथ	झापेस्सामि	झापेस्साम

८. अभ्यास

१. हिन्दी में अनुवाद कीजिए—

बुद्धं सरणं गमिस्सामि। धम्मं सरणं गच्छिस्सति। सङ्घं सरणं गमिस्सथ। झानं भावेस्सामि। पञ्ञं भावेस्सन्ति। काये उदयं च वयं च पस्सिस्सामि। निब्बाणं सच्छिकरिस्सामि। अनागते (=भविष्यत्काल में) बुद्धो भविस्सामि। अञ्ञे' पि बुद्ध-धम्मा भविस्सरे (भविस्सन्ति)। संबोधिं पापुणिस्सति। भिक्खु सुखं विहरिस्सति। तथागतो न चिरं परिनिब्बायिस्सति। पानीयं पिविस्सामि। गत्तानि सीतं करिस्सति। निब्बाणस्स मग्गो हेहिति। सम्मुखा हेस्साम। गहकारक! त्वं पुन गेहं न काहसि। सब्बे सत्ता मरिस्सन्ति। सब्बे पाणा मरिस्सन्ति। अयं कायो अचिरं पठविं अधिसेस्सति। सच्चं भणिस्सामि। न कुज्झिस्सामि। अक्कोधेन कोधं जिनिस्सामि। असाधुं साधुना जेस्सामि। सुचरितं धम्मं चरिस्सामि, दुच्चरितं न चरिस्सामि। यो धम्मं चरिस्सति सो सुखं सेस्सति, अस्मिं लोके च परम्हि च। मुनी मारस्स बन्धना मोक्खन्ति। सद्धं लभिस्सथ। अविज्जाय बन्धनं छिन्दिस्सामि।

२. पालि में अनुवाद कीजिए—

बुद्ध की शरण जाता हूँ। बालक लोग सङ्घ की शरण जाते हैं। स्वर्ग लोक में (सग्गं लोकं) उत्पन्न हूँगा। धम्म-चक्क को घुमाऊँगा (पवत्तिस्सामि)। सङ्घ को दान देंगे (दस्साम=दज्जिस्साम)। भिक्खु वन में ध्यान करेगा। वन में जाऊँगा। बुद्ध को नमस्कार करूँगा। पाप को छोड़ूँगा। त्रिपिटक (तिपिटकं) पढ़ूँगा। बुद्धों के धर्म्म को जानूँगा। बुद्ध में चित्त प्रसन्न रखूँगा (पसादेस्सामि)। तथागत की पूजा करूँगा। भिक्खु लोग एकान्तवास (पन्त-सयनासनं) करेंगे (कप्पेस्सन्ति)। ग्राम को जाएगा। धर्म्मोपदेश (धम्म-देसना) सुनेगा। धर्म्म-ग्रन्थ पढ़ूँगा। बालक लोग सूर्य्य को देखेंगे। पण्डित लोग धर्म्म को जानेंगे। मूर्ख (बाला) लोग न देखेंगे, न जानेंगे। ब्राह्मण लोग धर्म्म-दान देंगे। ब्राह्मण लोग तपस्या करेंगे। ब्राह्मण लोग क्रोध नहीं करेंगे, चोरी नहीं करेंगे, तपस्या करेंगे, ध्यान करेंगे।

३. निम्नलिखित शब्दों से वाक्य बनाइए—

नाम-पदानि—धनं, दानं, कपणो, माता, भाता, माणवको।

धातु—लभ, पच, हस, भास, चल, कस (=खेती करना), दा।

४. निम्नलिखित धातुओं के भविष्यत्काल, प्रथम पुरुष, दोनों वचन में रूप लिखिए—

गम, हर, कर, भू, हु, दिस्स, भुज, वद, सर, मर, सु (सुनना), झा (झायति), मन।

दूसरा काण्ड

चौथा पाठ

नाम-प्रकरण

(तीसरा भाग—विशेष शब्द)

§ १४. ईकारान्त पुल्लिङ्ग शब्द

दण्डी (=सन्यासी)

	एकवचन	अनेकवचन
पठमा	दण्डी[1]	दण्डी, दण्डिनो[2]
दुतिया	दण्डिनं,[3] दण्डिं	दण्डी, दण्डिनो*, दण्डिने[2]
ततिया	दण्डिना	दण्डीहि, दण्डीभि

---

१. सिस्मिं नानपुंसकस्स २.६८—'सि' विभक्ति आने से, नपुंसक लिंग को छोड़, दूसरे शब्दों के अन्त्य स्वर का ह्रस्व नहीं होता है। जैसे—दण्डी, इत्थी, सयम्भू, वधू।

[नपुंसक लिङ्ग शब्दों के अन्त्य स्वर का ह्रस्व हो जाता है। जैसे—सुखकारि, सयम्भु]

२. योनं नोने पुमे २.७७—पुल्लिङ्ग ईकारान्त शब्द से परे, विकल्प से 'पठमा' के 'यो' का 'नो', तथा 'दुतिया' के 'यो' का 'ने' आदेश हो जाता है। जैसे—दण्डिनो, दण्डिने, दण्डी।

३. नं झीतो २.७६—पुल्लिङ्ग ईकारान्त शब्द से परे, 'अं' विभक्ति का विकल्प से 'नं' आदेश हो जाता है। जैसे—दण्डिनं, दण्डिं।

*नो २.७८—विकल्प से, 'दुतिया' में भी, 'यो' का 'नो' होता है। जैसे—दण्डिनो पस्स।

	एकवचन	अनेकवचन
चतुत्थी	दण्डिनो, दण्डिस्स	दण्डीनं
पञ्चमी	दण्डिना, दण्डिस्मा, दण्डिम्हा	दण्डीहि, दण्डीभि
छट्ठी	दण्डिनो, दण्डिस्स	दण्डीनं
सत्तमी	दण्डिनि,[४] दण्डिम्हि, दण्डिस्मिं	दण्डिसु, दण्डीसु
आलपन	दण्डि[५], दण्डी	[५]दण्डी, दण्डिनो

'दण्डी' शब्द का अर्थ है 'दण्ड वाला'। इसी तरह, दूसरे शब्दों के साथ भी 'ई' प्रत्यय लगा देने से, 'उसका वाला' अर्थ हो जाता है। इस तरह बने, तथा दूसरे भी सभी ईकारान्त पुल्लिङ्ग शब्दों के रूप 'दण्डी' के समान होते हैं। जैसे—

करी (=हाथी), कामी, कुट्ठी (=कुष्ट रोग वाला), कुसली, गणी (=गण वाला), चक्की (=चक्र वाला), चागी (=त्याग करने वाला), जटी (=जटा वाला), आणी (=ज्ञानी), दन्ती (=हाथी), दाठी (=बाघ), दीघजीवी (=दीर्घ जीवी), धम्मवादी (=धर्मवादी), धम्मी (=धर्मी), पक्खी (=पांख वाला=पक्षी), पापकारी, बली (=बल वाला), भागी (=भाग वाला), भोगी (=भोग करने वाला), माली (=माला बनाने वाला), मूसली (=बलराम=मूसल धारण करने वाला), योगी, वम्मी (=बख्तर वाला=सिपाही), संघी (=संघ वाला), सामी (=स्वामी), सिखी (=शिखा वाला=मोर), सीघयायी (=शीघ्र जाने वाला), सुखी (=सुख से रहने वाला) इत्यादि।

§ १५. ईकारान्त नपुंसक लिङ्ग शब्द

सुखकारी (=सुख देने वाला)

	एकवचन	अनेकवचन
पठमा	सुखकारि	सुखकारीनि, सुखकारी

---

४. स्मिनो नि २.७९—ईकारान्त शब्द से परे, 'स्मिं' विभक्ति का विकल्प से 'नि' आदेश होता है। जैसे—दण्डिनि, दण्डिस्मिं।

५. गे ला २.६७—तीनों लिङ्गों में, 'ग' विभक्ति आने से, 'घ' तथा ओकारान्त

	एकवचन	अनेकवचन
दुतिया	सुखकारिं	सुखकारीनि, सुखकारी
आलपन	सुखकारि	सुखकारीनि, सुखकारी

शेष 'दण्डी' शब्द के समान

§ १६. ऊकारान्त पुल्लिङ्ग शब्द

सब्बञ्ञू (=सर्वज्ञ)

	एकवचन	अनेकवचन
पठमा	सब्बञ्ञू	सब्बञ्ञू, सब्बञ्ञुनो[1]
दुतिया	सब्बञ्ञुं	सब्बञ्ञू, सब्बञ्ञुनो
ततिया	सब्बञ्ञुना	सब्बञ्ञूहि, सब्बञ्ञूभि
चतुत्थी	सब्बञ्ञुनो, सब्बञ्ञुस्स	सब्बञ्ञूनं
पञ्चमी	सब्बञ्ञुना, सब्बञ्ञुस्मा, सब्बञ्ञुम्हा	सब्बञ्ञूहि, सब्बञ्ञूभि
छट्ठी	सब्बञ्ञुनो, सब्बञ्ञुस्स	सब्बञ्ञूनं
सत्तमी	सब्बञ्ञुम्हि, सब्बञ्ञुस्मिं	सब्बञ्ञुसु
आलपन	सब्बञ्ञु	सब्बञ्ञू, सब्बञ्ञुनो

शब्दावली—मग्गञ्ञू (=मार्गज्ञ), धम्मञ्ञू (=धर्मज्ञ), अत्थञ्ञू (=अर्थज्ञ), कालञ्ञू (=कालज्ञ), रत्तञ्ञू (=पुराना परिचित), मत्तञ्ञू (=मात्रा को जानने वाला), कतञ्ञू (=कृतज्ञ), तत्तञ्ञू (=तत्वज्ञ), विदू (=जानने वाला), वेदगू (=वेदनाओं के पार जाने वाला, अर्हत्), पारगू (=पार जाने वाला), इत्यादि ऊकारान्त पुल्लिङ्ग शब्दों के रूप 'सब्बञ्ञू' शब्द के समान होंगे।

शब्दों को छोड़, दूसरे शब्दों के अन्त्य स्वर का विकल्प से ह्रस्व होता है। जैसे—दण्डि, दण्डी। इत्थि, इत्थी। वधु, वधू। सयम्भु, सयम्भू।

१. कूतो २.८७—'कू' प्रत्ययान्त शब्दों [देखिए—पृ० १९२.] से परे, पुल्लिङ्ग में—'यो' विभक्ति का विकल्प से 'नो' आदेश—होता है। जैसे—
सब्बञ्ञुनो, सब्बञ्ञू। विदुनो, विदू।

§ १७. ऊकारान्त नपुंसकलिंग शब्द

सयम्भू (= स्वयम्भू)

	एकवचन	अनेकवचन
पठमा	सयम्भु	सयम्भू, सयम्भुनि
दुतिया	सयम्भुं	सयम्भू, सयम्भुनि
आलपन	सयम्भु	सयम्भू, सयम्भुनि

शेष 'सब्बञ्ञू' शब्द के समान

§ १८. ओकारान्त पुल्लिङ्ग शब्द

गो (=बैल)

	एकवचन	अनेकवचन
पठमा	गो	गावो, गवो[9]
दुतिया	गावुं,[8] गावं, गवं	गावो,[7] गवो
ततिया	गावेन, गवेन,[7] गावा, गवा[10]	गोहि, गोभि

---

७. गोस्सा ग सि हि नं सु गाव गवा २.६९—'ग', 'सि', 'हि' तथा 'नं' विभक्तियों को छोड़, दूसरी विभक्तियों के आने से, 'गो' शब्द का 'गाव' तथा 'गव' आदेश हो जाता है। जैसे—गो+यो=गावो, गवो। गो+ना=गावेन, गवेन। गो+स=गावस्स, गवस्स। गो+स्मा=गावस्मा, गवस्मा। गो+स्मिं=गावे, गवे।

८. गावु म्हि २.७४—'अं' विभक्ति आने से, 'गो' शब्द का विकल्प से 'गावु' आदेश होता है। जैसे—गो+अं=गवुं। गावं, गवं।

९. उभगोहि टो २.१७२—'उभ' तथा 'गो' शब्दों से परे, 'यो' विभक्ति का 'ओ' आदेश होता है। जैसे—उभ+यो=उभो। गो+यो=गावो।

१०. नास्सा २.७३—'गो' शब्द से परे, 'ना' विभक्ति का विकल्प से 'आ' आदेश होता है। जैसे—गो+ना=गावा, गवा। गावेन, गवेन।

	एकवचन	अनेकवचन
चतुत्थी	गावस्स, गवस्स, गवं[११]	गवं, गुन्नं,[१२] गोनं
पञ्चमी	गवा, गावा,[१०] गावस्मा, गावम्हा[७], गवस्मा, गवम्हा	गोहि, गोभि
छट्ठी	गावस्स, गवस्स,[७] गवं[११]	गवं, गुन्नं,[१२] गोनं
सत्तमी	गावे, गवे,[७] गावम्हि, गवम्हि, गावस्मिं, गवस्मिं	गावेसु, गवेसु,[१३] गोसु
आलपन	गो	गावो, गवो

पालि भाषा में, एकारान्त शब्द नहीं मिलते हैं। ओकारान्त शब्द भी, 'गो' को छोड़ कर और नहीं मिलते हैं।

स्त्रीलिङ्ग में भी, 'गो' शब्द के रूप पुल्लिङ्ग के ही समान होते हैं।

§ १९. ओकारान्त नपुंसक लिङ्ग शब्द

चित्तगो (=विचित्र गौओं वाला)

	एकवचन	अनेकवचन
पठमा	चित्तगु	चित्तगू, चित्तगूनि
दुतिया	चित्तगुं	चित्तगू, चित्तगूनि
आलपन	चित्तगु	चित्तगू, चित्तगूनि

शेष 'आयु' शब्द के समान

---

११. गवं सेन २.७१—'स' विभक्ति के साथ, 'गो' शब्द का रूप विकल्प से 'गवं' होता है। जैसे—गो+स=गवं।

१२. गुन्नं च नंना २.७२—'नं' विभक्ति के साथ, 'गो' शब्द के रूप विकल्प से 'गुन्नं' तथा 'गवं' होते हैं। जैसे—गो+नं=गुन्नं, गवं। गोनं।

१३. सुम्हि वा २.७०—'सु' विभक्ति आने से, 'गो' शब्द का विकल्प से 'गाव' तथा 'गव' आदेश हो जाता है। जैसे—गो+सु=गावेसु, गवेसु, गोसु।

'गो' शब्द के स्थान में, सभी विभक्तियों में, विकल्प से 'गोण' आदेश हो जाता है; और उसके रूप पुल्लिङ्ग अकारान्त 'बुद्ध' शब्द के समान होते हैं।

शेष अनियमित पुल्लिङ्ग शब्द

§ २०. अत्त (=आत्मा)

	एकवचन	अनेकवचन
पठमा	अत्ता	अत्ता, अत्तानो
दुतिया	अत्तानं, अत्तं	अत्तानो, अत्ते
ततिया	अत्तेन, अत्तना	अत्तेहि, अत्तेभि, अत्तनेहि, अत्तनेभि[१४]
चतुत्थी	अत्तनो,[१५] अत्तस्स	अत्तानं
पञ्चमी	अत्तना,[१५] अत्तस्मा, अत्तम्हा	अत्तेहि, अत्तेभि, अत्तनेहि, अत्तनेभि[१४]
छट्ठी	अत्तनो,[१५] अत्तस्स	अत्तानं
सत्तमी	अत्तनि, अत्तस्मि, अत्तम्हि, अत्ते	अत्तनेसु,[१४] अत्तेसु
आलपन	अत्त, अत्ता	अत्ता, अत्तानो

§ २१. ब्रह्म (=ब्रह्मा)

	एकवचन	अनेकवचन
पठमा	ब्रह्मा	ब्रह्मा, ब्रह्मानो
दुतिया	ब्रह्माणं, ब्रह्मं	ब्रह्मानो

---

१४. सुहिसु नक् २.१९७—'सु' तथा 'हि' विभक्तियों के आने से, 'अत्त' तथा 'आतुम' शब्दों का विकल्प से क्रमशः 'अत्तन' तथा 'आतुमन' आदेश हो जाता है। जैसे—अत्त+सु=अत्तनेसु, अत्तेसु। आतुमनेसु, आतुमेसु। अत्तनेहि, अत्तेहि। आतुमनेहि, आतुमेहि।

कभी कभी, दूसरी जगह भी, 'न' का आगम होता है। जैसे—वेरिनेसु=वैरी लोगों में।

१५. नो त्तातुमा २.१९६—'अत्त' तथा 'आतुम' शब्दों से परे, 'स' विभक्ति

	एकवचन	अनेकवचन
ततिया	ब्रह्मना, ब्रह्मुना[16]	ब्रह्मेहि, ब्रह्मेभि, ब्रह्मूहि, ब्रह्मूभि
चतुत्थी	ब्रह्मुनो,[16] ब्रह्मस्स	ब्रह्मानं, ब्रह्मूनं[16]
पञ्चमी	ब्रह्मना, ब्रह्मुना[17]	ब्रह्मेहि, ब्रह्मेभि, ब्रह्मूहि, ब्रह्मूभि
छट्ठी	ब्रह्मुनो,[16] ब्रह्मस्स	ब्रह्मानं, ब्रह्मूनं[16]
सत्तमी	ब्रह्मे, ब्रह्मनि, ब्रह्मस्मि, ब्रम्हम्हि	ब्रह्मेसु
आलपन	ब्रह्मे	ब्रह्मा, ब्रह्मानो

§ २२. राज (=राजा)

	एकवचन	अनेकवचन
पठमा	राजा[18]	राजा, राजानो[19]
दुतिया	राजानं,[20] राजं	राजानो[19]

का विकल्प से 'नो' होता है। जैसे—अत्तनो, अत्तस्स। आतुमनो, आतुमस्स।

१६. ब्रह्मस्सु वा २.१९२—नाम्हि २.१९३—'स', 'नं', तथा 'ना' विभक्तियों के आने से, 'ब्रह्म' शब्द का विकल्प से 'ब्रह्मु' आदेश हो जाता है। जैसे—

ब्रह्मुनो। ब्रह्मूनं। ब्रह्मुना।

१७. स्मास्स ना ब्रह्मा च २.१९८—'ब्रह्म', 'अत्त', तथा 'आतुम' शब्दों से परे, 'स्मा' विभक्ति का 'ना' आदेश हो जाता है। जैसे—ब्रह्म+स्मा=ब्रह्मुना। अत्तना। आतुमना।

१८. राजादियुवादित्वा २.१५६—'राज' आदि, तथा 'युव' आदि [देखिए—तीसरा परिशिष्ट] शब्दों से परे, 'सि' विभक्ति का 'आ' आदेश होता है। जैसे—

राज+सि=राजा। युवा।

१९. योनमानो २.१५८—'राज' आदि, तथा 'युव' आदि शब्दों से परे, 'यो' विभक्ति का विकल्प से 'आन' आदेश हो जाता है। जैसे—

राज+यो=राजानो। युवानो।

२०. वा ह्यानङ् २.१५७—'अं' विभक्ति आने पर, 'राज' आदि, तथा 'युव'

	एकवचन	अनेकवचन
ततिया	रञ्ञा,[21] राजेन, राजिना[22]	राजेहि, राजूहि, राजेभि, राजूभि[23]
चतुत्थी	रञ्ञो, रञ्ञस्स, राजिनो, राजस्स[24]	रञ्ञं,[25] राजूनं, राजानं
पञ्चमी	रञ्ञा,[21] राजम्हा, राजस्मा	राजेहि, राजेभि, राजूहि, राजूभि
छट्ठी	रञ्ञो, रञ्ञस्स, राजिनो, राजस्स[24]	रञ्ञं,[25] राजूनं,[23] राजानं
सत्तमी	रञ्ञे, राजिनि,[26] राजस्मि, राजम्हि	राजूसु,[23] राजेसु
आलपन	राज, राजा	राजानो, राजा

आदि शब्दों का विकल्प से क्रमशः 'राजान' तथा 'युवान' आदेश हो जाता है। जैसे—

राज+अं=राजानं। युवानं।

२१. नास्मासु रञ्ञा २.२२४—'ना' तथा 'स्मा' विभक्तियों के साथ, 'राज' शब्द का रूप 'रञ्ञा' होता है।

२२. राजस्सि नाम्हि २.१२५—'ना' विभक्ति आने से, 'राज' शब्द का विकल्प से 'राजि' आदेश हो जाता है। जैसे—राजिना।

२३. सुनंहिसु २.१२६—'सु', 'नं', तथा 'हि' विभक्तियों के आने से, 'राज' शब्द का विकल्प से 'राजू' आदेश हो जाता है। जैसे—

राजूसु। राजूनं। राजूहि।

२४. रञ्ञो रञ्ञस्स राजिनो से २.२२५—'स' विभक्ति के साथ, 'राज' शब्द के रूप 'रञ्ञो, रञ्ञस्स, रजिनो' होते हैं।

२५. राजस्स रञ्ञं २.२२३—'नं' विभक्ति के साथ, 'राज' शब्द का रूप 'रञ्ञं' होता है।

२६. स्मिम्हि रञ्ञे राजिनि २.२२६—'स्मिं' विभक्ति के साथ, 'राज' शब्द के रूप 'रञ्ञे, रजिनि' होते हैं।

द्रष्टव्य—समासे वा २.२२७—'राज' शब्द के साथ समास होने पर, ऊपर कहे गए आदेश विकल्प से होते हैं। जैसे—

कासिरञ्ञा, कासिराजेन। कासिरञ्ञा, कासिराजस्मा। कासिरञ्ञो, कासिराजस्स। कासिरञ्ञे, कासिराजे।

§ २३. पुम (=मनुष्य)

	एकवचन	अनेकवचन
पठमा	पुमा, पुमो	पुमो, पुमानो
दुतिया	पुमानं, पुमं	पुमानो, पुमाने, पुमे
ततिया	पुमाना, पुमुना[२७], पुमेन[२८]	पुमानेहि, पुमानेभि, पुमेहि, पुमेभि
चतुत्थी	पुमुनो,[२७] पुमस्स	पुमानं
पञ्चमी	पुमाना, पुमुना,[२७] पुमा, पुमस्मा, पुमम्हा	पुमानेहि, पुमेहि, पुमानेभि, पुमेभि
छट्ठी	पुमुनो,[२७] पुमस्स	पुमानं
सत्तमी	पुमाने,[२९] पुमे, पुमस्मिं, पुमम्हि	पुमासु, पुमानेसु, पुमेसु[३०]
आलपन	पुमं,[३१] पुम	पुमानो, पुमा

§ २४. सा (=कुत्ता)

	एकवचन	अनेकवचन
पठमा	सा	सा, सानो
दुतिया	सं, सानं[३२]	से, साने

---

२७. पुमकम्मथामद्धानं वा सस्मासु च २.१९४—'स', 'स्मा' तथा 'ना' विभक्तियों के आने से, 'पुम', 'कम्म' (=कर्म), 'थाम' (=धैर्य्य), तथा 'अद्ध' (=मार्ग) शब्दों के अन्त्य स्वर का विकल्प से 'उ' हो जाता है। जैसे—पुमुनो, पुमुना। कम्मुनो, कम्मुना। थामुनो, थामुना। अद्धुनो, अद्धुना।

२८. नाम्हि २.१८७—'पुम' शब्द से परे, 'ना' विभक्ति आने से ये रूप बनते हैं—पुमाना। पुमेन।

२९. पुमा २.१८६—'पुम' शब्द से परे, 'स्मिं' विभक्ति का विकल्प से 'ने' आदेश होता है। जैसे—पुमाने, पुमे।

३०. सुम्हा च २.१८८—'पुम' शब्द से परे 'सु' विभक्ति आने से, ये रूप बनते हैं—पुमानेसु, पुमेसु, पुमासु।

३१. गस्सं २.१८९—'पुम' शब्द से परे, 'ग' विभक्ति का विकल्प से 'अं' आदेश हो जाता है। जैसे—पुमं। पुम।

	एकवचन	अनेकवचन
ततिया	सेन, साना	सेहि, सेभि, सानेहि, सानेभि
चतुत्थी	सस्स, साय, सानस्स[32]	सानं
पञ्चमी	सा, सस्मा, सम्हा, साना	सेहि, सेभि, सानेहि, सानेभि
छट्ठी	सस्स, सानस्स[32]	सानं
सत्तमी	से, सस्मिं, सम्हि, साने	सासु
आलपन	स, सान	सा, सानो

§ २५. युव (=युवक)

	एकवचन	अनेकवचन
पठमा	युवा	युवा, युवानो,[33] युवाना
दुतिया	युवानं, युवं	युवाने,[33] युवे
ततिया	युवाना, युवानेन, युवेन	युवानेहि, युवानेभि, युवेहि, युवेभि
चतुत्थी	युवानस्स, युवस्स, युविनो[34]	युवानानं, युवानं
पञ्चमी	युवाना,[35] युवानस्मा, युवानम्हा	युवानेहि,[35] युवानेभि, युवेहि, युवेभि
छट्ठी	युवानस्स, युवस्स, युविनो[34]	युवानानं, युवानं
सत्तमी	युवाने,[35] युवानस्मिं, युवस्मिं युवानम्हि, युवम्हि, युवे	युवानेसु,[35] युवासु, युवेसु
आलपन	युव, युवा, युवाना, युवान	युवानो, युवाना

'मघव' (=इन्द्र) शब्द के रूप भी 'युव' के समान होंगे।

---

३२. सास्संसे चानङ् २.१९०—'अं', 'स' तथा 'ग' विभक्तियों के आने से, 'सा' शब्द का 'सान' आदेश हो जाता है। जैसे—सानं। सानस्स। भो सान!

३३. योनं नोने वा २.१८३—'युव' आदि शब्दों से परे, 'यो' विभक्तियों का विकल्प से क्रमशः 'नो' तथा 'ने' आदेश होता है। जैसे—युवानो। युवाने।

३४. युवा सस्सिनो २.१९५—'युव' शब्द से परे, 'स' विभक्ति का विकल्प से 'इनो' आदेश होता है। जैसे—युविनो; युवस्स।

३५. स्मास्मिन्नं नाने २.१८२—'युव' आदि शब्दों से परे, 'स्मा' तथा 'स्मि'

§ २६. 'वन्तु' और 'मन्तु' प्रत्ययान्त शब्द

'वाला' के अर्थ में, नाम के आगे 'वन्तु' और 'मन्तु' प्रत्यय लगते हैं। अकारान्त या आकारान्त शब्दों के आगे 'वन्तु', तथा भिन्न स्वरान्त शब्दों के आगे 'मन्तु' प्रत्यय लगते हैं। जैसे—गुणवन्तु=गुण वाला। गतिमन्तु=गतिवाला

पुल्लिङ्ग

गुणवन्तु (=*गुणवाला*)

	एकवचन	अनेकवचन
पठमा	गुणवा[३७]	गुणवन्तो,[३८] गुणवन्ता[३९]
दुतिया	गुणवन्तं[३९]	गुणवन्ते[३९]
ततिया	गुणवता, गुणवन्तेन[३९]	गुणवन्तेहि, गुणवन्तेभि[३९]

विभक्तियों का क्रमशः 'ना' तथा 'नें' आदेश होता है। युव+स्मा=युवाना। युव+स्मिं=युवाने।

३६. युवादीनं सुहिस्वानङ् २.१८०—'सु' तथा 'हिं' विभक्तियों के आने से, 'युव' आदि शब्दों के अन्त्य स्वर का 'आन' आदेश होता है। जैसे—युव+सु=युवानेसु। युव+हिं=युवानेहि।

नो ना ने स्वा २.१८१—'नो', 'ना' तथा 'ने' से पूर्व, 'युव' आदि शब्दों के अन्त्य स्वर का 'आ' होता है। जैसे—युवानो, युवाना, युवाने।

३७. न्तुस्स २.१५३—'सि' विभक्ति आने से, 'न्तु' का 'आ' आदेश हो जाता है। जैसे—गुणवा।

३८. न्तन्तूनं न्तो योम्हि पठमे २.२१७—'पठमा' के अनेक वचन में, 'न्त' तथा 'न्तु' का विकल्प से—विभक्ति के साथ—'न्तो' हो जाता है। जैसे—गुणवन्तो, गुणवन्ता। गच्छन्तो, गच्छन्ता।

३९. य्वादो न्तुस्स २.९३—'यो' आदि विभक्तियाँ आने से, 'न्तु' का 'न्त' हो जाता है। जैसे—गुणवन्तु+यो=गुणवन्त+यो=(अतो योनं टाटे २.४३) गुणवन्ता, गुणवन्ते। गुणवन्तं। गुणवन्तेन इत्यादि।

	एकवचन	अनेकवचन
चतुत्थी	गुणवतो,[४०] गुणवन्तस्स[१८]	गुणवतं,[४१] गुणवन्तानं[१९]
पञ्चमी	गुणवता, गुणवन्तस्मा, गुणवन्तम्हा[१९]	गुणवन्तेहि, गुणवन्तेभि
छट्ठी	गुणवतो, गुणवन्तस्स	गुणवतं, गुणवन्तानं
सत्तमी	गुणवति, गुणवन्ते, गुणवन्तस्मिं[१९] गुणवन्तम्हि	गुणवन्तेसु[१९]
आलपन	गुणवं, गुणव, गुणवा[४२]	गुणवन्तो, गुणवन्ता[१९]

शब्दावली—कुलवन्तु (=अच्छा कुल वाला), धनवन्तु (=धन वाला), पञ्ञवन्तु (=प्रज्ञा वाला), फलवन्तु (=फल वाला), बलवन्तु (=बल वाला), भगवन्तु (=तेज वाला), मघवन्तु (=इन्द्र), यसवन्तु (=यश वाला), सीलवन्तु (=शीलवान्), सुतवन्तु (=श्रुतवान्), हिमवन्तु (=हिमालय)—कलिमन्तु (=कालिमा-युक्त), कसिमन्तु (कृषि वाला=कृषक), केतुमन्तु (=केतुवाला), गतिमन्तु (=गति वाला), चक्खुमन्तु (=आँख वाला), जुतिमन्तु (=चमक वाला), धीतिमन्तु (=धृतिमान्), बुद्धिमन्तु (=बुद्धिमान्), बन्धुमन्तु (=बन्धुओं वाला), भानुमन्तु (=प्रकाश वाला), मतिमन्तु (=मतिमान्), सतिमन्तु (=स्मृतियुक्त), सिरीमन्तु (=श्री सम्पन्न), सुचिमन्तु

---

४०. तो ता ति ता स स्मा स्मिं ना सु २.२१९—'न्त' तथा 'न्तु' का—'स', 'स्मा', 'स्मिं' तथा 'ना' विभक्तियों के साथ, विकल्प से क्रमशः 'तो', 'ता', 'ति' तथा 'ता' हो जाता है। जैसे—गुणवन्तु+स=गुणवतो। गच्छतो। गुणवन्तु+ना=गुणवता। गच्छता। गुणवन्तु+स्मा=गुणवता। गच्छता। गुणवन्तु+स्मिं=गुणवति। गच्छति।

४१. तं न म्हि २.२१८—'न्त' तथा 'न्तु' का, 'नं' विभक्ति से साथ, विकल्प से 'तं' आदेश हो जाता है। जैसे—गुणवन्तु+नं=गुणवतं। गच्छतं।

४२. ट टा अं गे २.२२०—आलपन एक वचन में, विभक्ति के साथ, 'न्त' तथा 'न्तु' का 'अ', 'आ' तथा 'अं' आदेश हो जाता है। जैसे—भो गुणव, गुणवा, गुणवं। भो गच्छ, गच्छा, गच्छं।

(=पवित्रता वाला), हिमवन्तु[43] (=हिमालय), हेतुमन्तु (=हेतु वाला) इत्यादि 'वन्तु', 'क्तवन्तु' तथा 'मन्तु' प्रत्ययान्त शब्द के रूप 'गुणवन्तु' के समान होंगे।

§ २७. 'वन्तु' और 'मन्तु' प्रत्ययान्त शब्द के रूप, नपुंसक लिङ्ग में भी, वैसे ही होंगे जैसे पुल्लिङ्ग में। केवल, पठमा एकवचन में, 'गुणवं' तथा 'गुणवन्तं' ऐसे दो रूप होंगे; तथा पठमा और दुतिया के अनेक वचन में 'गुणवन्तानि' ऐसा भी एक रूप होगा।[44]

स्त्रीलिङ्ग में, 'वन्तु' का 'वती' तथा 'वन्ती'; और 'मन्तु' का 'मती' तथा 'मन्ती' हो जाता है। जैसे—गुणवती—गुणवन्ती; सिरीमती, सिरीमन्ती। इनके रूप ईकारान्त स्त्रीलिङ्ग 'इत्थी' शब्द के समान होंगे (देखिए—पृ० २४०)।

§ २८. न्त स्स च ट वं से २.६४—'अं' तथा 'स' विभक्तियों के आने से, 'न्त' तथा 'न्तु' का बहुधा 'अं' हो जाता है। जैसे—

"यं यं हि राज भजति, सतं वा यदि वा असं"—यहाँ, असन्त+अं='असं' हुआ है।

"किच्चानि कुब्बस्स करेय्य किच्चं"—यहाँ, कुब्बन्त+स='कुब्बस्स' हुआ है।

"हिमवं व पब्बतं"—यहाँ, हिमवन्तु+अं='हिमवं' हुआ है।

"सुजातिमन्तो पि अजातिमस्स"—यहाँ, अजातिमन्तु+स='अजातिमस्स' हुआ है।

कहीं कहीं, दूसरी विभक्तियों के आने से भी—

"चक्खुमा अन्धिता होन्ति"—यहाँ, चक्खुमन्तु+यो=चक्खुमा। "वग्गु-मुदातीरिया पन भिक्खू वण्णवा होन्ति"—यहाँ, वण्णवन्तु+यो=वण्णवा।

---

४३. हिमवतो वा ओ २.१५५—'सि' विभक्ति आने से, 'हिमवन्तु' शब्द के अन्त्य स्वर का विकल्प से 'ओ' आदेश होता है। जैसे—हिमवन्तो। हिमवा।

४४. अं नपुंसके २.१५४—'सि' विभक्ति आने से, नपुंसक लिङ्ग में, 'न्तु' का 'अं' तथा 'न्तं' हो जाता है। जैसे—गुणवं कुलं, गुणवन्तं कुलं।

६. अभ्यास

१. हिन्दी में अनुवाद कीजिए—

(क) निच्चं झायिनो धीरा निब्बाणं फुसन्ति। उट्ठानवतो सतिमतो धम्म-जीविनो अप्पमत्तस्स यसो अभिवड्ढति। यो भिक्खु मेत्ता-विहारी बुद्ध-सासने पसन्नो, सो सन्तं सुखं पदं अधिगच्छति। यो भिक्खु अत्तना अत्तानं चोदयति, अत्तना अत्तं पटिवासेति, सो सतिमा भिक्खु सुखं विहाहिसि (विहरिस्सति)।

(ख) अत्ता हि अत्तनो नाथो, अत्ता हि अत्तनो गति।
तस्मा सञ्ञमयेत्तानं, अस्सं भद्रं व वाणिजो ॥१॥

भगवतो धम्मो विञ्ञूहि वेदितब्बो। सब्बञ्ञुनो भगवतो सम्मा-सम्बुद्धस्स सावका अरहन्तो होन्ति। ब्रह्मुना याचितो सन्तो भगवा धम्म-चक्कं पवत्तेसि। यो को चि झायी काये कायानुपस्सी विहरति, सो आतापी सम्पजानो सतिमा होति।

(ग) राजानो राजूहि सद्धिं सन्थव कारिनो होन्ति। गुणवन्तो सब्बञ्ञुनो सत्थुनो सासन-करा ति। गुणवन्ते साने पि पुमानो ममायन्ति। सानो सेहि सद्धिं सन्थवं न करोन्ति। एस सभावो सानं सासु। पुमानो पुमेहि (पुमा-नेहि) सद्धिं मेत्तायन्ति। एस धम्मता पुमानं पुमानेसु। युवानानमेव युवानो युवा-नेहि सद्धिं कीळन्ति, युवानेस्वे व (युवानेसु एव) पसीदन्ति। लाभात्थाय कम्मं करोन्तो अभिपस्सन्ना होन्ति।

२. ऊपर के काले अक्षरों में छपे शब्दों के रूप द्वितिया तथा सत्तमी विभक्ति में लिखिए; और उनका वाक्यों में प्रयोग कीजिए।

३. पालि में अनुवाद कीजिए—

सर्वज्ञ बुद्धों को ब्रह्मा भी नमस्कार करता है, राजा लोग भी वन्दना करते हैं। गुणवान पुरुष से कौन मेल (सन्थवं) करना नहीं चाहेगा? आप ही अपना मालिक है, अपने को (अत्तानं) छोड़कर दूसरा कौन मालिक होगा?

दूसरा काण्ड

पाँचवाँ पाठ

क्रिया-प्रकरण

(तीसरा भाग—परिसमाप्त्यर्थक भूत[1])

परस्स पद

	एकवचन	अनेकवचन
पठमपुरिस	अपची,[2] पची, अपचि,[1] पचि	अपचुं, पचुं, अपचिंसु,[1] अपचंसु, पचंसु[1] पचिंसु[1]
मज्झिमपुरिस	अपचो, पचो, अपचि, पचि[1]	अपचित्थ, अपचुत्थ[1], पचित्थ, पचुत्थ[1]
उत्तमपुरिस	अपचिं, पचिं[1]	अपचिम्ह[1], पचिम्ह[1] अपचिम्हा, पचिम्हा, अपचुम्हा,[1] पचुम्हा[1]

---

१. भूते इउं, ओत्थ, इंम्हा; आऊ, सेव्हं, अम्हे ६.४—परिसमाप्त हो जाने के अर्थ में, धातु से परे ये प्रत्यय होते हैं। जैसे—पची पचुं, पचो पचित्थ, पचिं पचिम्हा इत्यादि।

मा योगे ईआआदि ६.१३—'मा' (=नहीं) शब्द के योग में, विकल्प से परिसमाप्त्यर्थक भूत तथा अनद्यतन-भूत होते हैं। जैसे—मास्सु पुनपि एवरूपमकासि—वह फिर भी ऐसा न करे। मा भवं अगमा वनं=आप वन मत जायें।

२. आईस्सादिस्वञ् वा ६.१५—अनद्यत-भूत, परिसमाप्त्यर्थक भूत, तथा हेतुहेतुमद्भूत में, धातु से पूर्व विकल्प से 'अ' का आगम होता है। जैसे—अपचा, पचा (अनद्यत)। अपची, पची (परि० भूत)। अपचिस्सा, पचिस्सा (हेतु०)।

अत्तनो पद

	एकवचन	अनेकवचन
पठमपुरिस	अपचा, पचा, अपचित्थ[2]	अपचू, पचू
मज्झिमपुरिस	अपचसे, पचसे	अपचव्हं, पचव्हं
उत्तमपुरिस	अपचं,[1] अपच, पचं, पच	अपचम्हे, पचम्हे

---

३. आ ई ऊ म्हा स्सा स्सम्हा नं वा ६.३३—'आ, ई, ऊ, म्हा, स्सा, स्सम्हा'—इनका विकल्प से ह्रस्व हो जाता है। जैसे—अपचा, अपच। अपची, अपचि। अपचू, अपचु। अपचिम्हा, अपचिम्ह। अपचिस्सा, अपचिस्स। अपचिस्सम्हा, अपचिस्सम्ह।

म्हा त्था न मु ञ् ६.४५—'म्हा' तथा 'त्थ' प्रत्ययों से पूर्व, विकल्प से 'उ' का आगम होता है। जैसे—अपचिम्हा, अपचुम्हा। अपचित्थ, अपचुत्थ।

४. इंस्स च सिञ् ६.४६—'इं' 'म्हा', तथा 'त्थ' प्रत्ययों के आने से, धातु से परे कहीं कहीं, विकल्प से 'सि' का आगम होता है। जैसे—

कर+इं=कर+सि+इं=अकासिं अकरिं। अकासिम्हा, अकरिम्हा। अकासित्थ, अकरित्थ।

५. उं स्सि स्वंसु ६.३९—'उं' प्रत्यय का, विकल्प से 'इंसु' तथा 'अंसु' आदेश होता है। जैसे—अपचिंसु, अपचंसु।

६. ओ स्स अ इ त्थ त्थो ६.४२—'ओ' प्रत्यय का, विकल्प से 'अ', 'इ', 'त्थ' तथा 'त्थो' आदेश होता है। जैसे—त्वं अपच, अपचि, अपचित्थ, अपचित्थो, अपचो।

सि. ६.४३—'ओ' प्रत्यय का कहीं कहीं विकल्प से 'सि' आदेश हो जाता है। जैसे—भू+ओ=अहोसि अभुवो।

७. एय्याथ स्से अ आ ईथानं ओ अ अं त्थ त्थो व्हो क् ६.३८—'एय्याथ' आदि प्रत्ययों के बाद, क्रमशः 'ओ' आदि होता है। जैसे—तुम्हे पचेय्याथो, पचेय्याथ। त्वं अपचिस्स, अपचिस्से। अहं अपचं, अपच। सो अपचित्थ, अपचा। सो अपचित्थो, अपची। तुम्हे पचथव्हो, पचथ।

§ ३. परिसमाप्त्यर्थक भूतकाल में कुछ विशेष धातुओं के रूप—

वच—अवोच[८]। कर—अकासि[९]। हर—अहासि[१०]। गम—अगा[११]। डंस—अडञ्छि[१२]। कुस—अक्कोच्छि[१३]। नि—नेसुं[१४]। सु—अस्सोसुं[१५]। हु—अहेसुं[१६]। दा—अदासि, अदा[९]। अस—आसि[१७]। सक—असक्खि[१८]। लभ—अलभत्थ[१९]।

---

८. ईआदो वचस्सोम् ६.२१—'ई' आदि प्रत्ययों के आने से, 'वच' धातु का 'वोच' आदेश हो जाता है। जैसे—वच+ई=वोच+इ=अवोच।

९. का ईआदिसु ६.२४—'ई' आदि प्रत्ययों के आने से, विकल्प से 'कर' धातु का 'का' आदेश हो जाता है। जैसे—अकासि, अका। अकरि।

दीघा ईस्स ६.४४—दीर्घ स्वर से परे, 'ई' प्रत्यय का विकल्प से 'सि' आदेश हो जाता है। जैसे—अकासि, अका। अदासि, अदा।

१०. आईआदिसु हरस्सा ६.२८—परिसमाप्त्यर्थक भूत तथा अनद्यतन भूत में, 'हर' धातु का विकल्प से 'हा' आदेश हो जाता है। जैसे—हर+ई=अहासि, अहरि। अहा, अहरा।

११. गमिस्स ६.२९—परिसमाप्त्यर्थक भूत तथा अनद्यतन भूत में, 'गम' धातु का विकल्प से 'गा' आदेश हो जाता है। जैसे—गम+ई=अगा, अगमि। अगा अगमा।

१२. डंसस्स च ञ्छङ् ६.३०—परिसमाप्त्यर्थक भूत तथा अनद्यतन भूत में, 'गम' तथा 'डंस' धातुओं का विकल्प से क्रमशः 'गञ्छ' तथा 'डञ्छ' आदेश हो जाता है। जैसे—अगञ्छि, अगच्छि। अडञ्छि, अडंसि।

१३. कुसरुहेहिस्स छि ६.३४—'कुस' तथा 'रुह' धातु से परे, 'ई' का विकल्प से 'छि' आदेश हो जाता है। जैसे—कुस+ई=अक्कोच्छि, अक्कोसि। अभिरुच्छि, अभिरुहि।

१४. एओत्तासुं ६.४०—आदिष्ट 'ए' तथा 'ओ' से परे, 'उं' विभक्ति का विकल्प से 'सुं' आदेश होता है। जैसे—नि+उं=ने+उं=नेसुं, नयिंसु। अस्सोसुं, अस्सुं।

१५. हुतो रेसुं ६.४१—'हु' धातु से परे, 'उं' प्रत्यय का विकल्प से 'रेसुं' आदेश होता है। जैसे—हु+उं=अहेसुं, अहुवं।

१६. ईआदो दीघो ६.५६—परिसमाप्त्यर्थक भूत में, 'अस' धातु का 'आस' आदेश हो जाता है। जैसे—

आसि, आसुं
आसि, आसित्थ
आसिं, आसिम्हा

१७. सका णास्स ख ईआदो ६.५८—परिसमाप्त्यर्थक भूत में, 'सक' धातु से परे, उसके विकरण 'क्णा' का 'ख' आदेश होता है। जैसे—असक्खि, असक्खिंसु।

तेसु सुतो क्णोक्णानं रोट् ६.६०—'ई' आदि विभक्तियों के, तथा 'स्स' के आने से, 'सु' धातु से परे, उसके विकरण 'क्णो' तथा 'क्णा' का 'रोट्' आदेश हो जाता है। जैसे—अस्सोसि, असुणि। अस्सोस्सा, असुणिस्सा। सोस्सति, सुणिस्सति।

१८. लभा इंईनं थंथा वा ६.७३—'लभ' धातु से परे, 'इं' तथा 'ई' का विकल्प से क्रमशः 'थं' तथा 'थ' हो जाता है। जैसे—अहं अलत्थं, अलभिं। सो अलत्थ, अलभि।

परिसमाप्त्यर्थक भूतकाल में नवों गणों के धातु के

धातु	गण	पठम पुरिस		मज्झिम
		एक वचन	अनेक वचन	एक वचन
१. भू	भ्वादि	अभवि, भवि, अभवी, भवी	अभवुं, भवुं, अभविंसु, भविंसु, अभवंसु, भवंसु	अभवो, भवो, अभवि, भवि
हू	,,	अहोसि, अहु	अहेसुं	अहोसि
नी	,,	नयि	नयिंसु	नयि
या	,,	यायि	यायिंसु	यायि
पच	,,	अपचि	अपचुं	अपचो
२. रुध	रुधादि	अरुन्धि, रुन्धि	अरुन्धिसु, रुन्धिसु	अरुन्धि, रुन्धि,
३. दिव	दिवादि	अदिब्बि, दिब्बि	अदिब्बिसु, दिब्बिसु	अदिब्बि, दिब्बि
झा	,,	अझायि, झायि	अझायिंसु, झायिंसु	अझायो
४. तुद	तुदादि	अतुदि, तुदि	अतुदुं, तुदुं, अतुदिंसु, तुदिंसु, अतुदंसु, तुदंसु	अतुदो, तुदो, अतुदि, तुदि
५. जि	ज्यादि	अजिनि, जिनि	जिनिंसु, अजनिंसु	अजिनि, जिनि
६. की	क्यादि	अकिणि, किणि	अकिणिंसु, किणिंसु	अकिणि, किणि
७. सु	स्वादि	सुणि, अस्सोसि	सुणिंसु	सुणि
८. तन	तनादि	तनि	तनिंसु	तनि
९. चुर	चुरादि	अचोरयि, चोरयि	चोरयिंसु	चोरयि
कथ	,,	कथयि	कथयिंसु	कथयि
झप	,,	झापयि	झापयिंसु	झापयि

रूप कैसे होंगे, यह निम्न तालिका से प्रकट होगा :—

पुरिस	उत्तम पुरिस	
अनेक वचन	एक वचन	अनेक वचन
अभवित्थ, भवित्थ, अभवुत्थ, भवुत्थ	अभविं, भविं	अभविम्ह, भविम्ह, अभविम्हा, भविम्हा, अभवुम्हा, भवुम्हा
अहोसित्थ	अहोसिं	अहोसिम्हा
नयित्थ	नयिं	नयिम्हा
यायित्थ	यायिं	यायिम्हा
अपचित्थ	अपचिं	अपचिम्ह
अरुन्धित्थ, रुन्धित्थ	अरुन्धिं, रुन्धिं	अरुन्धिम्हा, रुन्धिम्हा
अदिब्बित्थ, दिब्बित्थ	अदिब्बिं, दिब्बिं	अदिब्बिम्हा, दिब्बिम्हा
अझायित्थ, झायित्थ	अझायिं, झायिं	अझायिम्हा, झायिम्हा
अतुदित्थ, तुदित्थ	अतुदिं, तुदिं	अतुदिम्हा
अजिनित्थ, जिनित्थ	अजिनिं, जिनिं	अजिनिम्हा
अकिणित्थ, किणित्थ	अकिणिं, किणिं	अकिणिम्ह, किणिम्ह
सुणित्थ	सुणिं	सुणिम्हा
तनित्थ	तनिं	तनिम्हा
चोरयित्थ	चोरयिं	चोरयिम्हा
कथयित्थ	कथयिं	कथयिम्हा
झापयित्थ	झापयिं	झापयिम्हा

१०. अभ्यास

१. हिन्दी में अनुवाद कीजिए—

महामाया'पि देवी दस मासे कुच्छिना बोधि-सत्तं परिहरि। ञाति-घरं गन्तु-कामा महाराजस्स आरोचेसि। राजा 'साधू' ति सम्पटिच्छि। कपिलवत्थुतो याव देवदह-नगरा मग्गं समं कारेसि। उभय-नगर-वासीनं' पि लुम्बिनी-वनं नाम मङ्गल-साल-वनं अहोसि। देवी साल-वनं पाविसि। सा साल-साखं गण्हि। तावदेव च'स्सा कम्मज-वाता चलिंसु। अथ'स्सा साणि परिक्खिपिंसु। महाजनो पटिक्कमि। महाब्राह्मणो सुवण्ण-जालेन बोधि-सत्तं सम्पटिच्छिंसु। देविया पुरतो ठपेत्वा, 'अत्तमना, देवि! होहि। महेसक्खो ते पुत्तो उप्पन्नो' ति आहंसु। बोधि-सत्तो धम्मागसनतो धम्म-कथिको विय निक्खमि। दस पि दिसा अनुदिसा विलोकेसि। उत्तरायं दिसायं सत्तपद-वीतिहारेन अगमासि। ततो सत्तम-पदे अट्ठासि। 'अग्गो' हमस्मि लोकस्सा'ति आदिकं आसभिं वाचं निच्छारेसि। सीहनादं नदि।

२. ऊपर काले अक्षरों में छपे क्रियापदों के रूप 'मज्झिम पुरिस' तथा 'उत्तम पुरिस' में लिखिए।

३. पालि में अनुवाद कीजिए—

बोधिसत्व प्रकट हुए। सात पग चले। ब्रह्मा लोग आए। देवता लोग आए। सब लोगों ने नमस्कार किया। सब प्रसन्न हुए। विपुल आलोक हुआ। बोधि-सत्व ने सिंह-नाद किया। देवों ने कहा। देवताओं ने उसको देखा।

कुमार अपने उद्यान-भूमि में गए। दुःखित मनुष्य को देखा। सारथि को बुलाया। सारथि रथ को उधर ही ले गया। बोधि-सत्व घर से निकला। काषाय वस्त्र पहन लिया। घर से बेघर हो प्रव्रजित हुआ। बहुत लोगों ने सुना।

बोधि-सत्व ने तपस्या की। अकेला होकर (ऊपकट्ठो) विहार किया, ध्यान किया। उसके चित्त में वितर्क उत्पन्न हुआ। धर्म्म-चक्षु उत्पन्न हुआ। बुद्ध ने धर्म्म-चक्र चलाया।

४. निम्नलिखित धातुओं के रूप भूतकाल में लिखिए—

खाद् (=खाना)। घट् (=प्रयत्न करना)। आ चिक्ख् (=कहना)।

जल् (=जलना)। दा (=देना)। पा (=पीना)। सु (=सुनना)। हा (=त्याग करना)। कर् (=करना)। सक् (=सकना)। ज्ञा (=जानना)। युज् (=मिलना=लग जाना), हु (=होना)। गम् (=जाना)। ध्या (=ध्यान करना)।

५. निम्नलिखित नामपद तथा धातुओं से वाक्य बनाइए—

नाम-पदानि—दारका, फलानि, अग्गि, पापानि, भिक्खू, मुनयो, पठनं, गमनं, भावना, झानानि।

धातु-सद्दा—खाद्। डह्। वि+नुद् (=हटाना)। झा (=ध्यान करना)। कर्। हू।

दूसरा काण्ड

छठा पाठ

नाम-प्रकरण

(चौथा भाग—शेष शब्द)

§ २६. 'न्त' तथा 'मान' प्रत्ययान्त शब्द

न्तो कत्तरि वत्तमाने ५.६४—वर्तमान काल में, 'करता हुआ' इस अर्थ में, धातु से परे 'न्त' प्रत्यय लगता है। जैसे—तिट्ठन्तो, गच्छन्तो=खड़ा होता हुआ, जाता हुआ। 'न्त' प्रत्ययान्त शब्द कर्त्ता का विशेषण होता है।

मानो ५.६५—वर्तमान काल में, 'न्त' के स्थान में 'मान' प्रत्यय भी आता है। जैसे—तिट्ठमानो, गच्छमानो=खड़ा होता हुआ, जाता हुआ। 'मान' प्रत्ययान्त शब्द भी कर्त्ता का विशेषण होता है।

ते स्सपुब्बानागते ५.६७—भविष्यत्काल में, 'न्त' और 'मान' प्रत्ययों से पूर्व, 'स्स' का आगम होता है। जैसे—हसिस्सन्तो, हसिस्समानो वा सो इध आगमिस्सति=हँसते हुए वह यहाँ आवेगा।

मानस्स मस्स ५.१६२—कहीं कहीं, धातु से परे, 'मान' प्रत्यय के 'म' का लोप होता है। जैसे—कराणो=करते हुए।

'मान' प्रत्ययान्त शब्द के रूप, पुल्लिङ्ग में 'बुद्ध' शब्द के समान, नपुंसक लिंग में 'फल' शब्द के समान, तथा स्त्रीलिङ्ग में 'लता' शब्द के समान होते हैं।

पुल्लिङ्ग में, 'न्त' प्रत्ययान्त शब्द के रूप निम्न प्रकार होते हैं—

गच्छन्त (=जाता हुआ)

पुंलिङ्ग

	एकवचन	अनेकवचन
पठमा	गच्छं[1], गच्छन्तो	गच्छन्तो, गच्छन्ता
दुतिया	गच्छन्तं	गच्छन्ते
ततिया	गच्छता, गच्छन्तेन	गच्छन्तेहि, गच्छन्तेभि
चतुत्थी	गच्छतो, गच्छन्तस्स	गच्छतं, गच्छन्तानं
पञ्चमी	गच्छता, गच्छन्तम्हा, गच्छन्तस्मा	गच्छन्तेहि, गच्छन्तेभि
छट्ठी	गच्छतो, गच्छन्तस्स	गच्छतं, गच्छन्तानं
सत्तमी	गच्छति, गच्छन्तस्मिं, गच्छन्तम्हि, गच्छन्ते	गच्छन्तेसु
आलपन	गच्छं, गच्छ, गच्छा	गच्छन्तो, गच्छन्ता

नपुंसक लिङ्ग

	एकवचन	अनेकवचन
पठमा	गच्छं, गच्छन्तं	गच्छन्ता, गच्छन्तानि, गच्छन्ति
दुतिया	गच्छन्तं	गच्छन्ते, गच्छन्तानि, गच्छन्ति
आलपन	गच्छं, गच्छन्त	गच्छन्ता, गच्छन्तानि, गच्छन्ति

शेष पुल्लिङ्ग के समान

§ ३०. 'न्त' तथा 'मान' प्रत्ययों के लगने से, धातु के साथ अपने गण का विकरण भी युक्त होता है। जैसे—

भ्वादि गण—अच्चन्त (=पूजा करता हुआ), अज्जन्त (=कमाता हुआ), अटन्त (=घूमता हुआ), अदन्त (=खाता हुआ), कम्पन्त (=काँपता हुआ),

---

१. न्तस्सं २.१५०—'सि' विभक्ति आने से, 'न्त' का विकल्प से 'अं' आदेश होता है। जैसे—गच्छन्त+सि=गच्छं। गच्छन्तो।

कीलन्त (=खेलता हुआ), गज्जन्त (=गरजता हुआ), चजन्त (=छोड़ता हुआ), चरन्त (=चलता हुआ), जीवन्त (=जीता हुआ), तिट्ठन्त (=खड़ा होता हुआ), भवं[२] (=आप), सन्त[३]।

रुधादि *गण*—रुन्धन्त (=रोकता हुआ), गण्हन्त (=पकड़ता हुआ), भुञ्जन्त (=खाता हुआ), सिञ्चन्त (=सींचता हुआ)।

दिवादि *गण*—कुज्झन्त (=क्रोध करता हुआ), युज्झन्त (=युद्ध करता हुआ), सुस्सन्त (=सूखता हुआ) इत्यादि।

§ ३१. महन्तारहन्तानं टा वा २.१५२—'सि' विभक्ति आने से, 'महन्त' तथा 'अरहन्त' शब्दों के 'न्त' का विकल्प से 'आ' आदेश हो जाता है। जैसे—महन्त+सि=महा, महं। अरहा (=अर्हत्), अरहं।

§ ३२. 'तु' प्रत्ययान्त शब्द

कत्तरि ल्तुणका ५.३३—'करने वाला' इस अर्थ में, धातु से परे 'तु' तथा 'णक' प्रत्यय होते हैं। जैसे—दातु=देने वाला। दायक=देने वाला। 'तु' तथा 'णक' प्रत्ययान्त शब्द कर्ता का विशेषण होता है। [देखिए—पृ० १९१]

'णक' प्रत्ययान्त शब्द के रूप, पुल्लिङ्ग में 'वुद्ध' शब्द के समान, नपुंसकलिंग में 'फल' शब्द के समान, और स्त्रीलिङ्ग में 'लता' शब्द के समान होंगे।

'तु' प्रत्ययान्त शब्द के रूप निम्न प्रकार होंगे—

---

२. भूतो २.१५१—'सि' विभक्ति आने से, 'भू' धातु से परे 'न्त' प्रत्यय का नित्य 'अं' आदेश होता है।

जैसे—भवं। ['भवन्त' नहीं होगा]

भवतो वा भोन्तो गयोनासे २.१४८—'ग', 'यो', 'ना' तथा 'स' विभक्तियों के आने से, 'भवन्त' शब्द का विकल्प से 'भोन्त' आदेश हो जाता है। जैसे—

भोन्त, भवं। भोन्तो, भवन्तो। भोता, भवता। भोतो, भवतो।

३. सतो सब्भे २.१४७—भकार से पूर्व, 'सन्त' शब्द का 'सब्भ' आदेश हो जाता है। जैसे—

सन्त+भि=सब्भि।

दातु (=दाता)

	एकवचन	अनेकवचन
पठमा	दाता[४]	दातारो[५]
दुतिया	दातारं	दातारे, दातारो
ततिया	दातारा	दातारेहि, दातारेभि, दातूहि, दातूभि
चतुत्थी	दातु,[६] दातुनो, दातुस्स	दातारानं, दातानं[७]

---

४. **ल्तुपितादीनमा सिम्हि २.५९**—'सि' विभक्ति आने से, 'ल्तु' प्रत्ययान्त तथा 'पिता' आदि शब्दों के अन्त्य स्वर का 'आ' हो जाता है। जैसे—दातु+सि=दाता। कत्ता। पिता।

'पिता' आदि शब्द ये हैं—पितु, मातु, भातु, धीतु, दुहितु, जामातु, नत्तु, होतु, पोतु।

५. **ल्तुपितादीनमसे २.१६४**—'स' को छोड़, दूसरी विभक्तियों के आने से, 'ल्तु' प्रत्ययान्त तथा 'पिता' आदि शब्दों के अन्त्य स्वर का 'आर' आदेश होता है। जैसे—दातु+यो=दातारो। पितरो। दातारं; पितरं। दातारा; पितरा। दातरि; पितरि।

आरङस्मा २.१७३—'आर' आदेश होने के बाद, 'यो' विभक्ति का 'ओ' आदेश होता है। जैसे—दातु+यो=दातारो। सखारो। पितरो।

टोटे वा २.१७४—'आर' आदेश होने के बाद, 'दुतिया' के 'यो' का 'ओ' तथा 'ए' आदेश होता है। जैसे—दातारो, दातारे। सखारो, सखारे।

टा नास्मानं २.१७५—'आर' आदेश होने के बाद, 'ना' तथा 'स्मा' का कहीं कहीं 'आ' आदेश होता है। जैसे—दातु+ना, स्मा=दातारा।

टि स्मिनो २.१७६—'आर' आदेश होने के बाद, 'स्मिं' विभक्ति का 'इ' आदेश होता है। जैसे—दातरि, पितरि।

रस्सारङ् २.१७८—'स्मिं' विभक्ति आने से, 'आर' का ह्रस्व हो जाता है। जैसे—दातरि, नत्तरि।

६. **सलोपो २.१६७**—'ल्तु' प्रत्ययान्त तथा 'पिता' आदि शब्दों से परे, विकल्प से 'स' विभक्ति का लोप होता है। जैसे—दातु+स=दातु। पितु।

	एकवचन	अनेकवचन
पञ्चमी	दातारा	दातारेहि, दातारेभि, दातूहि, दातूभि[6]
छट्ठी	दातु, दातुनो, दातुस्स	दातारानं, दातानं
सत्तमी	दातरि	दातारेसु, दातुसु[8]
आलपन	दात, दाता[9]	दातारो

इसी तरह, वत्तु (=वक्ता), भत्तु (=भर्ता), नेत्तु (=नेता), सोतु (=श्रोता), ञातु (=ज्ञाता), जेतु (=जेता), छेत्तु (=छेदने वाला), कत्तु (=कर्त्ता), बोद्धु (=जानने वाला) इत्यादि शब्दों के रूप भी होंगे।

§ ३३. पितु (=*पिता*)

	एकवचन	अनेकवचन
पठमा	पिता	पितरो[10]
दुतिया	पितरं	पितरे, पितरो

---

७. नम्हि वा २.१६५—'नं' विभक्ति आने से, 'ल्तु' प्रत्ययान्त तथा 'पिता' आदि शब्दों के अन्त्य स्वर का विकल्प से 'आर' होता है। जैसे—दातारानं, दातानं। पितरानं, पितुन्नं।

आ २.१६६—'नं' विभक्ति आने से, 'ल्तु' प्रत्ययान्त तथा 'पिता' आदि शब्दों के अन्त्य स्वर का विकल्प से 'आ' होता है। जैसे—दातानं, दातूनं। पितानं, पितुन्नं।

८. सु हि स्वारङ् २.१६८—'सु' तथा 'हि' विभक्तियों के आने से, 'ल्तु' प्रत्ययान्त तथा 'पिता' आदि शब्दों के अन्त्य स्वर का विकल्प से 'आर' आदेश होता है। जैसे—दातारेसु, दातुसु। पितरेसु, पितुसु। दातारेहि, दातूहि। पितरेहि, पितूहि।

९. गे अ च २.६०—आलपन एक वचन (=ग) में, 'ल्तु' प्रत्ययान्त तथा 'पिता' आदि शब्दों के अन्त्य स्वर का 'अ' तथा 'आ' आदेश होता है। जैसे—भो दात, दाता। भो पित, पिता।

	एकवचन	अनेकवचन
ततिया	पितरा	पितरेहि, पितरेभि, पितूहि, पितूभि
चतुत्थी	पितु, पितुनो, पितुस्स	पितरानं, पितानं, पितूनं
पञ्चमी	पितरा	पितरेहि, पितरेभि, पितूहि, पितूभि
छट्ठी	पितु, पितुनो, पितुस्स	पितरानं, पितानं, पितूनं
सत्तमी	पितरि	पितरेसु, पितूसु
आलपन	पित, पिता	पितरो

'भातु' (=भाई), जामातु (=दामाद) शब्द के रूप भी 'पितु' शब्द के समान होते हैं।

§ ३४. मातु (=*माता*)

	एकवचन	अनेकवचन
पठमा	माता	मातरो
दुतिया	मातरं	मातरे, मातरो
ततिया	मातुया	मातरेहि, मातरेभि
चतुत्थी	मातुया	मातरानं, मातानं, मातूनं
पञ्चमी	मातुया	मातरेहि, मातरेभि
छट्ठी	मातुया	मातरानं, मातानं, मातूनं
सत्तमी	मातरि	मातरेसु, मातुसु
आलपन	मात, माता	मातरो

धीतु (=बेटी), दुहितु (=पतोहू) आदि स्त्रीलिङ्ग शब्द के रूप 'मातु' शब्द के समान होते हैं।

---

१०. पितादीनमनत्वादीनं २.१७९—'नत्तु' आदि शब्दों को छोड़, 'पिता' आदि [देखिए—तीसरा परिशिष्ट] शब्दों के अन्त्य स्वर का, सभी विभक्तियों में, 'अर' आदेश होता है। जैसे—पितरो, पितरं।

§ ३५. सत्थु (=शास्ता, बुद्ध)

पुल्लिङ्ग

	एकवचन	अनेकवचन
पठमा	सत्था	सत्था, सत्थारो
दुतिया	सत्थारं, सत्थरं	सत्थारो, सत्थारे
ततिया	सत्थरा, सत्थारा, सत्थुना	सत्थारेहि, सत्थारेभि
चतुत्थी	सत्थु, सत्थुनो, सत्थुस्स	सत्थारानं, सत्थानं, सत्थूनं
पञ्चमी	सत्थरा, सत्थारा, सत्थुना	सत्थारेहि, सत्थारेभि
छट्ठी	सत्थु, सत्थुनो, सत्थुस्स	सत्थारानं, सत्थानं, सत्थूनं
सत्तमी	सत्थरि	सत्थारेसु, सत्थूसु
आलपन	सत्थ, सत्था	सत्था, सत्थारो

§ ३६. सख (=मित्र)

पुल्लिङ्ग

	एकवचन	अनेकवचन
पठमा	सखा	सखायो, सखानो, सखिनो, सखा[11]
दुतिया	सखानं, सखं, सखारं, सखायं	,,
ततिया	सखिना[12]	सखेहि, सखेभि, सखारेहि, सखारेभि
चतुत्थी	सखिनो, सखिस्स	सखीनं,[13] सखारानं, सखानं

---

११. आयो नो च सखा २.१५९—'सख' शब्द से परे, 'यो' विभक्ति का विकल्प से 'आयो', 'नो' तथा 'आनो' आदेश होता है। जैसे—सख+यो= सखायो। सखिनो। सखानो। सखा।

१२. नो ना सेस्वि २.१६१—'नो', 'ना', तथा 'स' विभक्तियों के आने से, 'सख' शब्द का 'सखि' आदेश होता है। जैसे—सखिनो। सखिना। सखिस्स।

१३. स्मा नं सु वा २.१६२—'स्मा' तथा 'नं' विभक्तियों के आने से, 'सख' शब्द का विकल्प से 'सखि' आदेश होता है। जैसे—सखिस्मा, सखस्मा। सखीनं, सखानं।

	एकवचन	अनेकवचन
पञ्चमी	सखिना, सखारा, सखारस्मा, सखिस्मा, सखस्मा	सखेहि, सखेभि, सखारेहि, सखारेभि
छट्ठी	सखिनो, सखिस्स	सखीनं, सखारानं, सखानं
सत्तमी	सखे[14]	सखारेसु,[15] सखेसु
आलपन	सख, सखा, सखि, सखे	सखानो, सखिनो, सखा

§ ३७. वत्तहा सनंसु नोनानं २.१९१—'वत्तहं' (=वृतघ्न) शब्द के रूप, छट्ठी एक वचन में 'वत्तहानो', तथा अनेक वचन में 'वत्तहानानं' होते हैं।

§ ३८. मन

(नपुंसक लिङ्ग)

	एकवचन	अनेकवचन
पठमा	मनो	मना, मनानि
दुतिया	मनं, मनो	मने, मनानि
ततिया	मनसा, मनेन	मनेहि, मनेभि
चतुत्थी	मनसो, मनस्स	मनानं
पञ्चमी	मनसा, मनस्मा, मनम्हा	मनेहि, मनेभि
छट्ठी	मनसो, मनस्स	मनानं
सत्तमी	मनसि, मने, मनम्हि, मनस्मि	मनेसु
आलपन	मन, मना	मनानि

---

१४. टे स्मिनो २.१६०—'सख' शब्द से परे, 'स्मि' विभक्ति का 'ए' आदेश होता है। जैसे—सख+स्मि=सखे।

१५. योस्वंहिसु चारङ् २.१६३—'यो', 'सु', 'अं', 'हिं', 'सु', 'स्मा' तथा 'नं' विभक्तियों के आने से, 'सख' शब्द का विकल्प से 'सखार' आदेश हो जाता है। जैसे—

सखारो, सखायो। सखारेसु, सखेसु। सखारं, सखं। सखारेहि, सखेहि। सखारा, सखारस्मा। सखारानं, सखानं।

मन, तम, तप, तेज, सिर, उर, वच, ओज, रज, यस, पय—इन शब्दों के रूप 'मन' शब्द के समान होंगे।

मनादीहि स्मिंसंनास्मानं सिसोओसासा २.१४६—'मन' आदि शब्दों से परे, 'स्मिं, स, अं, ना, तथा स्मा' विभक्तियों का, विकल्प से क्रमशः 'सि, सो, ओ, सा, सा' आदेश हो जाता है। जैसे—मनसि, मनस्मि। मनसो, मनस्स। मनो, मनं। मनसा, मनेन। मनसा, मनस्मा।

§ ३९. कम्म (=कर्म)

कम्मादितो २.८१—'कम्म' आदि शब्दों से परे, 'स्मिं' विभक्ति का विकल्प से 'नि' आदेश हो जाता है। जैसे—कम्मनि, कम्मे। चम्मनि, चम्मे।

नास्सेनो २.८२—'कम्म' आदि शब्दों से परे, 'ना' विभक्ति का विकल्प से 'एन' आदेश हो जाता है। जैसे—कम्मेन, कम्मना। चम्मेन, चम्मना।

§ ४०. पद (=पैर)

पदादीहि सि २.१०७—'पद' आदि शब्दों से परे, 'स्मिं' विभक्ति का विकल्प से 'सि' आदेश होता है। जैसे—पद+स्मिं=पदसि, पदस्मि।

नास्स सा २.१०८—'पद' आदि शब्दों से परे, 'ना' विभक्ति का विकल्प से 'सा' आदेश होता है। जैसे—पद+ना=पदसा, पदेन।

§ ४१. कोध (=क्रोध)

कोधादीहि २.१०९—'कोध' आदि शब्दों से परे, 'ना' विभक्ति का विकल्प से 'सा' आदेश होता है। जैसे—कोध+ना=कोधसा, कोधेन।

§ ४२. दिव (=स्वर्ग)

दिवादितो २.१७७—'दिव' आदि [देखिए—तीसरा परिशिष्ट] शब्दों से परे, 'स्मिं' विभक्ति का 'इ' आदेश होता है। जैसे—

दिव+स्मिं=दिवि। भुवि।

§ ४३. एकच्च (=कोई)

एकच्चादीहतो २.१३७—अकारान्त 'एकच्च' आदि शब्दों से परे, 'यो' विभक्ति का 'ए' आदेश हो जाता है। जैसे—एकच्च+यो=एकच्चे=कोई कोई।

न निस्स टा २.१३८—'एकच्च' आदि [देखिए—तीसरा परिशिष्ट] शब्दों से परे, 'नि' विभक्ति का 'आ' नहीं होता है। जैसे—एकच्चानि।

§ ४४. अम्मा (=माँ)

नाम्मादीहि २.६३—'अम्मा' आदि शब्दों से परे, 'ग' का 'ए' आदेश नहीं होता है। जैसे—भोति अम्मा। भोति अन्ना। भोति अम्बा।

रस्सो वा २.६४—'ग' विभक्ति आने से, 'अम्मा' आदि शब्दों के अन्त्य स्वर का विकल्प से ह्रस्व हो जाता है। जैसे—भोति अम्म, अम्मा।

§ ४५. सभा

तिं सभापरिसाय २.१०६—'सभा' तथा 'परिसा' शब्दों से परे, 'स्मि' विभक्ति का विकल्प से 'तिं' आदेश हो जाता है। जैसे—सभतिं, सभाय। परिसतिं, परिसाय।

§ ४६. अग्गि (=आग)

सिस्साग्गितो नि २.१४९—'अग्गि' शब्द से परे, 'सि' विभक्ति का विकल्प से 'नि' आदेश हो जाता है। जैसे—अग्गि+सि=अग्गिनि। अग्गि।

§ ४७. इसि (=ऋषि)

टे सिस्सिसिस्मा २.१३५—'इसि' शब्द से परे, 'सि' विभक्ति का विकल्प से 'ए' आदेश हो जाता है। जैसे—इसे, इसि।

दुतियस्स योस्स २.१३६—'इसि' शब्द से परे, 'दुतिया' के 'यो' का विकल्प से 'ए' आदेश होता है। जैसे—'समणे ब्राह्मणे वन्दे सम्पन्नचरणे इसे।

§ ४८. दण्डपाणि (अन्यार्थ समास)

इतोञ्ञत्थे पुमे २.१८४—अन्यार्थ समास (=बहुव्रीहि) हो, तो

इकारान्त पुल्लिङ्ग शब्द से परे, 'पठमा' के 'यो' का नो, तथा 'दुतिया' के 'यो' का 'ने' आदेश हो जाता है। जैसे—दण्डपाणिनो (पठमा), दण्डपाणिने (दुतिया)। विकल्प से—दण्डपाणयो।

§ ४९. अरियवुत्ति (अन्यार्थ समास)

ने स्मि नो क्व चि २.१८५—अन्यार्थ समास हो, तो इकारान्त नाम से परे, कहीं कहीं 'स्मि' विभक्ति का विकल्प से 'ने' आदेश हो जाता है। जैसे—अरियवुत्ति+स्मि=अरियवुत्तिने=आर्य वृत्ति वाले में। विकल्प से—अरियवुत्तिम्हि।

"कतञ्ञुम्हि च पोसम्हि सीलवन्ते अरियवुत्तिने"

§ ५०. नदी

न ज्जा यो स्वा म् २.१६९—'यो' विभक्तियों के आने से, 'नदी' शब्द से परे 'आ' का आगम होता है। जैसे—नदी+यो=नदी+आ+यो=(यवा सरे १.३०.) नद्या+यो=(तवग्गवरणानं ये चवग्गबयञा १.४८.) नज्या+यो=(वग्गलसेहि ते १.४९.) नज्जा+यो=नज्जायो। नदियो।

§ ५१. हेतु

यो म्हि वा क्व चि २.९७—'यो' विभक्ति आने से, कहीं कहीं विकल्प से पुल्लिङ्ग उकारान्त शब्द के 'उ' का 'अ' हो जाता है। जैसे—हेतु+यो=हेतयो। कुरयो।

§ ५२. अम्बु (=पानी)

अ म्ब्वा दी हि २.८०—'अम्बु' आदि शब्दों से परे, 'स्मि' विभक्ति का विकल्प से 'नि' आदेश होता है। जैसे—फलं पतति अम्बुनि=फल पानी में गिरता है। पदुमं यथा पंसुनि आतपे कतं=मानो कमल का फूल धूप में धूल पर फेंक दिया गया हो।

§ ५३. जन्तु

५. ज न्त्वा वि तो नो च २.८६—पुल्लिङ्ग 'जन्तु' शब्द से परे, 'यो' विभक्ति का विकल्प से 'नो' तथा 'वो' आदेश होता है। जैसे—जन्तुनो, जन्तवो, जन्तुयो।

११. अभ्यास

१. हिन्दी में अनुवाद कीजिए—

(क) भगवा एतदवोच :—जानतो अहं, भिक्खवे ! पस्सतो आसवानं खयं वदामि, नो अजानतो नो अपस्सतो। अयोनिसो मनसि-करोतो आसवा उप्पज्जन्ति। योनिसो मनसि-करोतो आसवा पहीयन्ति। भगवा हि जानं जानाति, पस्सं पस्सति। सत्था देव-मनुस्सानं बुद्धो भगवा ति। मातु पितु च उपट्ठानं करोन्तो दारका मङ्गलं लभन्ति। भिक्खु नज्जा तीरे विहरति।

* काले अक्षरों में छपे क्रिया-पदों से 'न्तु' तथा 'मान' प्रत्ययान्त पद बनाइए, और उनका वाक्य में प्रयोग करके दिखाइए।

(ख) पितरानं होतु वा मातरानं होतु वा भातरानं होतु वा, मातुन्नं धीतरेहि पितुन्नं पुत्तेहि मातरो पि पितरो पि भातरो पि पटिजग्गितब्बा। मातरानं धीतूनं भत्तारो। पितरानं भातूनं भातरो। धम्मस्स दातारो, पदातारो, तण्हाय छेत्तारो, मार-स्स जेतारो भगवन्तो अरहन्ता नमस्सितब्बा (प्रणाम करने के योग्य हैं)।

* ऊपर काले अक्षरों में छपे पदों के द्वितिया तथा सत्तमी विभक्ति में रूप लिखिए।

३. निम्न लिखित वाक्यों को याद कर लीजिए—

करोन्तो पि कुरुमानो पि करानो पि कुब्बन्तो पि कुशलं कम्मं एव कातब्बं। चरन्तेन वा चरता वा चरमानेन वा चरानेन वा भिक्खुना धम्मं एव चरितब्बं। पितरा वा, मातरा वा, भातरेहि वा, भगिनीहि वा सद्धिं विहारं (बौद्ध-मन्दिर) गच्छमानो अहं झायमाने च भावेन्ते च भिक्खू पस्सामि।

४. नीचे काले अक्षरों में छपे पदों के सरल रूप लिखिए—

(जैसे—नज्जा=नदिया। सखारेहि=सखेहि)

न जच्चा होति ब्राह्मणो। सखारानं नज्जं ओकासं ददन्तो पक्कामि। मातरा च पितरा च सद्धिं विहारं गच्छति। रञ्ञो रज्जं कारेन्ते मागधे अजात-सत्तुस्मिं, भगवा परिनिब्बायि।

५. पालि में अनुवाद कीजिए—

भगवान के धम्मं को सुनते हुए भिक्षु लोग चुपचाप (तुण्ही) बैठे रहे। नदी में स्नान करने वाले मनुष्यों को भय होता है। भगवान देखते हुए देखते हैं, जानते हुए जानते हैं। भगवान श्रावकों के चित्त को जानते हुए धम्मं-देसना करते हैं। फल खाने वाले लड़कों में यही मेरे साथ आने वाला लड़का पढ़ने वाला है। सूर्य को नमस्कार करते हुए मनुष्यों की आँखें बन्द हैं। भात (भोजन) पकाते हुए मेरा हाथ जल गया। लिखते हुए उसका चित्त विरक्त हो गया।]

दूसरा काण्ड

सातवाँ पाठ

अव्यय-प्रकरण

(दूसरा भाग—उपसर्ग)

§ ७. उपसर्ग वीस हैं। यथा—(१) प, (२) परा, (३) नि, (४) नी, (५) उ, (६) दु, (७) सं, (८) वि, (९) अव, (१०) अनु, (११) परि, (१२) अभि, (१३) अधि, (१४) पति, (१५) सु, (१६) आ, (१७) अति, (१८) अपि, (१९) अप, (२०) उप। धातु के पूर्व उपसर्ग आने से, उसका अर्थ प्रायः बदल जाता है। जैसे—

हरति=हरण करता है
विहरति=विहार करता है
पहरति=प्रहार करता है
संहरति=संहार करता है
आहरति=लाता है। इत्यादि

१. "प" उपसर्ग निम्न अर्थों में प्रयुक्त होता है:—

पत=गिरना	पपतति=सामने गिरता है
नी=लाना	पनेति=सामने लाता है
गह=पकड़ना	पगण्हाति=सामने पकड़ता है
थर=पसारना	पत्थरति=सामने पसारता है
धाव=दौड़ना	पधावति=दौड़ कर आगे निकल जाता है
वज=जाना	पब्बजति=घर से निकल जाता है
सर=गत्यर्थ	पसारेति=फैलाता है
कुप=कुपित होना	पकोपेति=अत्यन्त कुपित होता है

छिन्द=काटना	पच्छिन्दति=काट डालता है
भञ्ज=तोड़ना	पभञ्जति=तोड़-फोड़ देता है
चि=चुनना	पचिनति=ढेर करता है
कीर=बिखेरना	पकिण्णति=बिखेर देता है
नद=नाद करना	पनदति=शोर करता है
भा=चमकना	पभाति=खूब चमकता है
हा=छोड़ना	पजहति=बिलकुल छोड़ देता है
जल=जलना	पज्जलति=प्रज्वलित होता है
ञा=जानना	पजानाति=अच्छी तरह जानता है
ठा=खड़ा होना	पट्ठाय=उसके आगे
वत्त=होना	पवत्तति=आगे चलना
	पपुत्त=पुत्र का पुत्र इत्यादि

२. 'परा' उपसर्ग निम्न अर्थों में प्रयुक्त होता है—

जि=जीतना	पराजयति=हरा देता है
भू=होना	पराभवति=हानि को प्राप्त होता है
इ=जाना	पलेति=भागता है
कम=चलना	परक्कमति=पराक्रम करता है
मस=छूना	परामसति=परामर्श करता है।

इत्यादि

३ : ४. 'नि'—'नी' उपसर्ग निम्न अर्थों में प्रयुक्त होते हैं—

कम=जाना	निक्खमति=निकलता है
कर=करना	निक्करोति=नीचा दिखाता है
गम=जाना	निग्गच्छति } =बाहर निकलता है
पत=गिरना	निप्पतति } =बाहर निकलता है
सर=निकलना	निस्सरति } =बाहर निकलता है
वत्त=होना	निब्बत्तति=सिद्ध होता है
विस=प्रवेश करना	निविसति=बिलकुल पैठता है

चि=चुनना	निच्छिनोति=निश्चय करता है
सम=शान्त होना	निसामेति=गौर से सुनना
ठापि=रखना	निट्ठापेति=समाप्त करता है
पद=होना	निपज्जति=सोता है
वा=बहना	निब्बाति=बुझ जाता है
खिप=फेंकना	निक्खिपति=धरोहर रखता है

५. 'उ' उपसर्ग निम्न अर्थों में प्रयुक्त होता है—

गम=जाना	उग्गच्छति=ऊपर उठता है
भू=होना	उब्भवति=पैदा होता है।
सद=जाना, नष्ट करना	उस्सादेति=दूर करता है, उठाता है उस्सापेति=ऊपर उठाता है
सर=खिसकना	उस्सारेति=दूर करता है
लुप=विनाश करना	उल्लुम्पति=बचा लेता है
युज=जोड़ना	उय्युञ्जति=छोड़ कर निकल जाता है
मूल=प्रतिष्ठित होना	उम्मूलेति=जड़ से उखाड़ देता है
भुज=खाना	उब्भुजति=झुकता है, बल पूर्वक उठाता है,
ठा=खड़ा होना	उट्ठहति=उठता है
	इत्यादि

६. 'दु' उपसर्ग निम्न अर्थों में प्रयुक्त होता है—

कर=करना	दुक्कर=दुष्कर
गम=जाना	दुग्गत=दुर्गत
	दुग्गन्ध=दुर्गन्ध
	दुच्चरित्त=दुश्चरित्र इत्यादि

७. 'सं' उपसर्ग निम्न अर्थों में प्रयुक्त होता है—

युज=जोड़ना	संयुञ्जति=आपस में मिला देता है
वद=बोलना	संवदति=एक राय होता है

वर=स्वीकार करना	संवरति=ढकता है
वस=रहना	संवसति=साथ रहता है
सद=नष्ट होना, जाना	संसीदति=डूब जाता है
ञा=जानना	संजानाति=पहचानता है
पत=गिरना	सन्निपतति=जमा होता है
इ=जाना	समेति=मिलना, आपस में मेल खाना, सहमत होना
दा=देना	समादियति=ग्रहण करता है
कर=करना	सङ्खरियति=तैयार करवाता है

८. 'वि' उपसर्ग निम्न अर्थों में प्रयुक्त होता है—

कम्प=काँपना	विकम्पति=अत्यन्त काँपता है
दल=तोड़ना	विदालेति=नष्ट भ्रष्ट कर देता है
चर=चलना	विचरति=इधर उधर घूमता है
किर=बिखेरना	विप्पकिरति=चारों ओर बिखेर डालता है
भज=भाग करना	विभजति=अच्छी तरह व्याख्या करता है
सु=सुनना	विस्सुत=विख्यात
की=खरीदना	विक्किणाति=बेचता है
जट=उलझाना	विजटेति=सुलझाता है
कर=करना	विकरोति=विकृत करता है
सर=स्मरण करना	विसरति=भूल जाता है
पच=पकाना	विपचति=फल देता है
रञ्ज=राग करना	विरज्जति=विरक्त होता है
रम=क्रीड़ा करना	विरमति=रुकता है
तर=तैरना	वितरति=बाँटता है
नी=ले जाना	विनेति=शिक्षा देता है
लिख=लिखना	विलिखति=जोतता है
वत्त=होना	विवट्टति=पीछे घुमाता है
वण्ण=प्रशंसा करना	विवण्णति=निन्दा करता है

वर=ढकना	विवरति=उघारता है
वद=बोलना	विवदति=झगड़ा करता है
सस=साँस लेना	विसस्सति=विश्वास करता है
हर=हरण करना	विहरति=निवास करता है, ध्यानस्थ रहता है

९. 'अव' उपसर्ग निम्न अर्थों में प्रयुक्त होता है—

कम=जाना	अवक्कमति=निकट आता है
खिप=फेंकना	अवक्खिपति=नीचे फेंकता है
ञा=जानना	अवजानाति=निन्दा करता है, अस्वीकार करता है
मन=जानना	अवमञ्ञति=तिरस्कार करता है
सर=चलना	अवसरति=हट जाता है
सज्ज=लगना	अवसज्जति=छोड़ता है

१०. 'अनु' उपसर्ग निम्न अर्थों में प्रयुक्त होता है—

कम्प=काँपना	अनुकम्पति=अनुकम्पा करता है
कर=करना	अनुकरोति=नकल करता है
कम=चलना	अनुक्कमति=पीछा करता है
गम=जाना	अनुगच्छति=पीछे जाता है
गा=गाना	अनुगायति=साथ साथ गाता है
गण्ह=ग्रहण करना	अनुगण्हाति=दया करता है
चर=चलना	अनुचरति=पीछे पीछे चलता है
ञा=जानना	अनुजानाति=स्वीकृति देता है
ठा=खड़ा होना	अनुट्ठहति=सेवा-टहल करता है, अनुष्ठान करता है
तप=ताप देना	अनुतप्पति=दुखित होता है
दा=देना	अनुददाति=स्वीकार करता है
नी=ले जाना	अनुनेति=खुसामद करता है
बन्ध=बाँधना	अनुबन्धति=पीछा करता है
भू=होना	अनुभवति=अनुभव करता है

मुद=प्रसन्न होना	अनुमोदति=अनुमोदन करता है
वद=बोलना	अनुवदति=निन्दा करता है

११. 'परि' उपसर्ग निम्न अर्थों में प्रयुक्त होता है—

कत=काटना	परिकन्तति=चारो ओर से काट देता है
कर=करना	परिकरोति=चारो ओर से घेर लेता है, सेवा-टहल करता है
इक्ख=देखना	परिक्खति=परीक्षा लेता है
चर=चलना	परिचरति=देख-भाल करता है, पूजा करता है, सेवा करता है
नम=झुकना	परिनमति=परिणाम को प्राप्त होता है
पत=गिरना	परिपतति=विनष्ट होता है
भू=होना	परिभवति=अनादर करता है
भास=कहना	परिभासति=निन्दा करता है
सह=सहना	परिसहति=हरा देता है, दे मारता है
हर=हरण करना	परिहरति=बचाता है, खबरगीरी करता है

१२. 'अभि' उपसर्ग निम्न अर्थों में प्रयुक्त होता है—

ञा=जानना	अभिजानाति=पहचानता है
धाव=दौड़ना	अभिधावति=किसी ओर दौड़ता है
नन्द=प्रसन्न होना	अभिनन्दति=किसी बात पर प्रसन्न होता है
भू=होना	अभिभवति=हरा कर मालिक बन बैठता है
वद=बोलना	अभिवदति=अभिवादन करता है
सज्ज=लगना	अभिसज्जति=क्रुद्ध होता है
सन्द=बहना	अभिसन्दति=बिलकुल भर देता है
हर=लाना	अभिहरति=लाता है, या समर्पण करता है

१३. 'अधि' उपसर्ग निम्न अर्थों में प्रयुक्त होता है—

गम=जाना	अधिगच्छति=अधिकार कर लेता है, समझता है

ठा=खड़ा होना	अधिट्ठहति=अधिष्ठान करता है
पत=गिरना	अधिपतति=गायब हो जाता है
भू=होना	अधिभवति=हरा देता है
वस=रहना	अधिवासेति=प्रतीक्षा करता है, स्वीकार करता है
कर=करना	अधिकरोति=अधिकार करता है।

१४. 'पति' उपसर्ग निम्न अर्थों में प्रयुक्त होता है—

कर=करना	पटिकरोति=प्रतिकार करता है
कुध=गुस्सा होना	पटिकुज्झति=वदले में गुस्सा करता है
कम=जाना	पटिक्कमति=लौटता है
इक्ख=देखना	पटिक्खति=प्रतीक्षा करता है
खिप=फेंकना	पटिक्खिपति=अस्वीकार करता है
गम=जाना	पटिगच्छति=पीछे छोड़ कर निकल जाता है
ञा=जानना	पटिजानाति=स्वीकार करता है, प्रतिज्ञा करता है
धाव=दौड़ना	पटिधावति =भागता है
प+हर=मारना	पटिपहरति=वदले में मारता है
पुच्छ=पूछना	पटिपुच्छति=वदले में पूछता है
वह=ढोना	पटिवाहति=रोक रखता है
बुध=जानना	पटिबुज्झति=जागता है
मुच=छोड़ना	पटिमुञ्चति=बाँधता है
वद=बोलना	पटिवदति=प्रतिवाद करता है
वि+नी=शिक्षा देना	पटिविनेति=दूर कर देता है, दबा देता है
थर=पसारना	पटिसंथरति=सादर स्वागत करता है
सर=चलना	पटिसरति=पीछे भागता है
सिध=सिद्ध होना	पटिसेधति=रोकता है, मना कर देता है
सु=सुनना	पटिस्सुणाति=स्वीकार करता है

१५. 'सु' उपसर्ग निम्न अर्थों में प्रयुक्त होता है—

सुगन्ध]	सुकत=सुकृत
सुघर	सुकर
सुचरित	सुकुमार] इत्यादि

१६. 'आ' उपसर्ग निम्न अर्थों में प्रयुक्त होता है— /

कस=जोतना	आकस्सति=आकर्षण करता है
गम=जाना	आगच्छति=आता है
चि=चुनना	आचिनाति=ढेर लगाता है
दा=देना	आदाति (आददाति)=लेता है
दिस=बताना	आदिसति=आज्ञा देता है
नी=ले जाना	आनेति=ले आता है
पुच्छ=पूछना	आपुच्छति=जाँचता है
वत=होना	आवत्तति=घूम आता है।

१७. 'अति' उपसर्ग निम्न अर्थों में प्रयुक्त होता है—

कम=जाना	अतिक्कमति=पार कर जाता है
धाव=दौड़ना	अतिधावति=आगे दौड़ जाता है
पात=गिराना	अतिपातेति=नष्ट करता है
भुज=खाना	अतिभुञ्जति=खूब खा लेता है

१८. 'अपि' उपसर्ग निम्न अर्थों में प्रयुक्त होता है—

धा=धारण करना	अपिधान=ढकना
लप=बात करना	अपिलपेति=डींग हाँकता है

१९. 'अप' उपसर्ग निम्न अर्थों में प्रयुक्त होता है—

इ=जाना	अपेति=हट जाता है
कम=जाना	अपक्कमति=निकल जाता है
गम=जाना	अपगच्छति=चला जाता है

धा=धारण करना	अपनिधाति=उतार कर रख देता है
नी=ले जाना	अपनेति=बाहर कर देता है
हर=हरण करना	अपहरति=चोरी करता है
कर=करना	अपकरोति=अपकार करता है
चि=चुनना	अपचायति=सत्कार करता है
ठापि=रखना	अपट्ठपेति=अलग रख देता है
नम=झुकना	अपनमति=निकल जाता है
राध=सिद्ध होना	अपरज्झति=अपराध करता है
वद=बोलना	अपवदति=निन्दा करता है
वह=वहन करना	अपवहति=भगा देता है

२०. 'उप' उपसर्ग निम्न अर्थों में प्रयुक्त होता है—

कर=करना	उपकरोति=उपकार करता है
कम=जाना	उपक्कमति=चढ़ाई करता है, शुरू करता है
गम=जाना	उपगच्छति=पास में जाता है
चर=चलना	उपचरति=सेवा करता है, व्यवहार में लाता है
ठा=ठहरना	उपट्ठहति=सेवा-टहल करता है
धा=दौड़ना	उपधावति=पास में दौड़ जाता है
निसीद=बैठना	उपनिसीदति=पास में बैठता है
सेव=सेवा करना	उपनिसेवति=पीछा करता है
नी=ले जाना	उपनेति=समीप ले जाता है
रम=क्रीड़ा करना	उपरमति=हटता है
वस=रहना	उपवसति=पास में रहता है, उपवास करता है
विस=घुसना	उपविसति=पास आता है
इक्ख=देखना	उपेक्खति=उपेक्षा करता है
पद=जाना	उपज्जति=उत्पन्न होता है
पत=गिरना	उप्पतति=उड़ता है, ऊपर उठता है

१२. अभ्यास

१. हिन्दी में अनुवाद कीजिएः—

(क) घरम्हा निक्खमित्वा पब्बजि। कथं साराणीयं वीतिसारेत्वा एकमन्तं निसीदि। पठविं परामसित्वा उदानं उदानेसि। विहारे सन्निसिन्नानं सन्नि-पतितानं भिक्खूनं पुब्बे-निवास-पटिसंयुत्ता कथा उदपादि। उपसङ्कमित्वा पञ्ञत्ते आसने निसीदि। यथा च मे भगवा व्याकरोति, तं साधुकं उग्ग-हेत्वा तुवं आरोचेय्यामि। अट्ठ-विमोक्खे अनुलोमं पि पटिलोमं पि समापज्जति, आसवानं च खया चेतोविमुत्ति सयं अभिञ्ञा(-य) सच्छिकत्वा उपसम्पज्ज विहरतीति। अभिजानामि इतो पुब्बे एवं नामधेय्यं (नाम) सुत्वा ति।

(ख) पापानि कम्मानि विवज्जयाथ, धम्मानुयोगञ्च अधिट्ठहाथा ति। अच्छरानं गणेन परिवारितो अनेकचित्तं विमानं आरुय्ह देवता मोदति। अभिक्कन्तेन वण्णेन ओसधी तारका विय दिसा सब्बा ओभासेन्तो तिट्ठसि। पादे पक्खालयित्वान (=धोकर)एकमन्ते उपाविसिं, (उत्तरा थेरी) पुब्बजातिं अनुस्सरिं, दिब्बचक्खुं विसोधयिं। रत्तिया पच्छिमे यामे तमोक्खन्धं पदालयिं। तेविज्जा (हुत्वा) अथ उट्ठासि कता ते (तथागतस्स) अनुसासनी ति।

(ग) जयं वेरं पसवति, दुक्खं सेति पराजितो।
उपसन्तो सुखं सेति, हित्वा जय-पराजयं ॥.॥
तुम्हेहि किच्चं आतप्पं, अक्खातारो तथागता।
पटिपन्ना पमोक्खन्ति, झायिनो मारबन्धना ॥.॥

२. पालि में अनुवाद कीजिएः—

प्रातःकाल निद्रा से जागता हूँ। उठकर बैठता हूँ। हाथ मुँह धोता हूँ। पैर धो कर बैठ जाता है। तब याद करते हुए, श्वास लेता है (=अस्ससति)। स्मरण रखते (सतो'व) श्वास फेंकता है (पस्ससति)। लोक में लोभ को छोड़ कर ध्यान करता है।

श्रावस्ती में कुछ लड़के डण्डे से साँप मार रहे थे (प+हर)। भगवान् ने उनको उपदेश दिया। शील पालन करने वाला भिक्षु मृत्यु को हरा देता है (परा+जि)। हम लोग कल वहाँ गए थे, आज आ रहे हैं। आनन्द ने भगवान् की टहल की (उप+ठा)। कुमार सिद्धार्थ राज-महल से निकल गए (=नि+कम)।

तीसरा काण्ड

पहला पाठ

क्रिया-प्रकरण

(चौथा भाग—गण विचार)

१—भ्वादि गण

§ ४. नवों गणों में भ्वादि-गण सबसे बड़ा है। मोग्गल्लान धातु-पाठ के अनुसार, इस गण में ३०४ धातु हैं। इन धातुओं की सूची में, सर्व प्रथम 'भू' धातु है; अतः इस गण का नाम 'भ्वादि-गण' रक्खा गया है।

मोग्गल्लान धातु-पाठ के अन्त में आता है "अअन्तो उच्चारणत्थो सेसा धात्वत्था"; अर्थात्, जो अकारान्त धातु हैं, उनका अन्त्य 'अ' केवल उच्चारण-सौकर्य के लिए है; धातु को 'अ' से रहित समझना चाहिए। जैसे—पच=पच्।

§ ५. भ्वादि-गण के कुछ द्रष्टव्य धातु—

भवति

कत्तरि लो ५.१८—कर्तृवाच्य में, 'न्त', 'मान', तथा (परोक्ष भूत को छोड़) 'ति' आदि प्रत्ययों के आने से, धातु से परे 'ल' का आगम होता है। 'ल' का 'अ' रह जाता है। जैसे—

पच+ति=पच+अ+ति=पचति। जि+ति=जे+ति=जे+अ+ति=जयति। भू+ति=भो+ति=भो+अ+ति=भवति।

युवण्णान मेओ प्पच्चये ५.८२—प्रत्यय आने से, धातु के अन्त्य 'इ' का 'ए', तथा 'उ' का 'ओ' हो जाता है। जैसे—नि+तब्बं=नेतब्बं। सोतब्बं जि+ति=जे+ति। भू+ति=भो+ति।

एओनमयवा सरे ५.८९—स्वर परे हो, तो पूर्वस्थित 'ए' का 'अय', तथा 'ओ' का 'अव' हो जाता है। जैसे—जि+ति=जे+ति=जे+अ+ति=जयति। भू+ति=भो+ति=भो+अ+ति=भवति।

द्रष्टव्य—लहुस्सुपन्तस्स ५.८३—प्रत्यय आने से, प्रायः धातु के उपान्त 'इ' तथा 'उ' का यथाक्रम 'ए' तथा 'ओ' हो जाता है। जैसे—

सुच+ति=सोचति। जुत—जोतति। रुद—रोदति। मुद—मोदति। सुभ—सोभति। रुच—रोचति। तिज—तेजति=तेज करना। कित—केतति।

घम्मति। वज्जति। दज्जति

गम वद दानं घम्म वज्ज दज्जा ५.१७६—'न्त', 'मान' तथा 'ति' आदि (परोक्ष भूत को छोड़) प्रत्ययों के आने से, विकल्प से 'गम' का 'घम्म', 'वद' का 'वज्ज', तथा 'दा' का 'दज्ज' आदेश होता है। जैसे—घम्मति, घम्मन्तो, गच्छन्तो। वज्जति, वज्जन्तो, वदन्तो। दज्जति, दज्जन्तो, ददन्तो।

गच्छति। यच्छति। इच्छति। अच्छति। दिच्छति

गमयमिसासदिसानं वा च्छङ् ५.१७३—'न्त', 'मान', तथा (परोक्ष भूत को छोड़) 'ति' आदि प्रत्ययों के आने से, 'गम', 'यम', 'इस', 'अस', तथा 'दिस' धातुओं का क्रमशः 'गच्छ', 'यच्छ', 'इच्छ', 'अच्छ', तथा 'दिच्छ' आदेश हो जाता है। जैसे—गच्छन्तो, गच्छमानो, गच्छति इत्यादि।

गच्छरे। गमिस्सरे

गुरुपुब्बा रस्सा रे न्तेन्तीनं ६.७४—गुरुपूर्व ह्रस्व धातु से परे, 'न्ते' तथा 'न्ति' विभक्तियों का विकल्प से 'रे' आदेश हो जाता है। जैसे—गच्छरे, गच्छन्ति। गच्छरे, गच्छन्ते। गमिस्सरे।

सन्ति, सन्तु, सिया, सन्तो, समानो

न्तमानान्तियियुंस्वादिलोपो ५.१३०—'न्त', 'मान', 'अन्ति', 'अन्तु', 'इय', तथा 'इयुं' प्रत्ययों के आने से, 'अस' धातु का केवल 'स' रह जाता है। जैसे—अस+न्त=स+न्त=सन्तो। समानो। सन्ति। सन्तु। सिया। सियुं।

तिट्ठति । पिवति

ठा पा नं तिट्ठ पि वा ५.१७५—'न्त', 'मान', तथा (परोक्ष भूत को छोड़) 'ति' आदि प्रत्ययों के आने से, 'ठा' धातु का 'तिट्ठ', और 'पा' धातु का 'पिव' आदेश हो जाता है। जैसे—तिट्ठन्तो, तिट्ठमानो, तिट्ठति। पिवन्तो, पिवमानो, पिवति।

डहति

द ह स्स द स्स डो ५.१२६—'दह' धातु के 'द' का विकल्प से 'ड' आदेश हो जाता है। जैसे—

दहति; डहति। दाहो; डाहो।

अदेन्ति

ञि ल स्से ५.१६३—'ञि' तथा 'ल' का, कहीं कहीं 'ए' आदेश हो जाता है। जैसे—अद+ल+अन्ति=अदेन्ति । गह+ञि+त्वा=गहेत्वा (ञि व्यञ्जनस्स ५.७०)

जीयति । मीयति

ज र म राण मी य ङ् ५.१७४—'न्त', 'मान' तथा (परोक्ष भूत को छोड़) 'ति' आदि प्रत्ययों के आने से, 'जर' तथा 'मर' धातुओं का विकल्प से क्रमशः 'जीय' तथा 'मीय' आदेश होता है। जैसे—

जीयन्तो, जीरन्तो। जीयमानो, जीरमानो। जीयति, जीरति। मीयन्तो, मरन्तो। मीयमानो, मरमानो। मीयति, मरति।

जीरति । निसीदति

ज र स दा न मी म् वा ५.१२३—'जर' तथा 'सद' धातुओं के अन्त्य स्वर से परे, कहीं कहीं 'ई' का आगम होता है। जैसे—

जीरणं, जीरति, जीरापेति। निसीदितब्बं, निसीदनं, निसीदितुं, निसीदति।

कहीं कहीं 'ई' का आगम नहीं भी होता है। जैसे—जरा; निसज्ज।

उट्ठहति

पा दि तो ठा स्स वा ठ हो क्व चि ५.१३१—उपसर्ग-पूर्वक 'ठा' धातु का,

कहीं-कहीं विकल्प से 'ठहो' आदेश हो जाता है। जैसे—उट्ठहति, सण्ठहति। उत्तिट्ठति, सन्तिट्ठति।

समादियति

दा स्सि य इ ५.१३२—उपसर्ग-पूर्वक 'दा' धातु का 'दिय' आदेश हो जाता है। जैसे—सं+आ+दा+ति=समादियति। अनादियित्वा।

निक्खमति

नि तो क म स्स ५.१३५—'नि' उपसर्ग-पूर्वक 'कम' धातु का, कहीं कहीं 'क्खम' आदेश हो जाता है। जैसे—निक्खमति।

पस्सति

दि स स्स प स्स, द स्स, द स, द, द क्खा ५.१२४—'दिस' धातु के 'पस्स', 'दस्स', 'दस्', 'द', तथा 'दक्ख' आदेश होते हैं। जैसे—

पस्सति। (कर्म) दस्सेति। (भूत) अद्दस, अद्दं, अद्दा। दक्खिस्सति (भविष्यत्काल)।

२—रुधादि गण

§ ६. मं च रुधादीनं ५.१९—'न्त', 'मान', तथा 'ति' आदि (परोक्ष भूत को छोड़) प्रत्ययों के आने से, रुधादि धातु के अन्तिम स्वर से परे 'अं' का आगम होता है। ज़ैसे—

कत् (कन्तति)=काटना
गह् (गण्हति) *=पकड़ना
छिद् (छिन्दति)=छेदना
बध् (बन्धति)=बाँधना
भिद् (भिन्दति)=भेदन करना
भुज् (भुञ्जति)=खाना
मुच् (मुञ्चति)=छोड़ना
युज् (युञ्जति)=जोड़ना

रुध् (रुन्धति) = रोकना
लिप् (लिम्पति) = लेपना
सिच् (सिञ्चति) = सींचना
हिंस् (हिंसति) = हिंसा करना

§ ७. रुधादि गण के कुछ द्रष्टव्य धातु—

घेप्पति

गहस्स घेप्पो ५.१७८—'न्त', 'मान', तथा (परोक्ष भूत को छोड़) 'ति' आदि प्रत्ययों के आने से, 'गह' धातु का 'घेप्प' आदेश हो जाता है। जैसे—घेप्पन्तो। घेप्पमानो। घेप्पति।

*गण्हाति

णो निग्गहीतस्स ५.१७९—'गह' धातु के अन्तिम स्वर से परे, जो 'ं' का आगम होता है, उसका 'ण' आदेश हो जाता है।

जैसे—गह + ति = गण्हाति। गण्हितब्बं। गण्हितुं। गण्हन्तो।

३—दिवादि गण

§ ८. दिवादीहि यक् ५.२१—'न्त', 'मान', तथा (परोक्ष भूत को छोड़) 'ति' आदि प्रत्ययों के आने से, 'दिव' आदि धातु से परे, 'य' का आगम होता है। जैसे—

कुध (कुज्झति*) = गुस्सा होना
कुप (कुप्पति) = कोप करना
गा (गायति) = गाना
घा (घायति) = सूँघना
छिद (छिज्जति*) = टूटना
झा (झायति) = ध्यान करना
दिव (दिब्बति) = खेलना
नहा (नहायति) = नहाना
बुध (बुज्झति*) = समझना
युध (युज्झति*) = लड़ाई करना

रुच (रुच्चति)=अच्छा लगना
लुभ (लुब्भति*)=लोभ करना
सम (सम्मति)=शान्त होना
सिव (सिब्बति)=सीना
सुध (सुज्झति*)=शुद्ध होना
सुस (सुस्सति)=सूखना
हन (हञ्ञति)*=मारना

§ ९. क्वचि विकरणानं ५.१६१—कहीं कहीं विकरण का लोप होता है। जैसे—

हन+ति=हन्ति। विकरण का लोप नहीं होने से—हन+य+ति=हञ्ञति।

उदपद+ई=उदपादि। विकरण का लोप नहीं होने से—उदपद+य+ई=उप्पज्जि।

४–तुदादि गण

§ १०. तुदादीहि को ५.२२—'न्त', 'मान', तथा (परोक्ष भूत को छोड़) 'ति' आदि प्रत्ययों के आने से, 'तुद' आदि धातु से परे 'अ' का आगम होता है। प्रत्यय आने से, इस गण के धातु के उपान्त 'इ' या 'उ' का 'ए' या 'ओ' नहीं होता है। जैसे—

वि+किर (विकिरति)=छीटना
खिप (खिपति)=फेंकना
नि+गिर (निगिरति)=निगलना
गिल (गिलति)=निगलना
तुद (तुदति)=पीड़ा करना

---

* कुध्+ति=कुध्+य+ति=कुध्यति=कुझ्यति (तवग्गवरणानं ये चवग्गबयञा १.४८—देखिए पृ० २२३)=कुझ्झति (वग्ग लसेहि ते १.४९—देखिए पृ० २२४)=कुज्झति (चतुत्थ दुतियेस्वेसं ततियपठमा १.३६—देखिए पृ० २२४)। इसी तरह—युज्झति। लुब्भति। विज्जति। सुज्झति। हञ्ञति। इत्यादि।

नुद (नुदति) = प्रेरित करना
फुर (फुरति) = फड़कना
फुस (फुसति) = छूना
मुस (मुसति) = चुराना
लिख (लिखति) = लिखना
विद (विदति) = जानना
विस (विसति) = घुसना
सुप (सुपति) = सोना

५—ज्यादि गण

§ ११. ज्या दी हि क्ना ५.२३—'त्त', 'मान', तथा (परोक्ष भूत को छोड़) 'ति' आदि प्रत्ययों के आने से, 'ज्यादि गण' के धातु से परे 'ना' का आगम होता है। प्रत्ययों के आने से, इस गण के धातु के उपान्त 'इ' या 'उ' का 'ए' या 'ओ' नहीं होता है। जैसे—

अस (अस्नाति) = खाना
चि (चिनाति) = चुनना
ञा (जानाति) = जानना
थु (थुनाति) = प्रशंसा करना
धू (धुनाति) = धुनना
पू (पुनाति) = पवित्र करना
लू (लुनाति) = खोटना
सि (सिनाति) = सीना

§ १२. ज्यादि गण के कुछ द्रष्टव्य धातु—

जानाति, नायति

ञा स्स ने जा ५.१२०—'न' परे हो, तो 'ञा' धातु का 'जा' आदेश हो जाता है। जैसे—

जानाति। जानितुं। जानन्तो।

यदि 'न' परे नहीं हो, तो 'ञा' का 'जा' नहीं होता है। जैसे—ञा + क्त = ञातो।

आ स्स स ना स्स ना यो ति म्हि ६.६१—'ति' प्रत्यय आने से, 'ञा' धातु का विकल्प से अपने विकरण 'ना' के साथ 'नाय' आदेश होता है। जैसे—नायति; जानाति।

धुनाति, किणाति

णा ना सु रस्सो ६.३२—'णा' तथा 'ना' विकरण के आने से, धातु के अन्त्य स्वर का ह्रस्व हो जाता है। जैसे—धू+ना+ति=धुनाति। की+णा+ति=किणाति।

६—क्यादि गण

§ १३. क्यादी हि क्णा ५.२४—'न्त', 'मान', तथा (परोक्ष भूत को छोड़) 'ति' आदि प्रत्ययों के आने से, 'क्यादि गण' के धातु से परे, 'णा' का आगम होता है। प्रत्यय आने से, इस गण के धातु के उपान्त 'इ' या 'उ' का 'ए' या 'ओ' नहीं होता है। जैसे—

की (किणाति)=खरीदना
वि+की (विक्किणाति)=बेचना
गि (गिणाति)=शब्द करना
वु (वुणाति)=ढकना
सक (सक्णाति)=सकना
सू (सुणाति)=सुनना

७—स्वादि गण

§ १४. स्वादी हि क्णो ५.२५—'न्त', 'मान' तथा (परोक्ष भूत को छोड़) 'ति' आदि प्रत्ययों के आने से, 'स्वादि गण' के धातु से परे, 'णो' का आगम होता है। प्रत्यय आने से ०। जैसे—

सु (सुणोति)=सुनना
खी (खिणोति)=क्षय होना
वु (वुणोति)=ढकना

गि (गिणोति)=शब्द करना
सक (सक्कोति)*=सकना
प+आप (पापुणोति)*=प्राप्त करना

*सक्कुणोति

सकापानं कुक्कु णे ५.१२१—'ण' परे हो, तो 'सक' तथा 'आप' धातुओं के उत्तर, क्रमशः 'कु' तथा 'उ' का आगम होता है। जैसे—सक+णो+ति= सक्कुणोति। पाप+णो+ति=पापुणोति।

८—तनादि गण

§ १५. तना वि त्वो ५.२६—'न्त', 'मान', तथा (परोक्ष भूत को छोड़) 'ति' आदि प्रत्ययों के आने से, 'तनादि गण' के धातु से परे, 'ओ' का आगम होता है। जैसे—

तन (तनोति)=फैलाना
सक (सक्कोति)=सकना
वन (वनोति)=माँगना
मन (मनोति)=जानना
आप (अप्पोति)=पाना
कर (करोति)=करना

§ १६. तनादि गण के कुछ द्रष्टव्य धातु—

तनुति, तनुते

ओ विकरणस्सु परच्छक्के ६.७६—'अत्तनो पद' में, 'ओ' विकरण का 'उ' आदेश होता है। जैसे—

तन+ते=तन+ओ+ते=तन+उ+ते=तनुते।

पुब्बच्छक्के वा क्वचि ६.७७—'परस्सपद' में भी, 'ओ' विकरण का कहीं कहीं विकल्प से 'उ' आदेश होता है। जैसे—

तनुति, तनोति।

कुब्बति, कयिरति, करोति

करस्स सोस्स कुब्बकुरुकयिरा ५.१७७—'न्त', 'मान', तथा (परोक्ष

भूत को छोड़) 'ति' आदि प्रत्ययों के आने से, अपने विकरण 'ओ' के साथ, 'कर' धातु के 'कुब्ब', 'कुरु' तथा 'कयिर' आदेश हो जाते हैं। जैसे—

कुब्बन्तो, कयिरन्तो, करोन्तो। कुब्बमानो, कुरुमानो, कयिरमानो, कराणो। कुब्बति, कयिरति करोति। कुब्बते, कुरुते, कयिरते।

कुम्मि, कुम्म

करस्स सोस्स कुं ६.२३—'मि' तथा 'म' प्रत्ययों के आने से, 'कर' धातु का, अपने विकरण 'ओ' के साथ, विकल्प से 'कुं' आदेश होता है। जैसे—

कर+मि=कुम्मि। कर+म=कुम्म।

सङ्खरियति

करोतिस्स खो ५.१३३—उपसर्ग-पूर्वक 'कर' धातु का, कहीं कहीं 'खर' आदेश हो जाता है। जैसे—सङ्खारो। सङ्खरियति।

पुरेक्खति

पुरस्मा ५.१३४—'पुर' शब्द पूर्वक 'कर' धातु का, 'क्खर' आदेश हो जाता है। जैसे—पुरक्खत्वा। पुरेक्खारो। पुरेक्खति।

६—चुरादि गण

§ १७. चुरादितो णि ५.१५—'न्त', 'मान', तथा (परोक्ष भूत को छोड़) 'ति' आदि प्रत्ययों के आने से, 'चुर' आदि धातु से परे, 'णि' का आगम होता है। 'णि' का केवल 'इ' रह जाता है; तथा, धातु के उपान्त लघु स्वर की प्रायः वृद्धि होती है। जैसे—

अज्ज (अज्जेति, अज्जयति) = कमाना
ईर (ईरेति, ईरयति) = हिलना
कण्ण (कण्णेति, कण्णयति) = सुनना
कथ (कथेति, कथयति) = कहना
कित्त (कित्तेति, कित्तयति) = कीर्तन करना
गण (गणेति, गणयति) = गिनना

गन्थ (गन्थेति, गन्थयति)=गूथना
चिन्त (चिन्तेति, चिन्तयति)=विचारना
चुण्ण (चुण्णेति, चुण्णयति)=चूर चूर करना
*चुर (चोरेति, चोरयति)=चुराना
छड्ड (छड्डेति, छड्डयति)=फेंकना
झप (झापेति, झापयति)=जलाना
पाल (पालेति, पालयति)=भागना
पिण्ड (पिण्डेति, पिण्डयति)=पिण्ड बनाना
पुस (पोसेति, पोसयति)=पोसना
पूज (पूजेति, पूजयति)=पूजा करना
मन्त (मन्तेति, मन्तयति)=सलाह करना
तक्क (तक्केति, तक्कयति)=तर्क करना
तीर (तीरेति, तीरयति)=पूरा करना
दिस (देसेति, देसयति)=उपदेश करना
वन्द (वन्देति, वन्दयति)=वन्दना करना
वण्ण (वण्णेति वण्णयति)=तारीफ करना

---

*कत्तरि लो ५.१८—इस सूत्र से, 'अ' का आगम हुआ। जैसे—चोरि+अ+ति।

युवण्णानमेओ प्पच्चये ५.८२—इस सूत्र से, चोरे+अ+ति।

एओनमयवा सरे ५.८९—इस सूत्रसे—चोरयति।

परो क्वचि १.२७—इस सूत्र से—चोरेति। इसी तरह, दूसरे धातुओं का भी।

१३. अभ्यास

१. हिन्दी में अनुवाद कीजिए—

भगवन्तं ब्रह्मा याचि। भगवा धम्मचक्कं पवत्तयि। बहूनं देव-मनुस्सानं अभिसमयो अहु। भगवा हि सब्बं ददाति। चतु-सच्चं पकासेति। पाणिनं अनुकम्पति। भिक्खू भगवन्तं परिवारेन्ति। पापकारी सोचति। पुञ्ञकारी मोदति। भिक्खं गण्हाति।

दारका भगवन्तं अहसासुं। भिक्खू नगरा निक्खमिंसु। दारका उय्याने कीळिंसु। सब्बे धम्मा अनत्ताति जानिंसु। वाळ्हगिलानो अहोसि। सिक्खा-पदं समादियिंसु। अक्कोधेन कोधं अजिनि, असाधुं साधुना अजेसि। कोधनो मनुस्सो दुब्बलो अहोसि। सब्बे पाणा जीरिस्सन्ति, मरिस्सन्ति, पुन पि जायिस्सन्ति। अहं मार-बन्धना मोक्खामि। बुद्धं सरणं गमिस्सामि। धम्मं सुणिस्सामि। पधानं पदहिस्सामि। कम्मट्ठानं गण्हिस्सामि। भव-सोतं छिन्दिस्सामि।

२. ऊपर काले अक्षरों में छपे क्रियापदों को वर्तमान काल प्रथम पुरुष एक वचन में लिखिए।

३. निम्न-लिखित क्रियापदों के रूप परिसमाप्त्यर्थक भूत काल में लिखिए—

भवामि। लिखिस्सामि। गमिस्सामि। तिट्ठामि। ददासि। हेस्सति। सन्ति। रुन्धन्ति। छिन्दथ। दिब्बाम। सुणाथ। जिनिस्ससि। जानाम। काहसि। पोसेथ।

४. पालि में अनुवाद कीजिए—

भगवान् एक सप्ताह बैठे। सारिपुत्त ने भगवान् से पूछा। राजा ने भगवान् को अभिवादन किया, नमस्कार किया दान दिया। लड़कियाँ गा रही थीं। भगवान् को ब्रह्मा ने याचना की। भगवान् ने स्वीकार किया।

५. निम्न-लिखित क्रिया-पदों का अध्ययन कीजिए—

बुद्धं सरणं गमिस्सन्ति वा गच्छिस्सन्ति वा। धम्मं जानिस्ससि, वा अस्ससि वा। वेदं (हर्ष) सोमनस्सं च लभिस्साम वा लच्छाम वा। निब्बाणस्स पतिया मग्गो हेहिति वा हेस्सति वा होहिस्सति वा। दारका भिक्खुं दक्खिन्ति वा दक्खन्ति

वा पस्सिसन्ति वा। अहं सुणोमि वा सुणामि वा। धम्म-चारी सुखं पापुणाति वा पापुणोति वा पप्पोति वा। भिक्खू समण-किच्चं करोन्ति वा कुब्बन्ति वा कयीरन्ति वा करिस्सन्ति वा; काहन्ति वा काहिन्ति वा। यं धम्मं सुणोमि तं धारयामि। यो झानं भावेति सो सुखं पप्पोति।

६. पालि में अनुवाद कीजिए—

होता है। खाता है। कहता है। हवा बहती है। भूमि पर बैठा। धम्मं सुनता हूं। ध्यान करता हूँ। वितर्क को रोकता हूं। भावना कर सकता हूँ। पुस्तक ख़रीदता हूं। मनुष्य बुड्ढा होता है। मैं काम करता हूं।

तीसरा काण्ड

दूसरा पाठ

क्रिया-प्रकरण

(पाँचवाँ भाग—विधिलिङ्ग : अनुज्ञा)

विधि (हेतुफल[1])

परस्स पद

	एकवचन	अनेकवचन
पठमपुरिस	पचे,[2] पचेय्य	पचेय्युं, पचुं[3]
मज्झिमपुरिस	पचे,[2] पचेय्यासि	पचेय्याथ
उत्तमपुरिस	पचे,[2] पचेय्यामि	पचेमु,[4] पचेय्याम, पचेय्यामु[5]

---

१. हेतुफलेस्वेय्य, एय्युं, एय्यासि एय्याथ, एय्यामि, एय्याम; एथ एरं, एथो एय्यव्हो, एय्यं एय्याम्हे ६.८—हेतु तथा फल के अर्थ में, धातु से परे, ये प्रत्यय होते हैं। जैसे—

स चे संखारा निच्चा भवेय्युं, न निरुज्झेय्युं—यदि संस्कार नित्य हों, तो निरुद्ध न हों। (यहाँ नित्य होना हेतु है, और न निरुद्ध होना फल।)

पञ्हपत्थनाविधिसु ६.९—प्रश्न, प्रार्थना, तथा विधि के अर्थ में, ये प्रत्यय होते हैं। जैसे—

प्रश्न—किमायस्मा विनयम्परियापुणेय्य, उदाहु धम्मं=आयुष्मान् विनय का अध्ययन करेंगे, या धर्म का? गच्छेय्यं वाहं उपोसथं, न वा गच्छेय्यं=मैं उपोसथ को जाऊँ या न जाऊँ?

प्रार्थना—लभेय्याहम्भन्ते! भगवतो सन्तिके पब्बज्जं, लभेय्यं उपसम्पदं=

अत्तनो पद

	एकवचन	अनेकवचन
पठमपुरिस	पचेथ	पचेरं
मज्झिमपुरिस	पचेथो	पचेय्यव्हो
उत्तमपुरिस	पचेय्यं	पचेय्याम्हे

§ १८. 'विधि' में कुछ विशेष धातु के रूप—

अस—अस्स, सिया[1]। ञा—जानिया, जानेय्य, जञ्ञा[2]। कर—कयिरा[3]।

भन्ते ! मैं भगवान के पास प्रव्रज्या तथा उपसम्पदा ग्रहण करूँ। पस्सेय्यं तं वस्ससतं अरोगं=उसे मैं सौ वर्ष तक नीरोग देखूँ।

विधि—भवं पुञ्ञं करेय्य=आप पुण्य करें। इह भवं भुञ्जेय्य—आप यहाँ खायें। माणवकं भवं अज्झापेय्य—लड़के को आप पढ़ावें।

अनुज्ञा—एवं करेय्यासि=ऐसा करो। गामं त्वं भणे गच्छेय्यासि=हे, तुम गाँव जाओ।

सत्यरहे स्वेय्यादि ६.११—समर्थ होने के अर्थ में भी, धातु से परे ये प्रत्यय होते हैं। जैसे—भवं खलु रज्जं करेय्य=आप राज्य भी कर सकते हैं।

२. एय्येय्यासेय्यन्नं टे ६.७५—'एय्य', 'एय्यासि', तथा 'एय्यं' का विकल्प से 'ए' आदेश होता है। जैसे—पचे, पचेय्य। पचे, पचेय्यासि। पचे, पचेय्यं।

३. एय्युं स्सुं ६.४७—'एय्युं' प्रत्यय का विकल्प से 'उं' आदेश होता है। जैसे—पच+एय्युं=पच+उं=पचुं ; पचेय्युं।

४. एय्यामस्सेमु च ६.७८—'एय्याम' का विकल्प से 'एमु' आदेश हो जाता है। जैसे—पचेमु, पचेय्याम, पचेय्यामु।

५. अत्थि तेय्यादिच्छन्नं स सु स स थ सं साम ६.५०—आ दि द्वि न्न मि या इयुं ६.५१—'अस' धातु से परे, इन प्रत्ययों के आने से, उसके रूप निम्न प्रकार होते हैं—

अनुज्ञा

परस्स पद

	एकवचन	अनेकवचन
पठमपुरिस	पचतु	पचन्तु
मज्झिमपुरिस	पच, पचाहि	पचथ
उत्तमपुरिस	पचामि	पचाम

	एकवचन	अनेकवचन
पठमपुरिस	अस्स, सिया	अस्सु, सियुं
मज्झिमपुरिस	अस्स	अस्सथ
उत्तमपुरिस	अस्सं	अस्साम

६. एय्यास्सियाञा वा ६.६३—'ञा' धातु से परे, 'एय्य' का विकल्प से 'इया' तथा 'ञा' आदेश हो जाता है। जैसे—ञा+एय्य=जानिया, जञ्ञा। विकल्प से—जानेय्य।

ञाम्हि जं ६.६२—'एय्य' का 'ञा' आदेश होने पर, 'ञा' धातु का 'जं' आदेश हो जाता है। जैसे—ञा+एय्य=ञा+ञा=जं+ञा=जञ्ञा।

७. कयिरेय्यस्सेय्युमादीनं ६.७०—'कयिरा' से परे, 'एय्युं' आदि के 'एय्य' का लोप हो जाता है। जैसे—कयिरा+एय्युं—कयिरा+उं=कयिरुं। कयिरा+एय्यासि=कयिरा+आसि=कयिरासि। कयिराथ। कयिरामि। कयिराम।

वा ६.७१—'कयिरा' से परे, 'एय्य' का 'आ' आदेश हो जाता है। जैसे—सो कयिरा।

एथस्सा ६.७२—'कयिरा' से परे, 'एथ' का 'आथ' हो जाता है। जैसे—कयिराथ।

८. तु अन्तु, हि थ, मि म; तं अन्तं, स्सु व्हो, ए आमसे ६.१०—प्रश्न, प्रार्थना, तथा विधि में, धातु से परे 'तु' आदि प्रत्यय होते हैं। जैसे—पचतु, पचन्तु इत्यादि।

अत्तनो पद

	एकवचन	अनेकवचन
पठमपुरिस	पचतं	पचन्तं
मज्झिमपुरिस	पचस्सु	पचव्हो
उत्तमपुरिस	पचे	पचामसे

प्रश्न में—किन्नु खलु भो व्याकरणं अधीयस्सु—क्या तू व्याकरण पढ़ रहा है ?

प्रार्थना में—ददाहि मे=मुझको दो। जीवतु भवं=आप जीयें।

विधि में—कटं करोतु भवं=आप चटाई बनावें। पुञ्ञं करोतु भवं=आप पुण्य करें।

९. हि मि मे स्व स्स ६.५७—'हि', 'मि' तथा 'म' प्रत्ययों से पूर्व, अकार का आकार हो जाता है। जैसे—पचाहि।

हि स्स तो लोपो ६.४८—अकार से परे, 'हि' का विकल्प से लोप हो जाता है। जैसे—गच्छ, गच्छाहि।

द्रष्टव्य—*अनुज्ञा में*—'अस' धातु के रूप इस प्रकार होंगे—

अत्थु	सन्तु
अहि	अत्थ
अस्मि	अस्म

सि हि स्व द् ६.५३—'सि' तथा 'हि' प्रत्ययों के आने से, 'अस' धातु का 'अ' आदेश हो जाता है। जैसे—

अस्+हि=अ+हि=अहि। असि।

विधिलिङ्ग में नवों गणों के धातु के रूप कैसे होंगे, यह निम्न तालिका से प्रकट होगा :—

धातु	गण	पठम पुरिस		मज्झिम पुरिस		उत्तम पुरिस	
		एक वचन	अनेक वचन	एक वचन	अनेक वचन	एक वचन	अनेक वचन
१. भू	भ्वादि	भवेय्य, भवे	भवेय्युं	भवेय्यासि	भवेय्याथ	भवेय्यामि	भवेय्याम
हु	,,	हेय्य	हेय्युं	हेय्यासि	हेय्याथ	हेय्यामि	हेय्याम
नी	,,	नेय्य	नेय्युं	नेय्यासि	नेय्याथ	नेय्यामि	नेय्याम
या	,,	यायेय्य	यायेय्युं	यायेय्यासि	यायेय्याथ	यायेय्यामि	यायेय्याम
पच	,,	पचेय्य, पचे	पचेय्युं	पचेय्यासि	पचेय्याथ	पचेय्यामि	पचेय्याम
२. रुध	रुधादि	रुन्धेय्य, रुन्धे	रुन्धेय्युं	रुन्धेय्यासि	रुन्धेय्याथ	रुन्धेय्यामि	रुन्धेय्याम
३. दिव	दिवादि	दिब्बेय्य, दिब्बे	दिब्बेय्युं	दिब्बेय्यासि	दिब्बेय्याथ	दिब्बेय्यामि	दिब्बेय्याम
झा	,,	झायेय्य	झायेय्युं	झायेय्यासि	झायेय्याथ	झायेय्यामि	झायेय्याम
४. तुद	तुदादि	तुदेय्य	तुदेय्युं	तुदेय्यासि	तुदेय्याथ	तुदेय्यामि	तुदेय्याम
५. जि	ज्यादि	जिनेय्य, जेय्य	जिनेय्युं	जिनेय्यासि	जिनेय्याथ	जिनेय्यामि	जिनेय्याम
६. की	क्यादि	किणेय्य, किणे	किणेय्युं	किणेय्यासि	किणेय्याथ	किणेय्यामि	किणेय्याम
७. सु	स्वादि	सुणेय्य, सुणे	सुणेय्युं	सुणेय्यासि	सुणेय्याथ	सुणेय्यामि	सुणेय्याम
८. तन	तनादि	तनेय्य, तने	तनेय्युं	तनेय्यासि	तनेय्याथ	तनेय्यामि	तनेय्याम
९. चुर	चुरादि	चोरेय्य,	चोरेय्युं	चोरेय्यासि	चोरेय्याथ	चोरेय्यामि	चोरेय्याम
कथ	,,	कथेय्य	कथेय्युं	कथेय्यासि	कथेय्याथ	कथेय्यामि	कथेय्याम
झप	,,	झापेय्य	झापेय्युं	झापेय्यासि	झापेय्याथ	झापेय्यामि	झापेय्याम

अनुज्ञा में नवों गणों के धातु के रूप कैसे होंगे, यह निम्न तालिका से प्रकट होगा :—

धातु	गण	पठम पुरिस		मज्झिम पुरिस		उत्तम पुरिस	
		एक वचन	अनेक वचन	एक वचन	अनेक वचन	एक वचन	अनेक वचन
१. भू	भ्वादि	भवतु	भवन्तु	भव, भवाहि	भवथ	भवामि	भवाम
हु	,,	होतु	होन्तु	होहि	होथ	होमि	होम
नी	,,	नयतु	नयन्तु	नय, नयाहि	नयथ	नयामि	नयाम
या	,,	यातु	यन्तु	याहि	याथ	यामि	याम
पच	,,	पचतु	पचन्तु	पच, पचाहि	पचथ	पचामि	पचाम
२. रुध	रुधादि	रुन्धतु	रुन्धन्तु	रुन्ध, रुन्धाहि	रुन्धथ	रुन्धामि	रुन्धाम
३. दिव	दिवादि	दिब्बतु	दिब्बन्तु	दिब्ब, दिब्बाहि	दिब्बथ	दिब्बामि	दिब्बाम
झा	,,	झायतु	झायन्तु	झाय, झायाहि	झायथ	झायामि	झायाम
४. तुद	,,	तुदतु	तुदन्तु	तुद, तुदाहि	तुदथ	तुदामि	तुदाम
५. जि	ज्यादि	जिनातु	जिनन्तु	जिन, जिनाहि	जिनाथ	जिनामि	जिनाम
६. की	क्यादि	किणातु	किणन्तु	किण, किणाहि	किणाथ	किणामि	किणाम
७. सु	स्वादि	सुणोतु	सुणन्तु	सुण, सुणाहि	सुणोथ	सुणोमि	सुणोम
८. तन	तनादि	तनोतु	तनोन्तु	तनोहि	तनोथ	तनोमि	तनोम
९. चुर	चुरादि	चोरेतु, चोरयतु	चोरेन्तु	चोरेहि	चोरेथ	चोरेमि	चोरेम
कथ	,,	कथेतु, कथयतु	कथेन्तु	कथेहि	कथेथ	कथेमि	कथेम
झप	,,	झापेतु, झापयतु	झापेन्तु	झापेहि	झापेथ	झापेमि	झापेम

१४. अभ्यास

१. हिन्दी में अनुवाद कीजिए—

(क) अत्तानं चे पियं जञ्ञा (जानेय्य, जानिया), तं सुरक्खितं रक्खेय्य। अत्तानं एव पठमं पटिरूपे निवेसये। ततो परं अञ्ञं अनुसासेय्य। एवं सति, पण्डितो न किलिस्सेय्य। अत्ता हि अत्तनो नाथो, कोहि नाथो परो सिया। हीनं धम्मं न सेवेय्य, पमादेन न संवसे (संवसेय्य), कल्याणे मित्ते भजेय्य, मिच्छा-दिट्ठिं जहेय्य, लोक-वड्ढनो न सिया। उत्तिट्ठेय्य न प्पमज्जेय्य, सुचरितं धम्मं चरे (चरेय्य)। न भजे पापके मित्ते; कल्याणे मित्ते भजे। दानं चे ददेय्य, (दज्जेय्य, दज्जा वा) सीलसम्पन्नानं पञ्ञावन्तानं देय्य। सब्भिरेव समासेथ, बालानं (बालेहि वा) सन्थवं न करेय्य (करे, कुब्बेय्य, कुब्बेथ वा)। सरणं चे गच्छेय्य, बुद्धानं सरणं गच्छेय्य। धम्मं चे जानेय्य, खिप्पं पधानं पदहेय्य।

*ऊपर काले छपे क्रियापदों के रूप 'अनुज्ञा' में लिखिए।

(ख) चारिकं चरथ, धम्मं देसेथ, धम्मं पकासेथ। एवं करोहि, एवं ब्रूहि, एवं निसीदाहि। धम्मं सुणाथ, साधुकं मनसि-करोथ। तिट्ठ, तिट्ठ। एवं होहि। धि रत्थु! भगवा धम्मं देसेतु। पटिभातु आयुस्मन्तं एतस्स भासितस्स अत्थो ति। भव-सोतं छिन्दथ। धम्मं धारेतु। कथेतु भवं गोतमो धम्मं।

*ऊपर काले छपे क्रियापदों के रूप 'विधि लिङ्ग' में लिखिए।

२. पालि में अनुवाद कीजिए—

(क) बुद्ध की शरण जाओ। धर्म्म का आचारण करो। पाप मत करो। सच बोलो। धर्म्म-ग्रन्थों को पढ़ो। भगवान् ही इस बात को कहें, सुगत ही इस कथन का अर्थ समझावें।

(ख) हम लोग पुस्तक पढ़ें, अथवा उद्यान में जावें? तुम लोग त्रिपिटक पढ़ो। वे लोग जातक पढ़ें, अथवा अट्ठकथा। जातक ही पढ़ें। नहीं तो अट्ठकथा ही पढ़ें।

तीसरा काण्ड

तीसरा पाठ

विभक्ति-प्रकरण

(दूसरा भाग—शेष नियम)

१. पठमा विभत्ति

§ १८. पठमात्थमत्ते २.३९—अर्थ-मात्र को प्रकट करने में, किसी नाम से परे, 'पठमा' विभक्ति होती है। जैसे—रुक्खो।

पुल्लिङ्ग, स्त्रीलिङ्ग तथा नपुंसकलिङ्ग भी शब्द का अर्थ ही है। जैसे—दोणो। खारी। अल्हकं।

परिमाण (=वचन) भी शब्द का अर्थ ही है। जैसे—मनुस्सो। मनुस्सा।

संख्या भी शब्द का अर्थ ही है। जैसे—एको। द्वे। बहवो।

२. दुतिया विभत्ति

§ १९. ध्या वी हि युत्ता २.१—धि (=धिक्कार), हा (शोक प्रगट करने के अर्थ में), अन्तरा (=बीच में), अन्तरेन (=विना, बीच में), अभितो (=दोनों ओर), परितो (=चारो ओर), सब्बतो (=सभी ओर) तथा, उभयतो (=दोनों ओर) शब्दों के योग में 'दुतिया विभत्ति' होती है।

जैसे—धि अलसं सिस्सं=आलसी शिष्य को धिक्कार है। हा पुत्तं!=हाय बेटा! अन्तरा च राजगहं, अन्तरा च नाळन्दं=राजगृह और नालन्दा के बीच। भूपं अन्तरेन पासादो न सोभति=राजा के विना प्रासाद शोभा नहीं देता है। तळाकं अभितो—उभयतो दीघा रुक्खा तिट्ठन्ति=तालाब के दोनों ओर, लम्बे लम्बे पेड़ हैं। गामं परितो—सब्बतो पब्बतो=ग्राम के चारो ओर पर्वत है।

§२०. लक्खणित्थम्भूतवीच्छास्वभिना २.१०—संकेत करने, इस तरह का बताने, तथा व्याप्त करने के अर्थ में, 'अभि' शब्द के योग में 'दुतिया विभत्ति' होती है।

जैसे—पब्बतं अभि जलति अनलो=पर्व्वत की ओर आग जलती है। यञ्ञदत्तो पसन्नो बुद्धं अभि=यज्ञदत्त बुद्ध के प्रति श्रद्धा-युक्त है। रुक्खं रुक्खं अभि तिट्ठति=हर एक वृक्ष के पास ठहरता है।

§२१. पतिपरीहि भागे च २.११—ऊपर के ही अर्थों में, तथा हिस्सा होने के अर्थ में, 'पति' और 'परि' शब्दों के योग में 'दुतिया' विभक्ति होती है।

जैसे—पब्बतं पति (=परि) जलति अनलो=पर्वत की ओर आग जलती है। देवदत्तो पसन्नो बुद्धं पति—परि=देवदत्त बुद्ध के प्रति श्रद्धा-युक्त है। रुक्खं रुक्खं पति (परि) तिट्ठति=हर एक वृक्ष के पास ठहरता है। सो भागो मं पति (=परि) भवति=वह भाग मेरे हिस्से में आता है।

§२२. अनुना २.१२—ऊपर के ही अर्थों में, 'अनु' शब्द के योग में, 'दुतिया विभक्ति' होती है।

जैसे—पब्बतं अनु जलति अनलो=पर्वत की ओर आग जलती है। देवदत्तो पसन्नो बुद्धं अनु=देवदत्त बुद्ध के प्रति श्रद्धायुक्त है। रुक्खं रुक्खं अनु तिट्ठति=हर एक वृक्ष के पास ठहरता है। सो भागो मं अनु भवति=वह भाग मेरे हिस्से में आता है।

§२३. सहत्थे २.१३—साथ होने के अर्थ में, 'अनु' शब्द के योग में 'दुतिया विभत्ति' होती है।

जैसे—आचरियं अनु गच्छति सिस्सो=शिष्य आचार्य के साथ साथ जा रहा है।

§२४. हीनेः उपेन २.१४.१५—उससे कम होने के अर्थ में, 'अनु' तथा 'उप' शब्दों के योग में 'दुतिया विभत्ति' होती है।

जैसे—अनु उपालित्थेरं विनयधरा=उपालि स्थविर से दूसरे भिक्षु विनय जानने में कम थे। उप उपालित्थेरं विनयधरा।

§२५. रिते दुतिया चः विनाञ्ञत्र ततिया च २.३१.३२—'रिते' (=विना), 'विना', तथा 'अञ्ञत्र' (=अन्यत्र) शब्दों के योग में 'दुतिया विभत्ति' होती है।

जैसे—सद्धम्मं रिते अञ्ञो को जने रक्खति ? =सद्धर्म के सिवा, अन्य कौन मनुष्यों की रक्षा कर सकता है ? जलं बिना रुक्खो सुक्खति =जल के बिना, पेड़ सूख रहा है। तथागतं अञ्ञत्र को अञ्ञो लोकनायको ?=तथागत (बुद्ध) को छोड़, दूसरा कौन लोक-गुरु है ?

३. ततिया विभत्ति

§ २६. लक्खणे २.२०—लक्षण के अर्थ में, 'ततिया विभक्ति' होती है।

जैसे—तिदण्डकेन परिब्बाजको बुज्झति =त्रिदण्ड से परिव्राजक बूझा जाता है। नयनेन काणो =आँख से काना। पादेन खञ्जो =पैर से लंगड़ा।

§ २७. हेतुम्हि २.२१—हेतु के अर्थ में 'ततिया विभत्ति' होती है।

जैसे—सो इध अन्नेन वसति =वह यहाँ खाने के उद्देश्य से वास करता है। धम्मेन यसो वड्ढति =धर्म से यश बढ़ता है।

§ २८. विनाञ्ञत्र ततिया च २.३२—'विना' तथा 'अञ्ञत्र' शब्दों के योग में 'ततिया विभत्ति' होती है।

जैसे—जलेन विना रुक्खो सुक्खति =जल के विना पेड़ सूख रहा है। तथागतेन अञ्ञत्र को अञ्ञो लोकनायको ?=तथागत (=बुद्ध) को छोड़, दूसरा कौन लोकगुरु है ?

§ २९. पुथनानाहि २.३३—पुथ (=पृथक्), और नाना (=भिन्न) शब्दों के योग में 'ततिया विभत्ति' होती है।

जैसे—पुथगेव गामेन सो अरञ्ञं अधिवसति =गाँव से पृथक् ही, वह जंगल में रहता है। सोगतधम्मेन नाना तित्थियधम्मो =सुगत (=बुद्ध) के धर्म से भिन्न ही तैर्थिकों का धर्म है।]

५. पञ्चमी विभत्ति

§ ३०. पञ्चमीणे वा २.२२—ऋण के हतु में 'पञ्चमी विभत्ति' होती है; और 'ततीया' भी।

जैसे—सतस्मा बद्धो; सतेन बद्धो =सौ रुपए के ऋण से बँधा है।

§ ३१. गुणे २.२३—पराङ्गभूत हेतु में 'पञ्चमी विभत्ति' होती है। जैसे—

सङ्खारनिरोधा विञ्ञाणनिरोधो=संस्कार के निरोध होने से, विज्ञान का निरोध होता है।

§३२. अपपरी हि वज्जने २.२९—वर्जन करने के अर्थ में, 'अप' और 'परि' शब्दों के योग में 'पञ्चमी विभत्ति' होती है। जैसे—अप पाटलिपुत्तस्मा वुट्ठो देवो—परि पाटलिपुत्तस्मा वुट्ठो देवो=पाटलिपुत्र को छोड़, दूसरे स्थानों में वृष्टि हुई।

§३३. पटिनिधिपटिदानेसु पति ना २.३०—प्रतिनिधि और प्रति-दान के अर्थ में, 'पति' शब्द के योग में 'पञ्चमी विभत्ति' होती है।

जैसे—बुद्धस्मा पति सारिपुत्तो=सारिपुत्र बुद्ध के प्रतिनिधि हैं। घतं तेलस्मा पति ददाति=तेल ले कर घी देता है।

§३४. रिते दुतिया च २.३१ : विनाञ्ञत्र तिया च २.३२ : पुथनाना हि २.३३—'रिते', 'विना', 'अञ्ञत्र', 'पुथ', तथा 'नाना' शब्दों के योग में 'पञ्चमी विभत्ति' होती है।

जैसे—सद्धम्मस्मा रिते अञ्ञो को जने रक्खति ? =सद्धर्म के सिवा, अन्य कौन मनुष्यों की रक्षा कर सकता है ? जलस्मा बिना रुक्खो सुक्खति=जल के बिना पेड़ सूख रहा है। तथागतस्मा अञ्ञत्र को अञ्ञो लोकनायको=तथागत को छोड़, दूसरा कौन लोग-गुरु है ? पुथगेव गामस्मा सो अरञ्ञं अधिवसति=ग्राम से पृथक्, वह जंगल में वास करता है। सोगतधम्मस्मा नाना तित्थियधम्मो=सुगत (बुद्ध) के धर्म से भिन्न ही तैर्थिकों का धर्म है।

६. छट्ठी

§३५. छट्ठी हेत्वत्थे हि २.२४—हेत्वर्थक शब्दों के योग में 'छट्ठी विभत्ति' होती है। जैसे—उदरस्स हेतु; उदरस्स कारणा=पेट के हेतु।

७. सत्तमी

§३६. सत्तम्याधिक्ये २.१६—अधिक होने के अर्थ में, 'उप' शब्द के योग में 'सत्तमी विभत्ति' होती है। जैसे—उप खारियं दोणो=खारि (एक पुराना तौल का माप) से अधिक दोण है।

§ ३७. सा मि त्ते धि ना २.१७—स्वामी होने के अर्थ में, 'अधि' शब्द के योग में, सत्तमी विभत्ति होती है। जैसे—अधि पञ्चालेसु ब्रह्मदत्तो=पाञ्चाल देश पर ब्रह्मदत्त का आधिपत्य है।

§ ३८. आधार की विवक्षा में, सम्प्रदान के स्थान में सप्तमी भी होती है। जैसे—संघे देति=संघ को देता है।

§ ३९. स ब्बा दि तो स ब्बा २.२५—हेत्वर्थक शब्दों के योग में, 'सव्व' आदि शब्दों के साथ सभी विभक्तियाँ होती हैं।

जैसे—को हेतु, कं हेतुं, केन हेतुना, कस्स हेतुस्स, कस्मा हेतुस्मा, कस्स हेतुस्स, कस्मिं हेतुस्मिं।

किं कारणं, केन कारणेन इत्यादि।

किं निमित्तं, केन निमित्तेन इत्यादि।

किं पयोजनं, केन पयोजनेन इत्यादि।

१५. अभ्यास

१. हिन्दी में अनुवाद कीजिए—

बुद्धा। बुद्धे। पञ्ञा। कञ्ञाय। रत्तिया। सब्बस्स। ब्रह्मदत्तो नाम राजा अहोसि। बुद्धघोसो नाम आचरियो अहोसि। 'बुद्धो बुद्धो' ति सुत्वा सुमेधो तुट्ठहट्ठो जातो। निब्बाणं नाम सब्बेसं संखारानं उपसमो। एवं बुद्धा वदन्ति। पुञ्ञानि वड्ढन्ति, पापानि परिहायन्ति।

बुद्धो धम्मं देसेति। माणवको मासं सज्झायति। भगवा सत्ताहं निसीदि। माणवो कोसं सज्झायति। रुक्खं अनुविज्जोतते चन्दो। गामं गामं अनु वस्सति देवो। अन्तरा च नाळन्दं अन्तरा च राजगहं। अभितो गामं। उपमा मं पटि-भाति। एकमन्तं निसीदि। सीघं सीघं गच्छति। फले खादि।

रुक्खं खग्गेन छिन्दति। बुद्धेन देसितो धम्मो। तिलेहि खेत्ते वपति। कञ्ञाय पच्छा माता गच्छति। केन हेतुना वसति? अन्नेन वसति। कम्मुना (कम्मना) ब्राह्मणो होति। येन भगवा तेन उपसङ्कमिंसु। अक्खिना काणो। वण्णेन अभिरूपो। जातिया सत्त-वस्सिको।

भिक्खुस्स दानं देति। नमो बुद्धस्स। देसेतु, भन्ते! भगवा धम्मं भिक्खूनं। सग्गाय संवत्तति। अलं मे तेन धनेन। सग्गाय गच्छति। तथा तस्स फासु होति। भोगाय वजति।

पापा चित्तं निवारेति। यस्मा खेमं, ततो भयं। पेमतो जायति सोको। पञ्ञाय सुगतिं यन्ति। इतो बहिद्धा। अञ्ञत्र दुक्खा। उद्धं पाद-तला अधो केसमत्थका।

भिक्खुस्स चीवरं किस्स हेतु अल्लं ति? बुद्धो भगवा पूजितो राजानं (रञ्ञं) सुमानितो च। पापस्स अकरणं सुखं। सम्पियस्स पत्तं पूरेत्वा गतो। सब्बेसं भिक्खूनं आनन्दो दस्सनीयतमो। सब्बे भायन्ति मच्चुनो (मच्चुना)। पुत्तस्स (पुत्तं) इच्छमानो देवं अच्चति।

भगवा सावत्थियं विहरति जेतवने। पसन्नो बुद्धसासने। कदलीसु गजे रक्खन्ति। सम्पटिच्छामि मत्थके (=शिरोधार्य करता हूँ)। वज्जेसु भय-

दस्सावी। जायमाने बोधिसत्ते अयं लोकधातु संकम्पि। इमस्मिं सति इदं होति। दन्तेसु हञ्ञते नागो।

२. ऊपर काले अक्षरों में छपे पदों में कैसी विभक्तियां हैं?

३. नीचे काले अक्षरों में छपे पदों के कारक बताइए—

(अनियमित विभक्तियों के कुछ उदाहरण)

बुद्धं सरणं गच्छामि। एकं समयं भगवा सावत्थियं विहरति। सो भिक्खु इतो चुतो सग्गं लोकं उप्पज्जि। भिक्खुसंघं पिट्ठितो पिट्ठितो अगमासि।

तेन खो पन समयेन। येन भगवा तेन उपसङ्कमि।

दुक्खस्स भीतो अहं रुदन्तानं मातापितुन्नं बुद्धसासने पब्बजिं। सब्बे तसन्ति दण्डस्स।

उपासका भिक्खूसु अभिवादेन्ति। सङ्घे दिन्नं महप्फलं होति।

तीसरा काण्ड

चौथा पाठ

कृदन्त-प्रकरण

(पहला भाग—निष्ठा)

§ १. कत्तरि भूते क्तवन्तु, क्तावी ५.५५—भूतकाल के अर्थ में, धातु से परे, 'क्तवन्तु' और 'क्तावी' प्रत्यय होते हैं। प्रत्यय लगने से जो रूप बनता है, वह कर्ता के विशेषण के समान व्यवहृत होता है; अतः वह कर्ता के लिङ्ग, वचन, तथा विभक्ति को प्राप्त होता है।

जैसे—वि+जि+क्तवन्तु=विजितवन्तु । वि+जि+क्तावी=विजितावी। इनका अर्थ हुआ—"वह, जिसने विजय पा ली है"।

§ २. पुल्लिङ्ग, तथा नपुंसकलिङ्ग में 'विजितवन्तु' शब्द के रूप 'गुणवन्तु' के समान, और 'विजितावी' शब्द के रूप 'दण्डी' के समान होंगे।

स्त्रीलिङ्ग में, 'विजितवन्तु' का रूप 'विजितवती', या 'विजितवन्ती'; तथा 'विजितावी' का रूप 'विजिताविनी' हो जायगा : और, उनके रूप 'इत्थी' शब्द के समान होंगे। जैसे—

पुंलिङ्ग में—विजितवा, विजितावी वा खत्तियो=विजय पा लिया क्षत्रिय। विजितवन्तो, विजिताविनो वा खत्तिया=विजय पा लिए क्षत्रिय लोग। विजितवन्तं, विजिताविनं वा खत्तियं=विजय पा लिए क्षत्रिय को इत्यादि।

स्त्रीलिङ्ग में—विजितवती, विजितवन्ती, विजिताविनी वा इत्थी=विजय पाई हुई स्त्री इत्यादि।

§ ३. क्तो भावकम्मेसु ५.५६—भूतकाल के अर्थ में, कर्म और भाव वाच्य में, धातु से परे 'क्त' प्रत्यय होता है। जैसे—कर+क्त=कतं। वि+जि+क्त=विजितं।

'क्त' प्रत्यय लगने से जो रूप बनता है, वह कर्म का विशेषण होता है। जैसे—रज्जं विजितं रञ्ञा=राजा के द्वारा राज जीता गया। रज्जानि विजितानि रञ्ञा=राजा के द्वारा राज्य जीते गए। इत्थी विजिता रञ्ञा=राजा के द्वारा स्त्री जीती गई। रञ्ञा विजिते नगरे महाधनं अत्थि=राजा के द्वारा जीते गए नगर में बहुत धन है।

भाववाच्य में, वह सदा नपुंसक लिंग एक वचन रहता है। जैसे—मया हसितं=मेरे द्वारा हँसा गया। अम्हेहि हसितं=हम लोगों के द्वारा हँसा गया। त्वया हसितं। तुम्हेहि हसितं। बालकेन हसितं। कञ्ञाय हसितं।

§ ४. कत्तरि चारम्भे ५.५७—क्रिया-आरम्भ के अर्थ में, कर्तृवाच्य में भी, धातु से परे 'क्त' प्रत्यय होता है; और यथाप्राप्त कर्म तथा भाव वाच्य में भी। जैसे—

(कर्तृ) पकतो भवं कटं=आप ने चटाई बनाना आरम्भ किया है। (कर्म) पकतो भोता कटो=आप से चटाई बनाना आरम्भ किया गया है।

(कर्तृ) पसुत्तो भवं=आप सोए हैं। (भाव) पसुत्तं भवता=आप के द्वारा सोया गया।

§ ५. ठासवसिलिससीहजरजनीहि ५.५८—कर्तृ, कर्म, और भाव-तीनों वाच्य में, 'ठा' (=ठहरना) इत्यादि धातुओं से परे, 'क्त' प्रत्यय होता है। जैसे—(कर्तृ) उपट्ठितो गुरुं भवं=आप ने गुरु का उपस्थान (=सेवा-टहल) किया। (कर्म) उपट्ठितो गुरु भोता=आप के द्वारा गुरु उपस्थान किए गए।

§ ६. गमनत्थाकम्मकाधारे च ५.५९—गमनार्थ और अकर्मक धातु से परे, आधार के अर्थ में भी, कर्ता कर्म और भाव में 'क्त' प्रत्यय होता है। जैसे—

(भाव) इदं तेसं यातं। (कर्तृ) इह ते याता। (कर्म) इह तेहि यातं=यही वह स्थान है, जहाँ वे लोग गए थे इत्यादि।

§ ७. आहारत्था ५.६०—भोजनार्थक और पानार्थक धातुओं से परे, आधार के अर्थ में, 'क्त' प्रत्यय होता है। जैसे—

इदं तेसं भुत्तं, इह तेहि भुत्तं=यही वह स्थान है, जहाँ उन लोगों ने भोजन किया था।

§ ८. न ते कानुबन्धनागमेसु ५.८५—वा क्वचि ५.८६—क्त, तथा क्तवतु प्रत्ययों के आने से, (प्रत्यय में यदि 'क' अनुबन्ध हो) धातु के उपान्त 'अ', 'इ'



तथा 'उ' की वृद्धि साधारणतः तो नहीं होती है; किंतु, कहीं कहीं विकल्प से हो भी जाती है। जैसे—

वृद्धि नहीं हुई—चि+क्त=चितो। सुतो। दिट्ठो। पुट्ठो। विजितं।
वृद्धि विकल्प से हुई—मुदितो, मोदितो। रुदितं, रोदितं।

§ ९. 'क्तवन्तु', तथा 'क्त' प्रत्ययों के लगने से, कुछ विशेष धातु के रूप:—
गम[1]—गतवा, गतं। हन—हतवा, हतं। मन—मतवा, मतं। तन—ततवा, ततं। रम—रतवा, रतं। कर—कतवा, कतं। वच[2]—उत्तवा, उत्तं। वस[3]—उत्थवा उत्थं। वड्ढ[4]—वड्ढवा, वड्ढं। यज[5]—इट्ठवा यिट्ठवा, इट्ठं यिट्ठं।

---

१. गमादिरानं लोपो 'न्तस्स' ५.१०९—'क्त्वा' तथा 'क्त्वान' को छोड़, 'क' अनुबन्ध वाले दूसरे प्रत्ययों के आने से, 'गम' आदि [देखिए—तीसरा परिशिष्ट], तथा रकारान्त धातुओं के अन्त्य वर्ण का लोप होता है। जैसे—

गम+क्त=गतं। खन+क्त=खतं। हन—हतं। मतं। ततं। सञ्ञतं। रतं। कर+क्त=कतं।

[किंतु—गम+क्य+ते=गम्यते। यहाँ 'गम' के मकार का लोप नहीं हुआ; क्योंकि, 'क्य' प्रत्यय में 'क' अनुबन्ध होने पर भी उसके साथ 'तकार' नहीं है।]

२. वचादीनं वस्सुट् वा ५.११०—'क्त्वा' तथा 'क्त्वान' को छोड़०, 'वच' आदि [देखिए—तीसरा परिशिष्ट] धातुओं के 'व' का विकल्प से 'उ' हो जाता है। जैसे—वच+क्त=वुत्तं, उत्तं। वस+क्त=वुत्थं, उत्थं।

३. अस्सु ५.१११—'क्त्वा' तथा ०, 'वस' आदि [देखिए—तीसरा परिशिष्ट] धातुओं के अकार का उकार हो जाता है। जैसे—वस+क्त=वुत्थं।

सासवसंसंससा थो ५.१४४—'सास', 'वस', 'संस', तथा 'सस' धातुओं से परे, 'त' का 'थ' हो जाता है। जैसे—सास+क्त=सत्थं। वस+क्त=वुत्थं। प+संस+क्त=पसत्थं। सस+क्त=सत्थं।

४. वड्ढस्स वा ५.११२—'क्त्वा' तथा०, 'वड्ढ' धातु के अकार का विकल्प से उकार होता है। जैसे—वड्ढ+क्त=वड्ढं, वुड्ढं।

५. यजस्स यस्स टियी ५.११३—'क्त्वा' तथा०, 'यज' धातु के 'य' का 'इ' तथा 'यि' आदेश होता है। जैसे—यज+क्त=इट्ठं, यिट्ठं।

ठा[6]—ठितवा, ठितं । गा[7]—गीतवा, गीतं । पा—पीतवा, पीतं । जनि[8]—जातवा, जातं । सास[9]—सिट्ठवा, सिट्ठं । धा[10]—निहितवा, निहितं । तुस[11]—तुट्ठवा तुट्ठं । कस[12]—किट्ठवा कट्ठवा, किट्ठं कट्ठं । पुच्छ[13]—पुट्ठवा, पुट्ठं । बुध[14]—बुद्धवा, बुद्धं । दह[15]—दड्ढवा, दड्ढं । वह[16]—वुड्ढवा, वुड्ढं । आरुह[17]

---

६. ठा स्सि ५.११४—'क्त्वा' तथा०, 'ठा' धातु का 'ठि' आदेश होता है । ठा+क्त=ठितं ।

७. गा पा न मी ५.११५—० 'गा' धातु का 'गी', तथा 'पा' धातु का 'पी' आदेश हो जाता है । जैसे—गा+क्त=गीतं । पा+क्त=पीतं ।

८. ज नि स्सा ५.११६—० 'जनि' धातु का 'जान' आदेश हो जाता है । जैसे—जातं ।

९. सा स स्स सि स्वा ५.११७—० 'सास' धातु का विकल्प से 'सिस' आदेश हो जाता है । जैसे—सास+क्त=सिट्ठं । सत्थं, सिस्सो, सासियो ।

१०. धा स्स हि ५.१०८—० 'धा' धातु का 'हि' आदेश हो जाता है । जैसे—निहितं, निहितवा ।

११. सा न न्त र स्स त स्स ठो ५.१४०—सकारान्त धातु से परे, 'त' का 'ठ' हो जाता है । जैसे—तुस+क्त=तुट्ठो । तुट्ठवा । तुस+तब्बं=तुट्ठब्बं । तुस+क्ति=तुट्ठि ।

१२. क स स्सि म् च वा ५.१४१—'कस' धातु से परे, 'त' का 'ठ' हो जाता है । 'कस' का विकल्प से 'किस' हो जाता है । जैसे—कस+क्त=किट्ठं, कट्ठं ।

१३. पु च्छा दि तो ५.१४३—'पुच्छ' आदि धातुओं से परे, 'त' का 'ठ' हो जाता है । जैसे—पुच्छ+क्त=पुट्ठं । भज—भट्ठं । यज—यिट्ठं ।

१४. धो ध ह भे हि ५.१४५—धकारान्त, हकारान्त, तथा भकारान्त धातु से परे, 'त' का 'ध' हो जाता है । जैसे—बुध+क्त=बुद्धं । दुह+क्त=दुद्धं । लभ+क्त=लद्धं ।

१५. दहा ढो ५.१४६—'दह' धातु से परे, 'त' का 'ढ' हो जाता है । जैसे—दह+क्त=दड्ढो ।

१६. व ह स्सु म् च ५.१४७—'वह' धातु से परे, 'त' का 'ढ' हो जाता है । 'वह' का 'वुह' हो जाता है । जैसे—वह+क्त=वुड्ढो ।

१०

—आरूल्हवा, आरूल्हं। मुह[१८]—मूल्हवा, मूल्हं। भिद[१९]—भिन्नवा, भिन्नं। दा[२०]—दिन्नवा, दिन्नं। किर[२१]—किण्णवा, किण्णं। तर[२२]—तिण्णवा, तिण्णं।

---

१७. रुहादीहि हो ळ च ५.१४८—'रुह' आदि धातुओं से परे, 'त' का 'ह' हो जाता है; धातु के अन्त्य वर्ण का 'ळ' हो जाता है। जैसे—आरुह+क्त=आरूळ्हो। गुह+क्त=गुळ्हो। वह—वूळ्हो। वह—वाळ्हो।

वहस्सुस्स ५.१०७—'क्त्वा' और 'नक्त्वा' को छोड़, तकारादि 'क' अनुबन्ध वाला प्रत्यय आने से, 'वह' धातु का 'वूह' आदेश हो जाता है। जैसे—

वह+क्त=वूळ्हो।

मुहवहानं च ते कानुबन्धे त्वे ५.१०६—'क्त्वा' और 'नक्त्वा' को छोड़, तकारादि 'क' अनुबन्ध वाला प्रत्यय आने से, 'मुह', 'वह' तथा 'गुह' धातुओं के स्वर का दीर्घ होता है। जैसे—गुह+क्त=गूळ्हो। मुह+क्त=मूळ्हो। वह+क्त=वाळ्हो।

१८. मुहा वा ५.१४९—'मुह' धातु के साथ विकल्प से होता है। जैसे—मूळ्हो, मुद्धो।

१९. भिदादितो नो क्तक्तवन्तूनं ५.१५०—'भिद' आदि धातुओं से परे 'क्त' या 'क्तवन्तु' प्रत्यय हो, तो उसके 'त' का 'न' हो जाता है। जैसे—भिद+क्त=भिंद+त=भिंद+न=भिन्नो। भिन्नवा। छिन्नो, छिन्नवा। छन्नो, छन्नवा। खिन्नो, खिन्नवा। उप्पन्नो, उप्पन्नवा। सिन्नो, सिन्नवा। सन्तो, सन्तवा। पीनो, पीनवा। सूनो, सूनवा। दीनो, दीनवा। डीनो, डीनवा। लीनो, लीनवा। लूनो लूनवा।

२०. दात्विन्नो ५.१५१—'दा' धातु से परे, 'क्त' तथा 'क्तवन्तु' प्रत्यय के 'त' का 'इन्न' हो जाता है। जैसे—दा+क्त=दिन्नो। दिन्नवा।

२१. किरादीहि णो ५.१५२—'किर' आदि धातुओं से परे, 'क्त' तथा 'क्तवन्तु' प्रत्यय के 'त' का 'ण' हो जाता है। जैसे—किर+क्त=किण्णो, किण्णवा। पूर+क्त=पुण्णो, पुण्णवा। खीणो, खीणवा।

२२. तरादीहि रिण्णो ५.१५३—'तर' आदि धातुओं से परे, 'क्त' तथा 'क्तवन्तु' प्रत्यय के 'त' का 'रिण्ण' हो जाता है। जैसे—तर+क्त=तर+

भञ्ज[23]—भग्गवा, भग्गं। सुस[24]—सुक्खवा, सुक्खं। पच[25]—पक्कवा, पक्कं। मुच[26]—मुक्कवा, मुत्तवा, मुक्तं, मुत्तं। धंस[27]—धस्तो। तस—त्रस्तो।

इण्ण=तिण्णो। तिण्णवा। जिण्णो, जिण्णवा। चिण्णो, चिण्णवा।

२३. गो भञ्जादीहि ५.१५४—'भञ्ज' आदि धातुओं से परे, 'क्त' तथा 'क्तवन्तु' प्रत्यय के 'त' का 'ग' हो जाता है। जैसे—भञ्ज+क्त=भग्गो। भग्गवा। लग्गो, लग्गवा। निमुग्गो, निमुग्गवा। संविग्गो, संविग्गवा।

२४. सुसा खो ५.१५५—'सुस' धातु से परे ० 'त' का 'ख' होता है। जैसे—सुस+क्त=सुक्खो, सुक्खवा।

२५. पचा को ५.१५६—'पच' धातु से परे ० 'त' का 'क' होता है। जैसे—पच+क्त=पक्को, पक्कवा।

२६. मुचा वा ५.१५७—'मुच' धातु से परे ० 'त' का विकल्प से 'क' होता है। जैसे—मुक्को, मुक्कवा। मुत्तो, मुत्तवा।

२७. धस्तो त्रस्ता ५.१४२—निपात।

१६. अभ्यास

१. हिन्दी में अनुवाद कीजिए—

(क) अस्सुतवा पुथुज्जनो सप्पुरिस-धम्मे अविनीतो सब्बं अभिनन्दति। तं किस्स हेतु ? "अपरिञ्ञातं तस्सा"ति वदामि। अरहन्तानं (ब्रह्मचरियं) वुसितवन्तानं आसवा खीणा, करणीया कता, भारो ओहितो, सदत्थो अनुप्पत्तो, भवसंयोजना परिक्खीणा, होन्ति। तस्मा ते किञ्चि पि नाभिनन्दन्ति। परिञ्ञातं तेसं ति वदामि।

(ख) दिट्ठं, सुतं, मुतं, विञ्ञातं—सब्बं अनिच्चतो पच्चवेक्खितब्बं। कतं करणीयं। एवं मे सुतं। बालकेन हसितं। पकतो भवं कटं। उपट्ठितो गुरु भोता। इदं तेसं यातं। इह तेहि भुत्तं। फलानि पक्कानि। मारसेना न विजितवती झायिसु मुनिसु। भगवा सावकेहि पुट्ठे पञ्हे ब्याकरोति।

(ग) यथागारं दुच्छन्नं वुट्ठी समतिविज्झति।
एवं अभावितं चित्तं रागो समतिविज्झति॥

(धम्मपद १.१३)

गतद्धिनो विसोकस्स विप्पमुत्तस्स सब्बधि।
सब्बगन्थप्पहीनस्स परिलाहो न विज्जति॥

(धम्म० ७.१)

सन्तं अस्स मनं होति, सन्ता वाचा च कम्म च।
सम्मदञ्ञविमुत्तस्स उपसन्तस्स तादिनो॥

(धम्म० ७.७)

२. निम्नलिखित पर्य्यायों को याद कीजिए, तथा उनसे वाक्य बनाइए—

'*कथित*' *के अर्थ में*—भासितं, लपितं, वुत्तं, अभिहितं, अक्खातं, उदीरितं, गदितं, भणितं, उदितं, कथितं।

'ज्ञात' के अर्थ में—बुद्धं, पटिपन्नं, विदितं, अवगतं, मतं, ञातं।
'पूजित' के अर्थ में—अपचायितं, अञ्चितं, अपचितं, पूजितं।
'अन्वेषण' के अर्थ में—मग्गितं, परियेसितं, गवेसितं, अन्वेसितं।
'रक्षित' के अर्थ में—गोपितं, गुत्तं, तातं, गोपायितं, अवितं, रक्खितं।
'भक्षित' के अर्थ में—गिलितं, खादितं, भुत्तं, अज्झोहटं, असितं, भक्खितं।
'क्षुधित' के अर्थ में—जिघच्छितं, छातं, बुभुक्खितं, खुदितं।
'आनीत' के अर्थ में—आहटं, आभतं, आनीतं।
'नष्ट' होने के अर्थ में—गलितं, पन्नं, चुतं, धंसितं, भट्ठं।
'छिन्न' होने के अर्थ में—कन्तितं, संछिन्नं, लूणं, दातं, छिन्नं।
'कंपित' होने के अर्थ में—धूतं, आधूतं, चलितं, कम्पितं।
'आवृत' होने के अर्थ में—वेठितं, वलयितं, रुद्धं, संवुतं, आवुतं।
'प्रमुदित' के अर्थ में—पीतं, हट्ठं, मत्तं, तुट्ठं, पमुदितं।

३. निम्नलिखित शब्दों से वाक्य बनाइए—

कतानि। किट्ठेसु खेत्तेसु। भिन्नेन रथेन। दिन्नवन्तिया कञ्ञाय। आसवेहि मुत्तवन्तो। आसवेहि विमुत्तं। सन्तानि इन्द्रियाणि। तस्मिं उत्ते। विजिताविनो। विजितवन्ती।

४. पालि में अनुवाद कीजिए—

राजा के द्वारा जीते गए नगर में बहुत धन है। अर्हत् के द्वारा सभी इन्द्रियाँ जीत ली गई हैं। निर्वाण का मार्ग श्रावक के द्वारा देख लिया गया है, जान लिया गया है, साक्षात् कर लिया गया है। पहले के राजा धर्मानुकूल राज्य करते थे। उसे ज्ञान-चक्षु उत्पन्न हुआ। पके हुए फलों को देखो।

तीसरा काण्ड

पाँचवाँ पाठ

कृदन्त-प्रकरण

(दूसरा भाग—तव्व, तुं, त्वा)

तव्व, अनीय, घ्यण्

§ १०. भावकम्मेसु तब्बानीया ५.२७—भाव-वाच्य और कर्मवाच्य में, धातु से परे, बहुधा 'तव्व' और 'अनीय' प्रत्यय होते हैं। जैसे—

(भाव) मया हसितब्बं, हसनीयं वा=मेरे द्वारा हँसा जाना चाहिए। मया निसीदितब्बं निसीदनीयं वा=मेरे द्वारा बैठा जाना चाहिए।

(कर्म) मया कत्तब्बो, करणीयो वा कटो=मुझे चटाई बनानी चाहिए। मया सोतब्बानि, सवनीयानि वा तानी वचनानि=मुझे वे वचन सुनने चाहिए।

§ ११. घ्यण् ५.२८—ऊपर के हि स्थान में, धातु से परे, बहुधा 'घ्यण्' प्रत्यय आता है। 'घ्यण्' का 'य' रह जाता है। जैसे:—

मया इदं न वाक्यं[1]=मुझे यह नहीं कहना चाहिए। सिस्सेन पुप्फानि चेय्यानि =शिष्य को फूल चुनने चाहिए।

§ १२. आस्से च ५.२९—'घ्यण्' प्रत्यय आने से, धातु के आकार का एकार हो जाता है। जैसे—धनिकेहि दलिद्दानं दानं देय्यं=धनिकों को दरिद्रों को दान

---

१. कगा चजानं घानुबन्धे ५.९८—'घ' अनुबन्ध वाला प्रत्यय आने से, धातु के अन्त्य 'च' का 'क', तथा 'ज' का 'ग' हो जाता है। जैसे—वच+घ्यण्= वाक्यं। भज+ घ्यण्=भाग्यं।

देना चाहिए। अच्छानि जलानि पेय्यानि=साफ जल पीने चाहिए।

§ १३. 'तब्ब', 'अनीय', तथा 'घ्यण्' प्रत्ययान्त शब्द विशेषण के समान प्रयुक्त होते हैं। जैसे—

सिनानीयं चुण्णं=वह चूर्ण जिससे स्नान किया जाय। दानीयो ब्राह्मणो=वह ब्राह्मण जिसको दान दिया जाय। उपट्ठानीयो सिस्सो=वह शिष्य जिससे उपस्थान (=सेवा-टहल) कराया जाय इत्यादि।

§ १४. युवण्णानमेओ प्पच्चये ५.८२—प्रत्यय आने से, इकारान्त और उकारान्त धातुओं के इकार का एकार, तथा उकार का ओकार हो जाता है। जैसे—

चि+तब्ब=चेतब्बं। चि+अनीय=चयनीयं। चि+घ्यण=चेय्यं। सोतब्बं। सवनीयं।

[न ब्रूस्सो ५.९७—'ब्रू' धातु से परे, व्यञ्जनादि प्रत्ययों के आने से, उसके 'ऊ' का 'ओ' नहीं होता है। जैसे—ब्रू+मि=ब्रूमि। स्वरादि प्रत्यय आने से 'ऊ' का 'ओ' हो जाता है। जैसे—ब्रू+इ=अब्रवि]

§ १५. लहुस्सुपन्तस्स ५.८३—धातु के लघु उपान्त 'इ' तथा 'उ' का क्रमशः 'ए', तथा 'ओ' हो जाता है। जैसे—

इस+तब्ब=एसितब्बं। कुस+तब्ब=कोसितब्बं।

§ १६. मनानं निग्गहीतं ५.९६—मकारान्त तथा नकारान्त धातुओं से उत्तर, यदि 'य' को छोड़ कोई दूसरा व्यञ्जन हो, तो 'म' या 'न' का 'निग्गहीत' (अनुस्वार) हो जाता है। जैसे—गम+तब्ब=गं+तब्ब=गन्तब्बं। हन+तब्ब=हं+तब्ब=हन्तब्बं।

§ १७. इन प्रत्ययों के लगने से कुछ विशेष धातु के रूप:—वद+घ्यण=वज्जं[२]। कर+घ्यण=किच्चं[२]। गुह+घ्यण=गुय्हं[२]। नि+पद+तब्ब=निपज्जितब्बं[२]। भिद—भेत्तब्बं[२]। कर—कातब्बं[२]। नि+सिद—निसीदितब्बं[२]। अस—भवितब्बं[२]।

---

२. वदादीहि यो ५.३०—भाव तथा कर्म में, 'वद' आदि धातुओं से परे, बहुधा 'य' का आगम होता है। जैसे—वद—वज्जं=निन्दनीय। मद—मज्जं। गम—गम्मं।

तुं, ताये, तवे

(निमित्तार्थक अव्यय)

§ १८. तुं तायेतवे भावे भविस्सति क्रियायं तदत्थायं ५.६१— 'इस काम के निमित्त'—इस अर्थ में, धातु से परे 'तुं', 'ताये', और 'तवे' प्रत्यय होते हैं। जैसे—

कातुं गच्छति; कत्ताये गच्छति; कातवे[10] गच्छति=करने के लिए जाता है।

---

३. किच्चघच्चभच्चभब्बलेय्या ५.३१—ये शब्द निपात हैं—कर—किच्चं। हन—घच्चो। भर—भच्चो=भृत्य। भू—भब्बो=भव्य। लिह—लेय्यं।

४. गुहादीहि यक् ५.३२—भाव तथा कर्म में, 'गुह' आदि धातुओं से परे, 'य' का आगम होता है। जैसे—गुह—गुय्हं। दुह—दुय्हं। सिस—सिस्सो।

५. पदादीनं क्वचि ५.९२—'पद' आदि धातुओं से परे, कहीं कहीं 'य' का आगम होता है। जैसे—नि+पद+तब्ब=निपज्जितब्बं। निपज्जितुं। निपज्जनं। प+मद+तब्ब=पमज्जितब्बं। पमज्जितुं। पमज्जनं।

६. पररूपमयकारे ब्यञ्जने ५.९५—यदि 'य' को छोड़, कोई दूसरा व्यञ्जन परे हो, तो धातु के अन्त्य व्यञ्जन का पर-रूप हो जाता है। जैसे—भिद+तब्बं=भेत्तब्बं।

७. तुं तून तब्बेसु वा ५.११९—'तुं', 'तून', तथा 'तब्ब' प्रत्ययों के आने से, 'कर' धातु का विकल्प से 'कार' हो जाता है। जैसे—कर+तुं=कातुं, कत्तुं। कातून, कत्तून। कातब्बं, कत्तब्बं।

८. जरसदानमीम् वा ५.१२३—'जर' तथा 'सद' धातुओं के अन्तिम स्वर से परे, विकल्प से 'ई' का आगम होता है। जर—जीरणं। जीरति। जीरापेति। जीरितब्बं। निसद—निसीदनं। निसीदितुं। निसीदति। निसीदितब्बं।

९. अत्यादिन्ते स्वत्थिस्स भू ५.१२८—'ति' आदि को छोड़, दूसरे प्रत्ययों के आने से, 'होने' के अर्थ में 'अस' धातु का 'भू' आदेश होता है। जैसे—अस+तब्ब=भवितब्बं।

§ १९. *निम्न स्थानों में 'तुं' प्रत्यय प्रयुक्त होता है—*

इच्छति भोत्तुं, कामेति भोत्तुं=भोजन करने की इच्छा करता है
सक्कोति भोत्तुं=भोजन कर सकता है
जानाति भोत्तुं=भोजन करना जानता है
गिलायति भोत्तुं=भोजन के लिए दुःखित होता है
घटते भोत्तुं=भोजन करने की कोशिश करता है
आरभते भोत्तुं=भोजन करना आरम्भ करता है
लभते भोत्तुं=उसे खाने को मिलता है
पक्कमति भोत्तुं=भोजन करना आरम्भ करता है
उस्सहति भोत्तुं=भोजन करने का उत्साह करता है
अरहति भोत्तुं=भोजन करने के लिए योग्य है
अत्थि भोत्तुं, विज्जति भोत्तुं=भोजन का सामान है
कप्पति भोत्तुं=यह चीज़ भोजन के लिए विहित है
पारयति भोत्तुं=भोजन कर सकता है
पहु भोत्तुं=भोजन करने में समर्थ है
परियत्तो भोत्तुं=भोजन करने में समर्थ है
अलं भोत्तुं=भोजन करने में समर्थ है
कालो भोत्तुं=भोजन करने का समय है
भोत्तुमनो=भोजन करने के मन वाला
सोतुं सोतो=सुनने के लिए कान
दट्ठुं चक्खु=देखने के लिए आँख
युज्झितुं धनु=युद्ध करने के लिए धनुष
वत्तुं जळो=बोलने में जड़
कत्तुं अलसो=करने में आलसी

---

१०. करस्सा तवे ५.११८—'तवे' प्रत्यय आने से, 'कर' धातु का 'कार' आदेश हो जाता है। जैसे—

कर+तवे=कातवे।

§ २०. मं वा रुधादीनं ५.९३—'रुध' आदि धातुओं में, अन्तिम स्वर से परे, कहीं कहीं विकल्प से 'मं' का आगम होता है। जैसे—

रुन्धितुं; रुज्झितुं।

तून, क्त्वान, क्त्वा

(पूर्वकालिक अव्यय)

§ २१. पुब्बेककत्तुकानं ५.६३—जिन दो क्रियाओं का एक ही कर्ता होता है, उनमें पहली क्रिया के धातु से परे, विकल्प से 'तून', 'क्त्वान' और 'क्त्वा' प्रत्यय होते हैं। जैसे—

सो सुणोति याति च—सो सोतून याति, सो सुत्वान याति, सो सुत्वा याति=वह सुन कर जा रहा है।

§ २२. पटिसेधे'लंखलूनं तुनक्त्वानक्त्वा वा ५.६२—निषेध करने के अर्थ में यदि 'अलं' तथा 'खलु' शब्द प्रयुक्त हों, तो उनके योग में विकल्प से ये प्रत्यय आते हैं। जैसे—

अलं सोतून, खलु सोतून, अलं सुत्वान, खलु सुत्वान, अलं सुत्वा, खलु सुत्वा, अलं सुतेन, खलु सुतेन=सुनना बेकार है।

प्य

§ २३. प्यो वा त्वास्स समासे ५.१६४—धातु के साथ समास होने पर, उससे परे, 'त्वा' प्रत्यय का विकल्प से 'प्य' आदेश हो जाता है। 'प्य' का 'य' रह जाता है। जैसे—

प्य	त्वा
अभिभूय	अभिभवित्वा=तिरस्कार करके

§ २४. तुं याना ५.१६५—धातु के साथ समास होने पर, उससे परे, 'त्वा' प्रत्यय का विकल्प से 'तुं' तथा 'यान' आदेश होता है। जैसे—

अभिहट्ठुं, अभिहरित्वा=ला कर

अनुमोदियान, अनुमोदित्वा=अनुमोदन करके

§ २५. हनो रच्चो ५.१६६—समास होने पर, 'हन' धातु से परे, 'त्वा' का विकल्प से 'रच्च' आदेश होता है। 'रच्च' का 'अच्च' रह जाता है। जैसे—

हन=मारना—आहच्च, आहनित्वा=आघात करके

§ २६. सासाधिकरा चचरिच्चा ५.१६७—'स', 'अस', तथा 'अधि' पूर्वक 'कर' धातु से परे, 'त्वा' का विकल्प से क्रमशः 'च', 'च', तथा 'रिच्च' आदेश होता है। जैसे—

सक्कच्च, सक्करित्वा=सत्कार करके

असकच्च, असक्करित्वा=असत्कार करके

अधिकिच्च, अधिकरित्वा=अधिकार करके

§ २७. इतो च्चो ५.१६८—'इ' धातु से परे, 'त्वा' का विकल्प से 'च्च' आदेश होता है। जैसे—

इ=जाना—अधिच्च, अधियित्वा=पढ़ कर

समेच्च, समेत्वा=मिल कर

§ २८. दिसा वानवा स् च ५.१६९—'दिस' (=देखना) धातु से परे, 'त्वा' प्रत्यय आने से, उसका रूप विकल्प से 'दिस्वान' होता है। जैसे—

दिस्वान, दिस्वा, पस्सित्वा=देख कर

१७. अभ्यास

१. हिन्दी में अनुवाद कीजिए—

(क) कुसलं कातब्बं, अकुसलं जहितब्बं। रमणीयानि अरञ्ञानि, यत्थ वीतरागा रमिस्सन्ति। कल्याणमित्तो सेवितब्बो, पापका मित्ता न भजितब्बा। पुप्फानि विय धम्मपदानि चेय्यानि। न हि कदाचि फरुसं वाक्यं। अच्छानि जलानि पेय्यानि। सोतब्बं सवनीयं, कातब्बं करणीयं। वज्जं न कातब्बं। गुय्हं गोपनीयं।

(ख) कातुं वट्टति। खादितुं कालो। पक्कमितुं न देति। पठितुं आरभि। सुमेध-पण्डितो इमं अत्थं चिन्तेत्वा, भोग-क्खन्धं विस्सज्जेत्वा, महादानं दत्वा, कामे पहाय, नगरतो निक्खमित्वा, हिमवन्तं अगमासि। तत्थ धम्मिकं नाम पब्बतं निस्साय अस्समं कत्वा, पण्ण-सालं च चङ्कमं च मापेत्वा (बनाकर) अभिञ्ञाबलं आहरितुं साटकं पजहित्वा, वाकचीरं (वल्कल-चीवर) निवासेत्वा इसि-पब्बज्जं पब्बजि।

२. पालि में अनुवाद कीजिए—

पण्डितों के द्वारा धर्म का आचरण करना चाहिए। अच्छे अच्छे ग्रन्थ सुनने चाहिए। गाने के योग्य गाथाओं को याद कर लो। सूरज को देखने के लिए, पहाड़ पर चढ़ कर पूरब की ओर देखो। खा कर, पी कर, हाथ धोवो। हाथ धोने के लिए कुएँ से पानी लाता है। विहार जाने के लिए, घर जा कर उदान ग्रन्थ ले आवो। स्वर्ग में उत्पन्न होने के लिए, पाप-कर्म करना छोड़ कर पुण्य कर्म करता है।

तीसरा काण्ड

छठा पाठ

विशेषण-प्रकरण

§ १. विशेषण चार प्रकार के होते हैं—(१) गुण-वाचक, (२) संख्या-वाचक, (३) कृदन्त, (४) तद्धितान्त। जैसे—

सुन्दरो बालको। एको बालको; पठमो बालको। पठमानो बालको; दिट्ठो बालको; दस्सनीयो बालको। अन्तिमो बालको; कतमो बालको; सेट्ठो बालको।

§ २. विशेषण में, वही लिङ्ग, विभक्ति और वचन होते हैं, जो लिङ्ग, विभक्ति और वचन इसके विशेष्य में हैं। जैसे—

सुन्दरो बालको। सुन्दरी बालिका। सुन्दरं फलं। सुन्दरा बालका, सुन्दरियो बालिकायो, सुन्दरानि फलानि। सुन्दरेन बालकेन, सुन्दरिया बालिकाय, सुन्दरेन फलेन। इत्यादि।

१. गुण-वाचक

गुण-वाचक विशेषण शब्दों के कुछ उदाहरण ऊपर (पृ० ६) दे दिए गए हैं। 'अभिधानप्पदीपिका' से कुछ और उदाहरण नीचे दिए जाते हैं—

सौंदर्य=सोभन, रुचिर, साधु, मनुञ्ञ, चारु, सुन्दर, वग्गु, मनोरम, कन्त, हारि, मञ्जु, पेसल, भद्द, वाम, कल्याण, मनाप, सुभ। उत्तम=उत्तम, पवर, जेट्ठ, पमुख, अनुत्तर, वर, मुख्य, पधान, पामोक्ख, वर, पणीत, सेय्य, विसिट्ठ, अरिय, नाग, पुंगव। प्रिय=इट्ठ, सुभग, हज्ज, दयित, वल्लभ, पिय। शून्य=तुच्छ, रित्तक, सुञ्ञ, असार, फेग्गु। पवित्र=पूत, पवित्त। निकृष्ट=निहीन, हीन, लामक, निकिट्ठ, इत्तर, कुच्छित, अधम, गारय्ह। बृहत्=विपुल, विसाल, पुथुल,

पुथु, गरू। मोटा=पीन, थूल, थुल्ल, वठर। सारा=सव्व, समत्त, अखिल, निखिल, सकल, कसिण, समग्ग। प्रचुर=भूरी, पहूत, पचुर, भीय्य, संवहुल, वहु, येभुय्यं, वहुल। अल्प=परित्त, खुद्द, थोक, अप्प। सरल=उजु। तीक्ष्ण=तिण्हं, तिखिणं, तिव्वं। उग्र=चण्ड, उग्ग, खर। गतिशील=चर, जंगम, तस। कर्कश=कुरूर, कठिन, दळ्ह, कक्खल। उपयुक्त=पतिरूप। निष्फल=मोघ, निरत्थक। व्यक्त=फुट। असहाय=एकाकी, एकच्च, एक, एकक। सुदक्ष=कतहत्थ, कुसल, पवीण, सिक्खित, पटु, दक्ख, पेसल। विख्यात=ख्यात, पतीत, पञ्ञात, अभिञ्ञात, पथित, सुत, विस्सुत, पसिद्ध, पाकट। धनाढ्य=इब्भ, अड्ढ। लोभी=गिद्ध, लुद्ध। क्रोधी=कोधन, रोसन। चमकदार=भस्सर, भास्सर। कृपण=थद्ध, मच्छरी, कपण। दरिद्र=अकिंचन, दळिद्द, दुग्गत। तीखा=निसित। विस्तृत=विसट, वित्थत। पूजित=अपचायित, महित, पूजित, मानित, अपचित।

§ ३. पुल्लिङ्ग में, अकारान्त विशेषण के रूप 'वुद्ध' शव्द के समान, इकारान्त के 'मुनि' शव्द के समान, तथा उकारान्त के 'भिक्खु' शव्द के समान होंगे।

नपुंसक लिङ्ग में, अकारान्त विशेषण के रूप 'फल' शव्द के समान, इकारान्त के 'अट्ठि' शव्द के समान, तथा उकारान्त के 'आयु' शव्द के समान होंगे। जैसे—

पुल्लिङ्ग में—अतीतो भूपो; अतीता भूपा। सुचि कूपो; सुचयो कूपा। मुदु वालको; मुदवो वालका।

नपुंसक लिङ्ग में—अतीतं नगरं; अतीतानि नगरानि। सुचि जलं; सुचीनि जलानि। मुदु फलं; मुदूनि फलानि।

स्त्रीलिङ्ग—विशेषण शव्दों को पुल्लिङ्ग से स्त्रीलिङ्ग वनाने के लिए उनसे परे 'आ', 'ई', आदि कुछ प्रत्यय लगाते हैं। [देखिए—पाँचवाँ काण्ड, चौथा पाठ] जैसे—

आ—अखिला, अधमा, अलसा, कपणा, चञ्चला, चपला, दुब्बला, पिया, विचित्ता, सफला।

ई—कुमारी, तरुणी, पञ्चमी; छट्ठी, सत्तमी, तापसी।

§ ४. इकारान्त तथा उकारान्त विशेषण शव्द प्रायः स्त्रीलिङ्ग में भी ज्यों के त्यों रहते हैं; किंतु, उनके रूप क्रमशः 'रत्ति' तथा 'धेनु' शव्द के समान होते हैं। आकारान्त, तथा ईकारान्त स्त्रीलिङ्ग विशेषण शव्दों के रूप क्रमशः 'लता' तथा 'इत्थी' शव्द के समान होंगे। जैसे—

दुब्बला इत्थी, दुब्बलायो इत्थियो। कुमारी बालिका, कुमारियो बालिकायो। सुचि वापी, सुचियो वापी। मुदु बालिका, मुदुयो बालिकायो।

२. संख्या-वाचक

§ ५. संख्यावाचक शब्द विशेषण की तरह प्रयुक्त होते हैं; अतः, उनमें प्रायः वही लिङ्ग, विभक्ति और वचन होते हैं जो उनके विशेष्य में हैं। जैसे—

एको बालको। एका बालिका। एकं फलं। तयो बालका। तिस्सो बालिकायो। तीणि फलानि। चतुरो बालका। चतस्सो बालिकायो। चत्तारि फलानि।

§ ६. 'द्वि' शब्द के रूप तीनों लिङ्गों में एक जैसे होते हैं। 'पञ्च' शब्द से लेकर 'अट्ठारस' तक सभी शब्द के रूप भी तीनों लिङ्गों में एक जैसे होते हैं। जैसे—द्वि, पञ्च बालका। द्वि, पञ्च बालिका।

§ ७. 'एकूनवीसति' (=उन्नीस) से लेकर 'अट्ठनवुति' (=अट्ठानवे) तक सभी शब्द नित्य स्त्रीलिङ्ग एकवचन रहते हैं। 'अट्ठनवुत्ति' (अट्ठानवे) तक जितने इकारान्त शब्द हैं, उनके रूप 'रत्ति' शब्द के समान; तथा जितने आकारान्त शब्द हैं, उनके रूप 'कञ्ञा' शब्द के समान होंगे। जैसे—

विंसति मनुस्सा; विंसति फलानि; विंसति इत्थी। विंसतिं मनुस्से; विंसतिं फलानि। विंसतिं इत्थी। पञ्ञासा (=पचास) मनुस्सा; पञ्ञासा फलानि; पञ्ञासा इत्थी।

§ ८. 'सतं' से लेकर 'सतसहस्सं' तक, सभी शब्द सदा नपुंसक लिङ्ग एक वचन रहते हैं। जैसे—सतं मनुस्सा; सतेन मनुस्सेहि; सतं इत्थी; सतं फलानि।

[विशेष देखिए—तीसरा काण्ड : सातवाँ पाठ]

§ ९. पूरणवाची शब्द भी विशेषण हैं। जैसे—पठमो बालको; पठमा बालिका; पठमं फलं। [देखिए—पृ० १७५]

३. कृदन्त

§ १०. कुछ कृदन्त शब्द विशेषण के समान व्यवहृत होते हैं। जैसे—

न्त, मान

'न्त' प्रत्ययान्त शब्द के रूप, पुल्लिङ्ग तथा नपुंसक लिङ्ग में 'गच्छन्त' शब्द के समान होंगे। स्त्रीलिङ्ग में यह 'गच्छन्ती' या 'गच्छती' हो जायगा; और इसके रूप 'इत्थी' शब्द के समान होंगे। जैसे—

पठन्तो बालको। पतन्तं फलं। पठन्ती—पठती बालिका।

'मान' प्रत्ययान्त शब्द के रूप पुल्लिङ्ग में 'बुद्ध' शब्द के समान, नपुंसक लिङ्ग में 'फल' शब्द के समान, तथा स्त्रीलिङ्ग में 'कञ्ञा' शब्द के समान होंगे। जैसे—

पठमानो बालको; पतमानं फलं; पठमाना बालिका। [देखिये—पृ० ९२]

क्त, क्तवन्तु, तावी

'क्त' प्रत्ययान्त शब्द के रूप, पुल्लिङ्ग में 'बुद्ध' शब्द के समान, नपुंसक लिङ्ग में 'फल' शब्द के समान, तथा स्त्रीलिङ्ग में 'लता' शब्द के समान होते हैं। जैसे—

गतो बालको; गता बालिका; दिट्ठं फलं।

'क्तवन्तु' तथा 'तावी' प्रत्ययान्त शब्द कर्ता के विशेषण होते हैं। पुल्लिङ्ग में, 'क्तवन्तु' प्रत्ययान्त शब्द के रूप 'गुणवन्तु' शब्द के समान, तथा 'तावी' प्रत्ययान्त शब्द के रूप 'दण्डी' शब्द के समान होते हैं। जैसे—

राजा रञ्ञं विजितवा; राजानो रञ्ञं विजितवन्तो। राजा रञ्ञं विजितावी; राजानो रञ्ञं विजिताविनो।

नपुंसक लिङ्ग में, 'क्तवन्तु' प्रत्ययान्त शब्द के रूप 'गुणवन्तु' शब्द के समान, तथा 'तावी' प्रत्ययान्त शब्द के रूप 'सुखकारी' शब्द के समान होते हैं। जैसे—

पतितवं फलं; पतितवन्तानि फलानि। पतिताविं फलं; पतितावीनि फलानि।

स्त्रीलिङ्ग में, 'क्तवन्तु' प्रत्ययान्त शब्द के रूप 'गुणवन्ती-गुणवती' शब्द के समान, तथा 'तावी' प्रत्ययान्त शब्द के रूप 'पतिताविनी'-इत्थी शब्द के समान होते हैं। जैसे—

पतितवन्ती—पतितवती धारा; पतितवन्तियो—पतितवतियो धारायो। पतिताविनी धारा; पतिताविनियो धारायो।

[देखिए—पृ० १४२]

तब्ब, अनीय, य

'तव्व', 'अनीय', तथा 'य' प्रत्ययान्त शब्द विशेषण के समान प्रयुक्त होते हैं। जैसे—

पस्सितव्वो रुक्खो; पस्सितब्बा नदी; पस्सितब्बं फलं। दस्सनीयो रुक्खो। देय्यो ब्राह्मणो; देय्यं दानं। [देखिए—पृ० १५०]

४. तद्धितान्त

११. कुछ तद्धित-प्रत्ययान्त शब्द विशेषण होते हैं। जैसे—

रति, रीवतक, रित्तक

'किं' शब्द से परे ये प्रत्यय लगते हैं। जैसे—कति, कीवतकं, कित्तकं।

'कति' शब्द के रूप तीनों लिङ्गों में एक जैसे होते हैं; तथा, वह नित्य अनेक वचनान्त रहता है। जैसे—कति मनुस्सा=कितने मनुष्य? कति फलानि? कति इत्थी? [देखिए—पृ० १७४,२४७]

'कीवतक' तथा 'कित्तक' शब्दों के रूप पुल्लिङ्ग में 'बुद्ध' शब्द के समान, नपुंसक लिङ्ग में 'फल' शब्द के समान, तथा स्त्रीलिङ्ग में 'लता' शब्द के समान होते हैं। जैसे—

कीवतका—कित्तका बालका? कीवतकानि—कित्तकानि फलानि? कीवतकायो—कित्तकायो इत्थी?

कतर—कतम

जैसे—कतरो—कतमो देवदत्तो भवतं?

एय्य

जैसे—"दक्खिणेय्यो भगवतो सावकसंघो"=भगवान् का श्रावक-संघ दक्षिणा देने योग्य है।

११

णिक

जैसे—मानसिको—सारीरिको रोगो=मन-शरीर का रोग। वातिको आबाधो=वायु का रोग। सोवग्गिको धम्मो=जो धर्म्म स्वर्ग ले जाय। पेत्तिकं धनं=बपौती धन। अरञ्ञिको भिक्खु=जंगल में रहने वाला भिक्षु।

तन

जैसे—अज्जतनी वुत्ति=आज की खबर। स्वातनी—हिय्यतनी वुत्ति।

इम

जैसे—मज्झिमो। अन्तिमो।

१८. अभ्यास

१. हिन्दी में अनुवाद कीजिए—

अत्तना जाति-धम्मो समानो (सन्तो), मरण-धम्मो समानो तेसु धम्मेसु आदीनवं (दोष) विदित्वा योग-क्खेमं निब्बाणं परियेसितब्बं। योगो करणीयो। पधानं पदहितब्बं। आयस्मा खो राहुलो भगवन्तं आगच्छन्तं दिस्वान आसनं पञ्ञापेसि। भगवा पञ्ञत्ते आसने निसज्ज, पादे पक्खालेसि। पच्चवेक्खित्वा पच्चवेक्खित्वा कायेन कम्मं कत्तब्बं वाचाय च मनसा च। मेत्तं भावनं भावयमानस्स (भावयतो) ब्यापादो पहीयति। भगवा जानं जानाति, पस्सं पस्सति। दक्खिणेय्यो भगवतो सावकसंघो। आरद्धिको भिक्खु मेत्तं भावेति।

उदितं सुरियं संपस्समानेन आलोकं पि दट्ठब्बं होति। आलोकस्मिं झायमानस्स थीन-मिद्धं (आलस्य) पहीनं होति। कतमानि झानानि भावेतब्बानि? कतरस्मिं हत्थे पुप्फं गण्हितब्बं। भुत्ताविना भत्त-संमोदनं कत्तब्बं। अञ्ञाताविना धम्मो देसितब्बो।

२. पालि में अनुवाद कीजिए—

फल खानेवाले को आलस्य नहीं होता है। वन में ध्यान करनेवालों का चित्त शान्त रहता है। किस आँख में पीड़ा है? किन किन धम्मों को जानना चाहिए? भगवान् के कहे किन किन भावनाओं को कर सकते हो? स्वर्ग चाहने वालों को भगवान् के उपदिष्ट धम्मों में श्रद्धा उत्पन्न करना चाहिए। धम्मं सुनकर प्रयत्न में जुट जाना चाहिए। प्रयत्न करते हुए विरति को हटाना चाहिए। दुःखितों को देखकर दया करनी चाहिए। प्राण को मारना नहीं चाहिए। सभी सत्वों में मैत्रि-भावना करनी चाहिए।

तीसरा काण्ड

सातवाँ पाठ

सर्वनाम-प्रकरण

(तीसरा भाग—संख्या-वाचक)

संख्या-वाचक शब्द प्रायः विशेषण की तरह प्रयुक्त होते हैं; अतः, उनमें वही लिङ्ग, विभक्ति, और वचन होते हैं जो उनके विशेष्य में हैं।

'एक' शब्द की गिनती सर्वनाम शब्दों में की गई है। 'संख्या', 'अतुल्य', 'असहाय', तथा 'अन्य'—इतने अर्थों में 'एक' शब्द प्रयुक्त होता है। संख्या के अर्थ में, 'एक' शब्द एक वचन ही में होता है [देखिए—पृ० २६]।

§ १२. एक

पुल्लिङ्ग

	एकवचन	अनेकवचन
पठमा	एको	एके
दुतिया	एकं	एके
ततिया	एकेन	एकेहि, एकेभि
चतुत्थी	एकस्स	एकेसं, एकेसानं
पञ्चमी	एकम्हा, एकस्मा	एकेहि, एकेभि
छट्ठी	एकस्स	एकेसं, एकेसानं
सत्तमी	एकम्हि, एकस्मिं	एकेसु

नपुंसक लिंग

	एकवचन	अनेकवचन
पठमा	एकं	एके, एकानि
दुतिया	एकं	एके, एकानि

शेष पुल्लिङ्ग के समान

स्त्रीलिंग

	एकवचन	अनेकवचन
पठमा	एका	एका, एकायो
दुतिया	एकं	एका, एकायो
ततिया	एकाय	एकाभि, एकाहि
चतुत्थी	एकस्सा, एकाय	एकासं, एकासानं
पञ्चमी	एकाय	एकाहि, एकाभि
छट्ठी	एकस्सा, एकाय	एकासं, एकासानं
सत्तमी	एकस्सं, एकायं	एकासु

§१३. 'द्वि' शब्द सदा अनेक-वचन रहता है; तथा, तीनों लिङ्गों में इसके रूप समान ही होते हैं। जैसे—

	अनेकवचन
पठमा	दुवे, द्वे
दुतिया	दुवे, द्वे
ततिया	द्वीहि, द्वीभि
चतुत्थी	द्विन्नं, दुविन्नं
पञ्चमी	द्वीहि, द्वीभि
छट्ठी	द्विन्नं, दुविन्नं
सत्तमी	द्वीसु

§ १४. 'उभ' (=दोनों) शब्द भी, सदा अनेक-वचन रहता है; तथा तीनों लिङ्गों में इसके रूप समान ही होते हैं। जैसे—

	अनेकवचन
पठमा	उभो
दुतिया	उभो
ततिया	उभोहि[१], उभोभि, उभेहि, उभेभि
चतुत्थी	उभिन्नं[२]
पञ्चमी	उभोहि, उभोभि, उभेहि, उभेभि
छट्ठी	उभिन्नं[२]
सत्तमी	उभोसु,[१] उभेसु

§ १५. 'ति' (=तीन) शब्द भी सदा अनेक-वचन रहता है। तीनों लिङ्गों में इसके रूप भिन्न भिन्न होते हैं। जैसे—

	पुल्लिङ्ग	स्त्रीलिङ्ग	नपुंसकलिङ्ग
पठमा	तयो[१]	तिस्सो[२]	तीणि[१]
दुतिया	तयो[१]	तिस्सो	तीणि
ततिया	तीहि, तीभि	तीहि, तीभि	शेष पुल्लिङ्ग के समान
चतुत्थी	तिण्णं, तिण्णन्नं[१]	तिस्सन्नं[२]	
पञ्चमी	तीहि, तीभि	तीहि, तीभि	
छट्ठी	तिण्णं, तिण्णन्नं	तिस्सन्नं	
सत्तमी	तीसु	तीसु	

---

१. योम्हि द्विन्नं दुवे द्वे २.२२१—'यो' विभक्ति के साथ, 'द्वि' शब्द के रूप 'दुवे', तथा 'द्वे' होते हैं।

२. नम्हि नुक् द्वादीनं सत्तरसन्नं २.४१—'द्वि' से लेकर 'अट्ठारस' तक, शब्द से परे, 'नं' विभक्ति का 'न्नं' आदेश हो जाता है। जैसे—द्वि+नं=द्विन्नं। तिन्नं। चतुरन्नं। पञ्चन्नं। छन्नं। सत्तन्नं। अट्ठन्नं। नवन्नं। दसन्नं। एकादसन्नं। बारसन्नं। तेरसन्नं। चतुद्दसन्नं। पञ्चदसन्नं। सोळसन्नं। सत्तदसन्नं। अट्ठादसन्नं।

§१६. 'चतु' (=चार) शब्द भी सदा अनेकवचन रहता है। तीनों लिङ्गों में इसके रूप भिन्न भिन्न होते हैं। जैसे—

	पुल्लिङ्ग	स्त्रीलिङ्ग	नपुंसकलिङ्ग
पठमा	चत्तारो, चतुरो[5]	चतस्सो	चत्तारि
दुतिया	चत्तारो, चतुरो	चतस्सो	चत्तारि
ततिया	चतूहि, चतूभि	चतूहि, चतूभि	शेष पुल्लिङ्ग
चतुत्थी	चतुन्नं	चतस्सन्नं	के समान
पञ्चमी	चतूहि, चतूभि	चतूहि, चतूभि	
छट्ठी	चतुन्नं	चतस्सन्नं	
सत्तमी	चतुसु	चतुसु	

दुविन्नं नम्हि वा २.२२२—'नं' विभक्ति के साथ, 'द्वि' शब्द का रूप विकल्प से 'दुविन्नं' होता है।

३. सुहिसु भस्सो २.५८—'सु' तथा 'हि' विभक्तियों के आने से, 'उभ' शब्द का 'उभो' हो जाता है। जैसे—उभोहि। उभोसु।

४. उभिन्नं २.५२—'उभ' शब्द से परे, 'नं' विभक्ति का 'इन्नं' आदेश होता है। जैसे—उभ+नं=उभिन्नं।

५. पुमे तयो चत्तारो २.२०९—पुल्लिङ्ग में, 'यो' विभक्ति के साथ, 'ति' तथा 'चतु' शब्दों के रूप क्रमशः 'तयो' तथा 'चत्तारो' होते हैं।

६. ण्णं ण्णन्नं तितो ज्झा २.५१—पुल्लिङ्ग तथा नपुंसकलिङ्ग में, 'ति' शब्द से परे, 'नं' विभक्ति का 'ण्णं' तथा 'ण्णन्नं' आदेश हो जाता है। जैसे—ति+नं=तिण्णं, तिण्णन्नं।

७. तिस्सो चतस्सो योम्हि सविभत्तीनं २.२०७—स्त्रीलिङ्ग में, 'यो' विभक्ति के साथ, 'ति' तथा 'चतु' शब्दों के रूप क्रमशः 'तिस्सो' तथा 'चतस्सो' होते हैं।

८. नम्हि तिचतुन्नमित्थियं तिस्सचतस्सा २.२०६—'नं' विभक्ति आने से, 'ति' तथा 'चतु' शब्दों का क्रमशः 'तिस्स' तथा 'चतुस्स' आदेश हो जाता है। जैसे—तिस्सन्नं। चतस्सन्नं।

§ १७. पञ्च (=पाँच), छ, सत्त (=सात), अट्ठ (=आठ), नव, दस, एकादस[11]—एकारस (=ग्यारह), बारस*—द्वादस,[12] (=बारह), तेरस[13]—† तेळस (=तेरह), चुद्दस[14]—चोद्दस—चतुद्दस (=चौदह), पञ्चदस[15]—पन्नरस (=पन्दरह), सोळस[16]—सोरस (=सोलह), अट्ठारस—अट्ठादस[11]

---

९. तीणि चत्तारि नपुंसके २.२०८—नपुंसक में, 'यो' विभक्ति के साथ, 'ति' तथा 'चतु' शब्दों के रूप क्रमशः 'तीणि' तथा 'चत्तारि' होते हैं।

१०. चतुरो वा चतुस्स २.२१०—पुल्लिङ्ग में, 'यो' विभक्ति के साथ, 'चतु' शब्द का रूप विकल्प से 'चतुरो' होता है।

११. एकट्ठानमा ३.१०२—'दस' शब्द परे हो, तो 'एक' तथा 'अट्ठ' शब्दों के अन्त्य स्वर का 'आ' होता है। जैसे—एकादस। अट्ठादस।

र संख्यातो वा ३.१०३—संख्या से परे, 'दस' शब्द के 'द' का विकल्प से 'र' हो जाता है। जैसे—एकारस, एकादस। बारस, द्वादस। पन्नरस, पञ्चदस। सत्तरस, सत्तदस।

* 'पञ्च' का 'पन्न', तथा 'द्वि' का 'बा' आदेश होने पर, उससे परे 'दस' के 'द' का 'र' नित्य होता है। 'चतुद्दस' में 'द' का 'र' नहीं होता है।

१२. आ संख्यायासतादो, नञ्ञत्थे ३.९४—अन्यार्थ समास हो, तो 'सतं' आदि को छोड़, किसी संख्या के उत्तर पद में रहने से, 'द्वि' का 'द्वा' हो जाता है। जैसे—द्वादस। द्वावीसति। द्वत्तिंस।

१३. तिस्से ३.९५—अन्यार्थ समास हो, तो 'सतं' आदि को छोड़, किसी संख्या के उत्तर पद में रहने से, 'ति' का 'ते' हो जाता है। जैसे—ति+दस= तेरस। तेवीस। तेत्तिंस।

† छतीहि ळो च ३.१०४—'छ' तथा 'ति' शब्दों से परे, 'दस' शब्द के 'द' का विकल्प से 'ळ' हो जाता है। जैसे—सोळस, सोरस। तेळस, तेरस।

१४. चतुस्स चुचो दसे ३.१००—'दस' शब्द परे हो, तो 'चतु' शब्द का 'चु' तथा 'चो' आदेश होता है। जैसे—चतुद्दस, चुद्दस, चोद्दस।

१५. वीसतिदसेसु पञ्चस्स पण्णुपन्ना ३.९९—'वीसति' तथा 'दस' शब्द परे हों, तो 'पञ्च' शब्द का विकल्प से क्रमशः 'पण्णु' तथा 'पन्न' आदेश हो

(=अट्ठारह)—इतने शब्द सदा अनेकवचन रहते हैं। इनके रूप तीनों लिङ्गों में समान होते हैं। जैसे—

	अनेकवचन
पठमा	पञ्च[17]
दुतिया	पञ्च
ततिया	पञ्चहि,[18] पञ्चभि
चतुत्थी	पञ्चन्नं[18]
पञ्चमी	पञ्चहि, पञ्चभि
छट्ठी	पञ्चन्नं
सत्तमी	पञ्चसु[18]

इसी तरह, 'अट्ठारस-अट्ठादस' तक सभी शब्दों के रूप होंगे।

§ १८. एकूनवीसति (=उन्नीस) से लेकर 'नवुति' (=नब्बे) तक, सभी शब्द नित्य 'स्त्रीलिङ्ग—एक वचन' होते हैं। जैसे—

	एकवचन
पठमा	एकूनवीसति
दुतिया	एकूनवीसतिं
ततिया	एकूनवीसतिया

जाता है। जैसे—पण्णुवीसति, पञ्चवीसति। पन्नरस, पञ्चदस।

१६. छस्स सो ३.१०१—'दस' शब्द परे हो, तो उससे पूर्व 'छ' का 'स' हो जाता है। जैसे—सोळस।

१७. ट पञ्चादीहि चुद्दसहि २.१७१—'पञ्च' से लेकर 'अट्ठारस' तक, शब्द से परे 'यो' विभक्ति का 'अ' आदेश होता है। जैसे—पञ्च+यो= पञ्च। दस+यो=दस।

१८. पञ्चादीनं चुद्दसन्नम २.९२—'सु', 'नं', तथा 'हि' विभक्तियों के आने से, 'पञ्च' से ले कर 'अट्ठारस' तक, शब्द का अन्त्य स्वर 'अ' होता है। जैसे—पञ्चसु। पञ्चन्नं। पञ्चहि। छसु। छन्नं। छहि।

	एक वचन
चतुत्थी	एकूनवीसतिया
पञ्चमी	एकूनवीसतिया
छट्ठी	एकूनवीसतिया
सत्तमी	एकूनवीसतियं

इसी तरह, निम्न शब्दों के भी रूप होंगे—

२० वीसति
२१ एकवीसति
२२ द्वेवीसति
द्वावीसति
बावीसति
२३ तेवीसति
२४ चतुवीसति
२५ पञ्चवीसति
पण्णुवीसति
पण्णवीसति
२६ छब्बीसति
२७ सत्तवीसति
२८ अट्ठवीसति
२९ एकूनतिंसति
३० तिंसति
३१ एकतिंसति
३२ द्वत्तिंसति
बत्तिंसति
३३ तेत्तिंसति
३४ चतुत्तिंसति
३५ पञ्चतिंसति
३६ छत्तिंसति
३७ सत्ततिंसति
३८ अट्ठतिंसति
३९ एकूनचत्तालीसति
४० चत्तालीसति
४१ एकचत्तालीसति
४२ द्वाचत्तालीसति"
द्विचत्तालीसति
४३ तेचत्तालीसति"
तिचत्तालीसति
४४ चतुचत्तालीसति
चोत्तालीसति
चुत्तालीसति
४५ पञ्चचत्तालीसति
४६ छचत्तालीसति
४७ सत्तचत्तालीसति
४८ अट्ठचत्तालीसति
अट्ठचत्तारीसति
४९ एकूनपञ्ञासा
५० पञ्ञासा
५१ एकपञ्ञासा
५२ द्वेपञ्ञासा
द्विपञ्ञासा

५३ तेपञ्ञासा
तिपञ्ञासा
५४ चतुपञ्ञासा
५५ पञ्चपञ्ञासा
५६ छपञ्ञासा
५७ सत्तपञ्ञासा
५८ अट्ठपञ्ञासा
५९ एकूनसट्ठि
६० सट्ठि
६१ एकसट्ठि
६२ द्वासट्ठि,
द्वेसट्ठि
द्विसट्ठि
६३ तेसट्ठि
तिसट्ठि
६४ चतुसट्ठि
६५ पञ्चसट्ठि
६६ छसट्ठि
६७ सत्तसट्ठि
६८ अट्ठसट्ठि
६९ एकूनसत्तति
७० सत्तति
७१ एकसत्तति
७२ द्वासत्तति
द्विसत्तति
७३ तेसत्तति
तिसत्तति
७४ चतुसत्तति
७५ पञ्चसत्तति
७६ छसत्तति
७७ सत्तसत्तति
७८ अट्ठसत्तति
७९ एकूनासीति
८० असीति
८१ एकासीति
८२ द्वेअसीति
द्वासीति
८३ तेअसीति

---

१९. द्वि स्सा च ३.९७—'चत्तालीस' आदि शब्द परपद में हो, तो 'द्वि' का विकल्प से 'द्वे' तथा 'द्वा' हो जाता है। जैसे—द्वेचत्तालीस, द्वाचत्तालीस, द्विचत्तालीस। द्वेपञ्ञास, द्वापञ्ञास, द्विपञ्ञास। द्वेसट्ठि, द्वासट्ठि, द्विसट्ठि। द्वेसत्तति, द्वासत्तति, द्विसत्तति। द्वे असीति, द्वासीति, द्वि असीति। द्वेनवुत्ति, द्वानवुति, द्विनवुति।

२०. च त्ता ली सा दो वा ३.९६—'चत्तालीस' आदि शब्द परपद में हो, तो 'ति' का विकल्प से 'ते' हो जाता है जैसे—तेचत्तालीस, तिचत्तालीस। तेपञ्ञास, तिपञ्ञास। तेसट्ठि, तिसट्ठि। तेसत्तति, तिसत्तति। तेअसीति, तियासीति, तिअसीति। तेनवुति, तिनवुति।

८४ चतुरासीति	द्वेनवुति
८५ पञ्चासीति	द्विनवुति
८६ छासीति	९३ तेनवुति
८७ सत्तासीति	तिनवुति
८८ अट्ठासीति	९४ चतुनवुति
८९ एकूननवुति	९५ पञ्चनवुति
९० नवुति	९६ छन्नवुति
९१ एकनवुति	९७ सत्तनवुति
९२ द्वानवुति	९८ अट्ठनवुति

§१९. 'अट्ठनवुति' तक, जितने इकारान्त शब्द हैं, सभी के रूप 'रत्ति' शब्द के समान; तथा जितने आकारान्त शब्द हैं, सभी के रूप 'कञ्ञा' शब्द के समान होंगे। *स्मरण रहे, कि ये सभी शब्द नित्य स्त्रीलिङ्ग एकवचन होते हैं।*

§२०. 'सतं' (=सौ) शब्द नपुंसक लिङ्ग एकवचन होता है। जैसे—

९९ एकूनसतं (=निन्नानवे)

	एकवचन
पठमा	एकूनसतं
दुतिया	एकूनसतं
ततिया	एकूनसतेन
चतुत्थी	एकूनसतस्स, एकूनसताय
पञ्चमी	एकूनसता, एकूनसतस्मा, एकूनसतम्हा
छट्ठी	एकूनसतस्स
सत्तमी	एकूनसते, एकूनसतम्हि, एकूनसतस्मिं

§२१. 'सतं' शब्द से ले कर 'सतसहस्सं' (=शतसहस्र) शब्द तक, सभी शब्द नपुंसक लिङ्ग एकवचन होते हैं। जैसे—सतं मनुस्सा। सहस्सं कञ्ञायो। सतसहस्सं फलानि।

§२२. 'कोटि', 'पकोटि', 'कोटिप्पकोटि', 'अक्खोहिणी'—इतने शब्द स्त्रीलिङ्ग एकवचन होते हैं। जैसे—कोटि मनुस्सा, कञ्ञायो, फलानि वा।

§ २३. उतने उतने का वर्ग जाना जाय, तो इन शब्दों में अनेक वचन भी होता है। जैसे—द्वे वीसतियो, तीणि सतानि, चत्तारि सहस्सानि, तिस्सो कोटियो।

'सौ' से ऊपर की संख्यायें—'ड' प्रत्यय

§ २४. संख्याय सच्चुतीसासवसन्ताधिकस्मि सतसहस्से ड़ो ४.५०—'इस सौ या हजार में इतना अधिक है', इस अर्थ में सत्यन्त, उत्यन्त, ईसान्त, आसान्त, तथा दसान्त संख्याओं से परे, 'ड' प्रत्यय होता है। जैसे—वीसति अधिका अस्मि सते 'ति'—वीसं सतं,[२१] सहस्सं, सतसहस्सं वा। तिंसं सतं, एकतिंसं सतं।

उत्यन्त—नवुति + ड + सतं = नवुतं सतं। नवुतं सहस्सं। नवुतं सतसहस्सं।
ईसान्त—चत्तारीसं सतं, सहस्सं, सतसहस्सं वा।
आसान्त—पञ्ञासं सतं, सहस्सं, सतसहस्सं वा।
दसान्त—एकादसं सतं, सहस्सं, सतसहस्सं वा।

§ २५. दूसरी संख्याओं के साथ, 'अधिक' शब्द का समास होता है। जैसे—एकाधिकं सतं, सहस्सं, सतसहस्सं। द्वयाधिकं सतं। नवाधिकं सतं।

§ २६. पालि में, सौ के ऊपर की संख्यायें निम्न प्रकार हैं—

सतं	एक पर	२	शून्य
सहस्सं	,,	३	,,
नहुतं	,,	४	,,
सतसहस्सं	,,	५	,,
कोटि	,,	७	,,
पकोटि	,,	१४	,,
कोटिप्पकोटि	,,	२१	,,
(पुन) नहुतं	,,	२८	,,

---

२१. डे सतिस्स तिस्स ४.१३९—'ड' प्रत्यय आने से, सत्यन्त संख्या-वाचक शब्दों के 'ति' का लोप हो जाता है। जैसे—वीसति + ड = वीसं सतं। तिंसं सतं।

निन्नहुतं	एक पर	३५	शून्य
अक्खोहिणी	,,	४२	,,
बिन्दु	,,	४९	,,
अब्बुदं	,,	५६	,,
निरब्बुदं	,,	६३	,,
अहहं	,,	७०	,,
अबबं	,,	७७	,,
अटटं	,,	८४	,,
सोगन्धिकं	,,	९१	,,
उप्पलं	,,	९८	,,
कुमुदं	,,	१०५	,,
पुण्डरीकं	,,	११२	,,
पदुमं	,,	११९	,,
कथानं	,,	१२६	,,
महाकथानं	,,	१३३	,,
असंखेय्यं	,,	१४०	,,

कति

§२७. ठि कति म्हा २.१७०—'कति' (=कितना) शब्द नित्य अनेक वचन होता है। तीनों लिङ्गों में इसके रूप समान होते हैं। जैसे—

	अनेकवचन
पठमा	कति
दुतिया	कति
ततिया	कतीहि, कतीभि
चतुत्थी	कतीनं, कतिन्नं[२२]
पञ्चमी	कतीहि, कतीभि
छट्ठी	कतीनं, कतिन्नं
सत्तमी	कतीसु

§ २८. पूरण वाची शब्द

	पुल्लिङ्ग	स्त्रीलिङ्ग	नपुंसक लिङ्ग
१	पठमो=पहला	पठमा=पहली	पठमं=पहला
२	दुतियो	दुतिया	दुतियं
३	ततियो	ततिया	ततियं
४	चतुत्थो	चतुत्थी, चतुत्था	चतुत्थं
	तुरीयो	तुरीया	तुरीयं
५	पञ्चमो[२३]	पञ्चमी	पञ्चमं
६	छट्ठो[२४]	छट्ठा, छट्ठी	छट्ठं
	छट्ठमो	छट्ठमी	छट्ठमं
७	सत्तमो	सत्तमा, सत्तमी	सत्तमं
८	अट्ठमो	अट्ठमा, अट्ठमी	अट्ठमं
९	नवमो	नवमा, नवमी	नवमं
१०	दसमो	दसमा, दसमी	दसमं
११	एकादसो, एकादसमो[२५]	एकादसी	एकादसमं
१२	बारसो, बारसमो, द्वादसमो	द्वादसी	बारसमं, द्वादसमं

---

२२. बहुकतिन्नं २.५०—'बहु' तथा 'कति' शब्दों से परे, 'नं' विभक्ति का 'न्नं' आदेश हो जाता है। जैसे—बहुन्नं। कतिन्नं।

२३. म पंचादिकतीहि ४.५२—'पंच' आदि, तथा 'कति' शब्द से परे पूरण के अर्थ में 'म' प्रत्यय होता है। जैसे—पञ्चमो। सत्तमो। अट्ठमो। कतिमो।

२४. छा ट्ठट्ठमा ४.५४—पूरण के अर्थ में, 'छ' शब्द से परे 'ट्ठ' तथा 'ट्ठम' प्रत्यय होते हैं। जैसे—छट्ठो, छट्ठमो। दुतिय, ततिय, चतुत्थ निपात हैं।

२५. तस्स पूरणेकादसादितो वा ४.५१—पूरण के अर्थ में, 'एकादस' आदि संख्या से परे, विकल्प से 'ड' प्रत्यय होता है। जैसे—एकादसो, एकादसमो। द्वादसो, द्वादसमो। वीसो, वीसतिमो। तिंसो, तिंसतिमो। चत्तालीसो। पञ्ञासो।

	पुल्लिङ्ग	स्त्रीलिङ्ग	नपुंसक लिङ्ग
१३	तेरसो, तेरसमो	तेरसी	तेरसमं
१४	चतुद्दसमो	चतुद्दसी, चातुद्दसी	चतुद्दसमं
१५	पञ्चदसमो,	पञ्चदसी	पञ्चदसमं
	पण्णरसमो	पण्णरसी	पण्णरसमं
१६	सोळसमो	सोळसी	सोळसमं
१७	सत्तरसमो	सत्तरसी	सत्तरसमं
	सत्तदसमो	सत्तदसी	सत्तदसमं
१८	अट्ठारसमो	अट्ठारसी	अट्ठारसमं
	अट्ठादसमो	अट्ठादसी	अट्ठादसमं
१९	एकूनवीसतिमो	एकूनवीसतिमा	एकूनवीसतिमं
		एकूनवीसतिमी	

इसके आगे[२६] के संख्यावाचक शब्दों के साथ 'म' लगा कर, उसका पूरण बना लेते हैं। जैसे—एकवीसतिमो, तिंसतिमो इत्यादि।

§२९. चतुत्थततियानमड्ढुड्ढतिया ३.१०५—'अड्ढ' (=अर्ध) शब्द से परे, 'चतुत्थ' तथा 'ततिय' का क्रमशः 'उड्ढ' तथा 'तिय' आदेश हो जाता है। जैसे—

अड्ढेन चतुत्थो—अड्ढुड्ढो (=साढ़े तीन)।

अड्ढेन ततियो—अड्ढतियो (=अढ़ाई)।

§३०. दुतियस्स सह दियड्ढ दिवड्ढा ४.१०६—'अड्ढ' शब्द के साथ, 'दुतिय' का समास होने से, 'दियड्ढ' तथा 'दिवड्ढ' रूप होते हैं। जैसे—अड्ढेन दुतियो—दियड्ढो, दिवड्ढो (=डेढ़)।

---

२६. सतादीनमि च ४.५३—पूरण के अर्थ में, 'सत' आदि संख्यावाचक शब्दों से परे, 'म' प्रत्यय होता है; तथा, शब्द के अन्त्य स्वर का इकार हो जाता है। जैसे—सतिमो। सहस्सिमो।

१६. अभ्यास

१. हिन्दी में अनुवाद कीजिए—

एकं समयं, द्वे भिक्खू तिण्णं सञ्ञोजनानं खयं पापुणिंसु। चत्तारि अरिय-सच्चानि पञ्ञातब्बानि। पञ्च पञ्चका वग्गा पञ्चवीसति (=पण्णवीसति) वण्णा होन्ति। चतूसु (चतुसु) दिसासु। अट्ठसु परिसासु! सत्तन्नं सति-सम्बोज्झङ्गानं भावनं भावेतुं सक्का। नव दारका। दस दारिकायो। एकादस फलानि। चतस्सो अनुपस्सनायो, चत्तारि सम्मप्पधानानि, चत्तारो इद्धिपादा, पञ्च इन्द्रियाणि, पञ्च बलानि, सत्त बोज्झङ्गा, अट्ठ मग्गोति—सत्ततिंसति बोधि-पक्खिका धम्मा भावनीया, बहुली करणीया। पठमे कप्पे मनुस्सा दीघायुका अहेसुं। दुतियायं विभत्तियं 'अम्ह'-सद्दस्स 'मे' इति रूपं होति। एको देवो, द्वीहि देवपुत्तेहि सद्धिं, तीणि अहानि, चतस्सन्नं दिसानं रट्ठेसु विचरन्तो तत्थ पापुणि। वीसति च तिंसति च संकलिता पञ्ञासति होति। तेपञ्ञासा च द्वत्तिंसा च समग्गा पञ्चासीति होति।

२. पालि में अनुवाद कीजिए—

एक नगर में एक राजा रहता था। उसकी तीन रानियाँ थीं। पहली रानी को एक, दूसरी को दो, तथा तीसरी को तीन पुत्र थे। चारों दिशाओं में उसकी कीर्ति फैल गई थी। सातों वृक्षों के फल पके हैं। दस लड़के और ग्यारह लड़कियाँ यहाँ रहती हैं। सौ लड़के। हज़ार नदियाँ। करोड़ फल।

चौथा काण्ड

पहला पाठ

वाच्य-प्रकरण

§ १. पालि भाषा में वाच्य तीन हैं—
(१) कर्तृवाच्य, (२) भाववाच्य, (३) कर्मवाच्य।

१. कर्तृवाच्य

कर्तृवाच्य में, कर्ता में 'पठमा' विभक्ति, और कर्म में (यदि कोई हो तो) 'दुतिया' विभक्ति होती है। और, क्रिया के पुरुष तथा वचन, कर्ता के पुरुष तथा वचन के समान होते हैं। (देखिए—पृ० २९, ३०) जैसे—

अकर्मक—देवदत्तो हसति=देवदत्त हँसता है। यहाँ 'देवदत्त' कर्ता है; इसलिए, उसमें पठमा विभक्ति है। क्रिया, 'हसति' पठम पुरिस एक वचन है; क्योंकि, कर्ता 'देवदत्तो' भी पठम पुरिस एक वचन है। इसी तरह—बालका हसन्ति। अहं हसामि। मयं हसाम। त्वं हससि। तुम्हे हसथ।

सकर्मक—बालको कुक्कुरं पस्सति। बालको कुक्कुरे पस्सति।

२. भाववाच्य

भाववाच्य में, कर्त्ता में 'ततिया' विभक्ति होती है। 'कर्म' होता ही नहीं है; क्योंकि, भाववाच्य केवल अकर्मक धातु से ही बनता है। क्रिया, सदैव 'पठम पुरिस', 'एकवचन' रहती है। विभक्ति लगाने के पहले, धातु से परे, 'क्य' प्रत्यय आता है। 'क्य' का 'य' रह जाता है। (देखिए—पृ० १८०) जैसे—

बालकेन अत्र भूयते=लड़का यहाँ मौजूद है। बालकेहि अत्र भूयते=लड़के यहाँ मौजूद हैं। मया अत्र भूयते=मैं यहाँ मौजूद हूँ। त्वया अत्र भूयते=तुम

यहाँ मौजूद हो। मया अत्र भूयिस्सते=मैं यहाँ मौजूद रहूँगा। त्वया अत्र भूयि=तुम यहाँ मौजूद थे। सब्बेहि अत्र भूयेय्य=सबों को यहाँ मौजूद रहना चाहिए। इत्यादि

३. कर्मवाच्य

कर्मवाच्य में, कर्ता में 'ततिया' विभक्ति, और कर्म में 'पठमा' विभक्ति होती है। क्रिया के पुरुष और वचन, कर्म के पुरुष और वचन के समान होते हैं; तथा, विभक्ति लगाने के पहले, धातु से परे 'क्य' प्रत्यय आता है। 'क्य' का 'य' रह जाता है (देखिए—पृ० १८०)। जैसे—

रञ्ञा धनं दीयते=राजा के द्वारा धन दिया जाता है। रञ्ञा धनानि दीयन्ति=राजा के द्वारा धन दिए जाते हैं। पितरा त्वं (भत्तुनो) दीयसि=पिता के द्वारा तुम (पति को) दी जा रही हो। पितरा तुम्हे (भत्तुनो) दीयव्हे=पिता के द्वारा तुम लोग (पति को) दी जा रही हो। पितरा अहं (भत्तुनो) दीयामि=पिता के द्वारा मैं (पति को) दी जा रही हूँ। पितरा मयं (पतिनो) दीयाम=पिता के द्वारा हम लोग (पति को) दी जा रही हैं। इत्यादि।

द्रष्टव्य—जिस कर्मवाच्य में कर्तृपद उक्त न हो, तथा उसका वहाँ कोई प्राधान्य भी न हो, उसे "कर्म-कर्तृ वाच्य" कहते हैं। वहाँ, कर्म ही कर्ता के ऐसा जान पड़ता है। जैसे—ओदनं पच्चति (=मनुस्सो ओदनं पचति)।

सौकर्य तथा संक्षेप के लिए, अन्य कारक भी कर्ता के तौर पर प्रयुक्त होता है। जैसे—असि छिन्दति (=असिना छिन्दति)। थालि पचति (=थालियं पचति) ओदनं पचति।

निष्ठा

क्तवन्तु, क्तावी

(कर्तृवाच्य)

§ २. कर्तृवाच्य में, भूतकाल के अर्थ में, धातु से परे 'क्तवन्तु' तथा 'तावी' प्रत्यय होते हैं। प्रत्यय लगने से जो रूप बनता है, वह कर्ता का विशेषण होता है। जैसे—

राजा रज्जं विजितवा—विजितावी। राजानो रज्जं विजितवन्तो—विजिताविनो।

(देखिए—पृ० १४२ : १६०)

क्त

(कर्मवाच्य; भाववाच्य)

कर्म और भाववाच्य में, भूतकाल के अर्थ में, धातु से परे 'क्त' प्रत्यय होता है। प्रत्यय लगने से जो रूप बनता है, वह कर्मवाच्य में कर्म का विशेषण होता है; और भाववाच्य में सदा नपुंसकलिङ्ग एकवचन रहता है। जैसे

कर्म—रञ्ञा रज्जं विजितं; रञ्ञा रज्जानि विजितानि।

भाव—मया हसितं; अम्हेहि हसितं; त्वया हसितं; तुम्हेहि हसितं; तेन हसितं; तेहि हसितं।

क्त

(कर्तृवाच्य)

कुछ अवस्थाओं में, कर्तृवाच्य में भी, भूतकाल के अर्थ में धातु से परे 'क्त' प्रत्यय होता है। प्रत्यय लगने से जो रूप बनता है, वह कर्ता का विशेषण होता है। जैसे—

पसुत्तो बालको। पसुत्ता बालिका। गामं बालको गतो। गामं बालिका गता। रुक्खा फलानि पतितानि। (देखिए—पृ० १४२ : १४३ : १६०)

क्य

§ ३. क्यो भा व क म्मे स्व प रो क्खे सु मा न न्त्या दि सु ५.१७—भाव-वाच्य तथा कर्मवाच्य में, 'न्त', 'मान', तथा (परोक्ष भूत को छोड़) 'ति' आदि प्रत्ययों के आने पर, धातु से परे 'क्य' प्रत्यय होता है। 'क्य' का 'य' रह जाता है। जैसे—

ठीयमानं। ठीयते। सूयमानं। सूयते, सूयन्ते, सूयिस्सति इत्यादि।

§ ४. क्य स्स ६.३७—'क्य' प्रत्यय आने से, धातु से परे विकल्प से 'ई' का आगम होता है। जैसे—

पच + क्य + ति = पच + ई + क्य + ति = पचीयति ।

§ ५. क्य स्स स्से ६.४९—हेतुहेतुमद्भूत तथा भविष्यत्काल में, विकल्प से 'क्य' का लोप होता है। जैसे—

अन्वभविस्सा, अन्वभूयिस्सा। अनुभविस्सति, अनुभूयिस्सति।

§ ६. अ ञ्ञा दिं स्सा स्सी क्ये ५.१३७—'क्य' प्रत्यय आने से, 'ञा' आदि को छोड़, दूसरे आकारान्त धातु के आकार का ईकार हो जाता है। जैसे—

ठा + क्य + ते = ठीयते । दा + क्य + ते = दीयते । पा + क्य + ते = पीयते । ['ञ' आदि—तीसरा परिशिष्ट]

§ ७. त न स्सा वा ५.१३८—'क्य' प्रत्यय आने से, 'तन' धातु का विकल्प से 'ता' आदेश होता है। जैसे—तन + क्य + ते = तायते, (या) तञ्ञते।

§ ८. दी घो स र स्स ५.१३९—'क्य' प्रत्यय आने से, स्वरान्त धातु दीर्घ हो जाता है। जैसे—चि + क्य + ते = चीयते। सु + क्य + ते = सूयते।

२०. अभ्यास

१. हिन्दी में अनुवाद कीजिए—

(क) भगवा विहरति। भगवा निसीदति। भगवा समाधिम्हा उट्ठाति। भगवा मनसि-करोति। भगवा उदानं उदानेति। ब्राह्मणा झायन्ति। धम्मा पातु-भवन्ति। ब्राह्मणो सहेतु-धम्मं पजानाति।

(ख) भगवता विहरीयति। भगवता निसज्जते। भगवता समाधिम्हा उट्ठीयते। भगवता मनसि-करीयति। भगवता उदानं उदानीयति। ब्राह्मणेहि झायते। धम्मेहि पातु-भूयते। ब्राह्मणेहि सहेतु-धम्मो पञ्ञायते। देवेहि सक्को पुच्छीयते।

(ग) फस्स-पच्चया, वेदना सम्भवति। जाति-पच्चया, जरा-मरणं सम्भवति। तण्हा वड्ढति। असि छिन्दति। थाली पचति। देवो वस्सति।

(घ) दीयमानं दानं भिक्खूहि आदीयते। अदिन्नादाना अम्हेहि विरमितब्बं। बुद्धस्स सरणं सावकेहि गच्छीयते। हीयमानेहि अकुसलेहि धम्मेहि, न पुन पच्चा-गच्छीयति। तिट्ठमानेन वा, चरन्तेन वा, निसिन्नेन वा, सायानेन वा भिक्खुना सति अधिट्ठातब्बा, ब्रह्म-विहारेण विहरितब्बं। भुत्ताविना भिक्खुना न पुन भत्तं भुञ्जितब्बं।

(ङ) ब्रह्मना याचितो सन्तो, भगवा धम्म-चक्कं पवत्तयि। पञ्हे पुच्छीय-माने वा, धम्मे देसीयमाने वा, बुद्ध-धातुस्मि वस्सीयमाने वा, साधुकं सनिकं सनिकं मनसि करिस्सति सतिं उपट्ठपेन्तेन भिक्खुना। सुरियो दिस्सति (पस्सीयति, दक्खीयति)। धम्मो पि तथागतेन देसितो दिस्सति चक्खु-मन्तेहि विञ्ञूहि।

२. ऊपर काले अक्षरों में छपे पदों के रूप प्रथम-पुरुष एकवचन में लिखिए; और वाक्यों में उनका प्रयोग करके दिखाइए।

३. पालि में अनुवाद कीजिए—

(क) आकाश में सूर्य्य दिखाई दे रहा है। सूर्य्य देखते हुए मुझसे प्रकाश भी

देखा गया। धर्म्म समझते हुए भिक्खु लोगों से लोक-हित कार्य भी हुआ करता है। पालि-व्याकरण पढ़ा भी जाता है, पढ़ाया भी जाता है। पालि-व्याकरण पढ़ा जाना चाहिए, पढ़ा जा कर अच्छी तरह समझ लिया जाना चाहिए।

(ख) धर्म्म-दायाद होना चाहिए। धर्म्म-दायक होना चाहिए। माता-पिता का आज्ञा-पालन करना चाहिए। बुद्धों का शासन मानना चाहिए। तीन वेदों का पारङ्गत (पारगू) होना चाहिए। ब्राह्मण होना चाहिए। ब्राह्मण होने की इच्छा करने वाले मनुष्यों को बुद्ध भगवान् के उपदिष्ट धर्मों को सुनना चाहिए। सुनते हुए अच्छी तरह समझना चाहिए। समझते हुए आचरण करना चाहिए। धर्म्म ही करना योग्य है। धर्म्म ही से लोक का कल्याण होता है। कल्याण धर्म्म सुनते, करते, देखते हुए चित्त आस्रवों से मुक्त करना चाहिए।

४. निम्नलिखित नाम-पद और धातुओं से कर्तृवाच्य तथा कर्मवाच्य में वाक्य बनाइए—

(१)—बुद्धो-धम्मो-देस। (२)—दारको-पोत्थकं-पठ। (३)—कञ्ञा-सुरियो-पस्स।

(४)—भिक्खु-बुद्धो-वन्द। (५)—मुनि-धम्मो-चर। (६)—मनुस्सो-फलं-खाद।

५. निम्नलिखित कर्त्तृ-वाच्य वाक्यों का कर्म्म-वाच्य बनाइए—

ब्रह्मदत्तो रज्जं कारेसि। राम-पण्डितो अनिच्चतं पकासेति। वासुदेवो कंसं हनति। सीता-देवी राम-पण्डितं अनुगच्छति। लक्खण-कुमारो राम-पण्डितं वन्दति। बुद्धो भगवा धम्मं देसेति। भगवा उदानं उदानेसि।

चौथा काण्ड

दूसरा पाठ

क्रिया-प्रकरण

(छठा भाग—अनद्यतन, परोक्ष, हेतु० भूत)

अनद्यतन भूत[1]

जो काम आज से पहले हुआ हो, उसमें किसी धातु के रूप निम्न प्रकार होते हैं—

परस्स पद

	एकवचन	अनेकवचन
पठम पुरिस	पचा, अपचा,[2] अपच[3]	अपचु,[2] अपचू
मज्झिम पुरिस	अपचो[4]	अपचित्थ, अपचुत्थ
उत्तम पुरिस	अपच	अपचुम्हा, अपचिम्हा, अपचिम्ह[1]

---

१. अनज्जतने आ ऊ, ओ त्थ, अ म्हा : त्थ त्थुं, से व्हं, इं म्ह से ६.५—अनद्यतन अर्थ में, धातु से परे ये प्रत्यय होते हैं।

मा योगे ई आ आ वि ६.१३—'मा' शब्द के योग में, विकल्प से परिसमाप्त्यर्थक-भूत, तथा अनद्यतन भूत होते हैं। जैसे—

मास्सु पुनपि एवरूपमकासि। मा भवं अगमा वनं=आप वन मत जायें।

२. आ ई स्सा दि स्व ञ् वा ६.१५—अनद्यतन भूत, परिसमाप्त्यर्थक भूत, तथा हेतुहेतुमद्भूत में, धातु से पूर्व विकल्प से 'अ' का आगम होता है। जैसे—अपचा, पचा।

३. आ ई ऊ म्हा स्सा स्स म्हा नं वा ६.३३—'आ', 'ई', ऊ, म्हा, स्सा, स्सम्हा—इनका विकल्प से ह्रस्व हो जाता है। जैसे—

अत्तनो पद

	एकवचन	अनेकवचन
पठमपुरिस	अपचत्थ	अपचत्थुं
मज्झिमपुरिस	अपचसे	अपचव्हं
उत्तमपुरिस	अपचिं	अपचाम्हसे

§ १९. अनद्यतन भूतकाल में कुछ विशेष धातुओं के रूप—

वच—अवोच, अवोचु। कर—अका। गम—अगा। गम—अगञ्छा। डंस—अडञ्छा। (देखिए—पृ० ८६)

दिस—अद्दस, अद्दा। (देखिए—पृ० ११८)

[1]परोक्ष भूत

परस्स पद

	एकवचन	अनेकवचन
पठमपुरिस	पपच[5]	पपचु
मज्झिमपुरिस	पपचे	पपचित्थ
उत्तमपुरिस	पपच	पपचिम्ह

अपचा, अपच। अपची, अपचि। अपचू, अपचु। अपचिम्हा, अपचिम्ह। अपचिस्सा, अपचिस्स। अपचिस्सम्हा, अपचिस्सम्ह।

४. ओ स्स अ इ त्थ त्थो ६.४२—'ओ' का विकल्प से 'अ', 'इ', 'त्थ' तथा 'त्थो' आदेश होता है। जैसे—

त्वं अपच, अपचि, अपचित्थ, अपचित्थो, अपचो।

५. परोक्खे अ उ, ए त्थ, अ म्ह; त्थ रे, त्थो व्हो, इ म्हे ६.६—जो काम आज से पहले हुआ हो, तथा प्रत्यक्ष न हो, उस अर्थ में धातु से परे ये प्रत्यय होते हैं। जैसे—पपच, पपचु इत्यादि।

परोक्ष=जो अपनी इन्द्रियों से अनुभूत न हो। स्वप्न, उन्माद, तथा विष-

अत्तनो पद

	एकवचन	अनेकवचन
पठमपुरिस	पपचित्थ	पपचिरे
मज्झिमपुरिस	पपचित्थो	पपचिव्हो
उत्तमपुरिस	पपचि	पपचिम्हे

यान्तर में लगे हुए होने की स्थिति में, अपनी इन्द्रियों से अनुभूत क्रिया भी परोक्ष समझी जाती है। इस प्रकार के परोक्ष में, उत्तम-पुरुष में भी परोक्ष-भूत का प्रयोग होता है। जैसे—सुत्तोऽहं विललाप। मत्तोऽहं विललाप। अचेतनो हं पठविं पपत।

६. परोक्खायञ्च ५.७०—परोक्ष भूत में भी, प्रथम एक स्वर शब्द रूप का द्वित्व हो जाता है। जैसे—पच+अ=पपच। पच+उ=पपचु। इत्यादि

पाँचवाँ काण्ड-दूसरा पाठ में, द्वित्व होने के जो नियम आए हैं, सभी यहाँ लागू होंगे।

द्वित्व होने वाले धातु

परोक्ष भूत को छोड़, अन्य स्थानों में भी धातु का द्वित्व होता है। जैसे—हा—जहाति=छोड़ता है। जल—दद्दल्लति=खूब प्रज्वलित होता है। कम—चङ्कमति=बार बार घूमता है। कित—तिकिच्छति=चिकित्सा करता है। धा—दधाति। तिज—तितिक्खति=क्षमा करता है। मन—वीमंसति=मीमांसा करता है। गुप—जिगुच्छति। दा—ददाति=देता है।

तिजमानेहि खसा खमावीमंसासु ५.१—यदि 'तिज' धातु क्षमा के अर्थ में, और 'मान' धातु मीमांसा करने के अर्थ में हो, तो उनके साथ 'ख' तथा 'स' प्रत्यय होते हैं। जैसे—तिज—तितिक्खति। मान—वीमंसति।

मानस्स वी परस्स च मं ५.८०—'मान' धातु के द्वित्व होने से, पहले भाग का 'वी', तथा दूसरे भाग का 'मं' होता है। जैसे—वीमंसति।

कितातिकिच्छासंसयेसु छो ५.२—चिकित्सा तथा शंसय करने के अर्थ में, 'कित' धातु से परे 'छ' प्रत्यय होता है। जैसे—तिकिच्छति=चिकित्सा करता है। विचिकिच्छति=संशय करता है।

§ २०. परोक्षभूत में कुछ विशेष धातु के रूप—"ब्रू—आह। भू—बभूव"।

कितस्सा संसये ति वा ५.८१—संशय से भिन्न, दूसरे अर्थ में 'कित' धातु हो, तो उसके द्वित्व होने पर, पहले 'कि' का विकल्प से 'ति' होता है। जैसे—तिकिच्छति, चिकिच्छति = चिकित्सा करता है।

निन्दायं गुपबधा बस्स भो च ५.३—निन्दा करने के अर्थ में, 'गुप' तथा 'वध' धातु से परे, 'छ' प्रत्यय होता है; और, 'व' का 'भ' हो जाता है। जैसे—

गुप + छ + ति = जिगुच्छति
वध + छ + ति = बीभच्छति } निन्दा करता है।

धास्स हो ५.१०३—'धा' धातु के द्वित्व होने पर, दूसरे भाग का 'ह' हो जाता है। जैसे—धा + ति = दहति।

गुपिस्सुस्स ५.७७—द्वित्व होने पर, 'गुप' धातु के प्रथम 'उ' का 'इ' हो जाता है। जैसे—गुप + छ + ति = जिगुच्छति।

७. अ आ दिस्वाहो ब्रूस्स ६.१६—परोक्ष-भूत में, 'ब्रू' धातु का 'आह' आदेश हो जाता है। जैसे—आह, आहु।

उस्संस्वाहा वा ६.१९—'आह' आदेश हो जाने के बाद, 'उ' प्रत्यय का विकल्प से 'अंसु' आदेश हो जाता है। जैसे—आहंसु, आहु।

८. भुस्स वुक् ६.१७—परोक्षभूत में, 'भू' धातु से परे, 'व' का आगम होता है। जैसे—

भू + अ = भू + व + अ = बभूव।

पुब्बस्स अ ६.१८—'भू' धातु के द्वित्व होने से, पूर्व 'भू' का 'भ' हो जाता है। जैसे—भू + अ = भूभू + अ = भभू + अ = बभूव।

चतुत्थदुतियानं ततियपठमा ५.७८—द्वित्व होने पर, वर्ग के चतुर्थ, तथा द्वितीय वर्ण का क्रमशः उसी वर्ग का तृतीय तथा प्रथम वर्ण हो जाता है। जैसे—

भू + अ = भभू + अ = बभूव।

कालातिपत्ति (हेतुहेतुमद्भूत)

परस्स पद

	एकवचन	अनेकवचन
पठम पुरिस	अपचिस्सा	अपचिस्संसु
मज्झिम पुरिस	अपचिस्से	अपचिस्सथ
उत्तम पुरिस	अपचिस्सं	अपचिस्सम्हा

अत्तनो पद

	एकवचन	अनेकवचन
पठम पुरिस	अपचिस्सथ	अपचिस्सिंसु
मज्झिम पुरिस	अपचिस्ससे	अपचिस्सव्हे
उत्तम पुरिस	अपचिस्सं	अपचिस्साम्हसे

§ २१. हेतुहेतुमद्भूत में कुछ विशेष धातु के रूप—

कर—अकाहा, अकरिस्सा। हा—अहाहा, अहायिस्सा। लभ—अलच्छा, अलभिस्सा। वस—अवच्छा, अवसिस्सा। छिद—अच्छेच्छा, अछिन्दिस्सा। भिद—अभेच्छा, अभिन्दिस्सा। रुद—अरुच्छा, अरोदिस्सा। भुज—अभोक्खा, अभुञ्जिस्सा। मुच—अमोक्खा, अमुञ्चिस्सा। वच—अवक्खा, अवचिस्सा। प+विस—पावेक्खा, पाविसिस्सा। सक—सक्खिस्सा, सक्कुणिस्सा। सु—अस्सोस्सा, असुणिस्सा। अस—अभविस्सा। (देखिए—पृ० ६४-६६)

---

१. एय्यादो वातिपत्तियं स्सा स्संसु, स्से स्सथ, स्सं स्सम्हा; स्सथ स्सिंसु, स्ससे स्सव्हे, स्सं स्साम्हसे ६.७—हेतुहेतुमद्भूत में धातु से परे ये प्रत्यय होते हैं। जैसे—

सचे पठमवये पब्बज्जं अलभिस्सा, अरहा अभविस्सा—यदि वह प्रथम आयु में प्रव्रज्या पाए होता, तो अर्हत् हो गया होता।

२१. अभ्यास

१. हिन्दी में अनुवाद कीजिए—

अहुवा मेव मयं पुब्बे, न नाहुवम्हाति ? अकरा मेव मयं पुब्बे, पापं कम्मं न नाकरम्हा ति ? अलत्थ पब्बजं, अलत्थ उपसंपदं च ।

ब्रह्मा भगवन्तं अयाचथ । भगवा तिपाटिहीरे (तीसु पाटिहारियेसु) वसी अहु । लोक-धातु पकम्पथ । महा ओभासो आसि । सो अगमा । ते अगमु । भगवा एतदवोच । मयं एवं अवचम्हा । सो अका । मयं न अकरम्हा । मयं एवं कातुं न दम्हा (अददम्हा) ।

(ख) अतीते मन्धाता नाम चक्कवत्ती राजा बभूव । भूत-पुब्बं जनको नाम राजा बभूव । राम-पण्डितो वनं जगाम ।

(ग) दुक्खस्स अन्तं चे नाभविस्स, निब्बानं नो पञ्ञायिस्स । कुशलं कम्मं चे नाकरिस्सं सुख-विपाकं नालभिस्सं । बुद्धस्स सरणं चे नागच्छिस्सम्हा, झानसुखं नानुभविस्सम्हा । पालिया वियाकरणं चे नापठिस्से, तेपिटकं साधुकं ना वुज्झिस्से । दानानि चे नादीयिस्संसु पुञ्ञ-विपाका नाभविस्संसु ।

अहं चे पुञ्ञानि नाकरिस्सं, सग्गं लोकं नालभिस्सं । अहं चे तथरिव अभिजानिस्सं, यथरिव भगवा "अनेक-जाति-संसारं सन्धाविस्सं ति" अब्भञ्ञासि । अहं पि तिस्सो चेव विज्जायो सच्छिकत्वा अनेकजाति-संसारं न सन्धाविस्सं ।

(घ) चङ्कमे चङ्कमि जिनो । भगवा हि सुवण्ण-वण्णो सुरियो विय वावल्लति (वहल्लति) । लोलुपा, मोमुहा मनुस्सा सग्गं लोकं नुप्पज्जन्ति । सिरिंसपेहि बिभेति ।

२. पालि में अनुवाद कीजिए—

(क) (अनद्यतन भूत का प्रयोग कीजिए—)
भगवान ने भिक्खुओं को देखा । मैंने बुद्ध-मन्दिर देखा । मैं बुद्ध के शरण

गया। इसीलिए तुमको मद्यपान करने नहीं दिया। मैंने बुरा (अकुशल) काम नहीं किया।

(ख) (परोक्ष भूत का प्रयोग कीजिए—)

पूर्व काल में विदुर (विधुरो) नामक पण्डित था। युधिष्ठिर (युधिट्ठिलो) नामक राजा था। वासुदेव कृष्ण (वासुदेव-कण्हो) ने चक्र से कंस को मारा। लक्ष्मण (लक्खण-कुमारो) अपने भाई के साथ वन को गये।

(ग) फल खाते, तो शरीर हल्का (लहुकं) होता। पालि-व्याकरण अच्छी तरह पढ़ते, तो त्रिपिटक को अच्छी प्रकार समझते। उपासक लोग संघ को दान देते, तो संघ की वढ़ती होती। दायक लोग त्रिपिटक के हिन्दी-अनुवाद प्रकाशित कराते, तो वहुत पुण्य होता (प+सू)। त्रिपिटक की भाषा मधुर न होती, तो पढ़ने वाले का चित्त प्रसन्न नहीं होता (प+सद्)। ब्रह्मलोक यदि न होता, तो प्रथम ध्यान का विपाक कैसे अनुभव किया जाता? पूर्व जन्म (पुब्बे-निवासो) यदि न होता, तो ध्यानियों को कैसे उसका अनुस्मरण होता।

चौथा काण्ड

तीसरा पाठ

'वाला'-वाचक प्रत्यय

(कृ.)

(कृदन्त प्रकरण—तीसरा भाग)

ल्तु, णक,

§ २९. कत्तरि ल्तुणका ५.३३—'इस काम को करने वाला,' इस अर्थ में, धातु से परे 'ल्तु' और 'णक' प्रत्यय होते हैं। 'ल्तु' का 'तु', और 'णक' का 'अक' रह जाता है। (देखिए—पृ० ९४-९६) जैसे—

	ल्तु	णक
दा=देना	दातु (दाता)	दायको[1]=देने वाला
वच=बोलना	वत्तु (वत्ता)	वाचको=बोलने वाला
नी=ले जाना	नेतु (नेता)	नायको=नायक
सु=सुनना	सोतु (सोता)	सावको=सुनने वाला
जि=जीतना	जेतु (जेता)	× =जीतने वाला
छिद=छेदना	छेत्तु (छेत्ता)	छेदको=छेदने वाला

---

१. आ स्सा णा पि म्हि यु क् ५.९१—'णापि' को छोड़, अन्य 'ण' अनुबन्ध वाला प्रत्यय आने से, आकारान्त धातु से परे 'य' का आगम होता है। जैसे—दा+णक=दायको।

आवी

§ ३०. आ वी ५.३४—'इस स्वभाव वाला' इस अर्थ में, धातु से परे, बहुधा 'आवी' प्रत्यय होता है। जैसे—भयदस्सावी=भय देखने वाला, भयशील।

अक

§ ३१. आ सिं सा य म को ५.३५—आशीर्वाद का भाव हो, तो धातु से परे 'अक' प्रत्यय होता है। जैसे—

जीवतु इति—जीवको=बहुत दिन जीने वाला

नन्दतु इति—नन्दको=आनन्द से रहने वाला

णन (का 'अन' रह जाता है)

§ ३२. क रा ण नो ५.३६—'कर' धातु से परे, 'णन' प्रत्यय होता है। जैसे—

करोति इति—कारणं=करने वाला

§ ३३. हा तो वी हि का ले सु ५.३७—'व्रीहि' और 'काल' का द्योतक हो, तो 'हा' (=छोड़ना) धातु से परे 'णन' प्रत्यय होता है। जैसे—

हायना=एक प्रकार की व्रीहि। हायनो=वर्ष।

कू (का 'ऊ' रह जाता है)

§ ३४. वि दा कू ५.३८—'विद' धातु से परे, 'कू' प्रत्यय होता है। जैसे—विदू=जानने वाला। लोकविदू=संसार को जानने वाला।

§ ३५. वि तो ञा तो ५.३९—'वि' पूर्वक 'ञा' धातु से परे, 'कू' प्रत्यय होता है। जैसे—विञ्ञू=विशेष जानने वाला।

§ ३६. क म्मा ५.४०—कर्म से परे 'ञा' धातु आवे, तो उक्त अर्थ में उससे परे 'कू' प्रत्यय होता है। जैसे—सब्बं जानाति इति—सब्बञ्ञू=सब कुछ जानने वाला। कालञ्ञू=काल जानने वाला। वेदञ्ञू=वेद जानने वाला।

अण

§ ३७. क्व च ण् ५.४१—कर्म से परे, धातु के बाद कहीं कहीं 'अण' प्रत्यय होता है। 'अण्' का 'अ' रहता है; तथा, धातु के उपान्त स्वर की वृद्धि होती है। जैसे—

कुम्भकारो=कुम्भ को बनाने वाला। सरलावो=सर नामक तृण को काटने वाला। मन्तज्झायो=मन्त्र पढ़ने वाला।

रू

§ ३८. ग मा रू ५.४२—कर्म से परे 'गम' धातु आवे, तो उक्त अर्थ में, उससे परे 'रू' प्रत्यय होता है। 'रू' का 'ऊ' रहता है। जैसे—

वेदगू=वेद में गति रखने वाला। पारगू=पार जाने वाला।

णी

§ ३९. सी ला भि क्ख ञ्ञा व स्स के सु णी ५.५३—शील, आभिक्ष्ण्य (=बार बार होना), और आवश्यक का अर्थ प्रतीत होता हो, तो धातु से परे 'णी' प्रत्यय होता है। 'णी' का 'ई' रहता है; तथा, धातुके उपान्त की वृद्धि होती है। जैसे—

उण्हभोजी=गरम खाने वाला
खीरपायी=बार बार दूध पीने वाला
अवस्सकारी=अवश्य करने वाला
सतन्दायी=सौ देने वाला

§ ४०. था व रि त्त र भ ङ्गु र भि दु र भा सु र भ स्स रा ५.५४—ये शब्द निपात हैं। जैसे—

थावर=स्थावर=स्थित रहने वाला। इत्तर=जाने वाला। भङ्गुर=टूट जाने वाला। भिदुर=नष्ट हो जाने वाला। भासुर, भस्सर=चमकने वाला।

(ख)

(तद्धित प्रकरण—पहला भाग)

मन्तु

§१. त मे त्थ स्स त्थी ति म न्तु ४.७८—'वाला' के अर्थ में, नाम से परे 'मन्तु' प्रत्यय होता है। जैसे—

गौवों वाला देश या पुरुष—गोमा (गोमन्तु)। वैसे ही, गतिमा (गतिमन्तु)= गतिवाला। सतिमा (सतिमन्तु)=स्मृति वाला। आयस्मा[२] (आयस्मन्तु)= आयुष्मान्। [देखिए—पृ० ८०]

वन्तु

§२. व न्त्व व ण्णा ४.७९—अकार तथा आकार से परे, 'मन्तु' के स्थान में 'वन्तु' होता है। जैसे—

सीलवा (सीलवन्तु)=शील वाला। पञ्ञवा (पञ्ञवन्तु)=प्रज्ञा वाला।
[देखिये—पृ० ८०]

इक, ई

§३. द ण्डा दि त्वि क ई वा ४.८०—'वाला' के अर्थ में, 'दण्ड' आदि शब्दों [देखिए—तीसरा परिशिष्ट] से परे, कहीं कहीं 'इक' तथा 'ई' प्रत्यय भी होते हैं। जैसे—

दण्ड—दण्डिको, दण्डी, दण्डवा=दण्ड वाला
गन्ध—गन्धिको, गन्धी, गन्धवा=गन्ध वाला
रूप—रूपिको, रूपी, रूपवा=रूप वाला

§४. उ त्त मि णे व ध ना इ को—'धन' शब्द से परे, केवल उत्तमर्ण (=ऋण

२. आ यु स्सा य स् म न्तु म्हि ४.१३४—'मन्तु' प्रत्यय आने से, 'आयु' शब्द का 'आयस्' आदेश हो जाता है। जैसे—आयु+मन्तु=(आयस्मन्तु) आयस्मा।

देने वाला महाजन) के अर्थ में, 'इक' प्रत्यय होता है। जैसे—

धनिको=ऋण देने वाला महाजन।

धनी, धनवा=धन वाला।

§५. असन्निहिते अत्था—'अत्थ' (=अर्थ) शब्द से परे, 'न रहने के अर्थ में' 'इक' तथा 'ई' प्रत्यय होते हैं। जैसे—

अत्थिको, अत्थी=जिसके पास अर्थ नहीं हो; जो उसकी चाह करता है।

अत्थवा=अर्थ वाला।

§६. हत्थदन्तेहि जातियं—'हत्थ' तथा 'दन्त' शब्दों से परे, जाति के अर्थ में, 'ई' प्रत्यय होता है। जैसे—हत्थी=हाथी। दन्ती=हाथी। नहीं तो—हत्थवा=हाथ वाला। दन्तवा=दाँत वाला।

§७. वण्णतो ब्रह्मचारिम्हि—ब्रह्मचारी के अर्थ में, 'वण्ण' शब्द से परे 'ई' प्रत्यय होता है। जैसे—वण्णी=वर्णी=ब्रह्मचारी। नहीं तो—वण्णवा=वर्णवान्=सुन्दर।

स्सी

§८. तपादीहि स्सी ४.८१—'वाला' के अर्थ में, 'तप' आदि शब्दों से परे, 'स्सी' प्रत्यय होता है। जैसे—तपस्सी=तप करने वाला। यसस्सी=यस वाला। तेजस्सी=तेज वाला। मनस्सी=मान वाला। पयस्सी=दूध वाला। [देखिए, तीसरा परिशिष्ट]

र

§९. मुखादितो रो ४.८२—'मुख' आदि शब्दों से परे, 'रो' प्रत्यय होता है। [देखिए, तीसरा परिशिष्ट] जैसे—

मुखरो=बहुत बोलने वाला। सुसिरो=छिद्र वाला। ऊसरो=रेत वाला। मधुरो=मीठा। दन्तुरो=निकले दाँत वाला।

भ

§१०. तुण्ड्यादीहि भो ४.८३—'तुण्डि' आदि [देखिए, तीसरा

परिशिष्ट] शब्दों से परे, 'भो' प्रत्यय होता है। जैसे—

तुण्डिभो=चोंच वाला। सालिभो=सालि धान वाला। विकल्प से, 'तुण्डिमा' भी।

अ

§ ११. सद्धादित्व ४.८४—'सद्धा' आदि [देखिए—तीसरा परिशिष्ट] शब्दों से परे, उक्त अर्थ में, विकल्प से 'अ' प्रत्यय होता है। जैसे—

सद्धो=श्रद्धा वाला। पञ्ञो=प्रज्ञा वाला। विकल्प से—'पञ्ञवा' भी।

ण

§ १२. णो तपा ४.८५—'तप' शब्द से परे, 'ण' प्रत्यय होता है। 'ण' का 'अ' रहता है; तथा, उपधा की वृद्धि होती है। जैसे—तापसो=तप करने वाला। स्त्रीलिङ्ग में—तापसी।

आलु

§ १३. आलव भिज्झादीहि ४.८६—'अभिज्झा' आदि [देखिए—तीसरा परिशिष्ट] शब्दों से परे, 'आलु' प्रत्यय होता है। जैसे—

अभिज्झालु=बड़ा लोभ वाला। सीतालु=शीत न सह सकने वाला। दयालु=दया वाला। कोधालु=क्रोध वाला। निद्दालु=बहुत नींद लेने वाला।

विकल्प से—दयावा, कोधवा भी।

इल

§ १४. पिच्छादित्विलो | ४.८७—'पिच्छ' आदि [देखिए—तीसरा परिशिष्ट] शब्दों से परे, विकल्प से 'इल' प्रत्यय होता है। जैसे—

पिच्छिलो, पिच्छवा=पर वाला (=मोर)। फेणिलो, फेणवा=फेन वाला। जटिलो, जटावा=जटा वाला।

व.

§ १५. सी ला दि तो वो ४.८८—'सील' आदि [देखिए—तीसरा परिशिष्ट] शब्दों से परे, विकल्प से 'व' प्रत्यय होता है। जैसे—

सीलवो=शील वाला। केसवो=केश वाला।

अ ण्णा नि च्चं—'अण्ण' शब्द से परे, नित्य 'व' प्रत्यय होता है। जैसे—अण्णवो=जल वाला (समुद्र)।

वी

§ १६. मा या मे धा हि वी ४.८९—'माया' और 'मेधा' शब्दों से परे, 'वी' प्रत्यय होता है। जैसे—

मायावी=माया वाला। मेधावी=अक्ल वाला।

आमी, उवामी

§ १७. सि स्स रे आ म्यु वा मी ४.९०—'स' (=स्व) शब्द से परे, 'अधिकार रखने वाले' के अर्थ में, 'आमी' तथा 'उवामी' प्रत्यय होते हैं। जैसे—

सामी, सुवामी=अधिकार रखने वाला।

ण

§ १८. ल क्ख्या णो अ च ४.९१—'लक्खी' (=लक्ष्मी) शब्द से परे, 'ण' प्रत्यय होता है। प्रत्यय लगने से, 'लक्खी' शब्द के 'ई' का 'अ' हो जाता है। जैसे—

लक्खणो=लक्ष्मी वाला।

न

§ १९. अङ्गा नो क ल्या णे ४.९२—कल्याण का द्योतक हो, तो 'अङ्ग' शब्द से परे, 'न' प्रत्यय आता है। जैसे—

अङ्गना=कल्याणकर अङ्गों वाली।

सो

§२०. सो लोमा ४.९३—'लोम' शब्द से परे, 'स' प्रत्यय होता है। जैसे—लोमसो=रोयें वाला। स्त्रीलिङ्ग में—लोमसा।

इम, इय

§२१. इ मि या ४.९४—'वाला' के अर्थ में, बहुधा 'इम' और 'इय' प्रत्यय होते हैं। जैसे—

पुत्तिमो=पुत्र वाला। कित्तिमो=कीर्ति वाला। पुत्तियो=पुत्र वाला। जटियो=जटा वाला। सेनियो=सेना वाला।

२२. अभ्यास

१. हिन्दी में अनुवाद कीजिए—

(क) भगवा हि लोक-नायको लोक-विदू सत्था देव-मनुस्सानं। एकच्चो पाणातिपाती होति, एकच्चो अदिन्नादायी होति, अदिन्नं थेय्यसंखातं आदाता होति। एकच्चो कामेसु मिच्छाचारी होति चारित्तं आपज्जिता। एकच्चो मुसा-वादी होति, संपजान-मुसा भासिता। भगवा हि एवं-रूपानं सत्तानं अज्झासयवसेन पि धम्मं देसिता होति लोकस्स विनेता। ब्रह्मचारी, अनुमत्तेसु वज्जेसु भय-दस्सावी, अक्कोधनो भिक्खु बुद्धस्स सासन-करो नाम होति, धम्मस्स अनुधम्म-चारी।

(ख) अरञ्ञ-विहारिना भिक्खुना सतिमन्तेन भवितब्बं, कायिकं वाचिकं मानसिकं च कम्मं पच्चवेक्खित्वा पच्चवेक्खित्वा कातब्बं। सतिमा, भय-दस्सावी, लज्जी, मेधावी, कतञ्ञू, अकथंकथी, दयालु, अनुत्तरो भिक्खु धम्मेसु परिपूर-कारी होति सुविञ्ञाता, बुद्ध-सासन-करो, धम्मिको ति।

२. ऊपर काले अक्षरों में छपे पदों का विश्लेषण कीजिए—

जैसे, सुविञ्ञाता=सु+वि+ञा+तु। सतिमा=सति+मन्तु। धम्मिको=धम्म+इक।

चौथा काण्ड

चौथा पाठ

भाव-वाचक प्रत्यय

भाव-वाचक प्रत्यय दो प्रकार के होते हैं—(१) धातु से परे लगने वाले, (=कृदन्त) और (२) नाम से परे लगने वाले (=तद्धित)। जैसे—गम—गमनं, गति। मधुर—मधुरत्तं, मधुरता।

(क)

(कृदन्त प्रकरण—चौथा भाग)

अ, घण

§४१. भावकारकेसु अ-घण-घ-का ५.४४—भाव के अर्थ में, धातु से परे, बहुधा 'अ' तथा 'घण' प्रत्यय होते हैं। जैसे—

अ—पग्गहो=पकड़ना। निग्गहो=निग्रह। चयो=चुनना। जयो=जीतना। रवो=आवाज। वचो=बोलना।

घण्—पाको*=पकना। चागो*=त्याग। लाभो। भागो। भारो। हारो। आचारो। विचारो। निच्छयो[1]।

---

*देखिए—पृ० १५०. सूत्र ५.९८.

१. नितो चिस्स छो ५.१२२—'नि' उपसर्ग पूर्वक, 'चि' धातु का 'छि' आदेश हो जाता है। जैसे—

नि+चि+अ=नि+छि+अ=

(सरम्हा द्वे १.३४) निछ्छि+अ=(चतुत्थदुतियेस्वेसं ततियपठमा १.३५) निच्छि+अ=(युवण्णानं ए ओ पच्चये ५.८२) निच्छे+अ=(एओनं यवा सरे ५.८३) निच्छयो।

इ

§४२. दा धा त्वि ५.४५—'दा' तथा 'धा' धातुओं से परे, 'इ' प्रत्यय होता है। जैसे—

आदि=आदान करना=लेना। निधि=निधान करना=जमा करना।

अथु

§४३. व मा दी ह थु ५.४६—'वम' आदि [देखिए—तीसरा परिशिष्ट] धातुओं से परे, 'अथु' प्रत्यय होता है। जैसे—

वमथु=वमन करना। वेपथु=काँपना।

क्वि

§४४. क्वि ५.४७क्वि स्स, ५.१५६, क्वि म्हि लो पो 'न्त ब्य ञ्ज न स्स ५.१४—भाव तथा कारक में, धातु से परे 'क्वि' प्रत्यय होता है। 'क्वि' प्रत्यय का लोप हो जाता है; उसके स्थान पर कुछ नहीं रहता है। 'क्वि' प्रत्यय आने से, धातु के अन्त्य व्यञ्जन का लोप होता है। जैसे—अभिभवतीति—अभिभू। सयं भवतीति—सयम्भू। भत्तं गसन्ति गण्हन्ति वा एत्थ—भत्तग्गं। सलाकं गण्हन्ति एत्थाति—सलाकग्गं। सब्भि भाति—सभा। संगम्म भासन्ति एत्थाति—सभा।

भत्त+गस+क्वि=('गस' धातु के अन्त्य व्यञ्जन 'स' का लोप) भत्त+ग=(सरम्हा द्वे १.३४) भत्तग्गं। स+भास+क्वि+आ=सभा।

क्वि म्हि घो प रि प च्च स मो हि ५.१००—'परि', 'पति', तथा 'सं' पूर्वक, 'हन' धातु से परे 'क्वि' प्रत्यय आने से, 'हन' धातु का 'घ' आदेश हो जाता है। जैसे—

परिहञ्ञतीति—पलिघो। पतिहञ्ञतीति—पटिघो। आहञ्ञतीति—अघं=पाप। संहतो इति—सङ्घो। ओहञ्ञति एतेनाति—ओघो=बाढ़।

अ, ण, क्ति, क, यक्, य

§४५. इ त्थि य म ण क्ति क य क्या च ५.४९—स्त्रीलिङ्ग में, धातु से परे, बहुधा 'अ', 'ण', 'क्ति', 'क', 'यक्', तथा 'य' प्रत्यय होते हैं। जैसे—

अ—तितिक्खा, वीमंसा, जिगुच्छा, बीभच्छा, तिकिच्छा, विचिकिच्छा, पिपासा, ईहा, भिक्खा, आपदा।

ए—कारा=करना। हारा=हरण करना। तारा=तरण करना। धारा=धारण करना।

क्ति (का 'ति' रह जाता है)—इद्धि, भित्ति, भत्ति (=भक्ति), मुत्ति, सति (=स्मृति), वड्ढि[2] (=वृद्धि)।

क—(का 'अ' रह जाता है)—रुजा=पीड़ा देना। मुदा=मोद।

यक्—(का 'य' रह जाता है)—विज्जा=विद्या। इच्छा। क्रिया।

य—पब्बज्जा=प्रव्रज्या। परिचरिया=सेवा। जागरिया=जागना। मिगया=शिकार खेलना।

अन—वेदना, वन्दना, उपासना।

अन

§४६. अ नो ५.४८—भाव के अर्थ में, धातु से परे 'अन' प्रत्यय होता है। जैसे—निगूहनं[3], आळाहनं,[4] गमनं, दानं, सम्पदानं, पानं, असनं, वसनं, अग्गिकरणं, चलनं, जलनं, कोवनो, कोपनो, मण्डनं, सरणं, भरणं, हरणं।

§४७. रा नस्स णो ५.१७१—रकारान्त धातु से परे, प्रत्यय के 'न' का 'ण' हो जाता है। जैसे—अरणं, सरणं, भरणं।

[न न्त मा न त्या दी नं ५.१०२—रकारान्त धातु से परे, 'न्त', 'मान' तथा 'ति' आदि प्रत्ययों के 'न' का 'ण' नहीं होता है। जैसे—करोन्तो। कुब्बमानो। करोन्ति]।

---

२. लो पो व ड्ढा क्ति स्स ५.१५८—'वड्ढ' धातु से परे, 'क्ति' प्रत्यय के 'त' का लोप हो जाता है। जैसे—वड्ढ+क्ति=वड्ढि।

३. गु हि स्स स रे ५.१०५—'गुह' धातु से परे स्वर हो, तो उसके 'उ' का दीर्घ हो जाता है। जैसे—नि+गुह+अन=निगूहनं।

४. अ न घ ण स्वा प री हि ळो ५.१२७—'अन' तथा 'घण' प्रत्ययों के आने से, 'आ' तथा 'परि' पूर्वक 'दह' धातु के 'द' का 'ळ' होता है। जैसे—आळाहनं। परिळाहो।

नि

§४८. जा हा हि नि ५.५०—भाव के अर्थ में, 'जा' तथा 'हा' धातुओं से परे, 'नि' प्रत्यय होता है। जैसे—जानि=खराब होना। हानि=नष्ट होना।

इ, कि, ति

§४९. इ कि ती स रूपे ५.५२—धातु के अपने ही अर्थ में, उससे परे 'इ', 'कि' तथा 'ति' प्रत्यय होते हैं। जैसे—

वच=वचि। युध=युधि। पच=पचति।

(ख)

(तद्धित प्रकरण—दूसरा भाग)

§२२. तस्स भावकम्मेसु त्त, तात्तन, ण्य, णेय्य, ण, इय, णिय ४.५९—भाव के अर्थ में, नाम शब्दों से परे, बहुधा ये प्रत्यय आते हैं—(१) त्त, (२) ता, (३) त्तन, (४) ण्य, (५) णेय्य, (६) ण, (७) इय, (८) णिय। जैसे—

१. त्त

नीलस्स भावो—नीलत्तं=नीलत्व
चन्दस्स भावो—चन्दत्तं=चन्द्रत्व
सुरियस्स भावो—सुरियत्तं=सूर्यत्व
वुद्धस्स भावो—बुद्धत्तं=वुद्धत्व
बहुनो भावो—बहुत्तं=बहुत्व
अनेकस्स भावो—अनेकत्तं=अनेकत्व

२. ता

नीलस्स भावो—नीलता
मनुस्सस्स भावो—मनुस्सता
वुद्धस्स भावो—बुद्धता
चपलस्स भावो—चपलता
सहायस्स भावो—सहायता

३. त्तन

पुथुज्जनस्स भावो—पुथुज्जनत्तनं=पृथक् जनत्व
वेदनाय भावो—वेदनत्तनं=वेदनात्व
जायाय भावो—जायत्तनं=स्त्रीत्व
जारस्स भावो—जारत्तनं=परस्त्री गमन करना

४. ण्य

अलसस्स भावो—आलस्सं[५]=आलस्य
ब्रह्मनो भावो—ब्रह्मञ्ञं=ब्राह्मणत्व
चपलस्स भावो—चापल्यं
निपुणस्स भावो—नेपुञ्ञं=नैपुण्य
पिसुनस्स भावो—पेसुञ्ञं=चुगलखोरी
राजस्स भावो—रज्जं=राज्य
अधिपतिनो भावो—आधिपच्चं[५]=आधिपत्य
दायादस्स भावो—दायज्जं=दायाद्य
सखिनो भावो—सख्यं=मित्रता
वणिजस्स भावो—वाणिज्जं=वाणिज्य

---

५. लोपो वण्णिवण्णानं ४.१३१—'यकार' से आरम्भ होने वाला प्रत्यय परे हो, तो शब्द के अन्त्य 'अ' तथा 'इ' का लोप होता है। जैसे—अलस+ण्य=आलस्+य आलस्यं। अधिपति+ण्य=आधिपत्+य=आधिपत्यं=(तवग्गवरणानं ये चवग्गबयञा १.४८) आधिपच्चं।

सरानमादिस्सायुवण्णस्सा ए ओ णानुबन्धे ४.१२४—'ण' अनुबन्ध वाला प्रत्यय आने से, शब्द के आदि में स्थित 'अ', 'इ', तथा 'उ' का यथाक्रम 'आ', 'ए', तथा 'ओ' हो जाता है। जैसे—अलस+ण्य=आलस्सं। चपल+ण्य=चापल्लं। अधिपति+ण्य=आधिपत्यं=आधिपच्चं।

५. णेय्य

सुचिनो भावो—सोचेय्यं=पवित्रता
अधिपतिनो भावो—आधिपतेय्यं=आधिपत्य

६. ण

गुरुनो भावो—गारवं=गौरव
पटुनो भावो—पाटवं=पटुता
उजुनो भावो—अज्जवं=ऋजुता
मुदुनो भावो—मद्दवं=मृदुता

७. इय

अधिपतिनो भावो—अधिपतियं=आधिपत्य
पण्डितस्स भावो—पण्डितियं=पाण्डित्य
बहुस्सुतस्स भावो—बाहुस्सुतियं=बहुश्रुतता
नग्गस्स भावो—नग्गियं=नग्नता
सूरस्स भावो—सुरियं=सूरता

८. णिय

अलसस्स भावो—आलसियं=आलस्य
कलुसस्स भावो—कालुसियं=कालुष्य
मन्दस्स भावो—मन्दियं=मन्दता
दक्खस्स भावो—दक्खियं=दक्षता
पुरोहितस्स भावो—पोरोहितियं=पौरोहित्य

§२३. लोपो ४.१२३—कभी कभी, प्रत्ययों का लोप भी देखा जाता है। जैसे—बुद्धे रतनं पणीतं=बुद्धे रतनत्तं पणीतं। चक्खुं सुञ्ञं अत्तेन वा अत्तनियेन वा=चक्खुं अत्तत्तेन वा अत्तनियत्तेन वा सुञ्ञं।

ब्य

§ २४. ब्य बद्धदासा वा ४.६०—भाव के अर्थ में, 'वद्ध' और 'दास' शब्दों से परे, विकल्प से 'ब्य' प्रत्यय होता है। जैसे—बद्धब्यं—वद्धत्ता=बँधा हुआ होना। दासब्यं—दासता।

नण्

§ २५. नण् युवा बो च वस्स ४.६१—भाव के अर्थ में, 'युव' शब्द से परे, विकल्प से 'नण्' प्रत्यय होता है। 'नण्' प्रत्यय लगने से, 'युव' शब्द के 'व' का 'व' हो जाता है। जैसे—योब्बनं—युवत्तं, युवता=जवानी।

इम

§ २६. अण्वादित्विमो ४.६२—भाव के अर्थ में, 'अणु' आदि शब्दों से परे, विकल्प से 'इम' प्रत्यय होता है। जैसे—अणिमा=अणुत्व। लघिमा= लघुत्व। महिमा[६]=महत्त्व। कसिमा[६]=कृशता। विकल्प से—अणुत्तं, अणुता, लघुत्तं, लघुता इत्यादि भी।

निपात—कोसज्जाज्जवपारिसज्जसुहज्जमद्दवारिस्सासभाजञ्ञथेय्यबाहुसच्चा ४.१२७—ये शब्द निपात हैं। जैसे—कुसीतस्स भावो कोसज्जं। उजुनो भावो—अज्जवं। परिसासु साधु—पारिसज्जो। सुहदयो व—सुहज्जो: सुहज्जस्स भावो—सोहज्जं। मुदुनो भावो—मद्दवं। इसिनो इदं, भावो वा—आरिस्सं। उसभस्स इदं, भावो वा—आसभं। आजानीयस्स भावो, सो एव वा—आजञ्ञं। थेनस्स भावो, कम्मं वा—थेय्यं। बहुस्सुतस्स भावो—बाहुसच्चं।

---

६. किसमहतमिमे कसमहा ४.१३३—'इम' प्रत्यय आने से, 'किस' तथा 'महन्त' शब्दों का, यथाक्रम 'कस्' तथा 'मह' आदेश हो जाता है। जैसे—किस+इम=कसिमा। महन्त+इम=महिमा।

२३. अभ्यास

१. हिन्दी में अनुवाद कीजिए—

(क) पञ्ञाय पटिलाभो सुखो। पापानं अकरणं सुखं। एकस्स चरितं सेय्यो। अरियानं दस्सनं साधु होति। तेसं सन्निवासो सदा सुखो होति। अञ्ञेसं वज्जं सुदस्सं होति, अत्तनो पन वज्जं दुद्दसं होति। यो पापानि कम्मानि करोति, सो वेदनं, फरुसं, जानिं, सरीरस्स भेदनं, गरुकं आबाधं, चित्त-क्खेपं वा पापुणिस्सति। रागं च दोसं च मोहं च पहाय, निब्बाणं एहिसि (गमिस्ससि)। इन्द्रिय-गुत्ति, सन्तुट्ठि, पातिमोक्खे च संवरो, पटिसन्थार वुत्ति, भिक्खुना सम्पादेतब्बा। समथो, दमथो, विपस्सना, सतिया उपट्ठानं, पटिसम्भिदा, वेदनानं सञ्ञानं च निरोधो, विमुत्ति चाति भावेतब्बा।

२. ऊपर काले अक्षरों में छपे शब्दों की व्युत्पत्ति बताइए।

३. निम्नलिखित शब्दों की व्युत्पत्ति बताइए—

(क) हासो, पीति, वित्ति, तुट्ठि, आनन्दो पमुदा, आमोदा, सन्तोसो, नन्दि पामोज्जं पमोदो ति (सन्तोस-परियाया)।

(ख) तण्हा, तसिना, एजा, जालिनी, विसत्तिका, छन्दो, जटा, निकन्त्या, सिब्बनी, भवनेत्ति, अभिज्झा, वनथो, वानं, लोभो रागो, मनोरथो, इच्छा, अभिलासो, काम, आकंखा, रुचि (इच्छा-परियाया)।

(ग) धी, पञ्ञा, बुद्धि, मेधा, मति, मुति, पञ्ञाणं, ञाणं, विज्जा, योनि, पटिभानं, अमोहो, विपस्सना, सम्मादिट्ठि (पञ्ञा-परियाया)। बाहुसच्चं, गारवो, कतञ्ञुता, सोवचस्सता ति (मङ्गलानि)। पण्डिच्चं, कोसल्लं, यथाभुच्चं, अज्जवं (भिक्खुना सम्पादेतब्बानि)। साठेय्यं, थेय्यं। पंसुकुलिकत्तं, अब्भोकासिकता। काय-मुदुता, काय-कम्म-ञ्ञता, काय-पागुञ्ञता।

४. पालि में अनुवाद कीजिए—

(क) बुद्धों की पूजा। देवताओं की अनुस्मृति। पापों का न करना। कुशल

धम्मों का जमा करना। सज्जनों का दर्शन करना। गुरुजनों का सम्मान करना। दुर्जनों का त्याग करना। त्रिपिटक का स्वाध्याय करना। खाने की इच्छा। इन्द्रियों का दमन करना। चित्त का निरोध करना। लड़कों को जमा करना। लकड़ियों को एकत्रित करना। सेना संग्रह करना। भिक्षुओं को प्रणाम करना। भूखों को खिलाना। ब्राह्मणों का सत्कार करना। तृष्णा को छोड़ना। घर छोड़ कर बेघर हो जाना।

(ख) प्रातःकाल जागना अच्छा है। हाथ मुँह धोना अच्छा है। बुद्ध के अनुस्मरण से चित को शुद्ध करना कल्याणकर है। किसी कर्म्म-स्थान को लेकर ध्यान करना उचित है। मैत्री भावना से सब दिशाओं को व्याप्त करना ब्रह्मविहार है। कुशल धम्मों को बढ़ाना, अकुशल धम्मों को घटाना जरूरी है।



चौथा काण्ड

'पाँचवाँ पाठ

क्रिया-प्रकरण

(सातवाँ भाग—प्रेरणार्थक)

प्रेरणार्थक क्रिया

§ २२. प यो ज क व्या पा रे णा पि च ५.१६—प्रेरणा करने के अर्थ में, धातु से परे, (णिं) 'इ', तथा (णापि) 'आपि' प्रत्यय आते हैं। प्रत्यय लगने से, धातु के अन्त्य तथा उपान्त ह्रस्व स्वर की प्रायः वृद्धि हो जाती है। 'अ' की वृद्धि 'आ', 'इ' तथा 'ई' की वृद्धि 'ए', और 'उ' तथा 'ऊ' की वृद्धि 'ओ' है। प्रत्यय लगे हुए धातु के रूप 'चुरादि गण' के समान चलते हैं (देखिए—पृ० १२४-१२५)। जैसे—

धातु	प्रेरणार्थक धातु	रूप
भ्वादि गण—अच्च (=पूजा करना)	अच्चि, अच्चापि	अच्चेति, अच्चयति
	(=पूजा कराना)	अच्चापेति, अच्चापयति
अट (=घूमना)	आटि, आटापि	आटेति, आटयति
	(=घुमवाना)	आटापेति, आटापयति
अद (=खाना)	आदि, आदापि	आदेति, आदयति
	(=खिलाना)	आदापेति, आदापयति
इक्ख (=देखना)	इक्खि, इक्खापि	इक्खेति, इक्खयति
	(=दिखाना)	इक्खापेति इक्खापयति
कन्द (=रोना)	कन्दि, कन्दापि	कन्देति, कन्दयति
	(=रुलाना)	कन्दापेति, कन्दापयति

धातु	प्रेरणार्थक	धातु रूप
कम्प (=काँपना)	कम्पि, कम्पापि (=कँपाना)	कम्पेति, कम्पयति कम्पापेति, कम्पापयति
चज (=छोड़ना)	चाजि, चाजापि (=छुड़ाना)	चाजेति, चाजयति चाजापेति, चाजापयति
नी (=ले जाना)	नायि, (=लिवा जाना)	नाययति[1]
पच (=पकाना)	पाचि, पाचापि (=पकवाना)	पाचेति, पाचयति[2] पाचापेति, पाचापयति
भू (=होना)	भावि, भापि	भावयति[1] भावेति,
हन (मारना)	घाति (=मरवा देना)	घातेति, घातयति[1] इत्यादि

---

१. आयावा णानुबन्धे ५.९०—'ण' अनुवन्ध वाले स्वरादि प्रत्ययों के आने से, धातु के अन्त्य 'ए' तथा 'ओ' का क्रमशः 'आय' तथा 'आव' हो जाता है। जैसे—

नि+णि+ति=(युवण्णानमे ओप्पच्चये ५.८२) ने+इ+ति=(प्रस्तुत सूत्र से) नायि+ति=(कत्तरि लो ५.१८)=नायि+अ+ति=नाये+अ+ति=(एओनमयवा सरे ५.८९) नाययति।

भू+णि+ति=(युवण्णानमे ओप्पच्चये ५.८२) भो+इ+ति=भावयति

२. अस्सा णानुबन्धे ५.८४—'ण' अनुवन्ध वाले किसी प्रत्यय के आने से, धातु के उपान्त 'अ' का 'आ' हो जाता है। जैसे—पच+णि+ति=पाच+इ+ति=पाचि+ति=(युवण्णानमेओ प्पच्चये ५.८२) पाचेति।

पाचे+ति=(कत्तरि लो ५.१८) पाचे+अ+ति=(एओनमयवा सरे ५.८९) पाचयति।

पच+णापि+ति=पाचापेति (पाचापयति) पच+णक=पाचको।

णी णा प्या पी हिं वा ५.२०—णि, णापि, तथा आपि प्रत्ययान्त धातु से

	धातु	प्रेरणार्थक धातु	रूप
२. रुधादि गण—	कत (=काटना)	काति, कातापि	कातेति, कातयति
		(=कटवाना)	कातापेति, कातापयति
	छिद (=छेदना)	छेदि, छेदापि	छेदेति, छेदयति
		(=छिदवाना)	छेदापेति, छेदापयति
	भुज (=खाना)	भोजि, भोजापि	भोजेति, भोजयति
		(=खिलाना)	भोजापेति, भोजापयति
३. दिवादि गण—	कुध (=क्रोध करना)	कोधि, कोधापि	कोधेति, कोधयति
		(=क्रोध करवाना)	कोधापेति, कोधापयति
	दिव (=चमकना)	देवि, देवापि	देवेति, देवयति
		(=चमकाना)	देवापेति, देवापयति
	दुस (=द्वेष करना)	दूसि, दूसापि	दूसेति, दूसयति[४]
४. तुदादि गण—	खिप (=फेंकना)	खेपि, खेपापि	खेपेति, खेपयति
		(=फेंकवाना)	खेपापेति, खेपापयति
	नुद (=प्रेरित करना)	नोदि, नोदापि	नोदेति, नोदयति
		(=प्रेरित कराना)	नोदापेति, नोदापयति
	लिख (=लिखना)	लेखि, लेखापि	लेखेति, लेखयति
		(=लिखाना)	लेखापेति, लेखापयति
५. ज्यादि गण—	ग्रस (=खाना)	ग्रासि, ग्रासापि	ग्रासेति, ग्रासयति
		(=खिलाना)	ग्रासापेति, ग्रासापयति

परे, 'ल' प्रत्यय लगा सकते हैं, और नहीं भी। जैसे—पाचि+अ+ति=पाचयति। पाचि+ति=पाचेति। पाचापयति। पाचापेति।

३. हनस्स घातो णानुबन्धे ५.६६—'ण' अनुबन्ध वाला प्रत्यय आने से, 'हन' धातु का 'घात' आदेश होता है। जैसे—हन+णि+ति=घातेति, घातयति।

४. णिम्हि दीघो दुसस्स ५.१०४—'णि' प्रत्यय आने से, 'दुस' धातु के उकार का दीर्घ हो जाता है। जैसे—दुस+णि+ति=दूसेति।

इसी तरह, दूसरे गणों के धातु से भी प्रेरणार्थ धातु बनाए जा सकते हैं। प्रेरणार्थक धातु के रूप, चुरादि गण के धातु के समान, सभी काल में होते हैं। प्रेरणार्थक धातु के साथ 'अं', 'ना', 'णो' आदि *किसी गण का कोई विकरण नहीं लगता है।*

§ २३. णि णा पी नं ते सु ५.१६०—प्रेरणार्थक धातु से परे, फिर भी प्रेरणा के अर्थ में कोई प्रत्यय नहीं होते हैं। जैसे—पाचेति।

ख

(विभक्ति प्रकरण—तीसरा भाग)

§ ४०. ग ति बो धा हा र स द्द त्था क म्म क भ ज्जा दी नं प यो ज्जे २.४—यदि गमनार्थ, बोधार्थ, आहारार्थ, शब्दार्थ, अकर्मक, तथा भज्ज आदि धातु प्रेरणार्थक हों, तो कर्ता मे 'दुतिया विभत्ति' होती है। जैसे—

गमनार्थ—गमयति माणवकं गामं=विद्यार्थी को गाँव ले जाता है। यहाँ, जाने वाला 'माणवक' है, जिसमें 'दुतिया विभत्ति' लगी है।

बोधार्थ—बोधयति माणवकं धम्मं—विद्यार्थी को धर्म्म समझाता है। वेदयति माणवकं धम्मं।

आहारार्थ—भोजयति माणवकं ओदनं, आसयति माणवकं ओदनं=विद्यार्थी को भात खिलाता है।

शब्दार्थ—अज्झापयति माणवकं वेदं=विद्यार्थी को वेद पढ़ाता है।

अकर्मक—आसयति देवदत्तं=देवदत्त को बैठाता है। साययति देवदत्तं=देवदत्त को सुलाता है।

भज्ज (=भूनना) आदि—अञ्ञं भज्जापेति, अञ्ञं कोट्टापेति, अञ्ञं सन्थरापेति=दूसरे से भुनवाता है, दूसरे से कुटवाता है, दूसरे से फैलवाता है।

इन स्थानों को छोड़ दूसरी जगह, कर्ता में 'दुतिया' न होकर 'ततिया विभत्ति' होती है। जैसे—पाचयति ओदनं देवदत्तेन यञ्ञदत्तो=यज्ञदत्त देवदत्त से भात पकवाता है।

§ ४१. ह रा दी नं वा २.५—प्रेरणार्थक 'हर' (=ले जाना) आदि धातुओं के साथ, कर्ता में 'दुतिया विभत्ति' होती है, और 'ततिया' भी। जैसे—हारेति भारं

देवदत्तं देवदत्तेन वा=देवदत्त से भार लिवा जाता है। दस्सयते जनं जनेन वा=आदमी से दिखवाता है। अभिवादयते गुरुं देवदत्तं देवदत्तेन वा=देवदत्त से गुरु को प्रणाम करवाता है।

§ ४२. न खा दा दी नं २.६—प्रेरणार्थक खाद (=खाना) आदि धातुओं के साथ, कर्ता में 'दुतिया विभत्ति' नहीं होती है; केवल 'ततिया विभत्ति' ही होती है। जैसे—

खादयति देवदत्तेनः आदयति देवदत्तेनः सद्दापयति देवदत्तेन इत्यादि।

§ ४३. व हि स्सा नि य न्तु के २.७—नियन्ता (=हाँकने वाला) न हो, तो प्रेरणार्थक 'वह' धातु के साथ, कर्ता में 'ततिया विभत्ति' होती है, 'दुतिया' नहीं। जैसे—वाहयति भारं देवदत्तेन=देवदत्त से भार ढुलवाता है।

नियन्ता रहने से, 'दुतिया विभत्ति' होती है। जैसे—वाहयति भारं बलिवद्दे=बैलों पर भार ढुलवाता है।

§ ४४. भ क्खि स्सा हिं सा यं २.८—यदि हिंसा नहीं होती हो, तो प्रेरणार्थक 'भक्ख' धातु के साथ, कर्ता में 'ततिया विभत्ति' होती है, दुतिया नहीं। जैसे—भक्खयति मोदके देवदत्तेन=देवदत्त को लड्डू खिलाता है।

हिंसा का भाव आता हो, तो 'दुतिया विभत्ति' हो सकती है। जैसे—भक्खयति बलिवद्दे सस्सं=बैलों को धान खिला देता है।

२४. अभ्यास

१. हिन्दी में अनुवाद कीजिए—

भिक्खु पाणं न हनति, न अञ्ञेहि घातापेति। अदिन्नं न आदियति, न अञ्ञेहि आदापेति। न चोरेति, न अञ्ञेहि चोरापेति। पञ्हो सयं पि पुच्छितब्बो, अञ्ञेहि पि पुच्छापेतब्बो। विहारं सयं पि गन्तब्बं, अञ्ञे पि गच्छापेतब्बं। गन्त्वा च, गच्छापेत्वा च, धम्मे सावीयमाने धम्मो सयं पि सुणितब्बो अञ्ञे पि सावापेतब्बो। एवं सयं पि कथिरमाने, अञ्ञे च कारीयमाने (कारापेन्ते) कुशला धम्मा वड्ढन्ति। माता सुसुं पायेति, पुप्फं गाहापेति, तिणं जहापेति, मधुरं वाचं सावेति, अञ्ञेहि पि सावापेति। एवमेव भगवा पि वेनेय्ये सावके धम्मामतं पायेति, सीलपुप्फं गण्हापेति, अकुसले धम्मे मुञ्चापेति, सब्बत्थ कल्याणे धम्मे सामं सावयति, पण्डितेहि पि थेरेहि सावापेति च।

२. पालि में अनुवाद कीजिए—

भगवान धर्म्म सुनाते हैं। भिक्षु लोग विहार बनवाते हैं, बुद्ध-वचन (पालि=धम्म-पलियायो, पेय्यालं) सुनाते हैं, लोक-हित काम करते भी हैं, दूसरों से कराते भी हैं। भिक्षु लोग किसी की निन्दा न स्वयं करते हैं, न दूसरों से कराते हैं। लड़के लोग पढ़ते भी हैं, दूसरों को पढ़ाते भी हैं; अपने साथियों से दूसरों को पढ़वाते भी हैं। ब्राह्मण लोग धर्म्म को जानते भी हैं, दूसरों को सिखलाते भी हैं। वेदों को पढ़ना भी चाहिए, दूसरों को पढ़ाना भी चाहिए, तीनों वेदों के पारङ्गतों से पढ़वाना भी चाहिए। इसी तरह, बुद्धों के उपदिष्ट धर्म्म भी स्वयं साक्षात्कार करना भी (सच्छि+कर) चाहिए, अपने साथियों को साक्षात्कार करवाना भी चाहिए, तीनों विद्या जानने वाले महात्माओं से धर्म्मोपदेश करवाना भी चाहिए।

३. निम्नलिखित वाक्यों को प्रेरणार्थक बनाइए—

बुद्धो धम्मं देसेति। थेरा झानं भावेन्ति। देवो वस्सति। राजा रज्जं कारेति। बुद्धं सरणं गच्छति। बुद्धं नमस्सति। दारका विहारं गच्छन्ति। धम्मं सुणन्ति। थेरे नमस्सन्ति। भिक्खू वनं गमिस्सन्ति, समण-धम्मं कत्वा, पच्छा आगमिस्सन्ति। बुद्धं वन्दाहि, धम्मं सरणं गच्छाहि, सङ्घाय दानानि देहि। झानानि चे भावेय्य, पञ्ञा उप्पज्जेय्य। बुद्धं सरणं चे अगमिस्सा, सीलं रक्खिस्सा। धम्मं सोतुं आगच्छन्तु। धम्मं सुत्वा, निय्याथ।

चौथा काण्ड

छठा पाठ

अव्यय-प्रकरण

(तीसरा भाग—अव्यय)

तद्धित

(तीसरा भाग—तद्धित)

नाम तथा सर्वनाम शब्दों से परे, तद्धित के कुछ प्रत्यय आते हैं, जिनके लगने से वे शब्द अव्यय बन जाते हैं। वैसे प्रत्यय चौदह हैं—(१) तो, (२) त्र, (३) त्थ, (४) धि, (५) हिं, (६) हं, (७) दा, (८) था, (९) धा, (१०) ज्झं, (११) एधा, (१२) क्खत्तुं, (१३) सो, और (१४) ची।

१. तो

§ २७. तो पञ्चम्या ४.९५—पञ्चमी विभक्ति के अर्थ में, शब्द से परे बहुधा 'तो' प्रत्यय आता है। 'तो' प्रत्यय लगा हुआ शब्द अव्यय होता है। जैसे—गामस्मा गच्छति इति—गामतो गच्छति=गाँव से जाता है।

		चोरतो भायति=चोर से डरता है
इतो तेत्तो कुतो ४.९६—	कि	कुतो आगच्छति=कहाँ से आता है?
	त	ततो आगच्छति=वहाँ से आता है
	य	यतो आगच्छति=जहाँ से आता है
	इम	इतो आगच्छति=यहाँ से आता है
	एत	अतो आगच्छति=यहाँ से आता है

अ भ्या वी हि ४.९७—

अभि	अभितो=दोनों ओर
परि	परितो=चारों ओर
पच्छा	पच्छतो=पीछे से
हेट्ठा	हेट्ठतो=नीचे से

आ द्या दी हि ४.९८—'आदि' प्रभृति शब्दों से परे 'तो' प्रत्यय होता है। जैसे—

आदि	आदितो=शुरु से
मज्झ	मज्झतो=वीच से
अन्त	अन्ततो=अन्त से
पिट्ठि	पिट्ठितो=पीछे से
पस्स	पस्सतो=वगल से
मुख	मुखतो=सामने से

२. ३. त्र. त्थ

§ २८. स ब्बा दि तो सं त्त म्या त्र त्था ४.९९—'सत्तमी विभत्ति' के स्थान में, 'सब्ब' आदि शब्दों से परे, 'त्र' तथा 'त्थ' प्रत्यय आते हैं। जैसे—

सब्बस्मि	सब्बत्र, सब्बत्थ=सभी में, सभी जगह
यस्मि	यत्र, यत्थ=जिसमें, जहाँ
तस्मि	तत्र, तत्थ=उसमें, वहाँ
पर	परत्र, परत्थ=दूसरी जगह

क त्थे त्थ कु त्रा त्र क्वे हि ध ४.१००—ये शब्द निपात हैं। जैसे—

कस्मि	कत्थ, कुत्र, क्व=कहाँ
एतस्मि	अत्र, एत्थ=यहाँ
अस्मि	इध, इह=यहाँ

४. धि

§ २९. धि स ब्बा वा ४.१०१—'सत्तमी विभत्ति' के स्थान में, 'सब्ब' शब्द

से परे, 'धि' प्रत्यय आता है, और 'त्र' तथा 'त्थ' भी। जैसे—

सब्बस्मि—सब्बधि, सब्बत्थ, सब्बत्र

५. हिं

§ ३०. या हिं ४.१०२—'सत्तमी विभत्ति' के स्थान में, 'य' शब्द से परे 'हिं' प्रत्यय आता है, और 'त्र' भी। जैसे—

यस्मि—यहिं, यत्र=जहां

६. हं

§ ३१. ता हं च ४.१०३—'सत्तमी विभत्ति' के स्थान में, 'त' शब्द से परे, 'हं' प्रत्यय आता है, और 'हिं' तथा 'त्र' भी। जैसे—

तस्मि—तहं, तहिं, तत्र=तहां

§ ३२. कु हिं कहं ४.१०४—'सत्तमी विभत्ति' के स्थान में, 'किं' शब्द से ये अव्यय बनते हैं। जैसे—

कस्मि—कुहिं, कुहं=कहाँ ?
कथं=कैसे ?
कुहिंचन, कुहिञ्चि=कहीं भी

७. दा

§ ३३. सब्बेकञ्ञयतेहि काले दा ४.१०५—'सब्ब', 'एक', 'अञ्ञ', 'य', 'त'—इन शब्दों से परे, 'काल' के अर्थ में 'दा' प्रत्यय आता है। जैसे—

सब्बस्मि काले	सब्बदा=सभी समय
एकस्मि काले	एकदा=एक समय
अञ्ञस्मि काले	अञ्ञदा=दूसरे समय
यस्मि काले	यदा=जिस समय
तस्मि काले	तदा=उस समय

कदाकुदासदाधुनेदानि ४.१०६—ये शब्द निपात हैं। जैसे—

कस्मिं काले	कदा, कुदा=किस समय ?
सब्बस्मिं काले	सदा=सभी समय
इमस्मिं काले	अधुना, इदानि=इस समय

अज्जसज्जु-अपरज्जु-एतरहि-करहा ४.१०७—ये शब्द भी निपात हैं। जैसे—

अस्मिं अहनि	अज्ज=आज
समाने अहनि	सज्जु=उसी दिन
अपरस्मिं अहनि	अपरज्जु=दूसरे दिन
इमस्मिं काले	एतरहि=इस समय
कस्मिं काले	करह=किस समय ?

८. था

§ ३४. **सब्बादीहि पकारे था ४.१०८**—'इस प्रकार का' इस अर्थ में, 'सब्ब' आदि शब्दों से परे 'था' प्रत्यय होता है। जैसे—

सब्बेन पकारेन	सब्बथा=सभी प्रकार से
येन पकारेन	यथा=जिस प्रकार से
तेन पकारेन	तथा=उस प्रकार से

कथमित्थं ४.१०९—ये शब्द निपात हैं। जैसे—

केन पकारेन	कथं=कैसे ?
इमिना पकारेन	इत्थं=इस प्रकार

९. धा

§ ३५. **धा संख्याहि ४. ११०**—'इस प्रकार का' इस अर्थ में, संख्या वाचक शब्दों से परे 'धा' प्रत्यय होता है। जैसे—

द्वीहि पकारेहि करोति—द्विधा करोति=दो प्रकार से करता है, या दो टुकड़े करता है। इसी तरह, 'एकधा', बहुधा, पञ्चधा इत्यादि।

१०. एधा

§ ३६. द्वितीहेधा ४.११२—ऊपर के ही अर्थ में, 'द्वि' तथा 'ति' शब्दों से परे, विकल्प से 'एधा' प्रत्यय होता है। जैसे—

द्वेधा, तेधा। विकल्प से द्विधा, तिधा भी।

११. ज्झं

§ ३७. वेकाज्झं ४.१११—ऊपर के ही अर्थ में, 'एक' शब्द से परे, विकल्प से 'ज्झं' प्रत्यय होता है। जैसे—

एकज्झं करोति, एकधा करोति=एक प्रकार से करता है।

१२. क्खत्तुं

§ ३८. वारसंख्याय क्खत्तुं ४.११४—'इतनी बार' इस अर्थ में, संख्यावाचक शब्दों से परे, 'क्खत्तुं' प्रत्यय होता है। जैसे—

द्वे वारे भुञ्जति—द्विक्खत्तुं भुञ्जति=दो बार खाता है।

कतिम्हा ४.११५—ऊपर के ही अर्थ में, 'कति' शब्द से परे 'क्खत्तुं' प्रत्यय होता है। जैसे—

कति वारे भुञ्जति—कतिक्खत्तुं भुञ्जति=कितनी बार खाता है?

§ बहुम्हा धा च पच्चासत्तियं ४.११६—यदि, बार जल्दी जल्दी हो, तो 'बहु' शब्द से परे 'धा' तथा 'क्खत्तुं' प्रत्यय होते हैं। जैसे—

दिवसस्स बहू वारे भुञ्जति—बहुधा, बहुक्खत्तुं वा भुञ्जति=दिन में बार बार खाता है।

यदि, बार जल्दी जल्दी न हो, तो भी 'क्खत्तुं' प्रत्यय हो सकता है; किंतु, 'धा' प्रत्यय नहीं। जैसे—'मासस्स बहुक्खत्तुं भुञ्जति'—ऐसा तो हो सकता है, किंतु 'मासस्स बहुधा भुञ्जति' ऐसा नहीं।

§ ३९. सकिं वा ४.११७—'एक बार' इस अर्थ में, विकल्प से 'सकिं' होता है। जैसे—

एकं वारं भुञ्जति—सकिं भुञ्जति=एक बार खाता है। विकल्प से—एकक्खत्तुं भुञ्जति।

१३. सो

§ ४०. सो वीच्छाप्पकारेसु ४.११८—वीप्सा तथा प्रकार के अर्थ में, शब्द से परे बहुधा 'सो' प्रत्यय होता है। जैसे—

वीप्सा—खण्डसो=खण्ड खण्ड करके। एकेकसो=एक एक करके।

प्रकार—पुथुसो=विस्तार से। सब्बसो=सभी प्रकार।

१४. ची

§ ४१. अभूततब्भावे करासभूयोगे विकारा ची ४.११९—जो नहीं था, उसके होने के अर्थ में, 'कर', 'अस' तथा 'भू' धातुओं के योग में, विकार-वाचक शब्दों से परे 'ची' प्रत्यय होता है। जैसे—

अधवलं धवलं करोति इति—धवली करोति=जो उजला न था, उसे उजला करता है। धवली सिया=जो उजला न था, वह उजला होवे। धवली भवति=जो उजला न था, वह उजला होता है।

२५. अभ्यास

१. हिन्दी में अनुवाद कीजिए—

"सब्बेन सब्बं, सब्बथा सब्बं, सङ्खारा अनिच्चा, दुक्खा, अनत्ता"ति सब्बत्थ (सब्बधि) भावेतब्बं। कथं, कुहिं, कदा भावेतब्बं ति ? "सब्बे सङ्खारा सङ्खता, विपरिणाम-धम्मा, अविज्जा-पच्चया सम्भूता"ति एत्थ, परत्थ, सब्बत्थ; एकदा पि, अञ्ञदा पि, तदानि पि, इदानि पि, सब्बदा भावेतब्बं, मनसि-कातब्बं। ततो पट्ठाय। सब्बतो संवुतेन भवितब्बं। तिक्खत्तुं उदानं दानेसि। तिक्खत्तुं चतुक्खत्तुं विहारा निक्खमित्वा भावेतब्बानि झानानि भावितानि।

२. पालि में अनुवाद कीजिए—

(क) बुद्ध को हमेशा, हर जगह, हर तरह से याद करो। एक, दो, तीन बार बुद्ध के शरण जाता हूँ। हर तरह से धर्म्म को पूरा करना चाहिए। देवता लोग जब बुद्ध के पास आते थे, उस समय बड़ा प्रकाश फैलता था।

(ख) मेरे मकान के पास। वृक्ष के ऊपर। सूर्य्य के समान। नदी के दोनों तरफ़। बालू के नीचे। दिन दोपहर को। रातों रात। लम्बे अरसे के बाद। निरन्तर अभ्यास के कारण। अक्सर पढ़ते रहने से। जैसे हो तैसे। शीघ्र शीघ्र चलने की अपेक्षा। पुण्य करते ही। धीरे धीरे विपाक सामने दिखाई देना। ध्यान करने के लिए, जङ्गल के भीतर पैठना।

पाँचवाँ काण्ड

पहला पाठ

सन्धि-प्रकरण

१. स्वर सन्धि

§१. सरो लोपो सरे १.२६—स्वर से परे यदि स्वर हो, तो कभी कभी पूर्व स्वर का लोप हो जाता है। जैसे—

तत्र+इमे=तत्रिमे (तत्र+इमे=तत्र्+इमे=तत्रिमे)
सद्धा+इन्द्रियं=सद्धिन्द्रियं
नो हि+एतं=नो हेतं
भिक्खुनी+ओवादो=भिक्खुनोवादो
समेतु+आयस्मा=समेतायस्मा
अभिभू+आयतनं=अभिभायतनं
पुत्ता मे+अत्थि=पुत्ता मत्थि
असन्तो+एत्थ=असन्तेत्थ

§२. परो क्वचि १.२७—स्वर से परे यदि स्वर हो, तो कभी कभी पर स्वर का लोप हो जाता है। जैसे—

सो+अपि=(सो+पि) सोपि
सा+एव=साव
यतो+उदकं=यतोदकं
ततो+एव=ततोव
चत्तारो+इमे=चत्तारो मे

ते+अहं=तेहं
वसलो+इति=वसलोति
आकासे+इव=आकासेव

§ ३. न द्वे वा १.२८—स्वर से परे यदि स्वर हो, तो कभी कभी दोनों में से किसी स्वर का लोप नहीं होता है। जैसे—

लता+इव=लता इव

विकल्प से—'लताव', तथा 'लतेव' भी।

§ ४. युवण्णानमेओ लुत्ता १.२९—लुप्त हुए स्वर से परे, 'इ' का कभी कभी 'ए', तथा 'उ' का 'ओ' हो जाता है। जैसे—

तस्स+इदं=तस्स्+इदं=तस्स्+एदं=तस्सेदं
वात+ईरितं=वात्+ईरितं=वातेरितं
वाम+उरु=वाम्+उरु=वामोरु
अति+इव=अत्+इव=अतेव
वि+उदकं=व्+उदकं=वोदकं

§ ५. यवा सरे १.३०—'इ' तथा 'उ' से परे यदि स्वर हो, तो कभी कभी उनका क्रमशः 'य' तथा 'व' हो जाता है। जैसे—

वि+आकतो=व्याकतो
इति+अस्स=इत्यस्स=इच्चस्स[1]=इच्चस्स[1]
अधि+इणमुत्तो=अध्यिणमुत्तो=अभिय्यणमुत्तो=अभिझण-मुत्तो=अज्झिणमुत्तो[1]
सु+आगतं=स्वागतं
बहु+आबाधो=बव्हाबाधो,[1] बह्वाबाधो

---

१. तवग्गवरणानं ये चवग्गबयञ्ञा १.४८—तवर्ग, 'व,' 'र' तथा 'ण' यदि 'य' से संयुक्त हों, तो उनका क्रमशः चवर्ग, 'ब', 'य' तथा 'ञ' हो जाता है। जैसे—

इत्यस्स=इच्च्यस्स। तथ्यं=तच्छ्यं। यद्येवं=यज्येवं। अभ्यत्तं=अभ्भ्यत्तं।

§ ६. एओनं १.३१—'ए' तथा 'ओ' से परे यदि स्वर हो, तो कभी कभी उनका क्रमशः 'य' तथा 'व' हो जाता है। जैसे—

ते+अज्ज=त्यज्ज

सो+अहं=स्वाहं (सो+अहं=स्व+हं=ब्यञ्जने दीघरस्सा १.३३. स्वाहं)

मे+अयं=म्यायं

पब्बते+अहं=पब्बत्याहं

§ ७. गोस्सावङ् १.३२—'गो' शब्द से परे कोई स्वर आवे, तो 'गो' शब्द का 'गव' आदेश हो जाता है। जैसे

गो+अस्सं=गव+अस्सं=गव्+अस्सं=गवास्सं

निम्नलिखित सन्धि निपात हैं—

तथा+एव=तथरिव

यथा+एव=यथरिव

थन्यं=थञ्ञं। दिव्यं=दिब्बं। पर्येसना=पय्येसना। पोक्खरण्यो=पोक्खरञ्ञो।

२. वग्गलसेहि ते १.४९—वर्गीय वर्ण, 'ल' या 'स' के साथ यदि 'य' संयुक्त हो, तो उसका भी ('य' का भी) वही अक्षर हो जाता है। जैसे—

इच्यस्स=इच्चस्स। तछ्यं=तछ्छं। यज्येवं=यज्जेवं। अभ्यत्तं=अब्भत्तं। थन्यं=थञ्ञं। दिव्यं=दिब्बं। पोक्खरञ्यो=पोक्खरञ्ञो। फल्यते=फल्लते। अस्यते=अस्सते।

३. चतुत्थदुतियेस्वेसं ततियपठमा १.३५—यदि किसी वर्ग के दो चतुर्थ या द्वितीय वर्ण संयुक्त हों, तो उनमें पहले का क्रमशः (उसी वर्ग का) तृतीय या प्रथम वर्ण हो जाता है। जैसे—तछ्छं=तच्छं। अभ्भत्तं=अब्भत्तं। अझ्झणमुत्तो=अज्झणमुत्तो।

४. वे वा १.५१—यदि 'ह', 'व' से संयुक्त हो, तो विकल्प से उनका उलट-पलट (=विपर्यास) हो जाता है। जैसे बह्वाबाधो=बव्हाबाधो।

[हस्स विपल्लासो १.५०—यदि 'ह', 'य' से संयुक्त हो, तो उनका विपर्यास हो जाता है। जैसे—गुह्यं=गुय्हं]

२. व्यञ्जन-सन्धि

§ ८. व्यञ्जने दीघरस्सा १.३३—बाद में व्यञ्जन हो, तो प्रायः पूर्वस्थित ह्रस्व तथा दीर्घ स्वर का क्रमशः दीर्घ तथा ह्रस्व हो जाता है। जैसे—

तत्र+अयं=(परो क्वचि, १.२७ इस सूत्र से—तत्र+यं)=तत्रायं।

मुनि+चरे=मुनी चरे
सम्मा+एव=सम्मदेव[5]
माला+भारी=मालभारी
सम्म+धम्मो=सम्मा धम्मो
खन्ति+परमं=खन्ती परमं
जायति+सोको=जायती सोको

§ ९. सरम्हा द्वे १.३४—स्वर से परे व्यञ्जन हो, तो उसका (=व्यञ्जन का) कभी २ द्वित्व हो जाता है। जैसे—

प+गहो=पग्गहो
दु+कतं=दुक्कतं, दुक्कटं[6]

§ १०. चतुत्थदुतियेस्वेसं ततियपठमा १.३५—यदि किसी वर्ग के दो चतुर्थ या द्वितीय वर्ण संयुक्त हों, तो उनके पहले का क्रमशः (उसी वर्ग का)

---

५. वनतरगा चागमा १.४५—स्वर से पूर्व, कहीं कहीं 'व', 'न', 'त', 'र', 'ग', 'म', 'य' 'तथा' 'द' का आगम होता है। जैसे—

सम्मा+एव=सम्मा+देव=सम्मदेव। अत्त+अत्थं=अत्तवत्थं। यथा+इदं=यथयिदं। इध+आहु=इधमाहु। पुथ+एव=पुथगेव। नि+ओजं=निरोजं। तस्मा+इह=तस्मातिह। इतो+आयति=इतोनायति। ति+अङ्गिकं=तिवङ्गिकं।

६. तथनरानं टठणला १.५२—'त', 'थ', 'न' तथा 'र' का विकल्प से क्रमशः 'ट', 'ठ', 'ण', तथा 'ल' हो जाता है। जैसे—

दुक्कतं=दुक्कटं। अत्थकथा=अट्ठकथा। गहनं=गहणं। परिघो=पलिघो। परायति=पलायति।

तृतीय या प्रथम वर्ण हो जाता है। जैसे—

नि+घोसो=(सरम्हा द्वे १.३४ इस सूत्र से—निघ्घोसो)=निग्घोसो

अ+खन्ति=अख्खन्ति=अक्खन्ति

सेत+छत्तं=सेतछ्छत्तं=सेतच्छत्तं

नि+ठानं=निठ्ठानं=निट्ठानं

यस+थेरो=यसथ्थेरो=यसत्थेरो

अ+फुटं=अफ्फुटं=अप्फुटं

§११. वितिस्सेवे वा १.३६—यदि 'इति' शब्द के बाद 'एव' शब्द हो, तो विकल्प से 'इति' का 'इत्व' आदेश हो जाता है। जैसे—

इति+एव=इत्वेव। विकल्प से—इच्चेव।

§१२. एओनमवण्णे १.३७—'ए' तथा 'ओ' के बाद यदि कोई भी वर्ण हो, तो उनका ('ए' तथा 'ओ' का) कहीं कहीं 'अ' हो जाता है। जैसे—

सो+सीलवा=स सीलवा

एसो+धम्मो=एस धम्मो

याचके+आगते=याचकमागते

अकरम्हसे+ते=अकरम्हस ते

एसो+अत्थो=एस अत्थो

अग्गो+अक्खायति=अग्गमक्खायति

३. निग्गहीत सन्धि

§१३. निग्गहीतं १.३८—कहीं कहीं, निग्गहीत (=अनुस्वार) का आगम होता है। जैसे—

चक्खु+उदपादि=चक्खुं उदपादि

त+खणे=तंखणे

त+सभावो=तंसभावो

अव+सिरो=अवंसिरो

पुरिम+जातिं=पुरिमं जातिं
याव+चिघ=यावञ्चिघ

§ १४. लोपो १.३९—कहीं कहीं, निग्गहीत का लोप हो जाता है। जैसे—
सं+रत्तो=स+रत्तो=(ब्यञ्जने दीघरस्सा १·३३) सारत्तो
सं+रागो=सारागो
सं+रम्भो=सारम्भो
बुद्धानं+सासनं=बुद्धान सासनं
एवं+अहं=एवाहं
कथं+अहं=कथाहं
गन्तुं+कामो=गन्तुकामो

§ १५. परसरस्स १.४०—निग्गहीत से परे आने वाले स्वर का कहीं कहीं लोप हो जाता है। जैसे—
त्वं+असि=त्वंसि
वीजं+इव=वीजंव
इदं+अपि=इदम्पि
अभिनन्दुं+इति=अभिनन्दुन्ति
किं+इति=किन्ति
किं+इदानि=किन्दानि
अलं+इदानि=अलन्दानि
विकल्प से—त्वमसि, वीजमिव इत्यादि भी।

§ १६. वग्गे वग्गन्तो १.४१—निग्गहीत से परे कोई वर्गीय वर्ण रहे, तो विकल्प से उसका (=निग्गहीत का) उसी वर्ग का अन्तिम वर्ण हो जाता है। जैसे—
तं+करोति=तङ्करोति
तं+चरति=तञ्चरति
तं+ठानं=तण्ठानं
तं+धनं=तन्धनं
तं+पाति=तम्पाति

§१७. ये व हि सु ञ्ञो १.४२—यदि वाद में 'य', 'एव' तथा 'हि' शब्द हों, तो पूर्वस्थित निग्गहीत का कहीं कहीं 'ञ्ञ' हो जाता है। जैसे—

यं+यं एव=यञ्ञवेव
तं+एव=तञ्ञेव
तं+हि=तञ्हि

§१८. ये संस्स १.४३—'य' परे हो, तो पूर्वस्थित 'सं' शब्द के निग्गहीत का 'ञ' हो जाता है। जैसे—

सं+यमो=सञ्ञमो

§१९. म य दा सरे १.४४—स्वर परे हो, तो कहीं कहीं पूर्वस्थित निग्गहीत का 'म', 'य' तथा 'द' आदेश हो जाता है। जैसे—

तं+अहं=तमहं
तं+इदं=तयिदं
तं+अलं=तयलं

द्रष्टव्य

§२० छा ळो १.४६—'छ' शब्द से परे आने वाले स्वर का कहीं कहीं 'ळ' हो जाता है। जैसे—

छ+अगं=छळगं
छ+आयतनं=छळायतनं

§२१ त द मि ना दी नि १.४७—निम्नलिखित सन्धि निपात हैं—

तं+इमिना=तदमिना
सकिं+आगामी=सकदागामी
एकं+इध+अहं=एकमिदाहं
संविधाय+अवहारो=संविदावहारो
वारिनो+वाहको=वलाहको
जीवन+मूतो=जीमूतो
छव+सयनं=सुसानं

§२२. संयोगादि लोपो १.५३—संयोग के आदिभूत अवयव का कहीं कहीं लोप हो जाता है। जैसे—

पुप्फं+अस्सा=पुप्फंसा। 'अस्' जो आदिभूत अवयव है उसका लोप हो गया।

जायते+अग्गिनि=जायते गिनि ('अग्' जो आदिभूत अवयव है उसका लोप हो गया)।



२६. अभ्यास

१. सन्धि कीजिए:—

(क) जिव्हा+इन्द्रियं । मन+इन्द्रियं । महा+ओघो । महा+इच्छो । साधु+आवुसो । मे+अत्थि । कतमो+अस्स । भिक्खुनी+ओवादो । देव+इन्दो ।

(ख) चत्तारो+इमे । ते+इमे । ते+अपि । भगवा+इति । सो+अहं । छाया+इव । सचे+अज्ज । वेदना+इति । बुद्धो+असि ।

(ग) तत्र+अयं । बुद्ध+अनुस्सति । देव+अनुभावो । सम्मन्ति+इध । बहु+उपकारो । बहु+उपायासो । विमुत्ति+इति ।

(घ) सचे+अहं । साधु+इति । किंसु+इध । यो+अयं । तथा+उपमं । इतर+इतरो ।

(ङ) उप+इतो । अव+इच्च । न+उपेति । मे+अयं । ते+अहं । सो+अयं । अनु+एति । को+अत्थो । सो+एव । खो+अहं । सु+आगतं । ननु+एव । वि+आकतो । इति+एव ।

(च) गच्छामि+अहं । पञ्चहि+अङ्गेहि । वि+अकासि । परि+एसना । परि+ओसानं । दु+अङ्गिकं ।

(छ) यथा+एव । तथा+एव । अपि+अज्ज । इध+अहं । तं+एव । एवं+एतं । तं+आहु । धन+एव । तं+अवोच । न+इदं । मा+इदं । लघु+एस्सति । एक+एकस्स । कसा+इव । सम्मा+अञ्ञा । सम्मा+अत्थो । सम्मा+अक्खातो । बहु+एव । पुन+एव । चिरं+आयति । अविज्जा+अहोसि । तस्मा+इहा । यस्मा+इह । अज्ज+अग्गे । राजा+इव । सब्भि+एव ।

(ज) मुनि+चरे । सम्म+सम्बुद्धो । खन्ति+परमं । जायति+सोको । एसो+धम्मो । दीपं+करो । पभं+करो । सं+लापो । सं+पलापो । सं+

योगो । सं+योजनं । पुब्ब+गमा । याव+चिध । बुद्धानं+सासनं । देवानं+पियो । सं+रागो ।

(ऋ) एवं+अस्स । इध+अहं । अभि+अञ्ञासिं । अति+अन्त । अपि+एव । इति+एव । इति+आदयो । अनु+एति । नि+सरणं । उ+भवो । नि+आसो ।

२. सन्धि विच्छेद कीजिए—

एक मिदाहं । अज्जतग्गे । पगेव । एकासने । कतिपाहच्चयेन । सो पज्ज दिस्सति । पाणुपेतं । स्वागतं । त्याहं । देवानुभावो । सेय्यथापि । यथरिव । मनसाकासि । पुब्बङ्गमा । सेय्यथीदं । इतरीतरेन । अज्झोगाहित्वा । पच्चन्ते । अब्भोकासिको । अप्पेव नाम । उप्पन्नो । कतावकासो । अन्वेति । जिह्विन्द्रियं । एतदहोसि । मुनीचरे । गच्छामहं । अहञ्ञेव । चाहं । चक्कं व । छायाव । भगवाति । इतिपि । परियोसानं । सम्मावायामो । सम्मा-सम्बुद्धो । पञ्चिन्द्रियं । सकदागामी । बुद्धान सासनं । देविन्दो । भिक्खुनोवादो । चक्खुं उदपादि । सारत्तो ।

———

पाँचवाँ काण्ड

दूसरा पाठ

क्रिया-प्रकरण

(आठवाँ भाग—सनन्त)

'ख', 'स', 'छ' प्रत्यय

§ २४. तुंस्मा लोपो चिच्छायं ते ५.४—इच्छा करने के अर्थ में, 'तुं'-प्रत्ययान्त धातु से परे, बहुधा 'ख', 'स' और 'छ' प्रत्यय होते हैं। इन प्रत्ययों के लगने से, 'तुं' प्रत्यय का लोप हो जाता है। जैसे—

'ख'—भोत्तुं इच्छति इति—बुभुक्खति=भोजन करने की इच्छा करता है।

'स'—जेतुं इच्छति इति—जिगिंसति=जीतने की इच्छा करता है।

'छ'—घसितुं इच्छति इति—जिघच्छति=खाने की इच्छा करता है।

नोट—यहाँ 'बुभुक्ख', 'जिगिंस', 'जिघच्छ' आदि अपने में स्वतंत्र धातु हो गए; जिनके रूप सभी काल में होंगे। जैसे—बुभुक्खति, बुभुक्खिस्सति, बुभुक्खि, बुभुक्खेय्य, बुभुक्खतु इत्यादि।

§ २५. खछसानमेकस्सरो दि द्वे ५.६९—'ख', 'छ', 'स', प्रत्ययों के लगने से, धातु के प्रथम एक स्वर-युक्त अंश का द्वित्व हो जाता है। जैसे:—
तिज+ख+ति=तितिज+ख+ति=तितिक्खति

§ २६. आदिस्मा सरा ५.७१—यदि धातु के आदि में ही स्वर हो, तो उसको ले कर एक और स्वर तक द्वित्व होता है। जैसे—अस+स+ति=असिसिसति=खाने की इच्छा करता है।

§ २७. चतुत्थदुतियानं ततियपठमा ५.७८—द्वित्व होने पर, पूर्व-स्थित चतुर्थ वर्ण का तृतीय, और द्वितीय का प्रथम हो जाता है। जैसे—

भुज+खं+ति= भुभुज+ख+ति=बुभुज+ख+ति=बुभुक्खति। छिद+ग्र=चिच्छेद।

§ २८. क व ग्ग हा नं च व ग्ग जा ५.७१—द्वित्व होने पर, पूर्वस्थित कवर्ग का चवर्ग, और 'ह' का 'ज' हो जाता है। जैसे—कम+स+ति=ककम+स+ति=चकम+स+ति=चिकमिसति। हस+स+ति=हहस+स+ति=जहस+स+ति=जिहसिसति।

§ २९. ख छ्छ से स्व स्सि ५.७६—'ख', 'छ', 'स', प्रत्ययों के ग्राने से, द्वित्व होने पर, पूर्वस्थित ग्रकार का इकार हो जाता है। जैसे—चकम+स+ति=चिकमिसति। जहस+स+ति=जिहसिसति, पिपासति।

§ ३०. ञि व्य ञ्ज न स्स ५.१७०—व्यञ्जन से शुरू होने वाला कोई प्रत्यय ग्रावे, तो धातु के ग्रन्त्य स्वर का 'इ' ग्रादेश हो जाता है। जैसे—चकम+स+ति=चिकमिसति। जहस+स+ति=जिहसिसति।

§ ३१. र स्सो पु ब्ब स्स ५.७४—द्वित्व होने पर, पूर्व स्वर ह्रस्व हो जाता है। जैसे—गाह+स+ति=गागाह+स+ति=जागाह+स+ति=जगाह+स+ति=जिगाहिसति। पाल+स+ति=पापाल+स+ति=पपाल+स+ति=पिपालिसति। ददाति। जहाति।

लो पो ना दि ब्य ञ्ज न स्स ५.७५—द्वित्व होने पर, ग्रादि से भिन्न पूर्व व्यञ्जन का लोप होता है। जैसे—

ग्रस+स+ति=ग्रसग्रस+स+ति=ग्रसिसिसति।

§ ३२. य थि ट्ठं स्या दि नो ५.७३—नाम-धातु में, ग्रादिभूत एक स्वर, या जैसी इच्छा, किसी दूसरे स्वर का द्वित्व कर देते हैं। जैसे—पुपुत्तीयिसति, पुतित्तीयिसति, या पुत्तीयियिसति।

§ ३३. प र स्स घं से ५.१०१—'हन' धातु के द्वित्व होने पर, दूसरे 'ह' का 'घं' ग्रादेश होता है। जैसे—हन+स+ति=हहन+स+ति=जघं+स+ति=जिघंसति।

§ ३४. जि ह रा नं गिं ५.१०२—'जि' तथा 'हर' धातुग्रों के द्वित्व होने पर, दूसरे भाग का 'गिं' हो जाता है। जैसे—जिगिंसति। हर—जिगिंसति।

२७. अभ्यास

१. हिन्दी में अनुवाद कीजिए—

जिघच्छा परमा रोगा ति। जिघच्छु हि बुभुक्खति, सीतं वा उण्हं वा तितिक्खितुं न सक्कोति, धम्मं सुस्सूसन्तो पि वीमंसितुं समत्थो नाम न होति। दानं दिच्छन्तेन न किञ्चि जिगुच्छितब्बं, न दिन्नं जिगिंसितब्बं। अमतं पिवासुना (पिपासुना) धम्मो वीमंसितब्बो। गिलाने (बिमार) तिकिच्छापेत्वा सग्गं जिगिंसति।

२. ऊपर के काले अक्षरों में छपे पदों की व्युत्पत्ति बताइए।

३. पालि में अनुवाद कीजिए—

(क) खाने की इच्छा से खाता है, पीने की इच्छा से पीता है। मुझे न तो खाने की इच्छा है न पीने की इच्छा है, केवलमात्र भगवान् के धर्म्म को सुन कर, मनन करने की इच्छा है। क्या आप को कुछ कहने की इच्छा है? नहीं, अब तो केवल पढ़ने की इच्छा है।

(ख) मरने की इच्छा। सोने की इच्छा। देखने की इच्छा करता है। जाने की इच्छा करेगा। बैठने की इच्छा करता है। पढ़ने की इच्छा से। विचार करने की इच्छा। भूख प्यास के मारे भागने की इच्छा करता है। भगवान् को देखने की इच्छा। धर्म्म सुनने की इच्छा से, विहार जाने की इच्छा करता है। बुद्ध-धर्म्म जानने की इच्छा से त्रिपिटक पढ़ने की इच्छा करता है। काम करने की इच्छा।

४. निम्नलिखित वाक्य खण्डों के लिए एक पद लिखिए—

(क) खादितुं इच्छति। गन्तुं इच्छिस्सति। सोतुं इच्छामि। पातुं इच्छति। जेतुं इच्छथ। अत्तुं इच्छेय्यामि। विहरितुं इच्छामि। पठितुं इच्छिसु।

(ख) गन्तु-कामो। खादितु-कामा। सोतु-कामेन। अत्तु-कामताय। विहरितु-कामा। जेतु-कामा। पातु-कामानं। सोतु-कामेहि। गन्तु-कामा। पठितु-कामायो। पचितु-कामासु।

पाँचवाँ काण्ड

तीसरा पाठ

क्रिया-प्रकरण

(नवाँ भाग—नाम धातु)

नाम धातु

कभी कभी, हिन्दी में भी संज्ञा या विशेषण के रूप कुछ बदल कर, उनसे क्रिया का काम ले लेते हैं। जैसे—'फूल' से 'फुलाना', 'जूता' से 'जुतियाना', 'गरम' से 'गरमाना', 'चटचट' से 'चटचटाना' इत्यादि। इन्हें नामधातु कहते हैं।

पाली में भी, इसी तरह, संज्ञा (नाम) से क्रिया बनाने के लिए, उनके आगे—विशेष अर्थ में—पाँच प्रत्यय आते हैं—(१) ईय, (२) आय, (३) अस्स, (४) इ, (५) आपि। इन प्रत्ययों से युक्त होने पर जो रूप बनता है, उसे 'नाम धातु' कहते हैं। स्वतंत्र धातु की तरह, 'नाम धातु' के भी रूप सभी काल में होते हैं।

१. ईय

§ ३५. ईयो कम्मा ५.५—इच्छा करने के अर्थ में, इच्छा के कर्म से परे, 'ईय' प्रत्यय होता है। जैसे—पुत्तं इच्छति—पुत्तीयति=पुत्र की इच्छा करता है। धनीयति=धन की इच्छा करता है।

[एकत्थतायं २.१२१—एकार्थी-भाव होने से (=अर्थात् नामधातु, समास और तद्धित में), प्रायः सभी विभक्तियों का लोप होता है। जैसे—पुत्तं+ईय+ति=पुत्त+ई+ति=पुत्तीयति। रञ्ञो पुरिसो—राजपुरिसो। वसिट्ठस्स अपच्चं—वासिट्ठो]

[कहीं कहीं लोप नहीं होता है। जैसे—परन्तपो। भगन्दरो। परस्सपदं। अत्तनोपदं। गवम्पति। देवानम्पियतिस्सो। अन्तेवासी। जनेसुतो। ममत्तं। मामको]

§ ३६. उपमानाचारे ५.६—'इस जैसा आचरण करता है', इस अर्थ में उपमान-भूत कर्म से उत्तर 'ईय' प्रत्यय होता है। जैसे—पुत्तमिवाचरति—पुत्तीयति सिस्सं=शिष्य को पुत्र की तरह मानता है।

§ ३७. आधारा ५.७—'इसमें ऐसा आचरण करता है', इस अर्थ में उपमान के उत्तर 'ईय' प्रत्यय होता है। जैसे—कुटियं इव आचरति—कुटीयति पासादे=प्रासाद में इस तरह रहता है, मानों कुटी में। पासादीयति कुटियं=कुटी में इस तरह रहता है, मानों प्रासाद में।

२. आय

§ ३८. कत्तुतायो ५.८—आचरण करने के अर्थ में, कर्त्ता के उपमान के उत्तर 'आय' प्रत्यय होता है। जैसे—पब्बतो इव आचरति—पब्बतायति=पर्वत के ऐसा आचरण करता है।

§ ३९. च्यत्थे ५.९—जो नहीं है उसके हो जाने के अर्थ में, कर्त्ता से परे, कभी कभी 'आय' प्रत्यय होता है। जैसे—अभुसो भुसो भवति इति—भुसायति=जो अधिक नहीं था, वह अधिक हो जाता है। अपटपटो पटपटो भवति इति—पटपटायति=जो पटपट नहीं करता था, वह पटपट करता है। अलोहितो लोहितो भवति इति—लोहितायति=जो लाल नहीं था, वह लाल होता है।

§ ४०. सद्दादीनि करोति ५.१०—शब्द आदि करने के अर्थ में, 'आय' प्रत्यय होता है। जैसे—सद्दायति=शब्द करता है। वेरायति=वैर करता है। कलहायति=कलह करता है।

३. अस्स

§ ४१. नमोत्वस्सो ५.११—'नमो' करने के अर्थ में, उसके उत्तर 'अस्स' प्रत्यय होता है। नमस्सति=नमस्कार करता है।

४. इ

§ ४२. धात्वत्थे नामस्मा इ. ५.१२—नाम-धातु में बहुधा 'इ' प्रत्यय है। जैसे—हत्थिना अतिक्कमति इति—अतिहत्थयति=हाथी से आक्रमण करता है। वीणाय उपगायति इति—उपवीणायति=वीणा के साथ गाता है। दल्हं करोति—दल्हयति विनयं। विसुद्धा होति रत्ति—विसुद्धयति=साफ होती है। कुसलं पुच्छति—कुसलयति=कुशल पूछता है।

५. आपि

§ ४३. सच्चादीहापि ५.१२—'सच्च' आदि [देखिए-तीसरा परिशिष्ट] शब्दों से परे, नाम-धातु में 'आपि' प्रत्यय होता है। जैसे—सच्चापेति, सच्चापयति=सत्य सिद्ध करता है। सुखापेति, सुखापयति=सुख करता है। इत्यादि

२८. अभ्यास

१. हिन्दी में अनुवाद कीजिए—

(क) किं सद्दायति ? यं धूमायति त मेव सद्दायति। अथ खो सो पायासो उदके पक्खित्तो चिच्चिटायति, चिटिचिटायति, सन्धूपायति सम्पधूपायति। को समत्थो पब्बतायित्वा समुद्दायितुं, समुद्दायित्वा पब्बतायितुं च? महामोग्गल्लानो ति। सो अन्तेवासिनो पुत्तीयति। अन्तेवासिनो पि पुत्तायन्ते। भिक्खु चीवरीयति, पत्तीयति, न खो धनीयति। सो मं कुसल-यित्वा अतिहत्थयितुं पक्कामि।

(ख) पब्बतायति। समुद्दायति। धूमायति। दारका पुत्तायन्ति। पुत्तायन्ते दारके अज्झापको पुत्तीयति। पत्तीयन्तानं च वत्थीयन्तानं च भिक्खूनं। चीवरीयमानानं भिक्खुनीनं। पुथुज्जनो वेरायति, थेनेति, सद्दायति, कलहा-यति। चित्रयति।

२. पालि में अनुवाद कीजिए—

अपने पुत्र की इच्छा करता है। अपने धर्म्म की इच्छा करता है। राजा के समान आचरण करता है। मूर्ख के समान आचरण करता है। पण्डित के समान आचरण करता है। दृढ़ करता है। वैर करता है। शब्द करता है। प्रणाम करता है। सुख, दुख, अनुभव करता है।

३. (क) इच्छार्थक तथा नाम-धातु में क्या अन्तर है? उदाहरण देकर समझाइए।

(ख) प्रेरणार्थक तथा नाम-धातु में क्या भेद है? उदाहरण देकर समझाइए।

पाँचवाँ काण्ड

चौथा पाठ

स्त्री प्रत्यय

पुल्लिङ्ग से स्त्रीलिङ्ग बनाने के लिए, शब्द से परे सात प्रत्यय आते हैं—(१) आ, (२) ङी, (३) इनी, (४) नी, (५) आनी, (६) ऊ, और (७) ति

१. आ

इ त्थि य म त्था ३.२६—पुल्लिङ्ग से स्त्रीलिङ्ग बनाने के लिए, अकारान्त शब्द से परे 'आ' प्रत्यय आता है। जैसे—

पुल्लिङ्ग	स्त्रीलिङ्ग
सुसीलो	सुसीला
धम्मदिन्नो	धम्मदिन्ना
धनिको	धनिका
सबलो	सबला
बालको	बालिका[1]
कारको	कारिका[1]

---

१. अ धा तु स्स के 'स्या दि तो घे' स्सि ४.१४२—स्त्री प्रत्यय आने से, अधातु शब्द के 'क' के पहले 'अ' का बहुधा 'इ' होता है। जैसे—

बालक—बालिका। कारक—कारिका।

२. ङी

नवादितो ङी ३.२७—'नद' आदि [देखिए—तीसरा परिशिष्ट] शब्दों से परे 'ङी' प्रत्यय आता है। 'ङी' का केवल 'ई' रह जाता है। जैसे—

पुल्लिङ्ग	स्त्रीलिङ्ग
नद	नदी
मिग (=मृग)	मिगी
कुमार	कुमारी
तरुण	तरुणी
वारुण	वारुणी
गोतम	गोतमी

न्तन्तूनं ङिम्हिं तो वा ३.३६—'ङी' प्रत्यय लगने से, 'न्त' तथा 'न्तु' का विकल्प से 'त' आदेश हो जाता है (देखिए—पृ० ८२,१४२,१६०.)। जैसे—

पुल्लिङ्ग	स्त्रीलिङ्ग
गच्छन्त	गच्छती, गच्छन्ती
गुणवन्तु	गुणवती, गुणवन्ती

भवतो भोतो ३.३७—'ङी' प्रत्यय लगने से, 'भवन्त' शब्द का विकल्प से 'भोत' आदेश हो जाता है। जैसे—भोती, भवन्ती।

गोस्सावङ् ३.३९—'गो' शब्द में 'ङी' प्रत्यय लगने से 'गावी' रूप होता है।

पुथुस्स पथव-पुथवा ३.४०—'ङी' प्रत्यय आने से, 'पुथु' (=पृथु) शब्द का 'पथव' तथा 'पुथव' आदेश हो जाता है। जैसे—पथवी, पुथवी, पठवी।

३. इनी

यक्खादितो इनी च ३.२८—यक्ख (=यक्ष) आदि [देखिए—तीसरा परिशिष्ट] शब्दों से परे, 'इनी' प्रत्यय होता है, और 'ङी' भी। जैसे—

पुल्लिङ्ग	स्त्रीलिङ्ग
यक्ख	यक्खिनी, यक्खी
नाग	नागिनी, नागी
सीह (=सिंह)	सीहिनी, सीही

आरामिकादीहि ३.२९—'आरामिक' आदि [देखिए—तीसरा परिशिष्ट] शब्दों से परे 'इनी' प्रत्यय होता है। जैसे—

पुल्लिङ्ग	स्त्रीलिङ्ग
आरामिको (=आराम में रहने वाला)	आरामिकिनी
राजा	राजिनी
मानुस	मानुसिनी

४. नी

इ-उवण्णेहि नी ३.३०—इकारान्त, ईकारान्त, ऊकारान्त, तथा उकारान्त शब्दों से परे, बहुधा 'नी' प्रत्यय आता है। जैसे—

पुल्लिङ्ग	स्त्रीलिङ्ग
सदापयतपाणि	सदापयतपाणिनी
दण्डी	दण्डिनी
भिक्खु	भिक्खुनी
खत्तबन्धु	खत्तबन्धुनी
परचित्तविदू	परचित्तविदुनी

क्तिम्हा अञ्ञत्थे ३.३१—अन्यार्थ (बहुव्रीहि) में, यदि 'क्त' प्रत्ययान्त शब्द हो, तो उससे परे 'नी' प्रत्यय होता है। जैसे—

सा अहं अहिंसारत्तिनी=वह मैं अहिंसा में रति रखने वाली। साहं उपट्ठितसतिनी=वह मैं उपस्थित स्मृति वाली।

घरण्यादयो ३.३२—'घरणी' (=गृहिणी) आदि शब्द निपात-सिद्ध हैं। जैसे—घरणी, पोक्खरणी (=पुष्करिणी) इत्यादि।

५. आनी

मातुलादितो आनी भरियायं ३.३३—भार्या होने के अर्थ में, 'मातुल' (=मामा) आदि शब्दों से परे, 'आनी' प्रत्यय होता है। जैसे—

पुल्लिङ्ग	उसकी भार्या
मातुल	मातुलानी
वरुण	वरुणानी
गहपति	गहपतानी

६. ऊ

उपमा-संहित-सहित-सञ्ञत-सह-सथ-वाम-लक्खणा-दितो उरुतो ऊ ३.३४—उपमान, तथा 'संहित' आदि शब्द यदि पूर्व में रहें, तो (स्त्रीलिङ्ग बनाने के लिए) 'उरु' शब्द से परे 'ऊ' प्रत्यय होता है। जैसे—करभोरू (=करभ के समान जिसकी जाँघ हो), संहितोरू (=मिली हुई जंघों वाली), सहितोरू (=मिली हुई जंघों वाली), सञ्ञतोरू (=संयत जंघों वाली), सहोरू (=साथ मिली हुई जंघों वाली), वामोरू (=सुन्दर जंघों वाली), लक्खणोरू (=लक्षित जंघों वाली)।

७. ति

युवा ति ३.३५—स्त्रीलिङ्ग बनाने के लिए, 'युव' (=युवक) शब्द से परे 'ति' प्रत्यय होता है। जैसे—युवति।

रिरिय

करा रिरियो ५.५१—स्त्रीलिङ्ग में, 'कर' धातु से परे, 'रिरिय' प्रत्यय होता है। जैसे—कर+रिरिय=(रानुबन्धेन्त सरादिस्स ४.१३२) क्+इरिय=किरिय।

इत्थियमत्वा ३.२६—इस सूत्र से—किरिया=क्रिया। पालि में 'क्रिया' शब्द निपात है।

२६. अभ्यास

१. हिन्दी में अनुवाद कीजिए—

माता कञ्ञायो नज्जं नहापेति। भिक्खुनियो भगवन्तं दस्सन-कामा होन्ति। माणविकायो भिक्खुनी नमस्सन्ति। भोति देवते! चरहि को एतं जानाति? गुणवतियो (गुणवन्तियो) इत्थियो महतियं परिसायं पि पसंसितायो होन्ति। कञ्ञाय धम्मी कथा सोतब्बा, मुसाय वाचाय वेरमणी हुत्वा पेमनीया सुभासिता वाचा भासितब्बा। सिया ब्राह्मणी, सिया खत्तिया, सिया गहपतानी वेस्सा, सिया सुद्दा—सब्बा इत्थियो झानीहि भावनारामेहि जिगुच्छितब्बायो।

२. निम्नलिखित शब्दों का स्त्रीलिङ्ग रूप लिखिए—

(क) गहपति, खत्तियो, ब्राह्मणो। देवो, इन्दो, राजा। पुत्तो, भाता, पिता, मातुलो। भिक्खु, सामणेरो, उपासको, आचरियो, उपज्झायो। यक्खो, नागो, कुमारो, हत्थि, अस्सो, हंसो।

(ख) गच्छन्तो कुमारा। पस्सन्तो भातरो। खादन्तो दारका। पठन्तो माणवका। झायमाना भिक्खवो। पसन्ना देवा। निसिन्ना ब्राह्मणा।

३. निम्नलिखित स्त्री-प्रत्ययों के उदाहरण लिखिए—

आ। आनी। इनी। ऊ। ई। नी।

छठा काण्ड

पहला पाठ

(क)

तद्धित-प्रकरण

(चौथा भाग—शेष प्रत्यय)

प्रथमान्त शब्दों से परे आने वाले प्रत्यय

ण

§ ४२. सा स्स दे व ता पु ण्ण मा सी ४.१३—'वह इसकी देवता या पूर्णमासी है' इस अर्थ में, उस शब्द से परे 'ण' प्रत्यय होता है। 'ण' का 'अ' रह जाता है। [देखिए—पृ० २५५ : पाद-टिप्पणी] जैसे—

देवता—सुगतो देवता अस्साति—सोगतो=बौद्ध

महिन्दो देवता अस्साति—माहिन्दो=महेन्द्र का उपासक

यमो देवता अस्साति—यामो=यम का उपासक

वरुणो देवता अस्साति=वारुणो=वरुण का उपासक

पूर्णमासी—

फुस्सी पुण्णमासी अस्स मासस्स सम्बन्धिनी इति—फुस्सो मासो=पूस महीना।

माघी पुण्णमासी अस्स मासस्स सम्बन्धिनी इति—माघो मासो=माघ महीना।

फग्गुनी पुण्णमासी अस्स मासस्स सम्बन्धिनी इति—फग्गुनो मासो=फागुन महीना।

इसी तरह—चित्तो=चैत। वेसाखो=वैशाख। जेट्ठमूलो=जेठ। आसाळ्हो=असाढ़। सावणो। पुट्ठपादो=भादो। अस्सयुजो=आसिन। कत्तिको=कातिक। मागसिरो=मृगशिरा।

§ ४३. त स्मि म त्थि ४.१९—'वह इस जगह पाया जाता है' इस अर्थ में, उस शब्द से परे 'ण' प्रत्यय होता है। 'ण' का 'अ' रह जाता है। जैसे—

उदुम्बरा अस्मिं देसे सन्ति इति—ओदुम्बरो=जिस जगह गूलर बहुत पाया जाय।

खदरा अस्मिं देसे सन्ति इति—खादरो=जिस जगह 'खैर' बहुत पाया जाय।

बब्बजा अस्मिं देसे सन्ति इति—बब्बजो=जिस जगह बब्बज नाम की घाँस पाई जाती है।

णिक, क

§ ४४. त म स्स सिप्पं सी लं प ण्यं प ह र णं प यो ज नं ४.२७—'यह उसका शिल्प, शील, पण्य, अस्त्र या प्रयोजन है' इस अर्थ में, उस शब्द से परे 'णिक' प्रत्यय होता है। 'णिक' का 'इक' रह जाता है। जैसे—

शिल्प—

वीणा-वादनं सिप्पमस्स—वेणिको=वीणा बजाना जिसका शिल्प है। मोदङ्गिको=मृदङ्ग बजाना जिसका शिल्प है।

शील—

पंसुकूलधारणं सीलमस्स—पंसुकूलिको=फेंके चिथड़े ही धारण करने का जिसने शील ग्रहण किया है। तेचीवरिको=तीन चीवर ही धारण करने का जिसने शील ग्रहण किया है।

पण्य—

गन्धो पण्यमस्स—गन्धिको=गन्ध बेचने वाला। तेलिको=तेल बेचने वाला।

अस्त्र—

चापो पहरणमस्स—चापिको=तीर जिसका अस्त्र है। तोमरिको=भाला चलाने वाला। मुग्गरिको=मुग्दर चलाने वाला।

प्रयोजन (=हेतु)

उपधिप्पयोजनमस्स—ओपधिकं=पुनर्जन्म का जो हेतु हो। सातिकं=स्वास्थ्य बनाए रखने का जो हेतु हो।

§ ४५. निन्दा, अञ्ञात; अप्प, पटिभाग, रस्स, दया, सञ्ञासु को ४.४०–'निन्दा' आदि अर्थों में, नाम से परे 'क' प्रत्यय होता है। जैसे—

निन्दा—मुण्डको, समणको। *अज्ञात*—कस्सायं अस्सोति—अस्सको। *अल्प*—तेलकं, घतकं। *प्रतिभाग*—हत्थि विय—हत्थिको, अस्सको, बलि वद्दको। *ह्रस्व*—मानुसको, रुक्खको, पिलक्खको। *दया*—पुत्तको, वच्छको। *संज्ञा*—मोरो विय—मोरको।

§ ४६. तमस्स परिमाणं णिको च ४.४१—'यह इसका परिमाण है' इस अर्थ में, शब्द से परे 'णिक' प्रत्यय होता है; और 'क' प्रत्यय भी। जैसे—

दोणो परिमाणमस्स—दोणिको वीहि=द्रोण भर धान। खारसतिको वीहि=सौ खारं धान। आसीतिको वयो=अस्सी साल की आयु। पञ्चकं=पाँच का। छक्कं=छः का।

त्तक

§ ४७. यतेतेहि त्तको ४.४२—ऊपर के ही अर्थ में, 'य', 'त', तथा 'एत' शब्दों से परे, 'त्तक' प्रत्यय होता है। जैसे—

यं परिमाणमस्स—यत्तकं=जितना। तत्तकं=तितना। एत्तकं[1]=इतना।

आवन्तु

§ ४८. सब्बा चावन्तु ४.४३—ऊपर के ही अर्थ में, 'सब्ब', 'य', 'त', तथा 'एत' शब्दों से परे, 'आवन्तु' प्रत्यय होता है। जैसे—

---

१. एतस्सेट् त्तके ४.१४०—'त्तक' प्रत्यय आने से, 'एत' शब्द का 'ए' आदेश हो जाता है। जैसे—एतं परिमाणमस्स—एत+त्तक=ए+त्तक=एत्तकं।

सव्वं परिमाणमस्स—सब्बावन्तं=सभी। यावन्तं=जितना। तावन्तं= तितना। एत्तावन्तं=इतना।

रति, रीव, रीवतक, रित्तक

§ ४९. किम्हा रति-रीव-रीवतक-रित्तका ४.४४—ऊपर के ही अर्थ में, 'किं' शब्द से परे, 'रति', 'रीव', 'रीवतक', तथा 'रित्तक' प्रत्यय होते हैं। जैसे—

किं संख्यानं परिमाणमेसं—कति, कीव, कीवतकं, कित्तकं=कितने।

इनमें 'कीव' शब्द अव्यय है।

[देखिए—तद्धित परिशिष्ट]

इत

§ ५०. संजातं तारकादित्विततो ४.४५—'यह इसमें उगा (=संजात) है' इस अर्थ में, 'तारक' आदि शब्दों से परे 'इत' प्रत्यय होता है। जैसे—

तारका संजाता अस्स—तारकितं गगनं। पुप्फितो रुक्खो=पुष्पित वृक्ष। पल्लविता लता।

मत्त

§ ५१. माने मत्तो ४.४६—'इतना भर' इस अर्थ में, शब्द से परे 'मत्त' प्रत्यय होता है। जैसे—

पलमत्तं=पल भर। हत्थमत्तं=हाथ भर। सतमत्तं=सौ भर। दोणमत्तं= द्रोण भर।

तग्घो

§ ५२. तग्घो चुद्धं ४.४७—ऊपर के ही अर्थ में, यदि ऊँचाई प्रतीत हो, तो शब्द से परे 'तग्घ' प्रत्यय होता है, और 'मत्त' भी। जैसे—

जाणुतग्घं, जाणुमत्तं=जांघ भर ऊँचा।

ण

§ ५३. णो च पुरिसा ४.४८—ऊपर के ही अर्थ में, यदि ऊँचाई प्रतीत हो, तो 'पुरिस' शब्द से परे 'ण' प्रत्यय होता है; और 'मत्त' तथा 'तग्घ' भी। जैसे—

पोरिसं, पुरिसमत्तं, पुरिसतग्घं=पुरुष भर ऊँचा।

अय

§ ५४. अयुभद्वितीहंसे ४.४९—अंश का यदि बोध होता हो, तो 'उभ', 'द्वि' तथा 'ति' शब्दों से परे 'अय' प्रत्यय होता है। जैसे—

उभो अंसा अस्स—उभयं=दोनों अंश। द्वयं=दोनों अंश। तयं=तीनों अंश।

क. आकी

§ ५५. एकाकाक्यसहाये ४.५५—'असहाय' के अर्थ में, 'एक' शब्द से परे 'क' तथा 'आकी' प्रत्यय होते हैं। जैसे—

एकको, एकाकी=अकेला=असहाय।

रतर, रतम, इस्सिक, इय, इट्ठ

§ ५३. किम्हा निद्धारणे रतर-रतमा ४.५७—बहुतों में से एक का निर्धारण जाना जाय, तो 'किं' शब्द से परे 'रतर' तथा 'रतम' प्रत्यय होते हैं। जैसे—

कतरो कतमो वा देवदत्तो भवतं=आप लोगों में कौन देवदत्त हैं ?

§ ५४. तरतमिस्सिकियिट्ठातिसये ४.६४—अतिशय का अर्थ जाना जाय, तो शब्द से परे 'तर', 'तम', 'इस्सिक', 'इय', तथा 'इट्ठ' प्रत्यय होते हैं। जैसे—

अतिसयेन पापो—पापतरो, पापतमो, पापिस्सिको, पापियो, पापिट्ठो= अत्यन्त पापी।

जेय्यो, जेट्ठो[1]। साधियो, साधिट्ठो[1]। नेदियो, नेदिट्ठो। सेय्यो, सेट्ठो[1]। कणियो, कणिट्ठो[1]। मेधियो, मेधिट्ठो[1]।

§ ५५. क्व चि प्प च्च ये ३.६८—प्रत्यय परे हो, तो स्त्रीप्रत्ययान्त शब्द कहीं कहीं पुल्लिङ्ग-रूप ग्रहण करता है। जैसे—अतिसयेन ब्यत्ता—ब्यत्ततरा, ब्यत्ततमा।

द्वितीयान्त शब्दों से परे आने वाले प्रत्यय

ण, क, णिक

§ ५६. त म धी ते तं जा ना ति क णि का च ४.१४—'उसको अध्ययन करता है, या जानता है', इस अर्थ में शब्द से परे 'ण', 'क' तथा 'णिक' प्रत्यय होते हैं। जैसे—

ब्याकरणं अधीते जानाति वा—वेय्याकरणो। छान्दसो=छन्द-शास्त्र को जो अध्ययन करता है, या जानता है। पदको=पद को अध्ययन करने, या जानने वाला। वेनयिको=विनय को अध्ययन करने, या जानने वाला। सुत्तन्तिको=सूत्र-पिटक को अध्ययन करने, या जानने वाला।

---

२. जो वु द्ध स्सि यि ट्ठे सु ४.१३५—'इय' तथा 'इट्ठ' प्रत्ययों के आने से, 'वुद्ध' शब्द का 'ज' आदेश होता है। जैसे—अतिसयेन वुद्धो—जेय्यो, जेट्ठो।

३. बा ळ्ह न्ति क प स त्था नं सा ध ने द सा ४.१३६—'इय' तथा 'इट्ठ' प्रत्ययों के आने से, 'बाळ्ह', 'अन्तिक', तथा 'पसत्थ' शब्दों का यथाक्रम 'साध', 'नेद' तथा 'स' आदेश होता है। जैसे—

अतिसयेन बाळ्हो—साधियो, साधिट्ठो। अतिसयेन अन्तिको—नेदियो, नेदिट्ठो। अतिसयेन पसत्थो—सेय्यो, सेट्ठो।

४. क ण् क ना प्प यु वा नं ४.१३७—'इय' तथा 'इट्ठ' प्रत्ययों के आने से, अधिक अल्प के अर्थ में, 'युव' शब्द का 'कण्' तथा 'कन' आदेश हो जाता है। जैसे—

कणियो, कणिट्ठो। कनियो, कनिट्ठो।

५. लो पो वी म न्तु व न्तू नं ४.१३८—'इय' तथा 'इट्ठ' प्रत्ययों के आने से, 'वी', 'मन्तु' तथा 'वन्तु' प्रत्ययों का लोप हो जाता है। जैसे—

अतिसयेन मेधावी—मेधियो, मेधिट्ठो। अतिसयेन सतिमा—सतियो, सतिट्ठो। अतिसयेन गुणवा—गुणियो, गुणिट्ठो।

णिक

§ ५७. तं हन्तरहतिगच्छतुच्छतिचरति ४.२८—'उसे वध करता है, उसे पाने का योग्य होता है, वहाँ जाता है, वहाँ उञ्छन करता है, उसका आचरण करता है'—इन अर्थों में, शब्द से परे 'णिक' प्रत्यय होता है। जैसे—

पक्खिको, साकुणिको=चिड़ीमार। मायूरिको=मोर मारने वाला। मच्छिको, मेनिको=मछुआ। मागविको, हारिणिको=हरिण मारने वाला व्याधा। सूकरिको=सूअर मारने वाला।

सतं अरहति इति—सातिकं=सौ रुपये पा सकने वाला। सन्दिट्ठिकं=जीते जी देखा जा सकने वाला। एहिपस्सिको=जिसके विषय में यह कहा जा सके कि 'आवो, इसे देखो'।

परदारं गच्छतीति—पारदारिको=परस्त्री-गमन करने वाला। मग्गिको=राह में जाने वाला। पञ्ञासयोजनिको=पचास योजन जाने वाला।

खदरे उञ्छति इति—खादरिको=खैर इकट्ठा करने वाला। सामाकिको=सामाक धान बटोरने वाला।

धम्मं चरति इति=धम्मिको। अधम्मिको।

ल्ल

§ ५८. तन्निस्सिते ल्लो ४.६५—'उसको आधार मान कर होने वाले' के अर्थ में, शब्द से परे 'ल्ल' प्रत्यय होता है। जैसे—

वेदनिस्सितं—वेदल्लं। दुट्ठुनिस्सितं—दुट्ठुल्लं।

णेय्य

§ ५९. दक्खिणायारहे ४.७६—'उसको पाने का योग्य होना' इस अर्थ में, 'दक्खिणा' शब्द से परे 'णेय्य' प्रत्यय होता है। जैसे—

दक्खिणं अरहती ति—दक्खिणेय्यो=जो दक्षिणा पाने का योग्य पात्र है।

[ण्यो तुमन्ता ४.७७—ऊपर के ही अर्थ में, 'तुं' प्रत्ययान्त होने से, 'ण्य'

प्रत्यय होता है। जैसे—

घातेतायं वा घातेतुं। पब्बाजेतायं वा पब्बाजेतुं]

तृतीयान्त शब्दों से परे आने वाले प्रत्यय

ण

§ ६०. ण रागा तेन रत्तं ४.११—'इस रँग से रंगा हुआ', इस अर्थ में शब्द से परे 'ण' प्रत्यय होता है। [पृ० २५५, पाद टि०] जैसे—

कासावेन रत्तं—कासावं=काषाय रँग से रंगा हुआ। कोसुम्भं=कुसुम के रंग से रंगा हुआ। हालिद्दं=हल्दी के रंग से रंगा हुआ।

§ ६१. नक्खत्तेनिन्दुयुत्तेन काले ४.१२—यदि इन्दु-युक्त नक्षत्र से कोई काल लक्षित हो, तो उससे परे 'ण' प्रत्यय होता है। जैसे—

फुस्सी रत्ति=पूस की रात। फुस्सो अहो=पूस का दिन।

§ ६२. तेन निब्बत्ते ४.१८—'उसके द्वारा बनाया गया' इस अर्थ में 'ण' प्रत्यय होता है। जैसे—कुसम्बेन निब्बत्ता—कोसम्बी=जो नगरी कुसम्ब ऋषि के द्वारा बसाई गई है। काकन्दी। माकन्दी। सहस्सेन निब्बत्ता साहस्सी—परिखा।

§ ६३. तेन कतं, कीतं, बद्धं, अभिसंखतं, संसट्ठं, हतं, हन्ति, जितं, जयति, दिब्बति, खणति, तरति, चरति, वहति, जीवति ४.२६—'इससे किया गया है, खरीदा गया है, बाँधा गया है, अभिसंस्कृत किया गया है, लगा है, मारा गया है, मारता है, जीता गया है, जीतता है, खेलता है, खनता है, तरण करता है, आचरण करता है, वहन करता है, जीता है,'—इन अर्थों में, शब्द से परे 'णिक' प्रत्यय होता है। जैसे—

कायेन कतं—कायिकं=शरीर से किया गया। वाचसिकं=वचन से किया गया। मानसिकं=मन से किया गया। वातेन कतो आबाधो—वातिको=वायु के कारण उत्पन्न रोग।

सतेन कीतं—सातिकं=सौ रुपये में खरीदा गया। साहस्सिकं=हजार रुपए में खरीदा गया।

वरत्ताय वद्धो—वारत्तिको=रस्सी से बँधा। आयसिको=लोहे से बँधा हुआ। पासिको=जाल से बँधा हुआ।

घतेन अभिसङ्खतं संसट्ठं वा—घातिकं=घी से तैयार हुआ, या मिला। गोळिकं=गुड़ से ०। दाधिकं=दही से ०। मारीचिकं=मिर्च से ०।

जालेन हतो हन्तीति वा=जालिको=जाल से मरा हुआ, या मारने वाला। वाळिसिको=वंसी से ०।

अक्खेहि जितं=अक्खिकं=पासा से जीता गया। अक्खेहि जयति दिब्बति वा—अक्खिको=पासा से जीतने वाला, या खेलने वाला।

खणित्तिया खणतीति—खाणित्तिको=खन्ती से खनने वाला। कुद्दालिको=कुदाल से खनने वाला।

उलुम्पेन तरति इति—ओलुम्पिको=बेड़ा से पार करने वाला। गोपुच्छिको=गाय की पूँछ पकड़ कर पार करने वाला। नाविको=नाव से पार करने वाला।

सकटेन चरतीति—साकटिको=सग्गड़ के साथ चलने वाला। रथिको=रथ से चलने वाला।

बन्धेन वहति—बन्धिको=बाँध कर वहन करने वाला। अंसिको=कंधे पर वहन करने वाला। सीसिको=शिर से वहन करने वाला।

वेतनेन जीवति—वेतनिको=वेतन से जीने वाला। भतिको=मज़दूरी से जीने वाला। कयविक्कयिको=क्रयविक्रय करके जीने वाला।

ल, इय

§ ६४. तेन दत्ते लिया ४.५८—'उससे प्रदत्त है' इस अर्थ में, शब्द से परे 'ल' तथा 'इय' प्रत्यय होते हैं। जैसे—

देवेन दत्तो—देवलो, देवियो। ब्रह्मुना दत्तो—ब्रह्मलो, ब्रह्मियो। सीवलो, सीवियो। नागलो, नागियो।

इम

§ ६५. भावा तेन निब्बत्ते ४.६३—'उससे तैयार किया गया है' इस अर्थ में, भाव-वाचक शब्द से परे 'इम' प्रत्यय होता है। जैसे—

पाकेन निब्बत्तं—पाकिमं=जो पका कर तैयार किया गया है। सेकेन निब्बत्तं—सेकिमं=जो सींच कर तैयार किया गया है।

चतुर्थ्यन्त शब्दों से परे आने वाला प्रत्यय

णिक

§ ६६. तस्स संवत्तति ४.३०—'इसके लिए होता है' इस अर्थ में, शब्द से परे 'णिक' प्रत्यय होता है। [पृ० २५५—पाद टिप्पणी] जैसे—

पुनब्भवाय संवत्तति इति—पोनोभविको=जो पुनर्जन्म के लिए कारण हो। स्त्रीलिङ्ग में—पोनोभविका। लोकाय संवत्तति—लोकिको=जो लोक के लिए हो। सग्गाय संवत्तति—सोवग्गिको=जो स्वर्ग के लिए हो।

पञ्चम्यन्त शब्दों से परे आने वाला प्रत्यय

णिक

§ ६७. ततो सम्भूतमागतं ४.३१—'उससे सम्भूत, या आया हुआ' इस अर्थ में, शब्द से परे 'णिक' प्रत्यय होता है। जैसे—

मातितो सम्भूतमागतं वा—मत्तिकं=माँ की ओर से सम्भूत, या आया हुआ। पेत्तिकं=पिता की ओर से ०।

'ण्य' 'रियण', 'र्य' प्रत्यय भी उक्त अर्थ में होते हैं। जैसे—

सुरभितो सम्भूतं—सोरब्भं=सुगन्धि से सम्भूत। थनतो सम्भूतं—थञ्ञं=दूध। पितितो सम्भूतो—पेत्तियो। मातियो, मत्तियो, मच्चो।

छठा काण्ड

दूसरा पाठ

(ख)

तद्धित प्रकरण

षष्ठ्यन्त शब्दों से परे आने वाले प्रत्यय

ण[1]

§ ६८. णो वा पच्चे ४.१—'उसका अपत्य' इस अर्थ में, शब्द से परे 'ण' प्रत्यय होता है। जैसे—

वसिट्ठस्स अपच्चं—वासिट्ठो, वासेट्ठो, वासिट्ठी=वशिष्ठ के अपत्य। रघुनो अपच्चं—राघवो।

णान, णायन[1]

§ ६९. वच्छादितो णानणायना ४.२—ऊपर के ही अर्थ में, 'वच्छ' आदि गोत्र वाचक शब्दों से परे, 'णान' तथा 'णायन' प्रत्यय होते हैं। जैसे—

वच्छानो, वच्छायनो=वत्स गोत्र में उत्पन्न। कच्चानो, कच्चायनो=कात्यायन गोत्र में उत्पन्न।

कातियानो। मोग्गल्लानो, मोग्गल्लायनो। साकटानो, साकटायनो। कण्हानो, कण्हायनो।

णेय्य, णेर[1]

§ ७०. कत्तिकाविधवादीहि णेय्यणेरा ४.३—ऊपर के ही अर्थ में,

'कत्तिका' आदि शब्दों से परे, 'णेय्य' तथा, 'विधवा' आदि शब्दों से परे 'णेर' प्रत्यय होते हैं। जैसे—

कत्तिकेय्यो=कार्तिकेय। वेनतेय्यो। भागिनेय्यो=भांजा।

वेधवेरो=विधवा का लड़का। वन्धकेरो=वन्धकी अर्थात् अभिसारिका का पुत्र। नाळिकेरो। सामणेरो।

ण्य[1]

§ ७१. ण्य दिच्चादीहि ४.४—ऊपर के ही अर्थ में, 'दिति' आदि शब्दों से परे 'ण्य' प्रत्यय होता है। जैसे—

देच्चो=दिति का अपत्य। आदिच्चो=अदिति का अपत्य। कोण्डञ्ञो=

---

१. सरानमादिस्सायुवण्णस्सा एओ णानुबन्धे ४.१२४—'ण' अनुबन्ध वाला प्रत्यय आने से, शब्द के आदिभूत 'अ', 'इ', तथा 'उ' का यथाक्रम 'आ', 'ए' तथा 'ओ' हो जाता है। जैसे—

अदितिया अपच्चं—अदिति+ण्य=(लोपो' वण्णिवण्णानं ४.१३१) आदित्+य=आदित्यं=आदिच्चं। रघु+ण=राघवो। विनता+णेय्य=वेनतेय्यो। मीन+णिक=मेनिको। उळुम्पेन तरतति—उळुम्प+णिक=ओळुम्पिको। दुभगस्स भावो—दुभग+ण्य=दोभग्गं।

संयोगे क्वचि ४.१२५—'ण' अनुबन्ध वाला प्रत्यय आने से, संयुक्त अक्षर से पूर्व 'अ', 'इ' तथा 'उ' का कहीं कहीं यथाक्रम 'आ', 'ए' तथा 'ओ' होता है। जैसे—दितिया अपच्चं—दिति+ण्य=देच्चो। कुण्डनिया अपच्चं—कोण्डञ्ञो।

बहुत स्थानों में यह आदेश नहीं होता है। जैसे—वच्छ+णान=वच्छानो। कत्तिका+णेय्य=कत्तिकेय्यो। दक्ख+णि=दक्खि।

उवण्णस्साव ङ् सरे ४.१२१—यदि 'ण' अनुबन्ध वाला कोई प्रत्यय आवे, जिसके आदि में स्वर हो, तो नाम के अन्त्य 'उ' का 'अव' हो जाता है। जैसे—रघु+ण=राघवो।

मज्झे ४.१२६—कहीं कहीं, मध्य में भी स्थित 'अ', 'इ', तथा 'उ' का यथाक्रम 'आ', 'ए', तथा 'ओ' हो जाता है। जैसे—वसिट्ठस्स अपच्चं—वसिट्ठ+ण=वासेट्ठो।

कुण्डनि का अपत्य। गव्यो=गर्ग का लड़का। भातब्बो[२]=भाई का लड़का, भतीजा।

णि[१]

§ ७२. आ णि ४.५—ऊपर के ही अर्थ में, अकारान्त शब्द से परे विकल्प से 'णि' प्रत्यय होता है। जैसे—

दक्खि=दक्ष का अपत्य। दत्ति=दत्त का अपत्य। दोणि=द्रोण का अपत्य। वासवि=वासव का अपत्य। वारुणि=वरुण का अपत्य।

ञ्ञो

§ ७३. राजतो ञ्ञो जातियं ४.६—यदि जाति का अर्थ प्रगट होता हो, तो अपत्य के अर्थ में, 'राज' शब्द से परे 'ञ्ञ' प्रत्यय होता है। जैसे—

राजञ्ञो=राजा की जाति का।

य, इय

§ ७४. खत्ता यिया ४.७—यदि जाति का अर्थ प्रगट होता हो, तो अपत्य के अर्थ में, 'खत्त' शब्द से परे 'य' तथा 'इय' प्रत्यय होते हैं। जैसे—

खत्यो, खत्तियो=क्षत्रिय जाति का।

स्स, सण

§ ७५. मनुतो स्ससण् ४.८—ऊपर के अर्थ में, 'मनु' शब्द से परे, 'स्स' तथा 'सण्' प्रत्यय होते हैं। जैसे—

मनुस्सो, मानुसो। स्त्रीलिङ्ग में—मनुस्सा, मानुसी।

---

२. यम्हि गोस्स च ४.१३०—'य' से आरम्भ होने वाला कोई प्रत्यय आवे, तो 'गो' तथा उकारान्त शब्दों के अन्त्य स्वर का 'अव' आदेश हो जाता है। जैसे—गुन्नं इदं—गो+य=गव+य=(लोपो' वण्णिवण्णानं ४.१३१) गव्यं। भातुनो अपच्चं—भातु+ण्य=भातब्यो।

ण

§ ७६. जनपदनामस्मा खत्तिया रञ्ञे च णो ४.९—'वहाँ का क्षत्रिय या राजा' इस अर्थ में, जनपद के नाम से परे 'ण' प्रत्यय होता है। जैसे—

पञ्चालो=पञ्चाल का क्षत्रिय या राजा। कोसलो। मागधो। ओक्काको।

ण्य

§ ७७. ण्य कुरुसिवीहि ४.१०—अपत्य तथा राजा के अर्थ में, 'कुरु' तथा 'सिवि' शब्दों से परे, 'ण्य' प्रत्यय होता है। जैसे—

कोरब्यो=कुरु का अपत्य, या राजा। सेब्यो।

णो

§ ७८. तस्स विसये देसे ४.१५—'उनके आसपास की जगह' इस अर्थ में, 'ण' प्रत्यय होता है। जैसे—

वसातीनं विसयो देसो—वासातो।

§ ७९. निवासे तन्नामे ४.१६—'उनके निवास करने की जगह' इस अर्थ में, नाम से परे 'ण' प्रत्यय होता है। जैसे—

सिवीनं निवासो देसो—सेब्यो=जिस जगह शिवी लोग निवास करें। वासातो=जिस जगह 'वसाती' लोग निवास करें

§ ८०. अदूरभवे ४.१७—'उसके पास वाला देश' इस अर्थ में, उस नाम से परे 'ण' प्रत्यय होता है। जैसे—

विदिसाय अदूरभवं—वेदिसं=विदिशा के पास ही।

णिक

§ ८१. तस्सिदं ४.३३—'यह इसका है' इस अर्थ में, शब्द से परे 'णिक', 'किय', 'निय', तथा 'क' प्रत्यय होते हैं। जैसे—

संघस्स इदं—सङ्घिकं=जो संघ का हो। पुग्गलिकं=जो किसी व्यक्ति-विशेष (=पुद्गल) का हो। सक्यपुत्तिको : सक्यपुत्तियो=जो शाक्यपुत्र का हो। नाथपुत्तिको=जो नाथपुत्र का हो। जेनदत्तिको=जो जैनदत्त का हो।

किय—सकियो=स्वकीय, अपना। परकियो=दूसरे का।

निय—अत्तनियं=अपना।

क—सको=अपना। राजकं=राजा का।

ण

§ ८२. णो ४.३४—'यह इसका है' इस अर्थ में, शब्द से परे 'ण' प्रत्यय होता है। जैसे—

कच्चायनस्स इदं—कच्चायनं व्याकरणं=कात्यायन का व्याकरण। सोगतं सासनं=सौगत वुद्ध का शासन। माहिसं=भैंसे का दूध, मांस आदि।

य

§ ८३. गवादीहि यो ४.३५—ऊपर के ही अर्थ में, 'गो' आदि शब्दों [देखिए—तीसरा परिशिष्ट] से परे 'य' प्रत्यय होता है। जैसे—

गुन्नं इदं—गव्यं=गाय का (दूध, मांस या कुछ)। कविनो इदं—कव्यं=काव्य।

रेय्यण

§ ८४. पितितो भातरि रेय्यण् ४.३६—'पितु' शब्द से परे, उसके भाई के अर्थ में, 'रेय्यण्' प्रत्यय होता है। जैसे—

पितुनो भाता—पेत्तेय्यो=चाचा।

छ

§ ८५. मातितो च भगिनियं छो ४.३७—'मातु' तथा 'पितु' शब्दों से परे, उनकी बहन के अर्थ में 'छ' प्रत्यय होता है। जैसे—

मातुया भगिनी—मातुच्छा=मौसी। पितुनो भगिनी—पितुच्छा=फूआ।

---

१. णिकस्सियो वा ४.१४१—'णिक' प्रत्यय का विकल्प से 'इय' आदेश हो जाता है। जैसे—सक्यपुत्तस्स अयं—सक्यपुत्तियो, सक्यपुत्तिको।

आमह

§ ८६. मातापितुस्वामहो ४.३८—'मातु' तथा 'पितु' शब्दों से परे, उनके पिता-माता के अर्थ में, 'आमह' प्रत्यय होता है। जैसे—

मातुया माता—मातामही=नानी। मातुया पिता—मातामहो=नाना। पितुनो माता—पितामही=दादी। पितुनो पिता—पितामहो=दादा।

रेय्यण

§ ८७, हिते रेय्यण् ४.३९—'उनके हित के लिए' इस अर्थ में, 'मातु' तथा 'पितु' शब्दों से परे 'रेय्यण्' प्रत्यय होता है। जैसे—

मातुनो हिते—मत्तेय्यो। पितुनो हिते—पेत्तेय्यो।

तर

§ ८८. वच्छादीहि तनुत्ते तरो ४.६—उसका छोटा होने के अर्थ में, 'वच्छ' आदि शब्दों से परे 'तर' प्रत्यय होता है। जैसे—

वच्छतरो=छोटा वछड़ा। ओक्खतरो=छोटा बैल। अस्सतरो=खच्चर (आधा घोड़ा, आधा गदहा)।

ण, णिक, णेय्य, मय

§ ८९. तस्स विकारावयवेसु णणिकणेय्यमया ४.६६—'उसका विकार या अवयव' इस अर्थ में, शब्द से परे 'ण', 'णिक', 'णेय्य', तथा 'मय' प्रत्यय होते हैं। जैसे—

ण—आयसं=लोहे का बना। ओदुम्बरं=गूलर का। कापोतं=कबूतर का।

णिक—कप्पासिकं=कपास का बना।

णेय्य—एणेय्यं=एणि मृग का। कोसेय्यं=रेशम का बना।

मय—तिणमयं=तृण का। दारुमयं=लकड़ी का बना। मत्तिकामयं=मिट्टी का बना। गोमयं=गोबर।

स्सण

§ ९०. जतुतो स्सण् वा ४.६७—ऊपर के ही अर्थ में, 'जतु' शब्द से परे,

विकल्प से 'स्सण्' प्रत्यय होता है। जैसे—

जतुनो विकारो—जातुस्सं, जातुमयं=लाह का बना।

कण्ण, णिक

§ ६१. समूहे कण्णणिका ४.६८—'उनका समूह' इस अर्थ में, शब्द से परे 'कण', ण, तथा 'णिक' प्रत्यय होते हैं। जैसे—

कण्—राजञ्ञकं=राजा की जाति के लोगों का जमाव। मानुस्सकं=आदमियों का जमाव। ओट्ठकं=ऊंटों का जमाव। ओरब्भकं=भेड़ों का०। राजकं=राजों का०। राजपुत्तकं=राजपुत्रों का०। हत्थिकं=हाथी का०। धेनुकं=गौवों का०।

ण—काकं=कौओं का जमाव। भिक्खं=भिक्षुओं का०।

णिक—(केवल प्राणहीन से परे) आपूपिकं=पूए की ढेर। संकुलिकं=रोटी की ढेर।

ता

§ ६२. जनादीहि ता ४.६९—'उनका समूह' इस अर्थ में, 'जन' आदि [देखिए—तीसरा परिशिष्ट] शब्दों से परे 'ता' प्रत्यय होता है। जैसे—

जनता=जन-समूह। गजता=गज-समूह। बन्धुता=बन्धु-समूह।

स्स

§ ६३. चक्खादितो स्सो ४.७१—'उसके हित के लिए' इस अर्थ में, 'चक्खु' आदि [देखिए—तीसरा परिशिष्ट] शब्दों से परे, 'स्स' प्रत्यय होता है। जैसे—चक्खुनो हितं—चक्खुस्सं। आयुनो हितं—आयुस्सं।

जातिय

§ ६४. तब्बति जातियो ४.११३—'उस प्रकार का' इस अर्थ में, उस सामान्य वाचक शब्दों से परे 'जातिय' प्रत्यय होता है। जैसे—

पटुजातियो। मुदुजातियो।

सप्तम्यन्त शब्दों से परे आने वाले प्रत्यय

ण

§ ६५. तत्र भवो ४.२०—'उसमें हुआ' इस अर्थ में, शब्द से परे 'ण' प्रत्यय होता है। जैसे—

उदके भवो—ओदको=जल में उत्पन्न। ओरसो=उरसे उत्पन्न। जानपदो=जनपद में उत्पन्न हुआ। मागधो=मगध में उत्पन्न हुआ। कापिलवत्थवो=कपिलवस्तु में उत्पन्न हुआ। कोसम्बो=कौशाम्बी में उत्पन्न। मनसि भवो—मन+ण=मानसो[४]।

तन

§ ६६. अज्जादीहि तनो ४.२१—ऊपर के ही अर्थ में, 'अज्ज' आदि शब्दों से परे 'तन' प्रत्यय होता है। जैसे—

अज्ज भवो—अज्जतनो=आज दिन हुआ। स्वातनो=कल होने वाला। हिय्यत्तनो=कल हुआ हुआ।

§ ६७. पुरातो णो च ४.२२—ऊपर के ही अर्थ में, 'पुरा' शब्द से परे, 'ण' प्रत्यय होता है, और 'तन' प्रत्यय भी। जैसे—

पुराणो, पुरातनो=जो बहुत पहले हो चुका है।

अच्च

§ ६८. अमात्वच्चो ४.२३—साथ रहने के अर्थ में, 'अमा' (=साथ) शब्द से परे 'अच्च' प्रत्यय होता है। जैसे—

अमच्चो=साथ रहने वाला, मंत्री।

---

४. मनादीनं सक् ४.१२८—'ण' अनुबन्ध वाला प्रत्यय आने से, 'मन' आदि शब्दों से परे 'स' का आगम होता है। जैसे—

मनसि भवं—मानसं। दुम्मनसो भावो—दोमनस्सं। सोमनस्सं।

इम

§ ९९. मज्झादित्विमो ४.२४—'उसमें हुआ' इस अर्थ में, 'मज्झ' आदि [देखिए—तीसरा परिशिष्ट] शब्दों से परे, 'इम' प्रत्यय होता है। जैसे—

मज्झिमो=मध्य में हुआ। अन्तिमो=अन्त में हुआ।

कण, णेय्य, णेय्यक, य, इय

§ १००. कण्णेय्यणेय्यकयिया ४.२५—ऊपर के ही अर्थ में, शब्द से परे 'कण', 'णेय्य', 'णेय्यक', 'य', तथा 'इय' प्रत्यय होते हैं। जैसे—

कण्—कुसिनारायं भवो—कोसिनारको। मागधको। आरञ्ञको=जंगल में हुआ।

णेय्य—गङ्गेय्यो=गंगा में हुआ। पब्बतेय्यो=पर्वत पर हुआ। वानेय्यो=वन में हुआ।

णेय्यक—कोलेय्यको=कुल में हुआ। बाराणसेय्यको=बनारस में हुआ। चम्पेय्यको=चम्पा में हुआ।

य—गम्मो=ग्राम्य। दिब्बो=दिव्य।

इय—गामियो=ग्राम्य। उदरियो=उदर में हुआ। दिवियो=स्वर्ग में हुआ। पञ्चालियो=पञ्चाल में हुआ। बोधिपक्खियो=ज्ञान के पक्ष का। लोकियो=लोक में हुआ।

णिक

§ १०१. णिको ४.२६—ऊपर के ही अर्थ में, शब्द से परे 'णिक' प्रत्यय होता है। जैसे—

सारदिको=शरत्काल में हुआ। सारदिको दिवसो। सारदिका रत्ति।

§ १०२. तत्थ वसति विदितो भत्तो नियुत्तो ४.३२—'वहाँ रहता है, वहाँ विदित है, उसमें भक्ति रखता है, वहाँ नियुक्त है'—इन अर्थों में, शब्द से परे 'णिक' प्रत्यय होता है। जैसे—

रुक्खमूले वसति—रुक्खमूलिको=वृक्ष के नीचे रहने वाला। आरञ्ञिको=जंगल में रहने वाला। सोसानिको=स्मशान में रहने वाला।

लोके विदितो—लोकिको।

चतुमहाराजेसु भत्ता—चातुम्महाराजिका=चतुर्महाराजके भक्त।

द्वारे नियुत्तो—दोवारिको=द्वार पर नियुक्त पहरेदार।

ण्य

§ १०३. ण्यो तत्थ साधु ४.७२—उस विषय में कुशल, योग्य, तथा हितकर होने के अर्थ में, शब्द से परे 'ण्य' प्रत्यय होता है। जैसे—

सभायं साधु—सब्भो। परिसायं साधु—पारिसज्जो।

निय, ञ्ञ

§ १०४. कम्मा नियञ्ञा ४.७३—ऊपर के ही अर्थ में, 'कम्म' शब्द से परे 'निय' तथा 'ञ्ञ' प्रत्यय होते हैं। जैसे—

कम्मे साधु—कम्मनियं, कम्मञ्ञं।

इक

§ १०५. कथादित्थिको ४.७४—ऊपर के ही अर्थ में, 'कथा' आदि शब्दों [देखिए—तीसरा परिशिष्ट] से परे 'इक' प्रत्यय होता है। जैसे—

कथिको। धम्मकथिको। सङ्गामिको। पवासिको। उपवासिको।

णेय्य

§ १०६. पथादीहि णेय्यो ४.७५—ऊपर के ही अर्थ में, 'पथ' आदि शब्दों से परे 'णेय्य' प्रत्यय होता है। जैसे—

पाथेय्यं=पाथेय। सापतेय्यं=धन।

अन्य प्रत्यय

दिस्सन्तञ्ञेपि पच्चया ४.१२०—जितने कहे गए हैं, उनसे भिन्न भी प्रत्यय देखे जाते हैं। जैसे—

विविधा+मातरो—विमातरो। तासं पुत्ता—वेमातिका (यहाँ 'रिकण्'

प्रत्यय लगा) ।

पथं गच्छतीति—पथावी ('आवी' प्रत्यय) ।

इस्सा अस्स अत्थीति—इस्सुकी ('उकी' प्रत्यय) ।

धुरं वहन्तीति—धोरय्हा ('य्हण' प्रत्यय) ।

सकत्थे ४.१२२—अपने ही अर्थ में भी, शब्द से परे कुछ प्रत्यय देखे जाते हैं। जैसे—हीनको, पोतको, किच्चयं ।

३०. अभ्यास

१. हिन्दी में अनुवाद कीजिए—

(क) विपस्सी, सिखी, वेस्सभू च भगवन्तो गोत्तेन कोण्डञ्ञा अहेसुं। ककुसन्धो, कोणागमनो, कस्सपो च भगवन्तो गोत्तेन कस्सपा अहेसुं। अहं एतरहि (भगवा) गोतमो गोत्तेन। वासिट्ठा, भारद्वाजा, कच्चाना, वच्छायना, कण्हायना, अग्गिवेस्सा, कोसिका, भग्गवा, ब्राह्मणा च खत्तिया च गहपतयो भगवन्तं अभिवन्दन्ति, नमस्सन्ति, पञ्हे पुच्छन्ति। भगवा नेसं पुट्ठे पुट्ठे पञ्हे व्याकरोति।

(ख) राजगहिका, मागधिका, कापिलवत्थिका, कोसंबिका गहपतयो भगवन्तं भिक्खु-सङ्घं च उपट्ठहन्ति। सुत्तन्तिका, वेनयिका, आभिधम्मिका भिक्खू सज्झायन्ति। कच्चानो मोग्गलानो च वेय्याकरणिका। पंसुकूलिका तेचीवरिका भिक्खू अब्भोकासिका हुत्वा विहरन्ति। भूते (भूत-काले) अज्जतनी, हिय्यत्तनी परोक्खा विभत्तियो होन्ति।

(ग) अथ खो राजा मागधो अजात-सत्तु वेदेहि-पुत्तो कोसिनारकानं मल्लानं दूतं पाहेसि। वेसालिका लिच्छवी। कापिलवत्थवा सक्या। रामगामका कोलिया। वेठदीपको ब्राह्मणो। पावेय्यका मल्ला दूतं पाहेसुं। दोणो ब्राह्मणो किर भगवतो सरीरानि अट्ठधा समं सुविभत्तं विभजित्वा, तेसं अदासि। अदंसु खो ते दोणस्स ब्राह्मणस्स कुम्भं याचमानस्स कुम्भं ति। पिप्फलिवनिया मोरिया पन अङ्गारं हरिंसु।

(घ) पितामहो, मातामहो, मज्झिमो, अन्तिमो, पापिट्ठो, सेट्ठो, धम्मिको, मातुच्छा, पितुच्छा, गारवं, अज्जवं, पोरी, सन्दिट्ठिकं, एहिपस्सिकं, पोनो भविको, दक्खिणेय्यो, आहुनेय्यो, अधिपतेय्यं, देवता, जनता।

(ङ) स्वातनाय भत्तं अधिवासेसि। पेत्तिकं च मत्तिकं च धनं सोगतानं सामणेरानं च समणानं अत्थाय विसज्जेसि। पायासि राजञ्ञो राजदायं ब्रह्मदेय्यं सेतव्यं अज्झावसति। कोसिनारका मल्ला पुरत्थिमेन द्वारेन निक्खमिंसु।

२. ऊपर के काले अक्षरों में छपे शब्दों से वाक्य बनाइए।

३. पालि में अनुवाद कीजिए—

(क) आज का भोजन। कल का दान। गत-कल की पूजा। मगध का राजा। शाक्य कुमार। कपिल-वस्तु के मनुष्य। कुरुदेश का राजा। इसी जन्म में। मन की व्यथा। शरीर की व्याधि। सालाना त्यौहार। वर्षा का वास। पाँच महिने की चारिका। संघ को दान। ध्यान का आनन्द। व्याकरण जानने वालों की सभा। त्रिपिटक की गाथा। वशिष्ठ, भृगु, उदुम्बर गोत्र के ऋषि।

३. निम्नलिखित प्रत्ययों के कुछ उदाहरण दीजिए—

१. ण, २. णिक, ३. क, ४. त्तक, ५. रति, ६. रीव, ७. रीवतक, ८. इत, ९. तग्घ, १०. काकी, ११. रतर, १२. रतम, १३. इय, १४. इट्ठ, १५. ल्ल, १६. णेय्य, १७. ण्य, १८. ल, १९. णान, २०. णायन।

४. निम्नलिखित शब्दों में प्रत्यय का निर्देश कीजिए—

सोगतो। वेणिको। समणको। एत्तावन्तु। कति। कीव। पलमत्तं। एकाकी। देवलो। वच्छानो। अज्जतनं। जनता। जातुस्सं। पितामहो। ख़त्यो। वारुणि। सामणेरो।

छठा काण्ड

तीसरा पाठ

समास-प्रकरण

स्यादि स्यादिनेकत्थं ३.१—स्याद्यन्त शब्द, स्याद्यन्त शब्द के साथ एकार्थ होते हैं। यह, भिन्न अर्थों का एकार्थ हो जाना समास कहा जाता है। समास छः हैं—१ अव्ययीभाव, २ बहुव्रीहि, ३ तत्पुरुष, ४ कर्मधारय, ५ क्रियार्थ और ६ द्वन्द। जैसे—

१. अव्ययीभाव (*असंख्य*)

§ १. असंख्यं विभत्तिसम्पत्तिसमीपसाकल्याभावयथापच्छा-युगपदत्थे ३.२—'विभक्ति, सम्पत्ति, समीप, साकल्य, अभाव, यथा, पश्चात्, और युगपद'—इन अर्थों में, अव्यय के साथ समास होता है। जैसे—

विभक्ति—इत्थीसु कथा पवत्ता—अधित्थि।[1]

---

१. पुब्बस्मामादितो २.१२२—अव्ययी भाव समास होने पर, शब्द से परे, प्रायः विभक्तियों का लोप होता है। जैसे—इत्थीसु कथा पवत्ता—अधित्थि।

कहीं कहीं नहीं होता है। जैसे—यथापत्तिया। यथापरिसाय।

नातोमपञ्चमिया २.१२३—अकारान्त अव्ययीभाव समास से परे, सभी विभक्तियों का लोप नहीं होता है। पञ्चमी को छोड़, दूसरी विभक्तियों के साथ 'अं' तो होता है। जैसे—उपकुम्भं=घड़े के पास।

वा ततियासत्तमीनं २.१२४—अकारान्त अव्ययीभाव समास से परे, तृतीया तथा सप्तमी विभक्ति में भी, विकल्प से 'अं' होता है। जैसे—

उपकुम्भेन कतं—उपकुम्भं कतं। उपकुम्भे निधेहि—उपकुम्भं निधेहि।

सम्पत्ति—सम्पन्नं ब्रह्मं—सब्रह्मं लिच्छवीनं। समिद्धि भिक्खानं—सुभिक्खं।

समीप—कुम्भस्स समीपं—उपकुम्भं।

साकल्य—सतिणं अज्झोहरति।

अभाव—विगता इद्धि सद्दिकानं दुस्सद्दिकं। अभावो मक्खिकानं—निम्मक्खिकं। अतिगतानि तिणानि—नित्तिणं।

यथा—अनुरूपं। अन्वद्धमासं। यथासत्ति।

पश्चात्—अनुरथं।

युगपद—सचक्कं।[3]

§ यावावधारणे ३.४—अवधारण (=इतना) के अर्थ में, 'याव' शब्द के साथ समास होता है। जैसे—

यावामत्तं (=जितने) ब्राह्मणे आमन्तय।

यावजीव=जीवन भर।

§ २. पय्यपाबहितिरोपुरेपच्छा वा पञ्चम्या ३.५—'परि, अप, आ, बहि, तिरो, पुरे, पच्छा', इन शब्दों का पञ्चम्यन्त के साथ समास होता है, और द्वितीयान्त के साथ भी। जैसे—

परिपब्बतं वस्सि देवो, परिपब्बता। अपपब्बतं वस्सि देवो, अपपब्बता। आपाटलिपुत्तं वस्सि देवो, आपाटलिपुत्ता। बहिगामं, बहिगामा। तिरोपब्बतं, तिरोपब्बता। पुरेभत्तं, पुरेभत्ता। पच्छाभत्तं, पच्छाभत्ता।

§ ३. समीपायामेस्वनु ३.६—सामीप्य, तथा आयाम (=विस्तार) के अर्थ में, 'अनु' शब्द के साथ समास होता है। जैसे—

अनुवनं असनि गता। अनुगङ्गं बाराणसी।

---

२. यथा न तुल्ये ३.३—'यथा' शब्द, यदि 'तुल्य' के अर्थ में समझा जाय, तो उसके साथ समास नहीं होता है। जैसे—

यथा देवदत्तो तथा यञ्ञदत्तो।

३. अकाले सकत्थे ३.८१—यदि कालवाचक न हो, तो उसी अर्थ में, पूर्वपद के अप्रधान 'सह' शब्द का 'स' हो जाता है। जैसे—सब्रह्मं। सचक्कं निधेहि। सधुरं।

§ ४. ओरे परि पटि पारे मज्झे हेट्ठुद्धाधोन्तो वा छट्ठिया ३.८—'ओरे, उपरि, पटि, पारे, मज्झे, हेट्ठा, उद्ध, अधो, अन्तो'—इन शब्दों का षष्ठ्यन्त के साथ समास होता है। जैसे—

गङ्गाय ओरे—ओरेगङ्गं। सिखरस्स उपरि—उपरिसिखरं। पटिसोतं। पारेय-मुनं। मज्झेगङ्गं। हेट्ठापासादं। उद्धगङ्गं। अधोगङ्गं। अन्तोपासादं।

§ ५. तिट्ठग्वादीनि ३.७—निम्नलिखित समास निपात हैं—

तिट्ठन्ति गावो यस्मिं काले—तिट्ठगु कालो। वहन्ति गावो यस्मिं काले—वहग्गु कालो। आयन्ति गावो यस्मिं काले—आयतिगवं।

खले यवा यस्मिं काले—खलेयवं। लूयमाना यवा यस्मिं काले—लूनयवं। लूयमानयवं। पातकालं। सायकालं। पातमेघं। सायमेघं। पातमग्गं। सायमग्गं।

§ ६. परस्स संख्यासु ३.६०—संख्यावाचक शब्द उत्तरपद में हो, तो 'पर' शब्द के अन्त्य स्वर का 'ओ' हो जाता है। जैसे—परोसतं। परोसहस्सं।

§ ७. तं नपुंसकं ३.९—अव्ययी भाव समास होने से, शब्द नपुंसक लिङ्ग होता है;

कभी कभी नहीं भी होता है। जैसे—यथापरिसं, यथापरिसाय=अपनी अपनी सभा में।

२. बहुब्रीहि (अञ्ञत्थ)

§ ८. बानेकञ्ञत्थे ३.१७—कभी कभी, अनेक स्याद्यन्त शब्दों का समास हो कर, उनसे भिन्न एक अन्यपद का बोध होता है। जैसे—

बहूनि वनानि यस्स सो—बहुधनो। लम्बा कण्णा यस्स सो—लम्बकण्णो। वजिरं पाणिम्हि यस्स सो—वजिरपाणि। मत्ता बहवो मातङ्गा एत्थ—मत्तबहु-मातङ्गं वनं। आरूळ्हो वानरो यं रुक्खं सो—आरूळ्हवानरो। जितानि इन्द्रि-यानि येन सो—जितिन्द्रियो। दिन्नं भोजनं यस्स सो—दिन्नभोजनो। अपगतं काळकं परा सो—अपगतकालको। उपगता दस येसं ते—उपदसा। तयोदस परिमाणं एसं—तिदसा।

दक्खिणस्सा च पुब्बस्सा च दिसाय यदन्तरालं—दक्खिणपुब्बा दिसा। सह पुत्तेन आगतो—सपुत्तो। सलोमको=जिसके शरीर पर रोयें हैं। अत्थि खीरं यस्सा सा—अत्थिखीरा ब्राह्मणी।

ओट्ठमुखमिव मुखमस्स—ओट्ठमुखो=ऊँट के समान जिसका मुँह हो। सुवण्णविकारो अलङ्कारो अस्स—सुवण्णालङ्कारो। पपतितं पण्णमस्स—पपतितपण्णो, पपण्णो। अविज्जमाना पुत्ता अस्स—अविज्जमानपुत्तो। न सन्ति पुत्ता अस्स—अपुत्तो।

बहू मालायो एतस्स—बहुमालो[४] पोसो। चित्ता गावो अस्सेति—चित्तगु[५]।

§ ९. बहुब्रीहि समास के कुछ विशेष उदाहरण—

भवम्पतिट्ठा[६]। गुणवन्तपतिट्ठो[७]। मनोसेट्ठा[८]। कुमारभरिया[१]। सपुत्तो[२]।

---

४. घ प स्सा न्त स्सा प्प धा न स्स ३.२४—अन्तभूत अप्रधान "घ", तथा "प" का ह्रस्व हो जाता है। जैसे—बहुमालो। निक्कोसम्बि। अतिवामोरु।

५. गो स्सु ३.२५—अन्तभूत अप्रधान 'गो' शब्द का 'गु' हो जाता है।

उ त्त र प दे ३.५४—उत्तर पद परे हो, तो पूर्वपद में निम्न प्रकार परिवर्तन होता है—

६. ट न्त न्तू नं ३.५७—पूर्व पद के 'न्त' तथा 'न्तु' का कहीं कहीं 'अ' हो जाता है। जैसे—

भवंपतिट्ठा अम्हं—भवन्त+पतिट्ठा=भव+पतिट्ठा=(निग्गहीतं १.३८) भवं+पतिट्ठा=(वग्गे वग्गन्तो १.४१) भवम्पतिट्ठा मयं। भगवन्तु+मूलका=भगवम्मूलका नो धम्मा।

७. अ ३.५८—पूर्वपद के 'न्तु' का कहीं २ 'न्त' हो जाता है। जैसे—

गुणवन्ता पतिट्ठा मम सोहं—गुणवन्तु+पतिट्ठा=गुणवन्तपतिट्ठो।

८. मनाद्यपादीनमोमये च ३.५९—'मय' प्रत्यय के साथ, तथा समास के पूर्वपद में स्थित, 'मन' आदि तथा 'आप' आदि [देखिए—तीसरा परिशिष्ट] शब्दों के अन्त्य स्वर का 'ओ' हो जाता है। जैसे—

मनो सेट्ठा एतेसं इति—मनोसेट्ठा। मनसा निब्बत्ता—मनोमया। रजसो जल्लं—रजोजल्लं (तत्पुरुष)। रजसो विकारो—रजोमयं। आपेसु गतं—आपोगतं। आपस्स विकारो—आपोमयं। दिसं दिसं* अनुयन्ति—दिसोदिसं अनुयन्ति।

* वी च्छा भि क्ख ञ्ञे सु द्वे १.५४—बार बार होने के अर्थ में, एक शब्द

सास्सत्थं[11]। साग्गि[12]। सदोणा[13] खारी। सोदरियो[14]। तन्दोपा[15]। दुविधो[16]। विगुणं[17]। द्वत्तिक्खत्तुं[18]।

को दो बार कहते हैं। जैसे—रुक्खं रुक्खं सिञ्चति। गामो गामो रमणीयो। गामे गामे पानीयं। दिसं दिसं अनुयन्ति=चारो ओर घूमता है।

[स्या दि लो पो पु ब्ब स्से क स्स १.५५—वीप्सा के अर्थ में, 'एक' शब्द के द्वित्व होने पर, पहले की स्यादि विभक्ति का लोप होता है। जैसे—एकस्स एकस्स—एकेकस्स]

९. इ त्थि य म्भा सि त पु मि त्थी पु मे बे क त्थे ३.६७—यदि उत्तर-पद समानाधिकरण स्त्रीलिङ्ग हो, तो स्त्रीप्रत्ययान्त पूर्वपद पुल्लिङ्ग का रूप ग्रहण करता है। जैसे—

कुमारी भरिया यस्स सो—कुमारभरियो। दीघा जङ्घा यस्स सो—दीघजङ्घो। युवति जाया यस्स सो—युवजायो।

१०. स ह स्स सो, ञ्ञ त्थे ३.७८—यदि अन्यपद का बोध होता हो, तो पूर्वपद 'सह' शब्द का विकल्प से 'स' हो जाता है। जैसे—सह पुत्तेन वत्तमानो सो—सपुत्तो। सहपुत्तो।

११. स ञ्ञा यं ३.७९—संज्ञा उत्तर पद में हो, तो पूर्वपद 'सह' शब्द का नित्य 'स' होता है। जैसे—सह अस्सत्थेन वत्तति—सास्सत्थं। सपलासं।

१२. अ प च्च क्खे ३.८०—उत्तर पद यदि अप्रत्यक्ष हो, तो पूर्वपद 'सह' शब्द का नित्य 'स' होता है। सह अग्गिना विज्जमानो—साग्गि कपोतो, पिसाचो, वातमण्डलिका।

१३. ग न्था न्ता धि क्ये ३.८२—यदि उत्तर पद ग्रन्थ-वाचक या आधिक्य-वाचक हो, तो पूर्वपद 'सह' शब्द का 'स' आदेश होता है। जैसे—सकलं जोतिमधीते। समुहुत्तं।

अधिको दोणो अस्साति—सदोणा खारी।

१४. उ द रे इ ये ३.८४—'इय' के साथ 'उदर' शब्द उत्तर पद में हो, तो पूर्वदप 'समान' का विकल्प से 'स' होता है। जैसे—सोदरियो। समानोदरियो।

१५. तं म म ञ्ञ त्र ३.८९—एक वचन में, पूर्वपद 'तुम्ह' तथा 'अम्ह'

[सब्बादीनं वीतिहारे १.५६—परस्पर व्यवहार करने के अर्थ में, 'सब्ब' आदि शब्दों का द्वित्व होता है; तथा, पहले की स्यादि विभक्ति का लोप होता है। जैसे—अञ्ञमञ्ञस्स भोजका। इतरीतरस्स भोजका]

३. तत्पुरुष (अमादि)

§ १०. अमादि ३.१०—'अं' आदि स्याद्यन्त शब्दों का स्याद्यन्त के साथ समास होता है। जैसे—

गामं गतो—गामगतो। मुहुत्तं सुखं—मुहुत्तसुखं। कुम्भकारो। तन्तवायो। वराहरो।

रञ्ञा हतो—राजहतो। असिना छिन्नो—असिच्छिन्नो। पितुना सदिसो—पितुसदिसो। पितुसमो। सुखेन सहगतं—सुखसहगतं। दधिना उपसित्तं भोजनं—दधिभोजनं। गुळेन मिस्सो ओदनो—गुळोदनो।

उरसा गच्छति—उरगो। पादेन पिवति—पादपो।

बुद्धस्स देय्यं—बुद्धदेय्यं। यूपाय दारु—यूपदारु। रजनाय दोणि—रजनदोणि

सवरेहि भयं—सवरभयं। गामस्मा निग्गतो—गामनिग्गतो। मेथुनस्मा अपेतो—मेथुनापेतो।

शब्दों का यथाक्रम 'तं' तथा 'मं' हो जाता है। जैसे—त्वं दीपो एसं—तन्दीपा। तंसरणा। तय्योगो। मन्दीपा। मंसरणा। मय्योगो।

१६. विधादिसु द्विस्स दु ३.९१—'विध' आदि शब्द [देखिए—तीसरा परिशिष्ट] उत्तर पद में हों, तो पूर्वपद 'द्वि' का 'दु' आदेश होता है। जैसे—द्वे विधा पकारा अस्स—दुविधो। द्वे पट्टा अस्स चीवरस्स—दुपट्टं।

१७. दिगुणादिसु ३.९२—'गुण' आदि शब्द [देखिए—तीसरा परिशिष्ट] उत्तर पद में हों, तो पूर्वपद 'द्वि' का 'दि' आदेश होता है। जैसे—द्वे गुणा अस्स—दिगुणं। द्विन्नं रत्तीनं समाहारो—दिरत्तं। द्विन्नं गुन्नं समाहारो—दिगु।

१८. तीस्व ३.९३—'ति' शब्द उत्तर पद में हो, तो पूर्वपद 'द्वि' का 'द्व' होता है। जैसे—द्वे वा तयो वा—द्वत्तयो वारे। द्वत्तिपत्तपूरा=दो या तीन पात्र भर कर।

कम्मा जातं—कम्मजं। चित्तजं।

रञ्ञो पुरिसो—राजपुरिसो। चन्दनगन्धो। नदीसोतो। कञ्ञारूपं। कायसम्फस्सो। फलरसो।

§ ११. क्व चे क त्त ञ्च छ ट्ठि या ३.२२—षष्ठी-तत्पुरुष समास कहीं कहीं नपुंसकलिङ्ग एकवचनान्त होता है। जैसे—

सलभानं छाया—सलभच्छायं[१९]। सकुन्तानं छाया—सकुन्तच्छायं। पासादच्छायं, पासादच्छाया।

समास होने पर, अमनुष्यों की सभा में नपुंसकलिङ्ग एक वचन होता है। जैसे—ब्रह्मसभं। देवसभं। इन्दसभं। यक्खसभं। सरभसभं।

मनुष्यों की सभा में—खत्तियसभा, राजसभा इत्यादि।

§ १२. तत्पुरुष समास के कुछ विशेष उदाहरण—

इदप्पच्चया[२०]। पुल्लिङ्गं[२१]। सत्थारदस्सनं[२२]। तम्मुखं[२३]। उदकुम्भो[२४]। दकसोतं[२५]।

---

१९ स्या दि सु र स्सो ३.२३—विभक्तियों के आने से, नपुंसक बने शब्द के अन्त्य स्वर का ह्रस्व होता है। जैसे—

सलभच्छायं, सलभच्छायेन, इत्यादि।

२०. इ म स्सि दं ३.५५—पूर्वपद 'इम' का 'इदं' आदेश हो जाता है। जैसे—

इमाय सम्मा पटिपत्तिया अत्थो—इदमट्ठो। इमेसं पच्चया—इदप्पच्चया।

२१. पुं पु म स्स वा ३.५६—पूर्वपद 'पुम' शब्द का विकल्प से 'पुं' आदेश हो जाता है। जैसे—पुमस्स लिङ्गं—पुंलिङ्गं। पुमलिङ्गं।

पुं+लिङ्गं=(लोपो १.३९) पु+लिङ्गं=(सरम्हा द्वे १.३४) पुल्लिङ्गं।

२२. ल्तु पि ता दी न मा र ङ् र ङ् ३.६३—पूर्वपद 'ल्तु' प्रत्ययान्त, तथा 'पितु' आदि शब्दों के अन्त्य स्वर का विकल्प से यथाक्रम, 'आर' तथा 'अर' हो जाता है। जैसे—

सत्थुनो दस्सनं—सत्थु+दस्सनं=सत्थारदस्सनं। कत्तुनो निद्देसो—कत्तारनिद्देसो। माता च पिता च—मातरपितरो (द्वन्द समास)।

४. कर्मधारय (एकाधिकरण)

§ १३. विसेसनमेकत्थेन ३.११—स्याद्यन्त विशेषण का अपने स्याद्यन्त विशेष्य के साथ समास होता है। जैसे—

नीलञ्च तं उप्पलं—नीलुप्पलं। मुनि च सो सीहो चाति—मुनिसीहो। सीलमेव धनं—सीलधनं। कण्हसप्पो। लोहितसालि।

§ १४. नञ् ३.१२—'न' के साथ स्याद्यन्त का समास होता है। जैसे—

न ब्राह्मणो—अब्राह्मणो[२६]। अपुनगेय्या गाथा। अनोकासं[२७] कारेत्वा। अमूलामूलं गन्त्वा। नखो[२८]। नगो[२९]।

विकल्प से—सत्थुवस्सनं, कत्तुनिद्देसो, मातापितरो।

२३. सब्बादयो वुत्तिमत्ते ३.६९—स्यादि तथा तद्धित में, स्त्रीवाचक 'सब्ब' आदि शब्द पुल्लिङ्ग-रूप ग्रहण करते हैं। जैसे—

तस्सा मुखं—तम्मुखं। तस्सं—तत्र। ताय—ततो। तस्सं वेलायं—तदा।

२४. कुम्भादिसु वा ३.७२—'कुम्भ' आदि शब्द यदि उत्तर पद में हों, तो पूर्वपद 'उदक' शब्द का विकल्प से 'उद' आदेश हो जाता है। जैसे—उदकस्स कुम्भो—उदकुम्भो, उदककुम्भो। उदकस्स पत्तो—उदपत्तो, उदकपत्तो। उदकस्स विन्दु—उदविन्दु, उदकबिन्दु।

२५. सोतादिसु लोपो ३.७३—'सोत' आदि शब्द यदि उत्तर पद में हों, तो पूर्वपद 'उदक' शब्द के 'उ' का लोप हो जाता है। जैसे—उदकस्स सोतो—दकसोतं। उदके रक्खसो—दकरक्खसो।

२६. ट नञस्स ३.७४—पूर्वपद 'नञ्' का 'अ' आदेश होता है। जैसे:—न ब्राह्मणो—अब्राह्मणो।

२७. अन् सरे ३.७५—उत्तर पद यदि स्वर से आरम्भ होता हो, तो पूर्वपद 'नञ्' का 'अन्' आदेश होता है। जैसे—न ओकासं—अनोकासं। न अक्खातं—अनक्खातं।

२८. नखादयो ३.७६—'नख' आदि शब्द निपात हैं। इन में पूर्वपद 'नञ' का 'अ' आदेश नहीं होता है। जैसे—नास्स खमत्थि इति—नखो (=नाखून)। नास्स कुलमत्थि इति—नकुलो (=नेवला)।

§१५. कुपादयो निच्चमस्यादिविधिम्हि ३.१३—'कु', 'प' आदि शब्दों के साथ, स्याद्यन्त शब्दों का समास होता है। जैसे—

कुच्छितो ब्राह्मणो—कुब्राह्मणो। कु अन्नं—कदन्नं[१०]। कु लवणं—कालवणं[११]। कु पुरिसो कापुरिसो[१२]। ईसकं उण्हं—कदुण्हं। पनायको। अभिसेको। पकरित्वा। पकतं। दुप्पुरिसो। दुक्कतं। सुपुरिसो। सुकतं। अभित्थुतं।

पगतो आचरियो—पाचरियो। पन्तेवासी। अतिक्कन्तो मञ्चं—अतिमञ्चो। अतिलाभो। अवकुट्ठं कोकिलाय वनं—अवकोकिलं। अवमयूरं। परिगिलानो अज्झेनाय—परियज्झेनो। निग्गतो कोसम्बिया—निक्कोसम्बि।

§१६. कर्मधारय समास के कुछ विशेष उदाहरण—पुथुज्जनो[१३]। साहं[१४]। सपक्खो[१५]। पुब्बन्हो[१६]।

'नख' आदि शब्द ये हैं—नख, नकुल, नपुंसक, नक्खत्त, नाक।

२९. नगो वा प्पाणिनि ३.७७—अप्राणी-वाचक होने से, विकल्प से 'नग' शब्द निपात होता है। जैसे—नगा रुक्खा। अगा रुक्खा। नगा पब्बता। अगा पब्बता। नग=अचल।

३०. सरे कद् कुस्सुत्तरत्थे ३.१०७—उत्तर पद यदि स्वर से आरम्भ होता हो, तो पूर्वपद 'कु' शब्द का 'कद' आदेश हो जाता है। जैसे—कु अन्नं—कदन्नं। कु असनं—कदसनं।

३१. काप्पत्थे ३.१०८—अल्प होने के अर्थ में, पूर्वपद 'कु' शब्द का 'का' आदेश होता है। जैसे—अप्पकं लवणं—कालवणं।

३२. पुरिसे वा ३.१०९—'पुरिस' शब्द उत्तर पद में हो, तो पूर्वपद 'कु' का विकल्प से 'का' आदेश होता है। जैसे—कापुरिसो, कुपुरिसो।

३३. जने पुथस्सु ३.६१—'जन' शब्द यदि उत्तर पद में हो, तो पूर्व पद 'पुथ' शब्द के अन्त्य स्वर का 'उ' हो जाता है। जैसे—अरियेहि पुथगेवायं जनो ति—पुथुज्जनो।

३४. सो छस्साहायतने वा ३.६२—'अह' (=दिन) या 'आयतन' शब्द उत्तर पद में हो, तो पूर्व पद 'छ' शब्द का विकल्प से 'स' आदेश होता है। जैसे—

छन्नं अहानं समाहारो—साहं, छाहं। छन्नं आयतनानं समाहारो—सळा-

§१७. संख्या दि ३.२१—आदि में संख्या-वाचक शब्द हो, तो समाहार-समास नपुंसक-लिंगान्त होता है। जैसे—

पञ्चन्नं गुन्नं समाहारो—पञ्चगवं। चतुप्पथं।

५. क्रियार्थ समास

§१८. ची क्रियत्थेहि ३.१४—'ची' प्रत्ययान्त शब्द के साथ, क्रियार्थ का समास होता है। जैसे—मीलीनीकरिय।

§१९. भूसनादरानादरेस्वलं सासा ३.१५—भूषण के अर्थ में प्रयुक्त 'अलं' शब्द, आदर के अर्थ में प्रयुक्त 'स' शब्द, तथा अनादर के अर्थ में प्रयुक्त 'अस' शब्द के साथ, क्रियार्थ का समास होता है। [देखिए—पृ० १५५] जैसे—

अलंकरिय। सक्कच्च। असक्कच्च।

§२०. अञ्ञे च ३.१६—कुछ दूसरे भी शब्दों के साथ क्रियार्थ का समास होता है। जैसे—

पुरोभूय। तिरोभूय। तिरोकरिय। उरसिकरिय। मनसिकरिय। मज्झेकरिय। तुण्हीभूय।

§२१. रीरिक्खकेसु ३.८५—'री', 'रिक्ख' तथा 'क' प्रत्ययों के[१७] आने से

यतनं, छळायतनं।

३५. समानस्स पक्खादिसु वा ३.८३—'पक्ख' आदि शब्द उत्तर पद में हों, तो पूर्वपद 'समान' शब्द का विकल्प से 'स' आदेश होता है। जैसे—समानो पक्खो—सपक्खो, समानपक्खो। सजोति, समानजोति।

३६. पुब्ब, अपर, अज्ज, साय मज्झेहि अहस्स अन्हो ३.११०—'पुब्ब' आदि शब्द [देखिए—तीसरा परिशिष्ट] यदि पूर्वपद हों, तो उत्तरपद 'अह' शब्द का 'अन्ह' आदेश होता है। जैसे—

पुब्बो अहो—पुब्बन्हो। अपरन्हो। अज्जन्हो। सायन्हो। मज्झन्हो।

३७. समानञ्ञभवन्तयादितुपमाना दिसा कम्मे री रिक्ख का ५.४३—उपमा के अर्थ में 'समान' आदि शब्दों से परे, 'दिस' =(दिखाई देना) धातु से परे 'री', 'रिक्ख', तथा 'क' प्रत्यय होते हैं। जैसे—

'समान' शब्द का 'स' आदेश होता है। जैसे—समानो विय दिस्सति—सरी,[४८] सरिक्खो, सरिसो।

§२२. सब्बादीनमा ३.८६—इन प्रत्ययों के आने से, 'सब्ब' आदि शब्दों के अन्त्य स्वर का 'आ' होता है। जैसे—यो विय दिस्सति—यादी, यादिक्खो, यादिसो (=जैसा)।

§२३. न्तकिमिमानं टाकीटी ३.८७—इन प्रत्ययों के आने से, 'न्त', 'किं', तथा 'इम' का यथाक्रम 'आ', 'की', तथा 'ई' आदेश हो जाता है। जैसे—भवं विय दिस्सति—भवन्त+दिस+री=भवादी। भवादिक्खो। भवादिसो। कीदी, कीदिक्खो, कीदिसो। ईदी, ईदिक्खो, ईदिसो।

§२४. तुम्हाम्हानं तामेकस्मिं ३.८८—इन प्रत्ययों के आने से, एकवचन 'तुम्ह' तथा 'अम्ह' शब्दों का यथाक्रम 'ता' तथा 'मा' आदेश होता है। जैसे—तादी, तादिक्खो, तादिसो (=तुम जैसा)। मादी, मादिक्खो, मादिसो (=मुझ जैसा)।

बहुवचन में—तुम्हादी, अम्हादी, इत्यादि।

§२५. वेतस्सेट् ३.९०—'री', 'रिक्ख', तथा 'क' प्रत्ययों के आने से, 'एत'

समानो विय दिस्सतीति—सदी, सदिक्खो, सदिसो। अञ्ञादी, अञ्ञादिक्खो, अञ्ञादिसो। भवादी, भवादिक्खो, भवादिसो। यादी, यादिक्खो, यादिसो। तादी, तादिक्खो, तादिसो।

३८. रानुबन्धेन्तसरादिस्स ४.१३२—'र' अनुबन्ध वाला प्रत्यय आने से, शब्द के अन्त्य स्वर से ले कर शेष अवयव का लोप हो जाता है। जैसे—

किं+रति=क्+अति ('किं' शब्द के 'इं' का लोप)

क्+अति=कति। किं+रीव=कीव। किं+रीवतक=कीवतकं। किं+रित्तक=कित्तकं।

समानो विय दिस्सति—सदिस+री=सदी ('दिस' शब्द के 'इस' का लोप)

समाना रो रीरिक्खकेसु ५.१२५—'समान' शब्द से परे, 'दिस' का विकल्प से 'र' आदेश होता है। जैसे—

सदिस+री=सर+ई=सरी। सदी। सरिक्खो, सदिक्खो। सरिसो, सदिसो।

शब्द का विकल्प से 'ए' आदेश होता है। जैसे—एदी, एतादी। एदिक्खो, एतादिक्खो। एदिसो, एतादिसो।

§२६. सञ्ञायमुदोदकस्स ३.७१—संज्ञा का अर्थ हो, तो पूर्वपद 'उदक', शब्द का 'उद' आदेश होता है। जैसे—

उदकं धाति इति अस्मि—उदधि[39]। उदकं पीयते अस्मि इति—उदपानं[40]।

६. द्वन्द्व

§२७. चत्थे ३.१९—अनेक स्याद्यन्त शब्दों का, 'और' के अर्थ में, समास होता है। जैसे—

(क) समाहार[41]

इन में नित्य समाहार-समास होता है—*प्राणी के अङ्गों में*—चक्खु च सोतं च—चक्खुसोतं। मुखनासिकं। हनुगीवं। छविमंसलोहितं। नामरूपं। जरामरणं।

बाजों के नाम में—मुरजं च गोमुखं चं—मुरजगोमुखं। पटहाळम्बरं। मद्दविकपाणविकं। गीतवादितं। सम्मताळं।

हल के अंगों में—थालपाचनं। युगनङ्गलं।

सेना के अंगों में—असिसत्तितोमरं। असिचम्मं। धनुकलापं। पहरणवरणं।

नित्य-वैरियों में—अहिनकुलं। बिळारमूसिकं। काकोलूकं। नागसुपण्णं।

संख्या तथा परिमाण में—एककदुकं। दुकतिकं। तिकचतुक्कं। चतुक्कपञ्चकं। दसेकादसकं।

---

३९. दाधात्वि ५.४५—भाव तथा कारक में, बहुधा 'दा' तथा 'धा' धातु के अन्त्य स्वर का 'इ' होता है। जैसे—आदि, निधि, बालधि, उदधि।

४०. अनो ५.४८—भाव तथा कारक में, धातु से परे 'अन' का आगम होता है। जैसे—उदपानं, अपादानं, इत्यादि।

४१. समाहारे नपुंसकं ३.२०—समाहार-समास नपुंसक लिङ्ग होता है।

क्षुद्र जन्तुओं में—कीटपटङ्गं। कुन्थकिपिल्लिकं। डंसमकसं। मक्खिक-किपिल्लिकं।

छोटी जातियों में—ओरब्भिकसूकरिकं। साकुन्तिकमागविकं। सपाक-चण्डालं। वेनरथकारं। पुक्कुसछवडाहकं।

चरण-साधारण में—अतिसभारद्वाजं। कठकालापं। सीलपञ्ञाणं। सम-थविपस्सनं। विज्जाचरणं।

ग्रन्थों के नाम में—दीघमज्झिमं। एकुत्तरसंयुत्तकं। खन्धकविभङ्गं।

लिङ्ग विशेषों में—इत्थिपुमं। दासिदासं। तिणकट्ठसाखापलासं।

विविध विरुद्धों में—कुसलाकुसलं। सावज्जानवज्जं। हीनप्पणीतं। कण्ह-सुक्कं। छेकपापकं। अधरुत्तरं।

दिशाओं में—पुब्बापरं। दक्खिणुत्तरं। पुब्बदक्खिणं। पुब्बुत्तरं। अपर-दक्खिणं। अपरुत्तरं।

नदी के नामों में—गङ्गायमुनं। महीसरभु।

(ख) समाहार—इतरेतर

इनमें समाहार-समास होता है, और इतरेतर भी—

तृण विशेषों में—कासकुसं, कासकुसा,। उसीरबीरणं, उसीरबीरणा। मुञ्ज-बब्बजं, मुञ्जबब्बजा।

वृक्ष विशेषों में—खदिरपलासं, खदिरपलासा। धवास्सकण्णं, धवास्सकण्णा। पिलक्खनिग्रोधं, पिलक्खनिग्रोधा। अस्सत्थकपित्थनं, अस्सत्थकपित्थना। साकसालं, साकसाला।

पशु विशेषों में—गजगवजं, गजगवजा। गोमहिसं, गोमहिसा। एणेय्यगोम-हिसं, एणेय्यगोमहिसा। एणेय्यवराहं, एणेय्यवराहा। अजेळकं, अजेळका। कुक्कुर-सूकरं, कुक्कुरसूकरा। हत्थिगवास्सवळवं, हत्थिगवास्सवळवा।

पक्षी-विशेषों में—हंसबलाकं, हंसबलाका। कारण्डवचक्कवाकं, कारण्डवच-क्कवाका। बकबलाकं, बकबलाका।

धन वाचक शब्दों में—हिरञ्ञसुवण्णं, हिरञ्ञसुवण्णा। मणिसंखमुत्ता-वेळुरियं, मणिसंखमुत्तावेळुरिया। जातरूपरजतं, जातरूपरजता।

धान्य के नामों में—सालियवकं, सालियवका। तिलमुग्गमासं, तिलमुग्गमासा। निप्फावकुलत्थं, निप्फावकुलत्था।

व्यञ्जनों में—साकसुवं, साकसुवा। गव्यमाहिसं, गव्यमाहिसा। एणेय्यवाराहं, एणेय्यवाराहा। मिगमायूरं, मिगमायूरा।

जनपदोंमें—कासिकोसलं, कासिकोसला। वज्जिमल्लं, वज्जिमल्ला। चेतिविसं, चेतिविसा। मच्छसूरसेनं, मच्छसूरसेना। कुरुपञ्चालं, कुरुपञ्चाला।

(ग) इतरेतर

इनमें इतरेतर-समास होता है—

चन्दिमो च सुरियो च—चन्दिमसुरिया। समणो च ब्राह्मणो च—समणब्राह्मणा। मातापितरो[४२]। पितापुत्ता[४३]। जयम्पती[४४]।

---

४२. विज्जायोनिसम्बन्धानमा तत्र चत्थे ३.६४—विद्या तथा योनि के सम्बन्ध-वाचक ल्तुप्रत्ययान्त तथा 'पितु' आदि शब्दों के अन्त्य स्वर का 'आ' होता है, यदि उनका वैसे ही शब्दों के साथ द्वन्द समास हो। जैसे—

होता च पोता च—होतापोतारो। मातापितरो।

४३. पुत्ते ३.६५—विद्या तथा योनि के सम्बन्ध-वाचक ल्तुप्रत्ययान्त, तथा 'पितु' आदि शब्दों के अन्त्य स्वर का 'आ' होता है, यदि उन का समास 'पुत्त' शब्द के साथ हो। जैसे—पिता च पुत्तो च—पितापुत्ता। माता च पुत्तो च—मातापुत्ता।

४४. जायाय जयं पतिम्हि ३.७०—'पति' शब्द यदि उत्तर पद में हो, तो पूर्व पद 'जाया' शब्द का 'जयं' आदेश हो जाता है। जैसे—जाया च पति च—जयम्पती।

३१. अभ्यास

१. हिन्दी में अनुवाद कीजिए—

(क) यावजीवं, यथासत्ति, अन्तोपासादं वा, अन्तोनगरं वा, बहि-नगरं वा, पुरे-भत्तं वा, पच्छा-भत्तं वा, कायगता-सति उपट्ठापेतब्बा। इद्धिया तिरोकुड्डं वा तिरोपाकारं वा गन्तुं सक्कोति। अनुलोमं पटिलोमं मनसि-कातब्बं।

(ख) (अम्बपाली-गाथातो) (पुरे) कालका भमर-वण्ण-सदिसा वेल्लितग्गा मम मुद्धजा (केसा) अहु। (इदानि) ते जराय साणवास-सदिसा। पुप्फ-पूरं मम उत्तमङ्गं, तं जराय ससलोम-गन्धिकं। काननं व सहितं सुरोपितं कोच्छ-सूचि-विचितग्ग-सोभितं तं जराय विरळं तहिं तहिं। सण्ह-गन्धक-सुवण्ण-मण्डितं सोभते सु वेणिहि (वेणीहि) अलङ्कतं, तं जराय खलति सिरं कतं। वट्ट-पलिघ-सदिसोपमा उभो सोभते सु बाहापुरे मम, ता जराय यथा पातली दुब्बलिका। सण्ह-मुद्दिका-सुवण्ण-मण्डिता हत्था मम, ते जराय यथा मूल-मूलिका। तूल-पुण्ण-सदिसोपमा पादा मम जराय फुटिका वलीमता। पीन-वट्ट-सहितुग्गता थनका मम रिन्दी व लम्बन्ते' नोदका। एदिसो अहु अयं समुस्सयो जज्जरो बहुदुक्खानं आलयो। सो' पलेप-पतितो जरागतो, सच्चवादि-वचनं (बुद्ध-वचनं) अनञ्ञथा ति॥ (अञ्ञथा न होती ति अम्बपाली-गाथा।) सुवुत्तवादी द्विपदान-मुत्तमो, महाभिसक्को नरदम्म-सारथि। चित्तं चलं मक्कट-सन्निभं। अवीत-रागेन सुदुन्निवारियं ति॥

(ग) माला-गन्ध-विलेपन-धारण-मण्डन-विभूसनट्ठाना पटिविरतो होति। सत्ताहं चतुसच्चं तिलक्खनेन भावेतब्बं। विकाल-भोजना, अदिन्ना-दाना मुसा-वादा, पटिविरतेन भवितब्बं। दीपङ्करो भगवा सत-सहस्स-छळभिञ्ञ-खीणासव-भिक्खूहि अञ्जसं (मग्गं) पटिपज्जि। दिट्ठ-धम्म-सुख-विहारिनो च अपगत-भयभेरवा च कत-करणीया च बुद्ध-पुत्ता विहरन्ति। चीवर-पिण्ड-पात-सेनासन-गिलान-पच्चय-भेसज्ज-परिक्खारा समुदानेतब्बा। वीमंसा-समाधि-पधान-संखार-समन्नागतं इद्धि-पादं भावेतब्बं। ओट्ठ-पहत-मत्तेन लपित-लापन-मत्तेन तावतकेनेव आणवादं थेरवादं न वत्तब्बं। भगवा हि उत्तरि-मनुस्स-धम्मा अल-

मरिय-आण-दस्सन-विसेसं अज्झगमा। एकन्त-परिपुण्णं एकन्त-परिसुद्धं संख-लिखितं ब्रह्मचरियं चरितुं अगारं अज्झावसता न सुकरं होति। राग-दोस-मोहा पमाद-करणा ते खीणासव-भिक्खुनो पहीना उच्छिन्न-मूला ताला-वत्थु-कता अनभावकता आयतिं अनुप्पाद-धम्मा। सञ्ञा-वेदयित-निरोध-समापत्तिया वुट्ठ-हन्तस्स भिक्खुनो विवेक-निन्नं चित्तं होति विवेक-पोणं विवेक-पब्भारं ति। निब्बाणोगधं हि ब्रह्म-चरियं (तथागतप्पवेदित-धम्म-विनये) निब्बाण-परायणं निब्बाण-परियोसानं ति।

२ ऊपर के काले शब्दों का विग्रह कीजिए; और उनके समास बताइए।

३. हिन्दी में अनुवाद कीजिए। काले छपे अंशों के लिए एक ही पद (समास) का व्यवहार कीजिए—

उसके कपड़े लाल हैं। यह कमल नीला है। यह लम्बे कान वाला है। उसकी कीर्ति बहुत बढ़ी है। वह हाथ में तलवार लिए है। वह सोने के गहने पहने हुए है। इस जङ्गल में बड़े मतवाले हाथी हैं। यह काम बहुत बुरा है। इसके पत्ते गिर गये हैं। पानी भरा घड़ा यहाँ है। उसके पास दूध है। भोजन कुछ कुछ गरम है। शक्ति के अनुसार काम करता है। वृक्ष पर बानर चढ़े हैं। लड़के पढ़ा दिये गये हैं। बड़ी विचित्र गायें रखने वाला आदमी है। चश्मे की ओर जाता है। ब्राह्मणों की सभा में गया था। उसका आदमी है। दो नाम वाला ग्वाला आ गया है। एक दूसरे का जोड़ा मिल गया। वह मेरा सगा भाई है। आप का नाम क्या है? धुकती आग में थोड़ा घी डालिये। वह गुड़ से मिला हुआ चावल खाता है। इस दरख्त के फल पक गये हैं। वह अपने पिता के समान है। उसको कोई लड़का नहीं है।

४. निम्नलिखित शब्दों का विग्रह कीजिए, तथा उनके नियमों का निर्देश कीजिए—

जयम्पती। मिगमायूरं। पिलक्खनिग्रोध। कुक्कुरसूकरा। गङ्गायमुनं। अधरुत्तरं। इत्थिपुमं। एककदुकं। विळारमूसिकं। मादिक्खो। सरिक्खो। अलं-करिय। सक्कच्च। पञ्चगवं। अवकोकिलं। अपुनगेय्या। लोहित सालि। नदीसोतो। चित्तजं। यूपदारु। उरगो। दधिभोजनं। तन्तवायो। सागि।

दिगुणं। चित्तगु। अपुत्तो। पपण्णो। अत्थिखीरा। जितिन्द्रियो। वजिरपाणि। साय-मग्गं। अधोगङ्गं।

५. समास कीजिए—

अनु+रथ। पटि+सोत। बहूनि धनानि यस्स। तयोदस परिमाणं येसं। पितुना सदिसो। सवरेहि भयं। न कुसलं। निग्गतो कोसम्बिया। परिगिलानो अज्झेनाय। कुच्छितो पुरिसो। पञ्चन्नं गुन्नं समाहारो। कम्मा जातं। गामा निग्गतो। चित्ता गावो अस्स। परि पब्बतं वस्सि देवो। दिन्नं भोजनं यस्स सो। नीलं उप्पलं।

छठा काण्ड

चौथा पाठ

समासान्त प्रत्यय

अ

§१. समासन्त्व ३.४० : पापादीहि भूमिया ३.४१—'पाप' आदि शब्दों के साथ, जब 'भूमि' शब्द का समास होता है, तो उस से परे 'अ' प्रत्यय होता है। जैसे—

पापा भूमि यस्मिं ठाने—पापभूमि+अ=पापभूमं। जातिया उपलक्खिता भूमि यस्मिं ठाने—जातिभूमि+अ=जातिभूमं।

§२. संख्याहि ३.४२—संख्या-वाचक शब्दों के साथ, जब 'भूमि' शब्द का समास होता है, तो उससे परे 'अ' प्रत्यय होता है। जैसे—

द्वे भूमियो अस्स भवनस्स—द्विभूमं। तिभूमं।

§३. नदीगोदावरीनं ३.४३—संख्या-वाचक शब्दों के साथ, जब 'नदी', तथा 'गोदावरी' शब्दों के साथ समास होता है, तो उससे परे 'अ' प्रत्यय होता है। जैसे—

पञ्चन्नं नदीनं समाहारो—पञ्चनदं। सत्तन्नं गोदावरीनं समाहारो—सत्तगोदावरं।

§४. असंख्येहि चाङ्गुल्या नञ्ञसंख्यत्थेसु ३.४४—यदि बहुब्रीहि या अव्ययीभाव समास न हो, तो अव्यय तथा संख्यावाचक शब्दों के साथ 'अङ्गुली' शब्द का समास होने से, उससे परे 'अ' प्रत्यय होता है। जैसे—

निग्गतं अङ्गुलीहि—निरङ्गुलं। अच्चङ्गुलं। द्वे अङ्गुलियो समाहरा—द्वङ्गुलं।

§५. दीघाहोवस्सेकदेसेहि च रत्या ३.४५—संख्यावाचक शब्द, तथा 'दीघ', 'अहो', 'वस्स', 'एक', और 'देस' के साथ 'रत्ति' का समास होने से,

उससे परे 'अ' प्रत्यय होता है। जैसे—

दीघा च सा रत्ति चाति—दीघरत्तं। अहो च रत्ति चाति—अहोरत्तं। वस्सासु रत्ति—वस्सारत्तं। पुब्बा च सा रत्ति चाति—पुब्बरत्तं। अपररत्तं। अड्ढा च सा रत्ति चाति—अड्ढरत्तं। अतिक्कन्तो रत्तिं—अतिरत्तो। द्वे रत्ती समाहटा—द्विरत्तं। एकरत्तं, एकरत्ति।

§६. गोत्व च त्थे चालोपे ३.४६—यदि द्वन्द, बहुव्रीहि, या अव्ययीभाव न हो, तो समास होने पर 'गो' शब्द से परे 'अ' प्रत्यय होता है। जैसे—

रञ्ञो गो—राजगवो। परमो गो—परमगवो। पञ्च गावो धनं अस्स—पञ्चगवधनो। दसन्नं गुन्नं समाहारो—दसगवं।

§७. रत्तिन्दिवदारगवचतुरस्सा ३.४७—निम्नलिखित समासान्त निपात हैं—

रत्तो च दिवा च—रत्तिन्दिवं। रत्ति च दिवा च रत्तिन्दिवं। दारा च गावो च—दारगवं। चतस्सो अस्सियो अस्स—चतुरस्सो। [1]अनुगवं सकटं=बैल के बराबर ही लम्बी गाड़ी।

§८. अक्खिस्माञ्ञत्थे ३.४९—बहुव्रीहि समास में, 'अक्खि' शब्द से परे, 'अ' प्रत्यय होता है। जैसे—

विसालानि अक्खीनि यस्स सो—विसालक्खो।

§९. दारुम्यङ्गुल्या ३.५०—बहुव्रीहि समास में, 'दारु' समझे जाने पर, अङ्गुली शब्द से परे 'अ' प्रत्यय होता है। जैसे—

द्वे अङ्गुलियो अवयवा अस्स—द्वङ्गुलं दारु=पुआल तृण आदि बटोरने के लिए दो अङ्गुलियों वाली बनी लकड़ी। पञ्चङ्गुलं दारु।

§१०. चि वीतिहारे ३.५१—क्रिया का व्यतिहार (=अदला का बदला) समझा जाय, तो बहुव्रीहि समास में 'चि' प्रत्यय होता है। 'चि' का 'इ' रह जाता है। जैसे—

[2]केसाकेसी=झोंटाझोंटी। दण्डादण्डी=लाठालाठी।

---

१ आयामे नुगवं ३.४८—निपात।

२. तत्थ गहेत्वा तेन पहरित्वा युद्धे सरूपं ३.१८—'उसे पकड़ कर, उससे

क

§ ११. ल्त्वि त्थि यु हि को ३.५३—बहुब्रीहि समास में, 'ल्तु' प्रत्ययान्त, तथा स्त्रीलिङ्ग ईकारान्त-ऊकारान्त शब्दों से परे बहुधा 'क' प्रत्यय होता है। जैसे—

बहवो कत्तारो एतस्स—बहुकत्तुको। बहू कुमारियो एतस्मिं गामे—बहुकुमारिको गामो। बहू ब्रह्मबन्धू एतस्मिं गामे—बहुब्रह्मबन्धुको गामो।

§ १२. वा ञ्ञतो ३.५३—और भी स्थानों में विकल्प से 'क' प्रत्यय होता है। जैसे—

बहुमालको, बहुमालो।

मार मार कर, जैसे युद्ध करता है'—इस अर्थ में समास होता है। जैसे—

केसेसु च केसेसु च गहेत्वा युद्धम्पवत्तं—केसाकेसी। दण्डेहि च दण्डेहि च पहरित्वा युद्धम्पवत्तं—दण्डादण्डी। मुट्ठामुट्ठी।

चि स्मिं ३.६६—'चि' प्रत्यय आने से, उत्तर पद से पहले 'आ' का आगम होता है। जैसे—दण्डादण्डी। मुट्ठामुट्ठी।

एकादि-वृत्ति

(उणादि)



नमो तस्स भगवतो अरहतो सम्मा सम्बुद्धस्स

मोग्गल्लान 'ण्वादि'-वृत्ति

णु

१. चर, दर, कर, रह, जन, सन, तल, साद, साध, कस, अस, चट, अस, वाहि णु—इन धातुओं से परे, बहुधा 'णु' प्रत्यय होता है। 'णु' का 'उ' रह जाता है।

'अस्सा णानुबन्धे' ५.८४—इस सूत्र से, धातु के उपान्त 'अ' का 'आ' हो जाता है। जैसे—

चरति हदये मनुञ्ञभावेनाति—चर+णु=चारु=सुन्दर। दरीयतीति—दारु=लकड़ी। करोति इति—कारु=शिल्पी, इन्द्र, विश्वकर्मा। रहति, चन्दादीनं सोभाविसेसं नासेतीति—राहु=असुरेन्द्र। जायति गमनागमनं अनेनाति—जाणु=घुटना। सनेति, अत्तनि भत्तिं उप्पादेतीति—सानु=जो अपने में भक्ति उत्पन्न करावे—पहाड़ की चोटी। तलन्ति, पतिट्ठहन्ति एत्थ दन्तानि—तालु। सादीयति अस्सादीयतीति—सादु=मधुर। साधेति अत्तपरहितं इति—साधु=सज्जन। कसीयतीति—कासु=गढ़ा। असति, सीघभावेन पवत्ततीति—आसु=शीघ्र। चटति, भिन्दति अमुञ्ञभावन्ति—चाटु=खुसामद। अयन्ति, पवत्तन्ति सत्ता एतेनाति—आयु=प्राण।

'आस्सा णापिम्हि युक्' ५.९१—इस सूत्र से, 'आकारान्त' धातु से परे, 'य' का आगम होता है। जैसे—

वाति गच्छति इति—वायु=हवा।

२. भर, रमर, चर, तर, अर, गर, घर, हन, तन, मन, भस, कित, धन, वह, कम्ब, अम्ब, इक्ख, चक्ख, भिक्ख, संक, इन्द, अन्द, यज, पट,

अण, अस, वस, पस, पंस, बन्धा उ—इन धातुओं से परे 'उ' प्रत्यय होता है। जैसे—

भरतीति—भरु=पति। मरति रूपकायेन सहेवाति—मरु=देव, निर्जल देश। चरीयति, भक्खीयतीति—चरु=हव्यपाक। तरन्ति अनेनाति—तरु=वृक्ष। अरति, सून-भावेन उद्धं गच्छतीति—अरु=व्रण। गरति, सिञ्चति, गिरति, वमति वा सिस्सेसु सिनेहन्ति—गरु, या गुरु। हनति, ओदनादिसु वण्णविसेसं नासेतीति—हनु=ठुड्ढी। तनोति संसारदुक्खन्ति—तनु=शरीर। मञ्ञति सत्तानं हिताहितं इति—मनु=प्रजापति। भमति, चलतीति—भमु=भौं। केतति, उद्धं गच्छति, उपरि निवसतीति—केतु=ध्वजा। धनति, सद्दं करोतीति—धनु=चाप। वंह इति निद्देसा उम्हि निच्चं निग्गहीत लोपो—वंहति, वुद्धिं गच्छतीति बहु=अधिक। कम्बति, संवरणं करोतीति—कम्बु=शङ्ख। अम्बति, अभिनादं करोतीति—अम्बु=जल। चक्खति रूपन्ति—चक्खु=आँख। भिक्खतीति भिक्खु=श्रमण। सङ्कीयतीति—सङ्कु=शूल। इन्दति, नक्खत्तानं परमिस्सरियं पवत्तेतीति—इन्दु=चाँद। अन्दति, बन्धति सत्ता एतायाति—अन्दु=जंजीर। यजन्ति अनेनाति—यजु=वेद। पटति, व्यत्तभावं गच्छतीति—पटु=विचक्षण। अणति, सुखुमभावेन पवत्ततीति—अणु=सूक्ष्म, धान्य विशेष। असन्ति, पवत्तन्ति सत्ता एतेहि—असवो=प्राण। सुखं वसन्ति अनेनाति—वसु=धनं। पसीयति, वाधीयति सामिकेहीति—पसु=चतुष्पाद। पंसति, सोभाविसेसं नासेतीति—पंसु=धूल। बन्धीयति सिनेहभावेनाति—बन्धु=बान्धव।

ऊ

३. बन्धा ऊ वधो च—'बन्ध' धातु से परे 'ऊ' प्रत्यय होता है; और 'बन्ध' का 'वध' आदेश हो जाता है। जैसे—पञ्चहि कामगुणेहि अत्तनि सत्ते 'बन्धतीति—वधु=वहू।

४. जम्बादयो—'जम्बू' आदि 'ऊ' प्रत्ययान्त शब्द निपात हैं।

निपातनं—अप्पत्तस्स पापनं, पत्तस्स पापनं, पत्तस्स पटिसेधो च। जनिस्मा ऊ बुचागमो। 'मनानं निग्गहीतं' ५.९६—इस सूत्र से 'जन' धातु के

'न' का निग्गहीत हो गया। फिर, 'वग्गे वग्गन्तो' १.४१—इस सूत्र से निग्गहीत का 'म' हो गया। जैसे—

जायति, जनीयतीति वा—जन+ऊ=जम्बू=वृक्ष।

'भम' धातु के 'अम' का लोप हो जाता है। जैसे—भमति कम्पति—भू या भमु।

करोतिस्मा ऊ। तस्स 'कन्धु' चागमो। 'पररूप-मयकारे व्यञ्जने ५.९५—इति धात्वन्तस्स व्यञ्जनस्स पररूपत्तं। रुधिरुप्पादं करोतीति—कक्कन्धु=वैर का फल।

आलम्बति, अवसंसतीति—अलाबू=तुम्बा।

सर=गतिहिंसाचिन्तासु। सरति गच्छतीति—सरभू=एक नदी का नाम। सरति, पाणे हिंसतीति—सरबू=क्षुद्र जन्तु विशेष।

चम=अदने। चमति, भक्खति निवापनन्ति—चमू=सेना।

तन=वित्थारे। तनोति संसारदुःखन्ति—तनू=शरीर इत्यादि।

कु

५. त पु स वी ध कु र पु थ मु वा कु—इन धातुओं से परे 'कु' प्रत्यय होता है। 'कु' का 'उ' रह जाता है। जैसे—

तापीयतीति—तिपु=सीसा। उसति, दाहं करोतीति—उसु=वाण। वेधति रंसीहि तिमिरन्ति—विधु=चन्द्र। कुरति, किच्चाकिच्चं वदतीति—कुरु=राजा। कुरवो=जनपदा। पुथति, महन्तभावेन पत्थरतीति—पुथु=विस्तार। मोदनं, मुदीयतीति वा—मुदु=नरम।

६. सि न्धा द यो—'सिन्धु' आदि 'कु' प्रत्ययान्त शब्द निपात हैं। जैसे—

सन्दति, पस्सवतीति—सिन्धु=नदी। वहन्ति अनेनाति—बाहु। बधति, उपद्दवे निवारेतीति—बाहु=भुजा। रंघति, पवत्तति राजधम्मे'ति—रघु=राजा। विन्दन्ति, अनेन नन्दन्तीति—बिन्दु=कणिका। मञ्जति, जायति मधुरन्ति—मधु: अथवा, मधुकरीहि कतं—मधु। रपति, जप्पति मन्तन्ति—रिपु=शत्रु। ससति, जीवतीति—सुसु=शिशु। अरति, महन्तं भावं गच्छति इति—उरु=बड़ा। अरन्ति अनेनाति—ऊरु=जाँघ। आखञ्जतीति—आखु=चूहा।

तरतीति—थरु=तलवार की मूठ। लङ्घति, पवत्तति लघुभावेनाति—लघु=हलका। भञ्जति विसेसेनाति—पभङ्गु=अङ्कुर। ठाति, पवत्तति सुन्दरभावेनाति—सुट्ठु=अच्छा। ठाति, पवत्तति असुन्दरभावेनाति—दुट्ठु=बुरा इत्यादि।

इ

७. इ—धातु से परे बहुधा 'इ' प्रत्यय होता है। जैसे—

असति, खिपीयतीति—असि=तलवार। कसीयतीति—कसि=कृषि। आमसीयतीति—मसि=राख। कु=सद्दे; ओस्स अवादेसो; कव्यति, कथेतीति—कवि। रवति, गज्जतीति—रवि=सूर्य। सप्पति, पवत्ततीति—सप्पि=घी। गन्थेतीति—गण्ठि=गाँठ। राजति, पवत्ततीति—राजि—पंक्ति। कलीयति, परिमीयतीति—कलि—पाप। वलन्ति, जीवन्ति अनेनाति—बलि=कर। थनति नदतीति—थनि=शब्द। अच्चीयति, पूजीयतीति—अच्चि=ज्वाला। वलनं सङ्कोचनं—वलि=सिकुड़न। वल्लीयन्ति संवरीयन्ति सत्ता एतायाति—वल्लि=लता इत्यादि।

८. दध्यादयो—'दधि' आदि 'इ' प्रत्ययान्त शब्द निपात हैं। जैसे—

घतमादधातीति—दधि=दही। अंहति, गच्छतीति—अहि=साँप। कम्पति, चलतीति—कपि=वानर। मनति जानातीति मुनि=श्रमण। मनति, महग्घभावं गच्छतीति—मणि=रत्न। इक्खति अनेनाति—अक्खि=आँख ('इक्ख' के 'इ' का 'अ' हो गया)। कमति, यातीति—किमि=कीड़ा ('कम' का 'किम' हो गया)। तुरितो तरति यातीति—तित्तिरि=पक्षी। कीळनं—केळि=क्रीड़ा। उस्सति, दहतीति—उक्खलि=भाजन इत्यादि।

कि

९. युवण्णुपन्ता कि—जिन धातुओं के उपान्त में 'इ' या 'उ' रहे, उनसे परे बहुधा 'कि' प्रत्यय होता है। 'कि' का 'इ' रहता है। जैसे—

सीलं इच्छतीति—इसि=तपस्वी। गिरति, पसवति छविमंससारभूतं भेसज्जा-

दीनि—गिरि=पहाड़। सूचेति सुन्दरत्तन्ति—सुचि=पवित्र। रुचन्ति एतायाति रुचि=अभिलाषा इत्यादि।

१०. वप, वर, वस, रस, नभ, हर, हन, पणा, इण्—इन धातुओं से परे 'इण्' प्रत्यय होता है। जैसे—

वपन्ति एतायाति—वापि=जलाशय। वारेन्ति एतेनाति—वारि=जल। वसन्ति एतायाति—वासि=वसुला। रसीयति, अस्सादनवसेन समोसरीयतीति—रासि=समूह। नमति, हिंसतीति—नाभि। हारेतीति—हारि=मनोज्ञ। हनन्ति एतेनाति—घाति=हथियार। पणति, वोहरतीति—पाणि=प्राणी। पणति, वोहरति एतेनाति वा—पाणि=हाथ।

ईण

११. भू गमा ईण्—'भू' तथा 'गम' धातुओं से परे, भविष्यत्काल में, 'ईण' प्रत्यय होता है। जैसे—भविस्सतीति—भावी=होने वाला। गमिस्सतीति—गामी=जाने वाला।

ई

१२. तन्द लक्खा ई—इन धातुओं से परे, 'ई' प्रत्यय होता है। जैसे—तन्दनं=तन्दी=आलस्य। लक्खीयन्ति सत्ता एतायाति—लक्खी=श्री।

रो

१३. गमा रो—'गम' धातु से परे, 'रो' प्रत्यय होता है। 'रो' का 'ओ' रह जाता है।

रानुबन्धेन्तसरादिस्स ४.१३२—इस सूत्र से 'गम' के 'अम' का लोप हो गया। जैसे—

गच्छतीति—गो=पशु।

क

१४. इ भी का कर अरव कसक वा हि को—इन धातुओं से परे, 'क' प्रत्यय होता है। जैसे—

एति पवत्ततीति—एको=असहाय। भायन्ति अस्मा इति—भेको=मेढ़क। काति, सद्दं करोतीति—काको=कौआ। करोति वण्णन्ति—कक्को=एक तरह का रंग। अरति, यातीति—अक्को=सूरज। वकति, ओदनमाददातीति—वक्कं=देहकोट्ठासविसेसों। सक्कोतीति—सक्को=इन्द्र। वाति, वन्धति एतेनाति वाको=वल्कल।

१५. ऊकादयो—'ऊका' आदि, 'क' प्रत्ययान्त शब्द निपात हैं। जैसे—

ऊहीयति विचिनीयतीति—ऊका=जूँ। उन्दति, द्रवं करोतीति—उदकं=जल। भायति एतस्माति—भीको=भीरु। सक्कोति धारेतुन्ति—सिक्का=सिकहर। हीयति साधूहि—हाको=क्रोध। सम्वति, उदकं मण्डेतीति—सम्बुको=जलजन्तु विशेष। पुथति, पत्थरति अत्तनो वालभावं—पुथुको=मूर्ख। सोचन्ति एतेनाति—सुक्कं=उजला। उपचिनन्तीति—उपचिका=दीमक। कम्पति, चलतीति—पङ्को=कीचड़ ('कम्प' का 'पं' आदेश)। उसतीति—उक्का=ज्वाला। उसति, दहतीति—उम्मुकं=अलात। वमीयतीति—वम्मिको=दीयंड। मसीयति पेमेनाति—मत्थकं=शिर ('स' का 'त्थ' होता है)।

आनक

१६. भी त्वा न को—'भी' धातु से परे 'आनक' प्रत्यय होता है। जैसे—भायन्ति एतस्मा ति—भयानको।

आणिक, आटक

१७. सिङ्घा आणिकाटका—'सिंघ' धातु से परे 'आणिक' तथा 'आटक' प्रत्यय होते हैं। जैसे—

सिङ्घायति पस्सवतीति—सिङ्घाणिका=नाक का पोटा। सिङ्घति एकीभावं यातीति—सिङ्घाटकं=चौराहा।

अक

१८. करादित्वको—'कर' आदि धातुओं से परे, 'अक' प्रत्यय होता है। जैसे—

करीयतीति—करको=कमण्डलु। करोतीति—करको=वस्सोपलो। सरति उदकमेत्थाति—सरको=जल पीने का भाजन। नरन्ति पापुणन्ति सत्ता एत्थाति—नरको। तरन्ति अनेनाति—तरको=तरण। वारेतीति—वरको=वरण करना, धान्यविशेष। जनेतीति—जनको=पिता। कनति दिब्बतीति—कनकं=सोना। कटति, मद्दति निवारेति रिपवोति—कटकं=नगर। कुरतीति कोरको=कली। थवीयतीति—थवको=गुच्छा।

१९. व ल प ते ह्वा को—'वल' तथा 'पत' धातु से परे 'अक' प्रत्यय होता है। जैसे—

वलति जीवतीति—बलाका=पक्षी-विशेष। पतति, यातीति—पताका।

२०. सा मा का द यो—'सामाक' आदि, 'आक' प्रत्ययान्त शब्द निपात हैं। जैसे—

साति, देहं तनुं करोतीति—सामाको=तृण धान्य। पिवति रत्तन्ति—पिनाको=शिव का धनुष। गवति, नदति एतेनाति—गुवाको=सुपारी। पटति, यातीति पटाका=पताका। सलति, यातीति—सलाका=शलाका, वैद्यों के चीर-फाड़ के लिए। विदति, जानातीति—विदाको=विद्वान्। पणीयति, वोहरीयतीति—पिञ्ञाको=तिलका पीना, खरी।

किक

२१. वि च्छा ल ग म मु सा कि को—'विच्छ', 'अल', 'गम', तथा 'मुस' धातुओं से परे 'किक' प्रत्यय होता है। जैसे—विच्छति, यातीति—विच्छिको=विच्छू। अलति, वञ्चति एतेनाति—अलिकं=असत्य। गच्छतीति—गमिको=जाने वाला। मुसति, थेनेतीति—मूसिको=चूहा।

२२. किं क णि का द यो—'किंकणिका' आदि 'किक' प्रत्ययान्त शब्द निपात हैं। जैसे—

कणति, सद्दं करोतीति—किंकणिका=छोटी घण्टियाँ। मुदन्ति एतायाति—मुद्दिका=अंगूठी, फल विशेष। महीयति पूजीयतीति—महिका=हिम। कलीयति, परिमीयतीति—कलिका=कली। सप्पति, गच्छतीति—सिप्पिका=सीपी इत्यादि।

कीक

२३. इ सा की को—'इस' धातु से परे 'कीक' प्रत्यय होता है। जैसे—इच्छीयतीति—इसीका=सींक।

णुक

२४. क म प दा णु को—'कम', तथा 'पद' धातुओं से परे, 'णुक' प्रत्यय होता है। जैसे—

कामेतीति—कामुको=कामी। पज्जति, याति एतायाति—पादुका=खड़ाऊँ।

णूक

२५. म ण्ड स ला णू को—'मण्ड', तथा 'सल' धातुओं से परे, 'णूक' प्रत्यय होता है। जैसे—

मण्डेति, जलं भूसेतीति—मण्डूको=मेढ़क। सलति, गोचरत्तं उपयातीति—सालूकं=उत्पलकन्द।

२६. उ लू का द यो—'उलूक' आदि 'णुक' प्रत्ययान्त शब्द निपात हैं। जैसे—

उलति, गवेसतीति—उलूको=उल्लू। मञ्ञतीति—मधुको=वृक्ष ('मन' के 'न' का 'ध' हो गया)। जलतीति—जलूका=जोंक इत्यादि।

सक

२७. क सा स को—'कस' धातु से परे, 'सक' प्रत्यय होता है। जैसे—कस्सतीति—कस्सको=कृषक।

तिक

२८. क रा ति को—'करोति' से परे, 'तिक' प्रत्यय होता है। जैसे—करोन्ति कीळं एत्थाति—कत्तिका=कार्तिक।

ठकण्

२९. इसा ठकण्—'इस' धातु से परे, 'ठकण्' प्रत्यय होता है। जैसे—इच्छीयतीति—इट्ठका=ईंट।

ख

३०. समा खो—'सम' धातु से परे, 'ख' प्रत्यय होता है। जैसे—उपसमेतीति—सङ्खो=शङ्ख।

३१. मुखादयो—'मुख' आदि, 'ख' प्रत्ययान्त शब्द निपात हैं। जैसे—मुनन्ति, वन्धन्ति एतेनाति—मुखं।

सयन्ति एत्थ ऊका कुसुमादयो वाति—सिखा=चूड़ा। विसन्ति एत्थ, पविसन्ति वाति—विसिखा=गली। कनति, दिप्पतीति—निक्खो=सुवण्णविकारो। मयति यातीति—मयूखो=किरण। लुनाति, छिन्दति सोभन्ति—लूखो=रूखा। अरन्ति, यन्ति एतेनाति—अक्खो=अक्ष, पासा। यसति, पयतति बलिमाहरणत्थायाति—यक्खो=यक्ष। रुहति, जनेतीति—रुक्खो=वृक्ष। उसति, दहति कायग्गिनाति—उक्खो=बैल। सहति, अत्तनि कतापराधं खमतीति—सखो=मित्र इत्यादि।

गक्

३२. अज वज मुद गद गमा गक्—इन धातुओं से परे, 'गक्' प्रत्यय होता है। जैसे—

अजति, गच्छति सेट्ठभावन्ति—अग्गो=अगुआ। वजति, समूहत्तं गच्छतीति—वग्गो=समूह। मुदन्ति एतेनाति—मुग्गो=मूँग। गदतीति—गग्गो=एक ऋषि। गच्छतीति—गङ्गा ('मनानं निग्गहीतं ५.९६—इस सूत्र से 'गम' धातु के 'म' का अनुस्वार हो गया)।

३३. सिङ्गादयो—'सिङ्ग' आदि, 'गक्' प्रत्ययान्त शब्द निपात हैं। जैसे—

सयति, पवत्तति मत्थके ति—सिङ्गं=सींग ('सी' धातु का ह्रस्व हो गया; और निग्गहीत का आगम हुआ)। फुरति, चलतीति—फुलिङ्गो—चिनगारी।

उच्चलति, कम्पतीति—उच्चालिङ्गो=एक उजला कीड़ा। कलति, नादं करोति वहुराजिकायाति—कलिङ्गो=दक्खिणापथो। भमतीति—भिङ्गो=भौंरा। पतन्तो गच्छतीति—पटङ्गो, पटगो=फतिंगा।

गि

३४. अ गा गि—अग=कुटिल गमने। इस धातु से परे, 'गि' प्रत्यय होता है। जैसे—

अगति, कुटिलो हुत्वा गच्छतीति—अग्गि=आग।

गु

३५. या व ला गु—'या' तथा 'वल' धातुओं से परे, 'गु' प्रत्यय होता है। जैसे—

या=पापुणने। यातीति—यागु=यवागु। वलीयति, संवरीयतीति—वग्गु=मनोज्ञ।

३६. फे ग्वा द यो—'फेग्गु' आदि, 'गु' प्रत्ययान्त शब्द निपात हैं। जैसे—

फलति, निट्ठानं गच्छतीति—फेग्गु=सारहीन। भरतीति—भगु=भृगु ऋषि। हिनोति, पवत्ततीति—हिङ्गु=हींग। कमीयतीति—कङ्गु=धान्य-विशेष इत्यादि।

घ

३७. ज ना घो—'जन' धातु से परे, 'घ' प्रत्यय होता है। जैसे—

जायति गमनमेतायाति—जङ्घा ('जन' धातु के 'न' का निग्गहीत हो गया—मनानं निग्गहीतं ५.९६)।

३८. मे घा द यो—'मेघ' आदि, 'घ' प्रत्ययान्त शब्द निपात हैं। जैसे—

मेहति, सिञ्चतीति—मेघो (मिह=सेचने। 'ह्' लोपो)। मुय्हन्ति सत्ता एत्थाति—मोघो=तुच्छ। सेति, लहु हुत्वा पवत्ततीति—सीघं=शीघ्र। निदहतीति—निदाघो=ग्रीष्म। महीयति, पूजियतीति—मघा=एक नक्षत्र इत्यादि।

च

३९. चु-स र -व रा चो—इन धातुओं से परे, 'च' प्रत्यय होता है। जैसे—

चवति रुक्खाति—चोचं=उपभुत्तफलविसेसो । सरति, आयति दुक्खं हिंसतीति—सच्चं=सत्य । वारेति सुखन्ति—वच्चं=पाखाना ।

चु, ईचि

४०. म रा चु ई चि च—'मर' धातु से परे, 'चु' तथा 'ईचि' प्रत्यय होते हैं, और 'च' प्रत्यय भी । जैसे—

मरणं—मच्चु=मौत । मारेति, अन्धकारं विनासेतीति—मरीचि=किरण, मृगतृष्णा । मरतीति—मच्चो=प्राणी ।

छिक्

४१. कु स-प सा छि क्—इन धातुओं से परे, 'छिक्' प्रत्यय होता है । जैसे—

कुसीयति, अक्कोसीयतीति—कुच्छि=पेट । पसीयति, बाधीयति एत्थाति—पच्छि=खाँची, डाली ।

छुक्

४२. क स-उ सा छु क्—इन धातुओं से परे, 'छुक' प्रत्यय होता है । जैसे—

कसन्ति, विलेखन्ति एत्थाति—कच्छु=खुजली ।

छो

४३. अ स-म स-व द-कु च-क चा छो—इन धातुओं से परे, 'छ' प्रत्यय होता है । जैसे—

असति, खिपतीति—अच्छो=भालू । आमसति जलन्ति—मच्छो=मछली । वदतीति—वच्छो=वत्स । कुचीयति, संकोचीयतीति—कोच्छो=पीढ़ा । कचीयति, वन्धीयतीति—कच्छो=तराई ।

४४. गु च्छा द यो—'गुच्छ' आदि 'छ' प्रत्ययान्त शब्द निपात हैं । जैसे—

गोपीयतीति—गुच्छो=गुच्छा । तुसन्ति अनेनाति—तुच्छं=मिथ्या । पोसन्ति तनुमनेनाति—पुच्छो=पूँछ इत्यादि ।

उट्, जु

४५. अरा-जु उट् च—'अर' धातु से परे, 'जु' प्रत्यय, होता है। 'अर' का 'उ' आदेश होता है। जैसे—अरति, अकुटिलभावेन पवत्ततीति—उजु=सीधा।

४६. रज्जादयो—'रज्जु' आदि 'जु' प्रत्ययान्त शब्द निपात हैं। जैसे—रुन्धन्ति एतेनाति—रज्जु=रस्सी ('रुध' धातु का 'रध' हो गया)। अमञ्जित्थाति—मञ्जु=मञ्जुल इत्यादि।

झक्

४७. गिधा झक्—गिधं=अभिकङ्खायं। इस धातु से परे, 'झक्' प्रत्यय होता है। जैसे—

गेधतीति—गिज्झो=गीध।

४८. वञ्झादयो—'वञ्झ' आदि 'झक्' प्रत्ययान्त शब्द निपात हैं। जैसे—

वन=याचने। वनोति, अत्तानं अनुभवितुं याचतीति—वञ्झो=फलहीन वृक्ष। वञ्झा=बाँझ स्त्री। 'वन' का 'विन' आदेश हो जाने से—विञ्झो=पर्वत। सञ्जयतीति—सञ्झं=रजत इत्यादि।

ञ

४९. कम-यजा ञो—इन धातुओं से परे, 'ञ' प्रत्यय होता है। जैसे—कमीयतीति—कञ्ञा=कुमारी ('कम' धातु के 'म' का निग्गहीत हो गया)। यजन्ति अनेनाति—यञ्ञो=यज्ञ।

५०. पुणा ञं—'पु' धातु से परे, विकल्प से 'ञ' प्रत्यय होता है। जैसे—पुणाति, सुन्दरत्तं करोतीति—पुञ्ञं=कुशल कर्म।

५१. अर-हा ञो हास्स हिरञ् च—'अर' तथा 'हा' धातु से परे, 'ञ' प्रत्यय होता है। 'हा' का 'हिरञ्' आदेश हो जाता है। जैसे—

अरीयते, गम्यतेति—अरञ्ञं=वन। जहाति सत्तानं हीनत्तन्ति—हिरञ्ञं=धन, सोना।

कीट

५२. किर-तरा कीटो—इन धातुओं से परे, 'कीट' प्रत्यय होता है। जैसे—

सोभेतुमेत्थ रतनानि विकिरीयन्तीति—किरीटं=मकुट। तरन्ति, यन्ति सुल्पत्तमनेनाति—तिरीटं=पगड़ी।

अट

५३. सकादीह्यटो—'सक' आदि धातुओं से परे, 'अट' प्रत्यय होता है। जैसे—

सक्कोति भारं वहितुन्ति—सकटो=गाड़ी। अकसि, निरोजत्तं अगमीति—कसटं=बुरा, अप्रिय। करोति अमनायन्ति—करटो=कौआ। मक्कति चलतीति—मक्कटो=वानर। देवीयति पूजीयतीति—देवटो=ऋषि। कमति, इच्छति आरोहत्तन्ति—कमटो=वौना।

५४. मकुट-आवाट-कवाट-कुक्कुट्टा—ये शब्द निपात हैं। जैसे—

मङ्केति, सोभेतीति—मकुटं=मकुट। अव्यते, खञ्जते 'ति—आवाटो=गढ़ा। कवति, रवतीति—कवाटं=किवाड़। कुकति, गोचरमाददातीति—कुक्कुटो=मुर्गा।

ठ

५५. कम-उस-कुस-कसा ठो—इन धातुओं से परे, 'ठ' प्रत्यय होता है। जैसे—

ओदनादीनि कामेतीति—कण्ठो=गला। ओदनादीसु उण्हेन उसीयतीति—ओट्ठो=ओठ, ऊँट। कुसीयति, अक्कोसीयति—कोट्ठो=धान की कोठी। कसति, याति विनासन्ति—कट्ठं=लकड़ी।

५६. कुट्ठादयो—'कुट्ठ' आदि 'ठ' प्रत्ययान्त शब्द निपात हैं। जैसे—

कुच्छीयतीति—कुट्ठं=कुष्ट। कुणति, नदतीति—कुण्ठो=अत्यन्त क्षीण। अक्कोसीयतीति—कुण्ठो=जिसका हाथ पैर कटा हो। दंसति एतायाति—

दाठा=दाढ़। कामीयति दिन्नेहीति—कमठो=भिक्षा भाजन, बौना, कछुआ। फुस्सतीति—फुट्ठो=स्पर्श इत्यादि।

अण्ड

५७. वर-करा अण्डो—इन धातुओं से परे, 'अण्ड' प्रत्यय होता है। जैसे—

अत्तनि पेमं वारयतीति—वरण्डो=मुखरोग। करीयतीति—करण्डो= भाण्ड विशेष।

ड

५८. मनन्ता डो—मकारान्त तथा नकारान्त धातुओं से परे, बहुधा 'ड' प्रत्यय होता है। जैसे—

सम=उपसमे। समनं—सण्डं=समूह। कमति यातीति—कण्डो=वाण, परिच्छेद। दम्यन्ते अनेनाति—दण्डो=सजा। अमन्ति, उप्पज्जन्ति एत्थाति—अण्डो=अण्डा। गच्छति सूनभावन्ति—गण्डो=व्याधि, गाल। रमन्ति एत्थाति—रण्डा=विधवा। मञ्ञन्ति एतेनाति—मण्डो=मांड। खञ्ञतीति—खण्डो= खांड। लमति, हिंसति सुचिभावन्ति—लण्डो=लेंड इत्यादि।

५९. कुण्डादयो—'कुण्ड' आदि 'ड' प्रत्ययान्त शब्द नियत हैं। जैसे—

कामीयतीति कुण्डं=भाजन। मञ्ञति हिताहितन्ति—मुण्डो=शिर मुड़ाया हुआ। तनोति एतेनाति—तुण्डं=मुख। ईरित कम्पतीति—एरण्डो=रेंड, व्याघ्रपुच्छ। सुगन्धं सेवतीति—सिखण्डो=चोटी इत्यादि।

किण

६०. तिज-कस-तस-दक्खा किणो जस्स खो च—इन धातुओं से परे, 'किण' प्रत्यय होता है तथा, 'ज' का 'ख' होता है। जैसे—

तेजीयित्याति—तिखिणं=तेज। कसति पवत्ततीति—कसिणं=अशेष। तसनं—तसिणा=तृष्णा। दक्खति, वुद्धिं गच्छति एतेनाति—दक्खिणा= दक्षिणा, दान।

णि

६१. वी आ दि तो णि—'वी' आदि धातु से परे, 'णि' प्रत्यय होता है। जैसे—

वीयतीति—वेणि=जूरा। सेवनं—सेणि=समान शिल्पियों का समूह। निसेवीयतीति—निसेणि=निसेनी। सपति, पस्सवतीति—सोणि=चूतड़। दवति, वहतीति—दोणि=नाव। कीयतेति—केणि=क्रय। इत्यादि

अणि

६२. ग हा दी ह्यणि—'गह' आदि धातुओं से परे, अणि' प्रत्यय होता है। जैसे—

गण्हातीति—गहणि=जठराग्नि। अरीयति, गमीयतीति—अरणि=अग्नि-मन्थन की लकड़ी। धारेतीति—धरणि=पृथ्वी। सरीयति, गमीयतीति—सरणि=मार्ग। तरन्ति अनेनाति—तरणि=समुद्र, सूर्य।

णु

६३. री-वी-हा हि णु—इन धातुओं से परे, 'णु' प्रत्यय होता है। जैसे—

रीयति पस्सवतीति—रेणु=रज। वेति, पवत्ततीति—वेणु=बांस। भाति, दिप्पतीति—भाणु=किरण।

६४. खा ण्वा द यो—'खाणु' आदि 'णु' प्रत्ययान्त शब्द निपात हैं। जैसे—

खञ्जति, अवदारीयतीति—खाणु=ठूँठ। जायति गमनमनेनाति—जाणु, जण्णु=घुटना। हरीयतीति—हरेणु=गन्ध-द्रव्य इत्यादि।

ण

६५. क्वा दि तो णो—'कु' आदि शब्दों से परे, 'ण' प्रत्यय होता है। जैसे—

कवति, नदति एत्थाति—कोणो=पास, अंश, वीणा आदि का दण्ड। सुणोतीति—सोणो=कुत्ता, मनुष्य।

दवति, पवत्ततीति—दोणो=एक परिमाण। विरूपत्तं वारेतीति—वण्णो=रंग। सवनं करोतीति—कण्णो=कान। पणीयति, वोहरीयतीति—पण्णो=

पत्ता । तायतीति—ताणं=रक्षा । निलीयन्ति एत्थाति—लेणं=गुफा, छिपने का स्थान ।

णक्

६६. सुवी हि णक्—'सु' तथा 'वी' धातु से परे, 'णक्' प्रत्यय होता है। जैसे—

सुणोतीति—सुणो=कुत्ता । वीयतीति—वीणा ।

६७. तिणादयो—'तिण' आदि, 'ण' प्रत्ययान्त शब्द निपात हैं। जैसे—

तिज=निसाने । ज लोपो । तेजेति एतेनाति—तिणं=तृण । लीयति, रसतो सब्बत्थ अल्लीयतीति—लोणं=निमक । लेहीयतीति—लोणं । गच्छतीति—गोणो=बैल । हरीयतीति—हरिणो=मृग । अत्तनो लूखभावे सम्पत्ते ईरति कम्पतीति—इरिणं=ऊसर । अभित्थवीयतीति—थूणं=नगर । थूणो=घर का खम्भा इत्यादि ।

६८. रवण-वरणं-पूरणादयो—'रवण' आदि शब्द, 'अण' प्रत्यय से सिद्ध होते हैं। जैसे—

रवतीति—रवणो=कोयल । वाहेतीति—वरणो=चहारदिवारी । पूरीयते अनेनाति—पूरणो=पूरा करने वाला ।

अति

६९. पा-वसा अति—'पा' तथा 'वस' धातु से परे, 'अति' प्रत्यय होता है। पूर्व स्वर का लोप होता है। जैसे—

पाति, रक्खतीति—पति=स्वामी । वसन्ति एत्थाति—वसति=घर ।

तु

७०. धा-हि-सि-तन-जन-गम-सचा तु—इन धातुओं से परे, 'तु' प्रत्यय होता है। जैसे—

धारेतीति—धातु=गेरुक आदि। हिनोति, पवत्तति फलं एतेनाति—हेतु=कारण । सेवीयति जनेहि इति—सेतु=पुल । तन्यतेति—तन्तु=सूत्र ।

जनीयते कम्मकिलेसेहिति—जन्तु। जायति कम्मकिलेसेहि—जन्तु। जरतीति—जत्तु=पंसुली। गच्छतीति—गन्तु=जाने वाला। सचति, समेतीति—सत्तु=सत्तू।

७१. अरिस्सुद् च—'तु' प्रत्यय आने से, 'अर' (=गमने) का 'उ' आदेश हो जाता है। जैसे—

अरति, पवत्ततीति—उतु=ऋतु।

७२. पितादयो—'पितु' आदि, 'तु' प्रत्ययान्त शब्द निपात हैं। जैसे—

पा=रक्खने। आस्स इत्तं। पाति, रक्खतीति—पिता। मानेतीति माता। भातीति—भाता=भाई। धा=धारणे: आस्स ईत्तं: धारीयतीति—धीता=बेटी। दुहति, बन्धवे पपूरेतीति—दुहिता=बेटी। जन=जनने: अस्स आत्तं: मा चन्तादेसो: पपुत्ते जनेतीति—जामाता=दामाद। नहीयति, बन्धीयति पेमेनाति नत्ता=नाती। हवति, पूजेतीति—होता=हवन करने वाला। पुनाति, आयतिं भवं पवित्तं करोतीति—पोता=पोता।

रतु

७३. जनकरा रतु—'जन' तथा 'कर' धातु से परे, 'रतु' प्रत्यय होता है। 'र' अनुबन्ध, अन्त स्वरादि को लोप करने के लिए है। जैसे—

जायतीति—जतु=लाह। करीयतीति—क्रतु=यज्ञ।

उन्त

७४. सका उन्तो—सक=सत्तियं। इस धातु से परे, 'उन्त' प्रत्यय होता है। जैसे—

[आकासे गन्तुं] सक्कोतीति—सकुन्तो=पक्षी।

ओत

७५. कपा ओतो—कप=अच्छादने। इस धातु से परे, 'ओत' प्रत्यय होता है। जैसे—

कपतीति—कपोतो=कबूतर। कहीं कहीं, 'त' का 'ट' हो जाता है—कपोटो=कबूतर।

अन्त

७६. वसादीह्यन्तो—'वस' आदि धातु से परे, 'अन्त' प्रत्यय होता है। जैसे—

वसन्ति एतस्मिं काले कीळापसुता इति—वसन्तो। रुहति, जायतीति—रुहन्तो=वृक्ष, इस नाम का एक मृगराज। भद्द=कल्याणे: भद्दिस्स संयोगादि-लोपो: भज्जति कल्याणधम्मन्ति—भदन्तो=प्रव्रजित। नन्दति एतायाति—नन्दन्ती=सखी। जीवन्ति एतायाति—जीवन्ती=औषधि। सूयतीति—सवन्तो=नदी। रोदापेतीति—रोदन्ती=औषधि। अवति रक्खतीति—अवन्ती=जनपद।

७७. हिसीनं मुक् च—'हि' तथा 'सि' धातु से परे, 'अन्त' प्रत्यय होता है; उससे परे 'म' का आगम होता है। जैसे—

हिनोति, अयति पवत्तति एतस्मिन्ति—हेमन्तो=ऋतु। सयन्ति एत्थ ऊका कुसुमादयोति—सीमन्तो=माँग।

इत

७८. हर-रुह-कुला इतो—इन धातुओं से परे, 'इत' प्रत्यय होता है। जैसे—

अत्तनो सिनेहं हरतीति—हरितो=हरा रंग। रुहतीति—रोहितो=एक तरह की मछली। रुहति, सरीरे ब्यायनवसेनाति—रोहितं (रस्स लत्ते—लोहितं)=खून। अत्तनो गुणं कुलिति, पत्थरतीति—कोलितो=द्वितीय अग्र श्रावक, इस नाम का एक ग्राम।

अत

७९. भरादीह्यतो—'भर' आदि धातुओं से परे 'अत' प्रत्यय होता है। जैसे—

भरतीति—भरतो=नट। रञ्जन्ति एत्थाति—रजतं=चाँदी। यजितब्बोति—यजतो=आग। पचतीति—पचतो=रसोइया।

आतक्

८०. किरादीह्यातक्—'किर' आदि धातु से परे, 'आतक्' प्रत्यय होता

है। जैसे—

किरतीति—किरातो=एक जंगली जात। 'र' का 'ल' हो जाने से—किलातो। अलतीति—अलातं=तितकी, लुकारी। चिलतीति—चिलातो=एक तरह की मछली।

अत्त

८१. अमादी ह्यत्तो—'अम' आदि धातुओं से परे, 'अत्त' प्रत्यय होता है। जैसे—

अमति, कालन्तरं पवत्ततीति—अमत्तं=भाजन। पुब्बसर लोपो: मानं—मत्तं=परिमाण, इतना भर। वारन्ति अनेनाति—वरत्तं=रस्सी, लगाम। कलति, परिच्छिन्दतीति—कलत्तं=भार्या।

त

८२. वादी हि तो—'वा' आदि धातुओं से परे, 'त' प्रत्यय होता है। जैसे—

वायतीति—वातो=हवा। तायतीति—तातो=पिता। तनोतीति—तन्तं=ताँत। दमतीति—दन्तो=दाँत। अमति, यातीति—अन्तो=समाप्ति, ग्राँत। सेवीयतीति—सेतो=उजला। सुणन्ति अनेनति—सोतं=कान। सवतीति—सोतो=सोता। पुनीयतीति—पोतो=बच्चा। गोपीयतीति—गोत्तं=गोत्र। योजन्ति अनेनाति—योत्तं=रस्सी। ममायन्तेहि गम्हतीति—गत्तं=शरीर। आवाधा निरन्तरं अतति पवत्तति इति—अत्ता—मन आदि। खिपीयति एत्थाति—खेत्तं=खेत।

तक्

८३. घरादी हि तक्—'घर' आदि धातुओं से परे, 'तक्' प्रत्यय होता है। जैसे—

घरति, सिञ्चतीति—घतं=घी। सेवीयतीति—सितो=उजला। दुब्बलत्ता दवति उपतपतीति—दूत। मिज्जति, सिनेहतीति—मित्तो=मित्र। चिन्तेतीति—चित्तं=विज्ञान, चित्त—कर्म आदि। पोसीयतीति—पुत्तो=बेटा। विन्दति पीतिमनेनाति—वित्तं=धन। वरणं—वत्तं=ब्रह्मचर्य आदि व्रत।

८४. नेत्तादयो—'नेत्त' आदि, 'तक्' प्रत्ययान्त शब्द निपात हैं। जैसे—नयति, पापेतीति—नेत्तं=आँख। करणं—कुत्तं=क्रिया। कमति यातीति—कुन्तो=एक हथियार। सुट्ठु रमतीति—सूरतो=सुख संवास। मिहति, सिञ्चतीति—मुत्तं=पेशाव। पालीयतीति—पलितं=बालका पकना। पलितं यस्स अत्थि सो—पलितो। पलिता इत्थी। मिहनं—सितं=मुसकुराहट ['मिह' का 'सि' आदेश हो गया]।

मिहनं—म्हितं=मुसकुराहट। कुसीयति, अक्कोसीयतीति—कुसीतो=काहिल। सेन्ति वन्धन्ति घरावासं एतायाति—सीता=हल की जोत इत्यादि।

अथ

८५. समादीह्यथो—'सम' आदि धातुओं से परे, 'अथ' प्रत्यय होता है। जैसे—

समेतीति—समथो=समाधि। दरणं—दरथो=पीड़ा। दमनं—दमथो=दमन। किलमनं—किलमथो=परिश्रम। सपनं—सपथो=सौगन्ध। आवसन्ति एत्थाति—आवसथो=घर।

८६. उपवसा वस्सोट् च—'उप'-पूर्वक 'वस' धातु से परे, 'अथ' प्रत्यय होता है; 'वस' का 'ओ' आदेश होता है। जैसे—

उपवसन्ति एत्थाति—उपोसथ=तिथिविशेष, नवाँ हस्ति-कुल।

थक्

८७. रमा थक्—'रम' धातु से परे, 'थक्' प्रत्यय होता है। जैसे—

रमन्ति, कीळन्ति एतेनाति—रथो।

८८. तित्थादयो—'तित्थ' आदि, 'थक्' प्रत्ययान्त शब्द निपात हैं। जैसे—

तर=तरणे: अस्स इत्तं, पररूपादि। तरन्ति अनेनाति—तित्थं=घाट। सेचतीति—सित्थं=मोम। हसन्ति अनेनाति—हत्थो=हाथ, नक्षत्र। गायतीति गाथा=पद्य विशेष। अरन्ति, पवत्तन्ति अनेनाति—अत्थो=धन। रोगं तुदति, पीळेतीति—तुत्थं=दवा। यु=मिस्सने। यवतीति—यूथो=किन्हीं जानवरों का समूह। पटिकूलत्ता गोपीयतीति—गूथो=मैला इत्यादि।

थु

८९. वस-मस-कुसा थु—इन धातुओं से परे, 'थु' प्रत्यय होता है। जैसे—

वसन्ति एत्थाति—वत्थु=पदार्थ। दधिं आमसतीति—मत्थु=मट्ठा। कुसति, अक्कोसति भेरवनादत्ताति—कोत्थु=सियार।

थि

९०. सक-वसा थि—'सक' तथा 'वस' धातु से परे, 'थि' प्रत्यय होता है। जैसे—

सक्कोति गन्तुमनेनाति—सत्थि=जाँघ। वसीयति अच्छादीयतीति—वत्थि=पेडू।

थिक्

९१. वीतो थिक्—'वी' धातु से परे, 'थिक्' प्रत्यय होता है। जैसे—

वीयन्ति, गच्छन्ति एतायाति—वीथि=गली।

रथिण्

९२. सरिस्मा रथिण्—'सर' धातु से परे, 'रथिण्' प्रत्यय होता है। जैसे—

सारेतीति—सारथि=रथ हाँकने वाला।

इथि

९३. ताता इथि—'ता' तथा 'अत' धातु से परे, 'इथि' प्रत्यय होता है। जैसे—

तायति, पालेतीति—तिथि। अतति, गच्छतीति—अतिथि।

थी

९४. इसा थी—'इस' धातु से परे, 'थी' प्रत्यय होता है। जैसे—

इच्छति, इच्छीयतीति वा—इत्थी=नारी।

दक्

९५. रुद-खिद-मुद-मद-छिद-सूद-सप-कमा दक्—इन धातुओं से परे, 'दक्' प्रत्यय होता है। जैसे—

रुदतीति—रुद्दो=उमापति। 'र' का 'ल' होने से, लुद्दो=बहेलिया। खिदति, असहतीति—खुद्दो=क्षुद्र। मोदन्ति एतायाति—मुद्दा=अँगूठी। मज्जन्ति अस्मिन्ति—मद्दो=माद्र जनपद। छिज्जतीति—छिद्दं=छेद। सूदति, सामिकेहि मतिं पक्खरतीति—सुद्दो=शूद्र। सपन्ति अनेनाति—सद्दो=शब्द। कामीयतीति—कन्दो=मूल विशेष।

९६. कुन्दादयो—'कुन्द' आदि, 'दक्' प्रत्ययान्त शब्द निपात हैं। जैसे—

कामीयतीति—कुन्दो=एक प्रकार का फूल। मञ्ञतेति—मन्दो=जड़। वुणीयति संवरीयतीति—वुन्दो=मूल प्रदेश। निन्दीयतीति—निद्दा=नींद। उन्दति, किलेदतीति—उद्दो=ऊद विलवा। सम्मा उन्दति, किलेदतीति—समुद्दो=समुद्र। पुलति, हिंसतीति—पुलिन्दो=शवर इत्यादि।

दु

९७. ददा दु—दद=दाने; इस धातु से परे, 'दु' प्रत्यय होता है। जैसे—
दुक्खं ददातीति—दद्दु=दाद।

ध

९८. खण-अन-दम-रमा धो—इन धातुओं से परे, 'ध' प्रत्यय होता है। जैसे—

आणेन खञ्ञते ति—खन्धो=राशि। अनति, जीवति एतेनाति—अन्धो=अंधा। दमेतब्बोति—दन्धो=जड़। रमन्ति एत्थ सप्पादयो ति—रन्धं=बिल।

९९. मुद्धादयो—'मुद्ध' आदि, 'ध' प्रत्ययान्त शब्द निपात हैं। जैसे—

मोदन्ति एत्थ ऊकादयोति—मुद्धा=शिर। अरन्ति, यन्ति एत्थाति—अद्धा=मार्ग, काल। गेधतीति—गद्धो=गिज्झो। पटिवेधतीति—विद्धं=निर्मल इत्यादि।

घुक्

१००. सीतो घुक्—'सी' धातु से परे, 'घुक्' प्रत्यय होता है। जैसे—सयन्ति एतायाति—सीधु=एक प्रकार की सुरा।

कुन

१०१. वर-अर-कर-तर-दर-यम-अज्ज-मिथ-सका कुनो—इन धातुओं से परे, 'कुन' प्रत्यय होता है। जैसे—

वारेतीति—वरुणो=इस नाम के ईश्वर देवराज, वृक्ष [रा नस्स णो ५.१७१]। अरति, गच्छतीति—अरुणो=सूर्य। परदुक्खे सति साधूनं हदयकम्पनं करोतीति—करुणा=दया। बालभावं अतरि, तरतीति—तरुणो=युवा। विदारेतीति—दारुणो=कड़ा। यमेति, नासेतीति—यमुना=नदी। अज्जति, धनसञ्चयं करोतीति—अज्जुनो=राजा, वृक्ष विशेष। मिथो सङ्गमो ति—मिथुनं=जोड़ा। सक्कोति इति—सकुनो=पक्षी। सकुनी। सकुणो। सकुणी।

इन

१०२. अजा इनो—अज, वज=गमने। इस धातु से परे, 'इन' प्रत्यय होता है। जैसे—

अजति, त्रिक्कयं यातीति—अजिनं=चमड़ा।

१०३. विपिनादयो—'विपिन' आदि, 'इन' प्रत्ययान्त शब्द निपात हैं। जैसे—

वपन्ति एत्थाति—विपिनं=वन। सुपन्ति एतेनाति सुपिनं=नींद, सपना। तुदन्ति, सत्ते पीळेतीति—तुहिनं=हिम। कम्पति, रिपवो विजेतुं समत्थेतीति—कप्पिनो=राजा। कमन्ति, एत्थ मीनादयो पविसन्तीति—कुमिनं=मछली वझाने का छोप। देन्ति एतेनाति—दिनं=दिन।

कन

१०४. किरा कनो—'किर' धातु से परे, 'कन' प्रत्यय होता है। जैसे—

किरन्ति पत्थरन्तीति—किरणा=किरण। [रा नस्स णो ५.१७१—इस सूत्र से, 'र' के उत्तर 'न' का 'ण' हो गया।]

नक्

१०५. वी-जि-इ-मी हि नक्—इन धातुओं से परे, 'नक्' प्रत्यय होता है। जैसे—

अदेसि, खयमगमासि इति—वीनो=निर्धन। पञ्च मारे अजिनीति—जिनो=बुद्ध। एसि, इस्सरत्तं अगमासीति—इनो=स्वामी। मीयते, हिंसीयते ति—मीनो=मछली।

न

१०६. सि-धा-वी-वा हि नो—इन धातुओं से परे, 'न' प्रत्यय होता है। जैसे—

सेति, बन्धतीति—सेनो=बाज। सेना। धारेतीति—धाना=भूँजा। वेति, पवत्ततीति—वेनो=एक हीन जाति। सत्तेसु वाति, पवत्ततीति—वानं=तृष्णा।

१०७. ऊनादयो—'ऊन' आदि, 'न' प्रत्ययान्त शब्द निपात हैं। जैसे—

ऊह=वितक्के। ह लोपो। ऊहनं—ऊनो=अपूर्ण। हि=गतियं। दीघरत्तं हेसि, हीनत्तमगमीति—हीनो। चि=चये। दीघरत्तं चयन्ति एत्थ रतनानीति—चीनो=चीन देश। हनिस्स जघो। हञ्ञतीति—जघनं=कटि। ठाति पवत्ततीति—थेनो=चोर ['ठ' का 'थ' हो गया]। उन्दीयतीति—ओदनो=भात ['उन्द' का 'ओद' हो गया]। रज्जते अनेनाति—रजनं=रंग। रञ्जति एतायाति—रजनी=रात। पज्जति, गच्छतीति—पज्जुन्नो=इन्द्र, मेघ। गच्छन्ति एत्थ विहङ्गादयोति—गगनं=आकाश इत्यादि।

तन

१०८. वी-पता त नो—इन धातुओं से परे, 'तन' प्रत्यय होता है। जैसे—

वेति, पवत्तति एतेनाति—वेतनं=वेतन। पतन्ति एत्थाति—पत्तनं=नगर।

तनक्

१०९. रमा तनक्—'रम' धातु से परे, 'तनक्' प्रत्यय होता है। जैसे—रमन्ति एत्थाति—रतनं=मणि आदि, हाथ भर लम्बा। [गमादिरानं लोपोन्तस्स ५.१०९—इस सूत्र से 'रम' धातु के 'म' का लोप हो गया।]

नुक्

११०. सू-भा हि नुक्—इन धातुओं से परे, 'नुक्' प्रत्यय होता है। जैसे—पसवीयतीति—सूनु=पुत्र। भाति, दिप्पतीति—भानु=सूरज।

१११. धास्से च—धा=धारणे। इस धातु से परे, 'नुक' प्रत्यय होता है; तथा 'धा' का 'धे' आदेश होता है। जैसे—धारेतीति—धेनु=गाय।

अनि

११२. वत्त-अट-अव-धम-असेह्य नि—वत्तन्ति एतेनाति—वत्तनि =कन्नन दंडं ?। वत्तनी=मार्ग। अटते, गम्मते ति—अटनि=मञ्चङ्गो ?। सत्ते अवति, रक्खतीति—अवनि=पृथ्वी। धमन्ति एतेन वीणादयोति—धमनि—धमनी=सिरा। भण्डत्थाय असीयते, खिपीयतेति—असनि=वज्र।

नि

११३. युतो नि—यु=मिस्सने। इस धातु से परे, 'नि' प्रत्यय होता है। जैसे—

यवन्ति, सत्ता अनेन एकीभावं गच्छन्तीति—योनि=भग।

प

११४. चम-आय-पा-वपा पो—इन धातुओं से परे, 'प' प्रत्यय होता है। जैसे—

चमन्ति, अदन्ति एत्थाति—चम्पा=नगर। अपेसि, ईसकमत्तं अगमासीति—अप्पं=थोड़ा। अपायं पाति, रक्खतीति—पापं। वपन्ति एत्थाति—वप्पो=खेत।

११५. यु-थु-कूनं दीघो च—इन धातुओं से परे, 'प' प्रत्यय होता है,

तथा उनका दीर्घ होता है। जैसे—

यवन्ति, सह वत्तन्ति एत्थाति—यूपो=यज्ञ की लाठ, प्रासाद। थवीयतीति—थूपो=चैत्य, स्तूप। कवन्ति, नदन्ति एत्थाति—कूपो=कूआँ।

पक्

११६. खिप-सुप-नी-सू-पू हि पक्—इन धातुओं से परे, 'पक्' प्रत्यय होता है। जैसे—

खिपति, खयं गच्छतीति—खिप्पं=शीघ्र। सुपन्ति एत्थ सुनखादयो 'ति—सुप्पं=सूप। नयन्ति एतस्मा फलन्ति—नीपो=वृक्ष। सवति, रुचिं जनेतीति—सूपो=व्यञ्जन। पवीयति, मरिचजीरकादीहि पवित्तं करीयतीति—पूपो=पूआ।

११७. सिप्पादयो—'सिप्प' आदि, 'पक्' प्रत्ययान्त शब्द निपात हैं। जैसे—

सपति अनेनाति—सिप्पं=कला ['सप' का 'सिप' हो गया]। विज्जं वपतीति—विप्पो=ब्राह्मण। वमति, वहि निक्खमति हृदयङ्गतसोकेनाति—वप्पो=आँसू ['व' का 'व' हो गया]। छुप=सम्फस्से। उस्स ए। छुपति अनेनाति—छेप्पं=अंगूठा। रुप्पति, विकारमापज्जतीति—रूपं इत्यादि।

अप

११८. सासा अपो—सास=अनुसिट्ठियं। इस धातु से परे, 'अप' प्रत्यय होता है। जैसे—

सासीयन्ति एतेनाति—सासपो=सरसों।

११९. विटपादयो—'विटप' आदि, 'अप' प्रत्ययान्त शब्द निपात हैं। जैसे—

वट=वेठने। अस्स इत्तं। वटति, वेठति एतेनाति—विटपो। कुथ=पूतिभावे। थस्स णो। अकुथि, पूतिभावं अगमीति—कुणपो=मृतक। मण्डीयति जनेहीति—मण्डपो इत्यादि।

फ

१२०. गुपा फो—'गुप' धातु से परे, 'फ' प्रत्यय होता है। जैसे—

गोपीयतीति—गोप्फो=गिट्टा ।

व

१२१. गर-सरादीहि बो—'गर,' 'सर' आदि धातुओं से परे, 'व' प्रत्यय होता है । जैसे—

गरति, अञ्ञे अनेन पीळेतीति—गब्बो=अभिमान । सरति, पवत्ततीति—सब्बो=सकल । फलकामेहि जनेहि अमीयति, गमीयतीति—अम्बो=आम । पुत्तेन अमीयति, गमीयतीति—अम्बा=माता ।

१२२. निम्बादयो—'निम्ब' आदि, 'व' प्रत्ययान्त शब्द निपात हैं । जैसे—

नमति फलभारेनाति—निम्बो=नीम । वित्तादयो वमति, उग्गिरतीति—खिम्ब=शरीर । तित्तेन कुसीयति, अक्कोसीयतीति—कोसम्बो=एक वृक्ष । कदन्ति एतेन द्वारादीनि इति—कदम्बो=वृक्ष । जनेहि कोटीयति, पवत्तीयतीति—कुटुम्बं । तण्डुलादयो अनेन कण्डन्ति परिच्छिन्दन्तीति—कुट्टुबो, कुडुबो=पैला इत्यादि ।

वि

१२३. दरा वि—दर=विदारणे । इस धातु से परे, 'वि' प्रत्यय होता है । जैसे—

ओदनादीनि दारेन्ति एतायाति—दब्बि=कलछुल ।

अभ

१२४. कर-सर-सल-कल-वल्ल-वसा अभो—इन धातुओं से परे, 'अभ' प्रत्यय होता है । जैसे—

करोतीति करभो=ऊँट । सरति, गच्छतीति—सरभो=मृगविशेष । सलति, गच्छतीति—सलभो=फतिंगा । कलीयति, परिमीयति वयसा ति कलभो—हाथी का बच्चा । कळभो । वल्लेति, संवरणं करोतीति—वल्लभो=प्रिय । वसन्ति अनेनाति—वसभो=पुङ्गव ।

रभ

१२५. गदा रभो—'गद' धातु से परे, 'रभ' प्रत्यय होता है। जैसे—
गदतीति—गद्रभो=गदहा।

कभ

१२६. उस-रासा कभो—इन धातुओं से परे, 'कभ' प्रत्यय होता है। जैसे—

उसति पटिपक्खे निदहतीति—उसभो=श्रेष्ठ। रासति नदतीति—रासभो=गदहा।

भक्

१२७. इतो भक्—'इ' धातु से परे, 'भक्' प्रत्यय होता है। जैसे—
एति गच्छतीति—इभो=हाथी।

भ

१२८. गर-अवा भो—इन धातुओं से परे, 'भ' प्रत्यय होता है। जैसे—
गरति, वहि निक्खमनवसेन सिञ्चतीति—गब्भो=गर्भ, प्रसूति-गृह। अवति, सत्ते रक्खतीति—अब्भं=मेघ।

१२९. सोब्भादयो—'सोब्भ' आदि, 'भ' प्रत्ययान्त शब्द निपात हैं। जैसे—
सीदन्ति एत्थाति—सोब्भं=दरार ['सिद' के 'इ' का 'ओ' हो गया]। सोब्भो=एक जलाशय। कामीयतीति—कुम्भो=घड़ा ['कम' के 'अ' का 'उ' हो गया]। कुसति, अव्हयतीति—कुसुम्भं=एक फूल, जिससे रंग तैयार किया जाता है। कुसुम्भो=सोना इत्यादि।

कुम

१३०. उस-कुस-पद-सुखा कुमो—इन धातुओं से परे, 'कुम' प्रत्यय होता है। जैसे—

उसति दहतीति—उसुमं=गरम। कुसति अव्हयतीति—कुसुमं=फूल।

पज्जति देवपूजायं यातीति—पदुमं=कमल। सुखयतीति—सुखुमं=सूक्ष्म।

१३१. वटुमादयो—'वटुम' आदि, 'कुम' प्रत्ययान्त शब्द निपात हैं। जैसे—

वजन्ति एत्थाति—वटुमं=रास्ता [वजिस्सन्तस्स टो]। सिलिस्सतीति—सिलेसुमो=कफ (सिलिसस्स लिस्से)। कामीयतीति—कुङ्कुमं=केसर इत्यादिं।

उम

१३२. गुधा उमो—गुध=परिवेठने। इस धातु से परे, 'उम' प्रत्यय होता है। जैसे—

गुधति, परिवेठतीति—गोधुमो=गेहूँ।

अम, इम

१३३. पठ-चरा अमिमा—'पठ' तथा 'चर' धातु से परे, यथाक्रम 'अम' तथा 'इम' प्रत्यय होते हैं। जैसे—

पठीयति, उच्चारीयति उत्तमभावेनाति—पठमं=श्रेष्ठ, पहला। चरति, हीनत्तं यातीति—चरिमं=पिछला।

मक्

१३४. हिधूहि मक्—हि=गतियं। धू=कम्पने। इन धातुओं से परे, 'मक्' प्रत्यय होता है। जैसे—

हिनोति, पवत्ततीति—हिमं=पाला। धुनाति, कम्पतीति—धूमो=धूवाँ।

रीसन

१३५. भीतो रीसनो च—'भी' धातु से परे, 'रीसन,' तथा 'मक्' प्रत्यय होते हैं। जैसे—

भायन्ति एतस्मा 'ति—भीसनो=भयानक। भीमो=भयानक।

म

१३६. खी-सु-वी-या-गा-हि-सा-लू-खु-हु-मर-घर-कर-धर-जम-अम-समा मो—इन धातुओं से परे, 'म' प्रत्यय होता है। जैसे—

खेमनं, निरुपद्दवकरणतायाति—खेमो=क्षेम। सुणातीति—सोमो=चाँद। वायन्ति एतेनाति—वेमो=करघा। यातीति—यामो=दिन का छठा या आठवाँ भाग। गायन्ति एत्थाति—गामो=गाँव। हिनोति, पवत्ततीति—हेमं=सोना। साति, सुन्दरत्तं तनुं करोतीति—सामो=काल। लूयते ति—लोमं=रोंवा। खायते उत्तम भावेना ति—खोमं=अतसि। हवनं हूयते वा—होमो=आहुति। मरन्ति अनेनाति—मम्मं=मर्म। अत्तानं धारेन्ते अपाये वट्टदुक्खे च अपतमाने कत्वा धारेतीति—धम्मो=परिपत्त्यादि, धर्म। करणं, करीयतीति वा कम्मं=कर्म, सुखदुक्खफलदं। सेदो पग्घरति अनेना ति—घम्मो=घाम। जमेति अभक्खितब्बं अदतीति—जम्मो=निहीन, विना सोचे विचारे करने वाला। अमेति पेमेन पवत्तति पुत्तकेसूति—अम्मा=माता। समेन्ति अनेनाति—सम्मा=ठीक तरह।

१३७. अस्मादयो—'अस्म' आदि, 'म' प्रत्ययान्त शब्द निपात हैं। जैसे-

अस=खेपने। अस्सतेति—अस्मा=पत्थल। भस=भस्मीकरणे। भसति पग्घरतीति—भस्मं=राख। उसति, निदहतीति—उस्मा=तेजो धातु। पविसन्ति एत्थाति—वेस्मं=घर। भायन्ति एतस्माति—भेस्मा=भयानक। अस्सति, जनेहि चजीयते ति—अधमो=निहीन ['अस' के 'स' का 'ध' हो जाता है]। करोतीति—कुम्मो=कछुआ ['कर' के 'अ' का 'उ' हो गया] इत्यादि।

मि

१३८. नीतो मि—'नी' धातु से परे, 'मि' प्रत्यय होता है। जैसे—

नयतीति—नेमि=चक्रान्त।

१३९. ऊमि-भूमि-निमि-रस्मि—'ऊमि' आदि 'मि' प्रत्ययान्त शब्द निपात हैं। जैसे—

ऊह=वितक्के। ह लोपो। ऊहन्ति वितक्केन्ति एतेनाति—ऊमि=तरङ्ग। भवन्ति एत्थाति—भूमि=पृथ्वी। नेति, सुगतिं पापेतीति—निमि=राजा। रसन्ति सत्ता एतायाति—रस्मि=रस्सी।

य

१४०. मा-छा हि यो—'मा' तथा 'छा' धातु से परे, 'य' प्रत्यय होता है। जैसे—

मेति, परिमेति अञ्ञेन उत्तमेन गुणेन अत्तनो गुणन्ति—माया=सन्त दोस-पटिच्छादनलक्खणा। छिन्दति संसयन्ति—छाया=प्रतिबिम्ब।

१४१. जनिस्स जा च—'जन' धातु से परे, 'य' प्रत्यय होता है। 'जन' धातु का 'जा' आदेश होता है। जैसे—

जनेतीति—जाया=भार्य्या।

१४२. हदयादयो—'हदय' आदि, 'य' प्रत्ययान्त शब्द निपात हैं। जैसे—

हरतीति—हदयं=चित्त; मनो धातु, तथा मनोविज्ञान धातु का आश्रय ['हर' के 'र' का 'द' हो गया]। अत्तनि पेमं तनोतीति—तनयो=बेटा। सरति गच्छतीति—सुरियो=सूरज ['सर' का 'सुरि' हो गया]। सुखमाहरतीति—हम्मियं=मुण्डच्छदन पासादो ['हर' का 'हम्मि' हो गया]। कसति वुद्धिं यातीति—किसलयं=पल्लव ['कस' का 'किसल' हो गया] इत्यादि।

रक्

१४३. खी-सि-सि-नी-सी-सु-वी-कु-सू हि रक्—इन धातुओं से परे, 'रक' प्रत्यय होता है। जैसे—

खयति, दुहनेनाति—खीरं=दूध। कुसुमादीहि सेवीयतीति—सिरो=शिर। सेति, सरीरं वन्धतीति—सिरा=नाड़ी। नेति, परेहि वा नीयतीति—नीरं=जल। सयतीति—सीरो=फाल। अनिट्ठफलदायकत्तं सवतीति—सुरा=मदिरा। सुणोति उत्तमगीतादिन्ति—सुरो=देवता। वेति, उत्तमभावं यातीति—वीरो=बहादुर। कवति, नदतीति—कुरं=भात। भयट्ठितानं पठमकप्पिकानं सूरत्तं पसवतीति—सूरो=बहादुर, सूरज।

१४४. हि-चि-दु-मीनं दीघो च—इन धातुओं से परे, 'रक्' प्रत्यय होता है; और अन्त का दीर्घ होता है। जैसे—

हिनोति, पवत्ततीति—हीरं=हीरा। चयतीति—चीरं=वल्कल। दुक्खेन

गमीयतीति—दूरं=दूर। मीयते पक्खिपीयते 'ति'—मीरो=समुद्र।

१४५. धा ता न मी च—'धा' तथा 'ता' धातु से परे, 'रक्' प्रत्यय होता है। अन्त्य स्वर का 'ई' आदेश होता है। जैसे—

धारेतीति—धीरो=धैर्यवान्। जलं तायतीति—तीरं=तट।

१४६. भ द्रा द यो—'भद्र' आदि, 'रक्' प्रत्ययान्त शब्द निपात हैं। जैसे—

भद्द=कल्याणे। द लोप, पररूपाभावा। भजीयतीति—भद्रं=कल्याण। भायन्ति एतायाति—भेरी=दुन्दुभि। विचिन्तितब्बन्ति—विचित्रं=नाना प्रकार का। या=पापुणने। रस्स अञ्। यातीति–यात्रा=यानं। गोपीयतीति—गोत्रं=गोत्र। भस्मं करोति एतायाति—भस्त्रा=भाथी, 'कम्मारगग्गरि'। सोकेन ताळेन्ते उसति, दहतीति—उरो=छाती इत्यादि।

उर

१४७. म न्द - अ ङ्क - स स - अ स - म थ - च ता उ रो—इन धातुओं से परे, 'उर' प्रत्यय होता है। जैसे—

मन्दि, असुन्दरत्ता जळत्तमगमीति—मन्दुरा=अस्तवल। अङ्कीयति, लक्खीयतीति—अङ्कुरो। ससति, हिंसतीति—ससुरो=ससुर। असियित्थाति—असुरो=राक्षस। अरीहि मथीयति, अलोळियतीति—मथुरा=नगर। चलीयतीति—चतुरो=चालाक।

१४८. वि धु रा द यो—'विधुर' आदि, 'उर' प्रत्ययान्त शब्द निपात हैं। जैसे—

वेधति, हिंसति इति—विधुरो=रंडुआ। उन्दति, किलेदतीति—उन्दुरो=चूहा। मङ्कति, अनेन अत्तानं अलंकरोतीति—मकुरो=आइना, रथ, मछली। कुकति, ससादयो आवदातीति—कुक्कुरो=कुत्ता। अमङ्गि, पसत्थमगमीति—मङ्गुरो=एक तरह की मछली इत्यादि।

किर

१४९. ति म-रु ह-रु ध-ब ध-म द-म न्द-व ज-अ ज-रु च-क सा कि रो—इन धातुओं से परे, 'किर' प्रत्यय होता है। जैसे—

तेमेतीति—तिमिरं=अन्धकार, पानी। रुहति, पवत्ततीति—रुहिरं=लहू।

जीवितं रुन्धतीति—रुधिरं=लहू । बाधीयतीति—बधिरो=बहरा । जना मज्जन्ति एतायाति—मदिरा=शराब । मोदन्ति एत्थाति—मन्दिरं=घर । वजतीति—वजिरं=वज्र । अजति, गच्छति एत्थाति—अजिरं=आँगन । रोचतीति—रुचिरं=सुन्दर । कसीयति, दुक्खेन गमीयतीति—कसिरं=थोड़ा ।

१५०. थिरादयो—'थिर' आदि, 'किर' प्रत्ययान्त शब्द निपात हैं । जैसे—

ठातीति—थिरं=स्थिर । इच्छीयतीति—सिसिरो=शिशिर ऋतु । खादीयति पाणकेहीति खदिरो=दतवन । इत्यादि

१५१. ददगरेहि दुरभरा—'दद' तथा 'गर' धातु से परे, यथाक्रम 'दुर' तथा 'भर' होता हैं । जैसे—

अत्तानं ददातीति—दद्दुरो=मेढ़क । गरति सिञ्चतीति—गब्भरं=गुहा ।

(द्वित्व)

१५२. चर-दर-जर-गर-मरेहि ते—'चर' आदि धातुओं से परे, वे ही 'चर' आदि होते हैं । जैसे—

चरन्ति एत्थाति—चच्चरं=चौराहा, आंगन । दरीयतीति—दद्दरं=एक पक्षी, भेरी । अजरीति, जज्जरो=ज़र्जर । गरति, सिञ्चतीति—गग्गरो=गड़गड़ाहट, हंस की आवाज़ । मरीयतीति—मम्मरो=सूखे पत्तों की मरमर आवाज़ ।

क्वर

१५३. पीतो क्वरो—पी=तप्पने । इस धातु से परे, 'क्वर' प्रत्यय होता है । जैसे—

अपीनीति—पीवरं=मोटा ।

१५४. चीवरादयो—'चीवर' आदि, 'क्वर' प्रत्ययान्त शब्द निपात हैं । जैसे—

चिनातिस्स दीघरत्तं, चीयतीति—चीवरं=काषाय । परिळाहं समेतीति—संवरी=रात्रि । धारेतीति—धीवरो=मल्लाह ('धा' का 'धी' हो गया) । येन केन चि अत्तानं तायतीति—तीवरो=एक हीन जाति । नयन्ति एत्थ सत्ताति—नीवरं=घर । इत्यादि

क्र

१५५. कुतो क्ररो—कु=सद्दे। इस धातु से परे, 'क्र' प्रत्यय होता है। जैसे—

कवति, नदतीति—कुररो=एक पक्षी (कुररी)

छर

१५६. वस-असा छरो—इन धातुओं से परे, 'छर' प्रत्यय होता है। जैसे—

वसन्ति एत्थाति—वच्छरो=वर्ष। संवसन्ति एत्थाति—संवच्छरो=वर्ष। असति विसज्जेतीति—अच्छरा=देवकन्या, चुटकी।

छेर

१५७. मसा छेरो च—मस=आमसने। इस धातु से परे, 'छेर' प्रत्यय होता है, और 'छर' भी। जैसे—

तण्हाय परामसनं—मच्छेरं=कंजूसी। मच्छरं=कंजूसी।

सर

१५८. धू-वातो सरो—धुनातीति—धूसरो=रूखा, हलका पीला रंग। वाति, गच्छतीति—वासरो=दिन।

अर

१५९. भमादीह्यरो—'भम' आदि, धातुओं से परे 'अर' प्रत्यय होता है। जैसे—

भमतीति—भमरो=भौंरा। तसति, भयं गण्हातीति—तसरो=मन्दन्ति, मोदन्ति एत्थाति—मन्दरो=पर्वत। कन्दति, अव्हयतीति—कन्दरो=कन्दरा। देवन्ति, कीळन्ति एतेनाति—देवरो=देवर।

१६०. वदिस्स बवा च—'वद' धातु से परे, 'अर' प्रत्यय होता है। 'वद' का 'वद' आदेश होता है। जैसे—

वदन्ति एतेनाति—बदरो=बैर का फल। बदरी।

१६१. व द ज ना नं ठ ङ् च—'वद' तथा 'जन' धातु से परे, 'अर' प्रत्यय होता है; तथा अन्त का 'ठ' आदेश होता है। जैसे—

वदतीति—बठरो=मूर्ख। जनयति (एतस्माति)—जठरं=उदर।

१६२. प चि स्सि ठ ङ् च—'पच' धातु से परे, 'अर' प्रत्यय होता है; तथा 'पच' का 'पिठ' आदेश होता है। जैसे—

पचन्ति एतायाति—पिठरो=पकाने का बरतन।

अरण

१६३. व का अ र ण—वक=आदाने। इस धातु से परे, 'अरण' प्रत्यय होता है। जैसे—

वकेति, आददाति एतायाति—वाकरा=जाल।

आर

१६४. सि ङ्गि-भं ग-अ ग-म ज्ज-क ल-अ ल आ रो—इन नाम धातुओं से परे, 'आर' प्रत्यय होता है। जैसे—

किलेससिङ्गकरणं—सिङ्गारो। भञ्जति—विनासं गच्छतीति—भङ्गारो। अगन्ति, गच्छन्ति एत्थाति—अगारं=घर। लीहूनेन अत्तनो सरीरं मज्जति, निम्मलत्तं करोतीति—मज्जारो=बिलार। एतेन गुणं कलीयति परिमीयतीति—कळारो=मटमैला रंग। दीघत्तं अलति यातीति (बन्धे)=अळारो=टेढ़ा।

१६५. क मि स्स स्सु च—'कम'=इच्छायं। इस धातु से परे, 'आर' प्रत्यय होता है। 'कम' का 'कुम' आदेश होता है। जैसे—

कामीयतीति—कुमारो।

१६६. भि ङ्का रा द यो—'भिङ्कार' आदि, 'आर' प्रत्ययान्त शब्द निपात हैं। जैसे—

भरति, दधाति उदकन्ति—भिङ्कारो=सोने की झारी ['भर' का 'भिङ्ग' आदेश हो गया]। क्लेदीयतीति-केदारं=खेत [क्लिद=अल्लभावे। 'ल' का लोप हो गया]। के जले सति दारो विदारणमस्साति वा—केदारं=खेत। कुं

पठविं विन्दति तत्रापन्नतायाति—कोविळारो=दुगना हुआ (विद=लाभे। इमस्मा कुपुब्बविदा आरो। दस्स ळत्तं। इस्स एत्ताभावो। समासे कुस्स ओ च) इत्यादि।

मार

१६७. करा मारो—'कर' धातु से परे, 'मार' प्रत्यय होता है। जैसे—लोहकिच्चं करोतीति—कम्मारो=लोहार।

खर

१६८. पुस-सरेहि खरो—'पुस' तथा 'सर' धातु से परे, 'खर' प्रत्यय होता है। जैसे—

पोसीयति जलेनाति—पोक्खरं=कमल। सरति विकारं गच्छतीति—सक्खरा=सक्कर।

कीर

१६९. सर-वस-कला कीरो वस्सुट् च—इन धातुओं से परे, 'कीर' प्रत्यय होता है; 'व' का 'उ' होता है। जैसे—

सरीयतीति—सरीरं=शरीर। करोन्ति वासं एतेनाति—उसीरं=खस। अनेन थूलादि कलीयति परिमीयतीति—कलीरो=बाँस का अंकुर।

१७०. गम्भीरादयो—'गम्भीर' आदि, 'कीर' प्रत्ययान्त शब्द निपात हैं। जैसे—

गो वुच्चति पठवी। तं भिन्दित्वा गच्छति पवत्ततीति—गम्भीरो, गभीरो=गहरा। पादे कुलति, पत्थरतीति—कुळीरो (कुलीरो)=केकड़ा इत्यादि।

ऊर

१७१. खज्ज-वल्ल-मसा ऊरो—इन धातुओं से परे, 'ऊर' प्रत्यय होता है। जैसे—

खज्जियतीति—खज्जुरो, खज्जुरी=खजूर। वल्लीयति, संवरीयतीति—वल्लूरो=सूखा मांस। मसीयतीति—मसूरो=मसूर की दाल।

१७२. कप्पूरादयो—'कप्पूर' आदि, 'ऊर' प्रत्ययान्त शब्द निपात हैं। जैसे—

तुट्ठिं उप्पादेतुं कप्पति सक्कोतीति—कप्पूरं=कपूर=घनसार। किब्बिसं करोतीति—कुरूरो=पापकारी। पस=बाधने। पसति पीळेतीति—पसूरो=दूर, व्यञ्जन इत्यादि।

ओर

१७३. कठ-चका ओरो—इन धातुओं से परे, 'ओर' प्रत्यय होता है। जैसे—

कठति, किच्छेन जीवतीति—कठोरो=कठोर। चकति, परिवितक्केतीति—चकोरो=पक्षी विशेष।

१७४. मोरादयो—'मोर' आदि, 'ओर' प्रत्ययान्त शब्द निपात हैं। जैसे—

मी=हिंसायं। ई लोपो। मीयति हिंसतीति—मोरो। कस=गमने। अस्स इ। कसति, गच्छतीति—किसोरो=किशोर, अश्व। महीयति पूजियतीति=महोरो=वल्मीक इत्यादि।

एरक

१७५. कुतो एरक्—कवति, नदतीति—कुवेरो [युवण्णानमियङुवङ सरे ५.१३६]

रिक

१७६. भू-सूहि रिक्—इन धातुओं से परे, 'रिक' प्रत्यय होता है। जैसे—

भवतीति—भूरि=बहुत। भूरी=मेघा। सवति, हितं पसवतीति—सूरि=विचक्षण।

रु

१७७. मी-कसी-नीहि रु—इन धातुओं से परे, 'रु' प्रत्यय होता है। जैसे—

रंसीहि अन्धकारं मीयति हिंसतीति—मेरु=सुमेरु पर्वत। के, जले, सयति पवत्ततीति—कसेरु=पानी में जमने वाला एक कन्द। अत्तनिस्सिते सुन्दरत्तं नेति, पापेतीति—मेरु=पर्वत।

एरु

१७८. सिना एरु—सिना=सोचेय्ये। इस धातु से परे, 'एरु' प्रत्यय होता है। जैसे—

सिनाति, सुचिं करोतीति—सिनेरु=पर्वतराज।

रुक्

१७९. भी-रू हि रुक्—इन धातुओं से परे, 'रुक' प्रत्यय होता है। जैसे—

भायन्ति एतस्माति—भीरु=भयानक (?) डरपोक। रवतीति रुरु=मिगो, मृग।

वूल

१८०. तमा वूलो—तम=भूसने। इस धातु से परे, 'वूल' प्रत्यय होता है। जैसे—

मुखं तमेति, भूसेतीति—तम्बूलं=पान।

लक्, वाल

१८१. सितो लक् वाला—सि=सेवायं। इस धातु से परे, 'लक्' तथा 'वाल' प्रत्यय होते हैं। जैसे—

सत्तेहि सेवीयतीति—सिला=शिला। सेलो=पर्वत। जलं सेवतीति—सेवालो=सेवार।

अल

१८२. मङ्ग-कम-सम्ब-सब-सक-वस-पिस-केव-कल-पल्ल-कठ-पठ-कुण्ड-मण्डा अलो—इन धातुओं से परे, 'अल' प्रत्यय होता है। जैसे—

मङ्गन्ति, सत्ता एतेन वुद्धिं गच्छन्तीति—मङ्गलं। कामीयतीति—कमलं। सम्बेति खण्डेतीति—सम्बलं=पाथेय। सबलं=चितकबरा। सक्कोति वत्तुन्ति—सकलं=सब। वसतीति—वसलो=शूद्र। पियभावं पिसति गच्छतीति—पेसलो=प्रियशील। केवति, पवत्ततीति—केवलं=सकल। कलीयति, परिमीयति उदकमेतेनाति—कललं=गर्भ की एक अवस्था; कीचड़। पल्लति, आगच्छति उदकमेतस्माति—पल्ललं=जलाशय। कठन्ति, एत्थ दुक्खेन यन्तीति—कठलं=कपाल-खण्ड। पटति वुद्धिं गच्छतीति—पटलं=समूह। वंसनेन कुण्डति दहतीति—कुण्डलं। मण्डीयति, परिच्छेदकरणवसेन भूसीयतीति—मण्डलं=घेरा।

कल

१८३. मुसा कलो—'मुस' धातु से परे, 'कल' प्रत्यय होता है। जैसे—
मुसलो=अयोग्य।

१८४. फलादयो—'फल' आदि, 'कल' प्रत्ययान्त शब्द निपात हैं। जैसे—
तिट्ठति एत्थाति—थलं=ऊँची जगह (ठस्स थो। पुब्बसर लोपो)। उदकं पिवतीति—उप्पलं=उत्पल। पतति गच्छति परिपाकन्ति—पाटलो=फल, सुवर्णकुसुम। बेहति वुद्धिं गच्छतीति—बहुलं=घना। चुपति, एकत्थ न तिट्ठतीति—चपलो इत्यादि।

कालो, कल

१८५. कुला कालो च—कुल=पत्थारे। इस धातु से परे, 'काल' प्रत्यय होता है, और 'कल' भी। जैसे—
कुलति, अत्तनो सिप्पं पत्थरतीति—कुलालो=कुम्हार। कुलति, पक्खे पसारेतीति—कुललो=टिटिहरी चिड़िया।

१८६. मुळालादयो—'मुळाल' आदि, 'काल' प्रत्ययान्त शब्द निपात हैं। जैसे—
मील=निमीलने। उद्धरमत्ते निमीलतीति—मुळालं=मृणाल। मूसिकादिखादनेन वलति जीवतीति—बिळालो=बिलार। कप्पति जीवितुं एतेनाति कपालं=घटादि-खण्ड। पी=तप्पने। अत्तनो फलेन सत्ते सन्तप्पेतीति—पियालो

=पियाल फल। कुण=सद्दे। वातसमुट्ठिता वीचिमाला एत्थ कुणन्ति नदन्तीति—कुणालो=एक महा सर। पविसन्ति एत्थाति—विसालो=विस्तार। पल=गमने। वातेन पलति, गच्छतीति—पलालं=पुआल। ससादयो सरति, हिंसतीति—सिङ्गालो (सिगालो)=सियार इत्यादि।

णाल

१८७. चण्डपता णालो—'चण्ड' तथा 'पत' धातु से परे 'णाल' प्रत्यय होता है। जैसे—

चण्डेति पीळेतीति—चण्डालो। अधो गच्छतीति—पातालं=रसातल।

ल

१८८. मादितो लो—'मा' आदि धातु से परे, 'ल' प्रत्यय होता है। जैसे—

मीयति, परिमीयतीति—माला। एति, गच्छतीति—एला=मुँह का लार। पीनेति, तप्पेति एत्थाति—पेलो=वेंत की बनी डलिया। दूयति परितापेतीति—दोला=हिंडोला। फल=सङ्ख्याने। फलनं—फल्लं=युक्त।

इल

१८९. अन-सल-कल-कुक-सठ-मह्ा इलो—इन धातुओं से परे, 'इल' प्रत्यय होता है। जैसे—

अनति पवत्ततीति—अनिलो=हवा। सलति, गच्छतीति—सलिलं=जल। कलति पवत्ततीति—कलिलं=गहन। कुकति, अत्तनो नादेन सत्तानं मनं गण्हातीति—कोकिलो=कोयल। सठति, वञ्चेतीति—सठिलो=शठ। महीयति पूजीयतीति—महिला=स्त्री।

किल

१९०. कुटा किलो—कुट=कोटिल्ये। इस धातु से परे, 'किल' प्रत्यय होता है। जैसे—

अकुटि, कुटिलत्तमगमीति—कुटिलो=टेढ़ा।

१९१. सिथिलादयो—'सिथिल' आदि, 'किल' प्रत्ययान्त शब्द निपात हैं। जैसे—

सहितुं अलन्ति—सिथिलं ['सह' धातु का 'सिथ' आदेश हो गया]। परदुक्खे सति कम्पतीति—कपिलो=ऋषि। अकवि, नीलादिवण्णत्तमगमीति—कपिलो=मटमैला रंग। मथीयतीति—मिथिला=पुरी इत्यादि।

कुल

१९२. चट-कण्ड-वट्ट-पुथा कुलो—इन धातुओं से परे, 'कुल' प्रत्यय होता है। जैसे—

चटति, मित्ते भिन्दतीति—चटुलो=खुसामदी। कण्डीयति छिन्दीयतीति—कण्डुलो=वृक्ष। वट्टतीति—वट्टुलो=परिमण्डल। अपत्थरीति—पुथुलो=विस्तार।

१९३. तुमुलादयो—'तुमुल' आदि, 'कुल' प्रत्ययान्त शब्द निपात हैं। जैसे—

तम=छेदने। अतमि, वित्थिण्णत्तमगमीति—तुमुल=फैलने वाला। तमीयति, विकारमापादीयतीति—तण्डुलो=चावल। अत्थिकेहि निचीयते कि—निचुलो=हिज्जलो, एक वनस्पति-विशेष इत्यादि।

ओल

१९४. कल्ल-कप-तक्क-पटा ओलो—इन धातुओं से परे, 'ओल' प्रत्यय होता है। जैसे—

वातवेगेन समुद्दतो कल्लति, रवतीति—कल्लोलो=समुद्र का लहर। कपति, दन्ते अच्छादेतीति—कपोलो=गाल। तक्कीयतीति—तक्कोलं=एक फल। पटति, व्याधिमेतेन गच्छतीति—पटोलो=एक सब्जी इत्यादि।

उल, उलि

१९५. अङ्गा उलोलि—अङ्ग=गमने। इस धातु से परे, 'उल' तथा 'उलि' प्रत्यय होते हैं। जैसे—

अङ्गन्ति, एतेन जानन्तीति—अङ्गुलं=प्रमाण। अङ्गति, उग्गच्छतीति—अङ्गुलि।

अलि

१९६. अञ्जा लि—अञ्ज=व्यत्तिमक्खनगतिकन्तिसु। इस धातु से परे, 'अलि' प्रत्यय होता है। जैसे—

अञ्जेति, भत्तिं अनेन पकासेतीति—अञ्जलि।

लि

१९७. छदा लि—छद=संवरणे। इस धातु से परे, 'लि' प्रत्यय होता है। जैसे—

छादेतीति—छल्ली=छल्ली।

१९८. अल्यादयो—'अल्लि' आदि, 'लि' प्रत्ययान्त शब्द निपात हैं। जैसे—

अर=गमने। अरति, पवत्ततीति—अल्लि=वृक्ष। अत्थिकेहि नीयतीति—नीलि, नीली=एक प्रकार का गाछ। द्वित्व होने से, 'निल्ली' भी होता है। पालेति, रक्खतीति—पालि। पाली=पंक्ति। पालेति, रक्खतीति—पल्लि=कुटि। चोदीयतीति—चुल्ली=चूल्हा इत्यादि।

अव

१९९. पिलादीह्यवो—'पिल' आदि धातुओं से परे, 'अव' प्रत्यय होता है। जैसे—

पिल=वत्तने। पिल्यतेति—पेलवो=पतला। पल्लीयतीति—पल्लवो। पणीयतीति—पणवो=एक तरह का ढोल इत्यादि।

२००. साळवादयो—'साळव' आदि, 'अव' प्रत्ययान्त शब्द निपात हैं। जैसे—

सलति, पवत्ततीति—साळवो=अच्छी तरह तैयार किया गया, 'खदर' आदि फल का एक खाद्य। कित=निवासे। किच्छतीति—कितवो=ठग, जुआरी।

म=बन्धने । मुनाति बन्धतीति—मुतवो=चण्डाल । वल, वल्ल=संवरणे । वलति, वल्लतेति वा—वळवा=अश्वराज । मुर=संवेठने । मुरीयतीति—मुळो=मृदङ्ग इत्यादि ।

आव

२०१. सरा आवो—'सर' धातु से परे, 'आव' प्रत्यय होता है । जैसे—
सरति, पवत्ततीति—सराव=प्याला ।

णुव

२०२. अल-मल-बिला णुवो—इन धातुओं से परे, 'णुव' प्रत्यय होता है । जैसे—

लताहि अल्लीयतीति—आलुवो=एक गाछ । मलति, धारेतीति—मालुवा=लता, अमर वेल । विलति, भिन्दतीति—बेलुवो=वृक्ष ।

ईव

२०३. गा त्वीवो—गा=सद्दे । इस धातु से परे, 'ईव' प्रत्यय होता है । जैसे—

गायन्ति एतायाति—गीवा=गला ।

क्व, क्वा

२०४. सुतो क्व क्वा—'सु' धातु से परे, 'क्व' तथा 'क्वा' प्रत्यय होते हैं । जैसे—

सुणातीति—सुवो=सुग्गा । सुवा=सुग्गा ।

२०५. विद्वा—'विद' धातु से परे, 'क्वा' प्रत्यय होता है; तथा उसका पर-रूप-भाव होता है । यह निपात है । जैसे—

विदत्ति, जानातीति—विद्वा=विद्वान ।

रेव

२०६. थुतो रेवो—थु=अभित्थवे । इस धातु से परे, 'रेव' प्रत्यय होता

है। जैसे—

थवति, सिञ्चतीति—थेवो=जल विन्दु।

रिव

२०७. समा रिवो—सम=उपसमे। इस धातु से परे, 'रिव' प्रत्यय होता है। जैसे—

समेति, उपसमेतीति—सिवो=शिव, उमापति। सिवा=सियार। सिवं=शान्ति।

रवि

२०८. छदा रवि—छद=संवरणे। इस धातु से परे, 'रवि' प्रत्यय होता है। जैसे—

छादेतीति—छवि=द्युति, त्वचा के ऊपर की पपड़ी।

किस

२०९. पूर-तिमा किसो रस्सो च—'पूर' तथा 'तिम' धातु से परे, 'किस' प्रत्यय होता है। 'ऊ' का 'उ' हो जाता है। जैसे—

पूरेतीति—पुरिसो=पुरुष। पुरे, उच्चे ठाने सेति, पवत्ततीति—पुरिसो=पुरुष। तेमीयतीति—तिमिसं=अन्धकार।

ईस

२१०. करा ईसो—'कर' धातु से परे, 'ईस' प्रत्यय होता है। जैसे—

करीयतीति—करीसं=गुह।

२११. सिरीसादयो—'सिरीस' आदि, 'ईस' प्रत्ययान्त शब्द निपात हैं। जैसे—

सप्पदट्ठकालादिसु सरीयतीति—सिरीसो=वृक्ष। पूरेतीति—पुरिसं=गुह। तलति, सत्तानं पतिट्ठानं भवतीति—तालिसं=एक दवा का गाछ इत्यादि।

रिब्बिस

२१२. करा रिब्बिसो—'कर' धातु से परे, 'रिब्बिस' प्रत्यय होता है। जैसे—

करीयतीति—किब्बिसं=पापं।

स

२१३. सस-अस-वस-विस-हन-वन-मन-अन-कमा सो—इन धातुओं से परे, 'स' प्रत्यय होता है। जैसे—

ससन्ति, जीवन्ति सत्ता एतेनाति सस्सं=शस्य। असति, खिपतीति—अस्सो=घोड़ा। वसन्ति एत्थाति—वस्सं=वर्ष। विसतीति—वेस्सो=वैश्य। हञ्ञतेति—हंसो। वनोति, पत्थरतीति—वंसो=वंश, बाँस। मञ्ञतेति—मंसं=मांस। अनति, जीवति एतेनाति अंसो=हिस्सा, कंधा। कामीयतीति—कंसो=एक नाप।

सक्

२१४. आमि-थु-कु-सीतो सक्—इन धातुओं से परे, 'सक' प्रत्यय होता है। जैसे—

आमीयति, अन्तो पक्खिपीयतीति—आमिसं=भोग्य पदार्थ। थवीयतीति—थुसो=भुस्सा। कवति, वातेन नदतीति—कुसो=कुश घास। सयन्ति एत्थ ऊकादयो ति—सीसं=सिर, सीसा।

२१५. फस्सादयो—'फस्स' आदि, 'सक्' प्रत्ययान्त शब्द निपात हैं। जैसे—

फुस=सम्फस्से। उस्स अ। फुसति इति—फस्सो=स्पर्श। फुस्सो=एक नक्षत्र। पोसीयतीति—पोसो=पुरुष। पुस्सं=फल-विशेष। अभवीति—भुसं=भुस्सा। अङ्केति अनेन अञ्ञे 'ति—अङ्कुसो। फायति, वुद्धि गच्छतीति—पप्फासं=पेट के भीतर का एक अवयव। कलीयति, परिमीयतीति—कम्मासो=चितकबरा। कम्मासं=पाप। कुलति पत्थरतीति—कुम्मासो=एक खाद्य। मञ्जति सघनत्तं एतायाति—मञ्जूसा=बक्सा। पीनेतीति—पीयूसं=अमृत। कुल=संवरणे।

कुलीयति, संवरीयतीति—कुलिसं=वज्र। वल=संवरणे। वलति, एतेन मच्छे गण्हातीति—वळिसो=वंसी। महीयति इति—महेसी=पट रानी इत्यादि।

णिसक्

२१६. सुतो णिसक्—'सु' धातु से परे, 'णिसक' प्रत्यय होता है। जैसे—सुणातीति—सुणिसा=पतोहू।

अस

२१७. वेत-अत-यु-पन-अल-कल-चमा असो—इन धातुओं से परे, 'अस' प्रत्यय होता है। जैसे—

वेतति, पवत्ततीति—वेतसो=वेंत। अतति, वातकम्पितो निच्चं वेपत्तं यातीति—अतसो=वातो। अतसी=अलसी। यवीयति, मिस्सीयतीति—यवसो=पशुओं का चारा। पन्यते, थवीयतेति—पनसो=कटहल। अलीयति, वन्धीयतीति—अलसो=आलसी। कलीयतीति—कलसो=कलश। चमति, अदति अनेनाति—चमसो=चमचा, श्रुवा।

असण्

२१८. वय-दिव-कर-करेहि असण् सक् पास कसा—'वय' आदि धातुओं से परे, यथाक्रम 'असण्' आदि प्रत्यय होते हैं। जैसे—

वयति, गच्छतीति—वायसो=कौआ। दिव्वन्ति एत्थाति—दिवसो=दिन। करीयतीति—कप्पासो=कपास। किब्बिसं करोतीति—कक्कसो=कर्कश।

सु

२१९. सस-मस-दंस-असा सु—'सस' आदि धातुओं से परे, 'सु' प्रत्यय होता है। जैसे—

ससति, जीवति इति—सस्सु=सास। मसीयतीति—मस्सु=दाढ़ी। दंसीयति परायत्तो एतेनाति—दहसु=चोट। असीयति, खिपीयतीति—अस्सु=आँसू।

दसुक्

२२०. विदा दसुक्—'विद' धातु से परे, 'दसुक्' प्रत्यय होता है। जैसे—विदति, जानातीति—विद्वस्सु=विद्वान।

रीहो

२२१. ससा रीहो—'सस' धातु से परे, 'रीह' प्रत्यय होता है। जैसे—ससति, हिंसतीति—सीहो=सिंह।

ह

२२२. जीवामा हो वमा च—'जीव' तथा 'अम' धातु से परे, 'ह' प्रत्यय होता है। जैसे—

जीवन्ति एतायाति—जिव्हा=जीभ। अमति पवत्ततीति—अम्हं=पत्थर। पपुब्बो अमति पवत्ततीति—पम्हं=प्रमुख।

२२३. तण्हादयो—'तण्हा' आदि, 'ह' प्रत्ययान्त शब्द निपात हैं। जैसे—

तसति, पातुमिच्छति एतायाति—तण्हा=तृष्णा। कस=विलेखने। कसतीति—कण्हो=काला। जोतेतीति—जुण्हा=चाँदनी। निमीलन्ति अनेन अक्खीनीति—मीळ्हं=गुह। गम्हतीति—गाळ्हं=गाढ़। दहतीति—दळ्हं=दृढ। वहति, वुद्धिं गच्छतीति—बाळ्हं=मजबूत। गच्छतीति—गिम्हो=ग्रीष्म। पटति, यातीति—पटहो=एक बाजा। कलीयति, परिमीयति अनेन सूरभावन्ति—कलहो=विवाद। कटन्ति, एत्थ ओसधादि मद्दन्तीति—कटाहो=कड़ाही। वरीयतीति—वराहो=सूअर। लुनाति एतेन, ति—लोहं=लोहा इत्यादि।

हि, ही

२२४. पणुस्सहा हिही णो लङ् च—'पण' तथा उ-पूर्वक 'सह' धातु से परे, यथाक्रम 'हि ही' प्रत्यय होते हैं। अन्त का 'ण' तथा 'लङ्' आदेश होता है। जैसे—

पणीयति, वोहरीयतीति—पण्ही=एंड़ी। उस्सहतीति—उस्सोळ्हि=वीर्य।

ळ

२२५. खी-मि-पी-चु-मा-वा-काहि ळो उस्स वा दीघो च—इन धातुओं से परे, 'ळ' प्रत्यय होता है; तथा 'उ' का विकल्प से दीर्घ हो जाता है। जैसे—

खीयतीति—खेळो=थूक । मीयति, पक्खिपीयतीति—मेळा=राख । पीनेतीति—पेळा=पेड़ा । चवतीति—चूळा=चूड़ा । चोळो=कपड़ा । मीयति परिमीयतीति—माळो=एक कूट वाला, अनेक कोनों वाला सभागृह । वाति गच्छतीति वाळो=जंगली जानवर । काति, फरुसं वदतीति काळो=कृष्ण ।

ळक्

२२६. गुतो ळक् च—गु=सद्दे । इस धातु से परे, 'ळक्' प्रत्यय होता है, और 'ळ' भी । जैसे—

गवति, (सद्दं) पवत्तति एतेनाति—गुळो=गुड़ । गोळो=गौना ।

२२७. पङ्गुळादयो—'पङ्गुळ' आदि 'ळक' प्रत्ययान्त शब्द निपात हैं । जैसे—

खञ्ज= गतिवेकल्ले । पङ्गु आदयो अखञ्जि, गतिवेकल्लं आपज्जि इति—पङ्गुळो=लूंभ । किञ्चिसं करोतीति—कक्खलो=क्रूर । कुक्कति, पापकारीहि आदीयतीति—कुक्कुळं=एक नरक । मङ्केति, वनं मण्डेतीति—मकुळो=कली ।

ळि

२२८. पातो ळि—'पा' धातु से परे, 'ळि' प्रत्यय होता है । जैसे—
अत्थं पाति, रक्खतीति—पाळि=पालि भाषा ।

लु

२२९. वीतो लु—'वी' धातु से परे, 'लु' प्रत्यय होता है । जैसे—
वेति पवत्ततीति—वेलु=बाँस ।

॥ इति 'ण्वादि' वृत्ति ॥

पहला परिशिष्ट

मोग्गल्लान सूत्र-पाठ

नमो तस्स भगवतो अरहतो सम्मासम्बुद्धस्स

मोग्गल्लान व्याकरण

सिद्धमिद्धगुणं साधु नमस्सित्वा तथागतं
सधम्मसङ्घं भासिस्सं मागधं सद्दलक्खणं ॥

पालि-व्याकरण में सूत्र पाँच प्रकार के हैं—१. संज्ञा, २. परिभाषा, ३. विधि, ४. नियम, ५. अधिकार।

१. संज्ञा-सूत्र

'संज्ञा' का अर्थ है 'नाम-करण'। मोग्गल्लान व्याकरण के प्रथम बारह सूत्र 'संज्ञा-सूत्र' हैं। पहला सूत्र[1] 'वर्ण' का नाम-करण करता है; दूसरा[2] 'स्वर' का, तीसरा[3] 'सवर्ण' का, चौथा[4] 'ह्रस्व' का, पाँचवाँ[5] 'दीर्घ' का, छठा[6] 'व्यञ्जन' का, सातवाँ[7] 'वर्ग' का, और आठवाँ[8] 'निग्गहीत' का।

नवाँ सूत्र है—इयुवण्णा झ-ला नामस्सन्ते १.९—अर्थात्, किसी पुल्लिङ्ग या नपुंसकलिङ्ग नाम के अन्त्य 'इ' या 'ई' की संज्ञा 'झ', तथा 'उ' या 'ऊ' की संज्ञा 'ल' है।

'झ' या 'ल' शब्द का, अपने में कोई अर्थ नहीं है। किंतु व्याकरण-शास्त्र में, जहाँ कहीं 'झ' संज्ञा आती है, उससे झट नाम के अन्त्य 'इ' या 'ई' का बोध हो

---

१. अ आदयो तितालीस वण्णा। २. दसादो सरा। ३. द्वे द्वे सवण्णा। ४. पुब्बो रस्सो। ५. परो दीघो। ६. कादयो ब्यञ्जना। ७. पञ्च पञ्चका वग्गा। ८. बिन्दु निग्गहीतं।

जाता है। उसी तरह, 'ल' संज्ञा कहने से, नाम का अन्त्य 'उ' या 'ऊ' समझ लिया जाता है।

दसवाँ सूत्र है—पित्थियं[1] १.१०—अर्थात, स्त्रीलिङ्ग नाम के अन्त्य 'इ', 'ई', 'उ' या 'ऊ' की संज्ञा 'प' होगी। आगे के सूत्रों में, जहाँ कहीं 'प' संज्ञा आवेगी, उससे झट स्त्रीलिङ्ग नाम के अन्त्य इ, ई, उ या ऊ का बोध हो जायगा।

ग्यारहवाँ सूत्र है 'घा'[2] १.११—अर्थात्, स्त्रीलिङ्ग नाम के अन्त्य 'आ' की 'घ' संज्ञा होती है। आगे के सूत्रों में, जहां कहीं 'घ' संज्ञा आवेगी, उससे झट 'आ'कारान्त स्त्रीलिङ्ग नाम के अन्त्य 'आ' का बोध हो जायगा।

बारहवाँ सूत्र है—गोस्यालपने १.१२—अर्थात्, सम्बोधन के अर्थ में (=आलपने) प्रयुक्त 'सि' विभक्ति की संज्ञा 'ग' होगी।

२. परिभाषा-सूत्र

बहुत से स्थानों पर एक ही बात को बार-बार कहने से बचने के लिए, कोई नियम या छोटा संकेत निश्चित कर लेते हैं। ऐसे नियम या संकेत निश्चित करने वाले सूत्र 'परिभाषा-सूत्र' कहे जाते हैं।

मोग्गल्लान व्याकरण में, परिभाषा के (१३—२५) तेरह सूत्र हैं। इन तेरह सूत्रों में, पहले के पाँच सूत्र नियम निर्धारित करते हैं—

(क) नियम-निर्धारक-सूत्र

विधिब्बिसेसनन्तस्स १.१३—सूत्र में यदि कोई विशेषण-पद आवे, तो वह विशेषण जिसके अन्त में हो उसी शब्द का ग्रहण होता है। जैसे—

'अतो योनं टा टे'—इस सूत्र में, 'अतो' का अर्थ है 'अ' से परे। किंतु, यह पद नाम का विशेषण है; इसलिए, इसका अर्थ हुआ—'अ' जिसके अन्त में हो,

---

[1] पो इत्थियं
[2] घो + आ

ऐसे नाम से परे। फलतः, इस सूत्र का अर्थ हुआ—अकारान्त नाम से परे 'यो' विभक्तियों का 'टा-टे' आदेश हो जाता है।

सत्तमियं पुब्बस्स १.१४—सूत्र के किसी पद में सप्तमी विभक्ति होने पर, उससे (व्यवधान रहित) पूर्वका कार्य जानना चाहिए। जैसे—

'सरो लोपो सरे'। इस सूत्र में, 'सरे' पद सप्तम्यन्त है। अतः, इस सूत्र का अर्थ हुआ—स्वर से (व्यवधान रहित) पूर्व स्वर का लोप होता है। जैसे—

सम्मन्ति+इध=सम्मन्तिध। यहाँ, 'इध' के 'इ' से (व्यवधान रहित) पूर्व 'सम्मन्ति' के 'इ' का लोप हो गया।

पञ्चमियं परस्स १.१५—सूत्र के किसी पद में पञ्चमी विभक्ति होने पर, उससे पर का (=बाद का) कार्य जानना चाहिए। जैसे—

'अतो योनं टा टे'। इस सूत्र में 'अतो' पद पञ्चम्यन्त है; अतः, इसका अर्थ हुआ—अकारान्त नाम से (व्यवधान रहित) पर में (=बाद में)। फलतः, इस सूत्र का अर्थ हुआ—अकारान्त नाम से (व्यवधान रहित) परे, 'यो' विभक्तियों का 'टा-टे' आदेश होता है।

'आदिस्स' १.१६—पर का जो कार्य होना कहा गया है, वह उसके आदि वर्ण के स्थान में समझना चाहिए। जैसे—

र संख्यातो वा ४.१०—इस सूत्र में, संख्या से परे 'दस' शब्द का 'र' आदेश किया गया है। 'दस' शब्द के 'र' आदेश होने का अर्थ है—'दस' शब्द के आदि-वर्ण 'द' के स्थान में 'र' होना। जैसे—ते+दस=तेरस।

'छट्ठियन्तस्स' १.१७—सूत्र के किसी पद में षष्ठी विभक्ति होने पर, उससे उसके अन्तिम वर्ण का कार्य समझना चाहिए। जैसे—

'राजस्स इ नाम्हि'—इस सूत्र में 'राजस्स' पद षष्ठयन्त है। अतः, इस सूत्र का अर्थ हुआ—'राज' शब्द के अन्तिम वर्ण 'अ' का 'इ' हो जाता है, यदि 'ना' विभक्ति परे हो। जैसे—राज+ना=राजिना।

(ख) संकेत (=अनुबन्ध) निश्चय करने वाले सूत्र

ङ अनुबन्धो १.१८—जिसमें 'ङ' अनुबन्ध (=संकेत) लगा हो, उसका आदेश, षष्ठयन्त पद के अन्तिम वर्ण के स्थान में होता है।

ट्नुबन्धानेकवण्णा सब्बस्स १.१९—जिसमें 'ट' अनुबन्ध (=संकेत) लगा

हो, और जो अनेक वर्णों वाला आदेश हो, वह सम्पूर्ण षष्ठ्यन्त पद के स्थान में होता है। जैसे—

'अतो योनं टा टे' : इस सूत्र में, 'योनं' पद में षष्ठी विभक्ति है; अतः, ऊपर कहे गये सूत्र 'छट्ठियन्तस्स' के अनुसार, 'यो' पद के अन्तिम वर्ण 'ओ' का लोप होना चाहिए था। किंतु, प्रस्तुत सूत्र के अनुसार, सम्पूर्ण पद 'यो' का 'आ' तथा 'ए' आदेश होगा; क्योकि 'आ-ए' के साथ 'ट' अनुवन्ध (=संकेत) लगा है। जैसे— वुद्ध+यो=वुद्धा, वुद्धे।

अनेक वर्णों वाला आदेश भी सम्पूर्ण पष्ठचन्त पद के स्थान में होता है।

ञ कानुवन्धाद्यन्ता १.२०—जिसमें 'ञ' अनुवन्ध (=संकेत) लगा हो, वह षष्ठ्यन्त पद के आदि में आता है। जैसे—

'सुञ् सस्स'। इस सूत्र के 'सुञ्' पद में, 'ञ्' अनुवन्ध (=संकेत) लगा है। इससे मालूम होता है, कि षष्ठ्यन्त पद 'स' के आदि में 'सु' का आगम होगा। 'सु' का 'स' ही रहता है, क्योंकि 'उ' केवल उच्चारण-सौकर्य के लिए लगा दिया गया है। अतः—वुद्ध+स=वुद्ध+स्स=वुद्धस्स।

जिसमें 'क' अनुवन्ध (=संकेत) लगा हो, वह पष्ठ्यन्त पद के अन्त में आता है। जैसे—

(अत्त-आतुमानं) 'सुहिसु नक्'—यहाँ, 'नक्' पद में 'क' अनुवन्ध (=संकेत) लगा है; इससे मालूम होता है, कि 'न' का आगम पष्ठ्यन्त पद 'अत्त' तथा 'आतुम' के अन्त में होगा—'सु-हि' विभक्तियाँ यदि परे हों। जैसे—अत्त+सु= अत्तन+सु=अत्तनेसु।

मनुबन्धो सरानमन्त्ता परो १.२१—जिसमें 'म' अनुवन्ध लगा हो, वह पष्ठ्यन्त शब्द के अन्तिम स्वर से परे आता है। जैसे—

'मं च रुधादीनं'। इस सूत्र के 'मं' पद में, 'म' अनुवन्ध (=संकेत) लगा है; इससे मालूम होता है, कि 'अं' का आगम पष्ठ्यन्त शब्द 'रुध' के अन्तिम 'स्वर' 'उ' से परे होगा। जैसे—रुन्धति।

(ग) साधारण परिभाषा-सूत्र

विप्पटिसेधे १.२२—यदि एक ही जगह, परस्पर भिन्न दो सूत्र (नियम) लगते हों, तो उनमें वाद में कहा गया सूत्र लगता है।

संकेतो ऽनवयवोनुबन्धो १.२३—किसी शब्द में, 'अनुबन्ध' सिर्फ एक संकेत के लिए लगाया जाता है। 'अनुबन्ध' केवल इस बात का संकेत करने के लिए लगाया जाता है, कि वह आदेश किसके स्थान पर, या वह आगम कहाँ पर होगा। 'अनुबन्ध', शब्द का अङ्ग नहीं होता है; अतः, आदेश या आगम के समय, वह छोड़ दिया जाता है। [देखिए—सू० ४३९, ४४०, ४४९, ४५०]

अनुबन्धों के संकेत—

१. 'ङ'—षष्ठचन्त पद के अन्तिम वर्ण के स्थान में आदेश करने का संकेत करता है।

२. 'ट'—सम्पूर्ण षष्ठचन्त पद के स्थान में आदेश करने का संकेत करता है।

३. 'अ'—षष्ठचन्त पद के आदि में आगम करने का संकेत करता है।

४. 'क'—षष्ठचन्त पद के अन्त में आगम करने का संकेत करता है।

५. 'म'—षष्ठचन्त पद के अन्तिम स्वर से परे आगम करने का संकेत करता है।

वण्णपरेण सवण्णोऽपि १.२४—स्वर के साथ 'वण्ण' शब्द लगा देने से, उसके सवर्ण का भी ग्रहण होता है। 'अवर्ण' कहने से, 'आ' का भी ग्रहण होता है; 'इवर्ण' कहने से, 'ई' का भी ग्रहण होता है। इत्यादि।

न्तु वन्तु मन्त्वावन्तु तवन्तु सम्बन्धी १.२५—सूत्र में, जहाँ 'न्तु' शब्द का प्रयोग आवे, वहाँ 'वन्तु', 'मन्तु' 'आवन्तु' तथा 'तवन्तु'—इन्हीं के 'न्तु' का ग्रहण करना चाहिए। [जन्तु, तन्तु आदि शब्दों के 'न्तु' का नहीं]

३. विधि-सूत्र

विभक्ति-प्रत्ययादि के विषय में विधान करने वाले सूत्र 'विधि-सूत्र' हैं। 'विधि-सूत्र' ही, व्याकरण में सर्व-प्रधान हैं; क्योंकि, दूसरे सूत्र तो विधि-सूत्र के कार्य-सम्पादन के सौकर्य के लिए ही बनाए गए हैं। जैसे—

ण्य दिच्चादीहि ४.४—अर्थात्, 'दिति' आदि शब्दों से परे, अपत्य के अर्थ में 'ण्य' प्रत्यय होता है। दिति+ण्य=देच्चो।

कम्मे दुतिया २.२—कर्म में द्वितीया विभक्ति होती है।

अतो योनं टाटे २.४३—अकारान्त नाम से परे, 'यो' विभक्तियों का 'टा-टे' आदेश होता है। इत्यादि।

४. नियम-सूत्र

किन किन स्थान में कोई खास नियम लागू होते हैं या नहीं, उसे बताने वाले सूत्र 'नियम-सूत्र' हैं । जैसे—

न खादादीनं २.६—अर्थात्, ऊपर कहा गया नियम 'खाद' आदि धातुओं के साथ नहीं लगता है ।

वहिस्सानिमन्तु के २.७—अर्थात्, 'वह' धातु के प्रयोज्यकर्ता में तृतीया विभक्ति होती है, यदि उसका कर्ता नियन्ता न हो ।

५. अधिकार-सूत्र

किसी प्रकरण-विशेष की सूचना देने वाले सूत्र 'अधिकार-सूत्र' हैं । जैसे—

वहुलं १.५८—अर्थात्, आगे आने वाले सभी सूत्रों में 'वहुलं' का नियम लगा है।

उत्तरपदे ३.५४—अर्थात्, आगे आने वाले सूत्रों के कार्य तभी होते हैं, यदि 'उत्तर पद' परे हो । इत्यादि ।

सूत्र-पाठ

पठमो कण्डो

१. अ आदयो तितालीस वण्णा
२. दसादो सरा
३. द्वे द्वे सवण्णा
४. पुब्बो रस्सो
५. परो दीघो
६. कादयो व्यञ्जना
७. पञ्च पञ्चका वग्गा
८. विन्दु निग्गहीतं
९. इयुवण्णा झला नामस्सन्ते
१०. पित्थियं
११. घा
१२. गो स्यालपने
(सञ्ञाधिकार)
१३. विधिब्बिसेसनन्तस्स
१४. सत्तमियं पुब्बस्स
१५. पञ्चमियं परस्स
१६. आदिस्स
१७. छट्ठियन्तस्स
१८. ङ नुवन्धो
१९. टनुवन्धानेकवण्णा सब्बस्स

---

९. उ। १०. प+इ०। ११. घ+आ। १२. सि+आ०। १७. अ०। १८. ङ+

२०. अकानुबन्धाद्यन्ता
२१. मनुबन्धो सरानंमन्ता परो
२२. विप्पटिसेधे
२३. संकेतो 'नवयवो' नुबन्धो
२४. वण्णपरेन सवण्णो' पि
२५. न्तु वन्तुमन्त्वावन्तु तवन्तुसम्बन्धी (परिभासायो)
२६. सरो लोपो सरे
२७. परो क्वचि
२८. न द्वे वा
२९. युवण्णानमेओ लुत्ता
३०. यवा सरे
३१. एओनं
३२. गोस्सावङ्
३३. व्यञ्जने दीघरस्सा
३४. सरम्हा द्वे
३५. चतुत्थदुतियेस्वेसं ततियपठमा
३६. वितिस्सेवे वा
३७. एओनमवण्णे
३८. निग्गहीतं
३९. लोपो
४०. परसरस्स
४१. वग्गे वग्गन्तो
४२. येवहिसु ञो
४३. ये संस्स
४४. मयदा सरे
४५. वनतरगा चागमा
४६. छा ळो
४७. तदमिनादीनि
४८. तवग्गवरणानं ये चवग्गवयञा
४९. वग्गलसेहि ते
५०. हुस्स विपल्लासो
५१. वे वा
५२. तथनरानं टठणला
५३. संयोगादि लोपो
५४. वीच्छाभिक्खञ्ञेसु द्वे
५५. स्यादिलोपो पुब्बस्सेकस्स
५६. सब्बादीनं वीतिहारे
५७. याव बोधं सम्भमे
५८. वहुलं

इति (मोग्गल्लाने व्याकरणे) सञ्ञादिकण्डो पठमो

अ० । २०. न्धा+आदि+अन्ता । २१. नं+अ० । २९. इ+उ=यु । ३२. स्स+अ । ३५. सु+एसं (चतुत्थ-दुतियानं) । ३६. वो+इतिस्स+एवे । ३७. नं+अ । ४२. य+एव । ४४. म, य, द० । ४५. व, न, त, र, ग० । ४८. तवग्ग-व-र-णानं ये चवग्ग-ब-य-ञा । ४९. वग्ग-ल-से हि ते (=ते एव वग्ग-ल-सा) । ५२. त-थ-न-रानं ट-ठ-ण-ला । ५४. च्छा+आ० । ५५. स्स+ए० । ५६. ब्ब+आ० ।

दुतियो कण्डो

(स्यादि)

१. द्वे द्वेकानेकेसु नामस्मा सि यो अं यो ना हि स नं स्मा हि स नं स्मिं सु
२. कम्मे दुतिया
३. कालद्धानमच्चन्तसंयोगे
४. गतिबोधाहारसद्दत्थाकम्मक भज्जादीनं पयोज्जे
५. हरादीनं वा
६. न खादादीनं
७. वहिस्सानियन्तुके
८. भक्खिस्साहिंसायं
९. ध्यादीहि युत्ता
१०. लक्खणित्थम्भूतवीच्छास्वभिना
११. पतिपरीहि भागे च
१२. अनुना
१३. सहत्थे
१४. हीने
१५. उपेन
१६. सत्तम्याधिक्ये
१७. सामित्ते ’धिना
१८. कत्तुकरणेसु ततिया
१९. सहत्थेन
२०. लक्खणे
२१. हेतुम्हि
२२. पञ्चमीणे वा
२३. गुणे
२४. छट्ठी हेत्वत्थेहि
२५. सब्बादितो सब्बा
२६. चतुत्थी सम्पदाने
२७. तादत्थ्ये
२८. पञ्चम्यवधिस्मा
२९. अपपरीहि वज्जने
३०. पटिनिधिपटिदानेसु पतिना
३१. रिते दुतिया च
३२. विनाञ्ञत्र ततिया च
३३. पुथनानाहि
३४. सत्तम्याधारे
३५. निमित्ते
३६. यब्भावो भावलक्खणं
३७. छट्ठी चानादरे
३८. यतो निद्धारणं
३९. पठमात्थमत्ते
४०. आमन्तणे

---

१. द्वे+एक+अने० । ४. गति-बोध-आहार-सद्दत्थ-अकम्मक-भज्जादीनं पयोज्जे । ७. स्स+अ० । ८. स्स+अ० । ९. धि+आ० । १०. लक्खण-इत्थंभूत-वीच्छासु अभिना । १६. मी+आ० । २२. मी+इ० । २८. मी+अ० । ३२. ना+अ० । ३३. पुथ-नानाहि । ३९. मा+अ० ।

४१. छट्ठी सम्बन्धे
४२. तुल्यत्थेन वा ततिया
४३. अतो योनं टाटे
४४. नीनं वा
४५. स्मास्मिन्नं
४६. सस्साय चतुत्थिया
४७. घपतेकस्मिं नादीनं यया
४८. स्सा वा तेतिमामूहि
४९. नम्हि नुक् द्वादीनं सत्तरसन्नं
५०. वहुकतिन्नं
५१. ण्णं ण्णन्नं तितोज्झा
५२. उभिन्नं
५३. सुत्र सस्स
५४. स्सं स्सा स्सायेस्वितरेकञ्ञेतिमानमि
५५. ताय वा
५६. तेतिमातो सस्स स्साय
५७. रत्यादीहि टो स्मिनो
५८. सुहिसुभस्सो
५९. ल्तुपितादीनमा सिम्हि
६०. गे अ च
६१. अयूनं वा दीघो
६२. घब्रह्मादित्ते
६३. नाम्मादीहि
६४. रस्सो वा
६५. घो स्संस्सास्सायंतिसु
६६. एकवचनयोस्वघोनं
६७. गे वा
६८. सिस्मि नानपुंसकस्स
६९. गोस्सागसिहिनंसु गावगवा
७०. सुम्हि वा
७१. गवं सेन
७२. गुन्नं च नंना
७३. नास्सा
७४. गावुम्हि
७५. यं पीतो
७६. नं झीतो
७७. योनं नोने पुमे
७८. नो
७९. स्मिनो नि
८०. अम्बवादीहि
८१. कम्मादितो

---

४६. स्स+आ०। ४७. घ-पतो एकस्मिं ना-आदीनं यया। ४८. ता+एता+इमा+अमूहि। ५०. बहु-कतिन्नं। ५४. स्सं-स्सा-स्सायेसु इतर-एक-अञ्ञ-एत-इमानं इ। ५६. ता+एता+इमा०। ५७. त्ति+आ०। ५८. सु-हि-सु उभस्स ओ। ५९. नं+आ०। ६१. अ+इ+उ (इच्चेसं)। ६२. तो+ए। ६३. न+अ०। ६५. स्सं+स्सा+स्साय+अं+ति (इच्चेतेसु)। ६६. एकवचन-योसु अ-घ-ओनं। ६८. न+अ०। ६९. स्स+अ०। ७७. नो-ने। ८०. म्बु+आ०। ८१. म्म+आ०।

८२. नास्सेनो
८३. झला सस्स नो
८४. ना स्मास्स
८५. ला योनं वो पुमे
८६. जन्त्वादितो नो च
८७. कूतो
८८. लोपो' मुस्मा
८९. न नो सस्स
९०. यो लोपनिसु दीघो
९१. सुनंहिसु
९२. पञ्चादीनं चुद्दसन्नम
९३. य्वादो न्तुस्स
९४. न्तस्स च ट वंसे
९५. योसुज्झिस्स पुमे
९६. वेवोसु लुस्स
९७. योम्हि वा क्वचि
९८. पुमालपने वे वो
९९. स्मा-हिं-स्मिन्नं म्हा-भि-म्हि
१००. सुहिस्वस्से
१०१. सव्वादीनं नम्हि च
१०२. सं-सानं
१०३. घ-पा सस्स स्सा वा
१०४. स्मिनो स्सं
१०५. यं
१०६. तिं सभापरिसाय
१०७. पदादीहि सि
१०८. नास्स सा
१०९. कोधादीहि
११०. अतेन
१११. सिस्सो
११२. क्वचे वा
११३. अन्नपुंसके
११४. योनं नि
११५. झला वा
११६. लोपो
११७. जन्तु हेत्वीघपेहि वा
११८. ये पस्सिवण्णस्स
११९. गसीनं
१२०. असंख्येहि सव्वासं
१२१. एकत्थतायं
१२२. पुब्बस्मामादितो
१२३. नातो' मपञ्चमिमा
१२४. वा ततिया सत्तमीनं
१२५. राजस्सि नाम्हि

---

८२. स्स+ए०। ८३. झ-ल०। ८६. न्तु+आ०। ९१. सु-नं-हिसु। ९२. पञ्च-आदीनं चुद्दसन्नं अ। ९३. यो+आ०। ९४. वा+अंसे। ९५. योसु झ-इस्स०। १००. सु+अस्स+ए। ११०. तो+ए०। १११. स्स+ओ। ११२. चि+ए०। ११३. अं+न०। ११७. जन्तु-हेतु-ई-घ-पेहि वा। ११८. स्स+इ०। १२२. स्मा+अ०। १२३. न+अतो+अं+अपञ्चमिया। १२५. स्स+इ।

१२६. सु-नं-हिसु
१२७. इमस्सानित्थियं टे
१२८. नाम्हिनिमि
१२९. सिम्हनपुंसकस्सायं
१३०. त्यतेतानं तस्स सो
१३१. मस्सामुस्स
१३२. के वा
१३३. ततस्स नो सब्बासु
१३४. ट सस्मास्मिंस्सायस्संस्सासंम्हा-म्हिस्विमस्स च
१३५. टे सिस्सिसिस्मा
१३६. दुतियस्स योस्स
१३७. एकच्चादीहतो
१३८. न निस्स टा
१३९. सब्बादीहि
१४०. योनमेट्
१४१. नाञ्ञञ्च नामप्पधाना
१४२. ततित्थयोगे
१४३. चत्थसमासे
१४४. वेट्
१४५. पुब्बादीहि छहि
१४६. मनादीहि स्मिंसंनास्मानं सिसो ओसासा
१४७. सतो सब्भे
१४८. भवतो वा भोन्तो गयोनासे
१४९. सिस्साग्गितो नि
१५०. न्तस्सं
१५१. भूतो
१५२. महन्तारहन्तानं टा वा
१५३. न्तुस्स
१५४. अंडं नपुंसके
१५५. हिमवतो वा ओ
१५६. राजादियुवादित्वा
१५७. वा म्हानङ्
१५८. योनमानो
१५९. आयो नो च सखा
१६०. टे स्मिनो
१६१. नोनासेस्वि
१६२. स्मानंसु वा
१६३. योस्वंहिसु चारङ्
१६४. ल्तुपितादीनमसे
१६५. नम्हि वा

---

१२७. स्स+अ०। १२८. नाम्हि अन-इमि (इच्चादेस्सा होन्ति)। १२९. सिम्हि अनपुंसकस्स अयं। १३०. त्य+एत०। १३१. स्स+अ०। १३४. ट स-स्मा-स्मिं-स्साय-स्सं-स्सा-सं-म्हा-म्हिसु इमस्स च। १३५. स्स+इ०। १३७. वीहि+अतो। १४०. नं+एद्। १४१. न+अ०। म+अ०। १४४. वा+एद्। १४६. मन-आदीहि—

स्मिं=सि। स=सो। अं=ओ। ना=सा। स्मा=सा।

१६६. श्रा
१६७. सलोपो
१६८. सुहिस्वारङ्
१६९. नज्जा योस्वाम्
१७०. टि कतिम्हा
१७१. ट पञ्चादीहि चुद्दसहि
१७२. उभगोहि टो
१७३. ग्रारङ्स्मा
१७४. टोटे वा
१७५. टा नास्मानं
१७६. टि स्मिनो
१७७. दिवादितो
१७८. रस्सारङ्
१७९. पितादीनमनत्त्वादीनं
१८०. युवादीनं सुहिस्वानङ्
१८१. नोनानेस्वा
१८२. स्मास्मिन्नं नाने
१८३. योनं नोने वा
१८४. इतो ञ्ञत्थे पुमे
१८५. ने स्मिनो क्वचि
१८६. पुमा
१८७. नाम्हि
१८८. सुम्हा च
१८९. गस्सं
१९०. सास्संसे चानङ्
१९१. वत्तहा सनन्नं नोनानं
१९२. ब्रह्मस्सु वा
१९३. नाम्हि
१९४. पुमकम्मथामद्धानं वा सस्मासु च
१९५. युवा सस्सिनो
१९६. नोत्तातुमा
१९७. सुहिसु नक्
१९८. स्मास्स ना ब्रह्मा च
१९९. इमेतानमेनान्वादेसे दुतियायं
२००. किस्स को सब्बासु
२०१. कि स-स्मिसु वानित्थियं
२०२. किमंसिसु सह नपुंसके
२०३. इमस्सिदं वा
२०४. ग्रमुस्सादुं
२०५. सुम्हाम्हस्सास्मा
२०६. नम्हि तिचतुन्नमित्थियं तिस्स चतस्सा
२०७. तिस्सो चतस्सो योम्हि सविभत्तीनं
२०८. तीणि चत्तारि नपुंसके
२०९. पुमे तयो चत्तारो
२१०. चतुरो वा चतुस्स
२११. मयमस्माम्हस्स
२१२. नंसेस्वस्माकं ममं
२१३. सिम्हहं
२१४. तुम्हस्स तुवं त्वमम्हि च

---

२०१. वा+अ०। २०३. स्स+इ०। २०४. स्स+अ०। २०५. सुम्हि+अम्हस्स+अस्मा। २०६. म+इ०। २११. मयं+अस्मा+अम्हस्स। २१२. सु+अ०। २१३. म्हि+अ०। २१४. त्वं+अ०।

२१५. तया-तयीनं त्व वा तस्स
२१६. स्माम्हि त्वम्हा
२१७. न्तन्तूनं न्तो योम्हि पठमे
२१८. तं नम्हि
२१९. तोतातिता सस्मास्मिनासु
२२०. टटाग्गं गे
२२१. योम्हि द्विन्नं दुवे द्वे
२२२. दुविन्नं नम्हि वा
२२३. राजस्स रञ्ञं
२२४. नास्मासु रञ्ञा
२२५. रञ्ञो रञ्ञस्स राजिनो से
२२६. स्मिम्हि रञ्ञे राजिनि
२२७. समासे वा
२२८. स्मिम्हि तुम्हाम्हानं तयि मयि
२२९. ग्रम्हि तं मं तवं ममं
२३०. नास्मासु तया मया
२३१. तव मम तुम्हं मय्हं से
२३२. ङंङाकं नम्हि
२३३. दुतिये योम्हि वा
२३४. अपादादो पदतेकवाक्ये
२३५. यो-नं-हिस्वपञ्चम्या वो नो
२३६. ते मे नासे
२३७. अन्वादेसे
२३८. सपुब्बा पठमन्ता वा
२३९. नचवाहाहेवयोगे
२४०. दस्सनत्थेनालोचने
२४१. आमन्तणं पुब्बमसन्तं व
२४२. न सामञ्ञवचनमेकत्थे
२४३. बहुसु वा

इति (मोग्गल्लाने व्याकरणे) स्यादिकण्डो दुतियो

ततियो कण्डो

(समासो)

१. स्यादि स्यादिनेकत्थं
२. असंख्यं विभत्तिसम्पत्तिसमीपसाकल्याभावयथापच्छायुगपदत्थे
३. यथा न तुल्ये
४. यावावधारणे
५. पय्यपावहितिरोपुरे पच्छा वा पञ्चम्या
६. समीपायामेस्वनु

---

२३४. अपाद+आदो पदतो+एकवाक्ये। २३५. सु+अ०। २३९ न-च-वा-हि-एव योगे। २४०. त्थे+अना०।

१. ना+ए०। ४. व+अ०। ५. परि-अप-आ-बहि-तिरो-पुरे-पच्छा वा पञ्चम्या। ६. प+आ०। सु+अ०।

७. तिट्ठग्वादीनि
८. ओरे-परि-पटि-पारे-मज्झे हेट्ठु-द्धाधोन्तो वा छट्ठिया
९. तं नपुंसकं
१०. अमादि
११. विसेसनमेकत्थेन
१२. नञ्
१३. कुपादयो निच्चमस्यादि विधिम्हि
१४. ची क्रियत्थेहि
१५. भूसनादरानादरेस्वलं सासा
१६. अञ्ञे च
१७. वानेकञ्ञत्थे
१८. तत्थ गहेत्वा तेन पहरित्वा युद्धे सरूपं
१९. चत्थे
२०. समाहारे नपुंसकं
२१. संख्यादि
२२. क्वचेकत्तञ्च छट्ठिया
२३. स्यादिसु रस्सो
२४. घपस्सान्तस्साप्पधानस्स
२५. गोस्सु
२६. इत्थियमत्वा
२७. नदादितो ङी
२८. यक्खादित्थिनी च
२९. आरामिकादीहि
३०. युवण्णेहि नी
३१. क्तिम्हाञ्ञत्थे
३२. घरण्यादयो
३३. मातुलादित्वानी भरियायं
३४. उपमा-संहित-सहित-सञ्ञत-सह-सथ-वाम-लक्खणादितुरुत्तू
३५. युवा ति
३६. न्तन्तूनं ङीम्हि तो वा
३७. भवतो भोतो
३८. गोस्सावङ्
३९. पुथुस्स पथव-पुथवा
४०. समासन्त्व
४१. पापादीहि भूमिया
४२. संख्याहि
४३. नदीगोदावरीनं
४४. असंख्येहि चाङ्गुल्या नञ्ञासंख्यत्थेसु
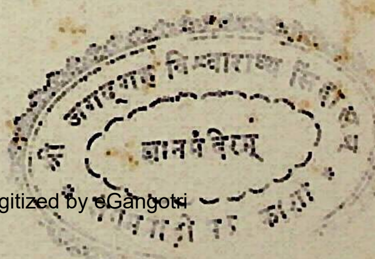
---

७. गु+आ०। ८. हेट्ठा+उद्धो+अधो+अन्तो। ११. म+ए०। १३. च्चं+अ०। १५. भूसन+आदर+अनादरेसु अलं, सा सा। १७. वा+अ०। २२. चि+ए०। २३. सि+आ०। २५. गोस्स+उ। २६. इत्थियं+अतो+आ। २८. तो+इ०। ३०. इ+उ=यु। ३१. म्हा+अ०। ३२. णी+आ०। ३३. तो+इती। ३४. लक्खणादितो+उरुतो+ऊ। ३८. स्स+अ०। ४०. न्तो+अ। ४४. असंख्येहि च+अङ्गुल्या+अनञ्+असंख्यत्थेसु।

४५. दीघाहोवस्सेकदेसेहि च रत्या
४६. गोत्वचत्थे चालोपे
४७. रत्तिन्दिवदारगवचतुरस्सा
४८. ग्रायामे 'नुगवं
४९. ग्रक्खिस्मा'ञ्ञत्थे
५०. दारुम्ह्यङ्गुल्या
५१. चि वीतिहारे
५२. ल्त्वित्थियूहि को
५३. वाञ्ञतो
५४. उत्तरपदे
५५. इमस्सिदं
५६. पुं पुमस्स वा
५७. ट न्तन्तूनं
५८. ग्र
५९. मनाद्यपादीनमो मये च
६०. परस्स संख्यासु
६१. जने पुथस्सु
६२. सो छस्साहायतने वा
६३. ल्तुपितादीनमारङरङ्
६४. विज्जायोनिसम्बन्धानमा तत्र चत्थे
६५. पुत्ते
६६. चिस्मिं
६७. इत्थियम्भासितपुमित्थी पुमेवेकत्थे
६८. क्वचिप्पच्चये
६९. सब्बादयो वुत्तिमत्ते
७०. जायाय जयम्पतिम्हि
७१. सञ्ञायमुदोदकस्स
७२. कुम्भादिसु वा
७३. सोतादिसूलोपो
७४. ट नञ्स्स
७५. ग्रन् सरे
७६. नखादयो
७७. नगो वाप्पाणिनि
७८. सहस्स सो'ञ्ञत्थे
७९. सञ्ञायं
८०. ग्रपच्चक्खे
८१. ग्रकाले सकत्थे
८२. गन्थान्ताधिक्ये
८३. समानस्स पक्खादिसु वा
८४. उदरे इये
८५. रीरिक्खकेसु
८६. सब्बादीनमा

---

४५. दीघ+ग्रहो+वस्स+एकदेसेहि च रत्या, ४६. गोतो+ ग्रचत्थे+ च+ग्रलोपे । ४७. रत्तिन्दिव-दारगव-चतुरस्सा । ५०. म्हि+ग्र० । ५२. ल्तु+इत्थि इ+उ० । ५३. वा+ग्र० । ५५. स्स+इदं । ५९. मनादि+ ग्रपादीनं+ग्रो मये च । ६१. स्स+उ । ६२. स्स+ग्र० । ६३. नं+ग्रा० । ६४. नं+ग्रा । ६७. इत्थियं भासितपुमा इत्थी पुमा इव एकत्थे । ६८. चि+प० = चिप्प० । ७०. जयं पतिम्हि । ७१. यं+उ० । ७३. सोतादिसु उ-लोपो । ७७. वा+ ग्र० । ८२. न्ते+ग्रा० । ८६. नं+ग्रा ।



८७. न्तकिमिमानं टाकीटी
८८. तुम्हाम्हानं तामेकस्मिं
८९. तं ममञ्ञत्र
९०. वेतस्सेट्
९१. विधादिसु द्विस्स दु
९२. दि गुणादिसु
९३. तीस्व
९४. आ संख्यायासतादो' नञ्ञत्थे
९५. तिस्से
९६. चत्तालीसादो वा
९७. द्विस्सा च
९८. वा चत्तालीसादो
९९. वीसतिदसेसु पञ्चस्स पण्णुपन्ना
१००. चतुस्स चुचो दसे
१०१. छस्स सो
१०२. एकट्ठानमा
१०३. र संख्यातो वा
१०४. छतीहि ळो च
१०५. चतुत्थततियानमड्ढुड्ढतिया
१०६. दुतियस्स सह दियड्ढ-दिवड्ढा
१०७. सरे कद् कुस्सुत्तरत्थे
१०८. काप्पत्थे
१०९. पुरिसे वा
११०. पुब्बापरज्जसायमज्झेहाहस्सन्हो

इति (मोग्गल्लाने व्याकरणे) समासकण्डो ततियो

चतुत्थो-कण्डो

(णादि)

१. णो वापच्चे
२. वच्छादितो णानणायणा
३. कत्तिका-विधवादीहि णेय्य-णेरा
४. ण्य दिच्चादीहि
५. आ णि
६. राजतो ञ्ञो जातियं
७. खत्ता यिया
८. मनुतो स्ससण्

---

८७. न्त-किं-इमानं टा-की-टी । ८८. तुम्ह-अम्हानं ता-मा एकस्मिं । ८९. तं मं अञ्ञत्र । ९०. वा एतस्स एद् । ९३. तीसु अ । ९५. तिस्स ए । ९७. द्विस्स आ च । ९८. वा अचत्तालीसादो । १०२. नं आ । १०५. नं अड्ढा उड्ढतिया । १०७. स्स+उ । १०८. का अप्पत्थे (=अल्पार्थे) । ११०. पुब्ब-अपर-अज्ज-सायं-मज्झेहि अहस्स अन्हो ।

१. वा+अ० । ७. य-इया । ८. स्स, सण् ।

९. जनपदनामस्मा खत्तिया रञ्ञे च णो
१०. ण्य कुरुसिवीहि
११. ण रागा तेन रत्तं
१२. नक्खत्तेनिन्दुयुत्तेन काले
१३. सास्स देवता पुण्णमासी
१४. तमधीते तं जानाति कणिका च
१५. तस्स विसये देसे
१६. निवासे तन्नामे
१७. अदूरभवे
१८. तेन निब्बत्ते
१९. तमिधत्थि
२०. तत्र भवे
२१. अज्जादीहि तनो
२२. पुरातो णो च
२३. अमात्वच्चो
२४. मज्झादित्विमो
२५. कण्णेय्यणेय्यकयिया
२६. णिको
२७. तमस्स सिप्पं सीलं पण्यं पहरणं पयोजनं
२८. तं हन्तरहति गच्छतुच्छति चरति
२९. तेन कतं कीतं बद्धमभिसंखतं संसट्ठं हतं हन्ति जितं जयति दिब्बति खणति तरति चरति वहति जीवति
३०. तस्स संवत्तति
३१. ततो सम्भूतमागतं
३२. तत्थ वसति विदितो भत्तो नियुत्तो
३३. तस्सिदं
३४. णो
३५. गवादीहि यो
३६. पितितो भातरि रेय्यण्
३७. मातितो च भगिनियं छो
३८. मातापितुस्वामहो
३९. हिते रेय्यण्
४०. निन्दा ञ्ञातप्पपटिभागरस्सदया सञ्ञासु को
४१. तमस्स परिमाणं णिको च
४२. यतेतेहि त्तको
४३. सब्बा चावन्तु
४४. किम्हा रति-रीव-रीवतक-रित्तका
४५. संजातं तारकाबित्वीतो
४६. माने मत्तो
४७. तग्घो चुद्धं
४८. णो च पुरिसा
४९. अयुभद्वितीहंसे

१२. न+इ०। १४. क, णिका। १९. तं इध अत्थि। २३. अमातो अच्चो। २४. तो+इ०। २५. कण्-णेय्य-णेय्यक-य+इया। २८. न्ति+अर०। ति+उ०। ३३. स्स+इ०। ३८. तु+आ०। ४०. निन्दा-अञ्ञात-अप्प-पटिभाग-रस्स-दया-सञ्ञासु को। ४२. यतो एतेहि त्तको। ४५. वितो-इतो। ४७. च उद्धं। ४९. अयो उभ-द्वि-तीहि अंसे।

५०. संख्याय सच्चुतीसासवसन्ताधिकारस्मिं सतसहस्से डो
५१. तस्स पूरणेकादसादितो वा
५२. म पञ्चादिकतीहि
५३. सतादीनमि च
५४. छा ट्ठ-ट्ठमा
५५. एका काक्यसहाये
५६. वच्छादीहि तनुत्ते तरो
५७. किम्हा निद्धारणे रतर-रतमा
५८. तेन दत्ते लिया
५९. तस्स भावकम्मेसु त्त-तात्तन-ण्य-णेय्य-णिय-णिया
६०. ब्य वद्धदासा वा
६१. नण् युवा खो च वस्स
६२. अणुवादित्विमो
६३. भावा तेन निब्बत्ते
६४. तरतमिस्सिकियिट्ठा' तिसये
६५. तन्निस्सिते ल्लो
६६. तस्स विकारावयवेसु ण-णिक-णेय्य-मया
६७. जतुतो स्सण् वा
६८. समूहे कण्ण-णिका
६९. जनादीहि ता
७०. इयो हिते
७१. चक्खुवादितो स्सो
७२. ण्यो तत्थ साधु
७३. कम्मा नियञ्ञा
७४. कथादित्विको
७५. पथादीहि णेय्यो
७६. दक्खिणायारहे
७७. रायो तुमन्ता
७८. तमेत्थस्सत्थीति मन्तु
७९. वन्त्ववण्णा
८०. दण्डादित्विक ई वा
८१. तपादीहि स्सी
८२. मुखादितो रो
८३. तुण्डयादीहि भो
८४. सद्धादित्व
८५. णो तपा
८६. आल्वभिज्झादीहि
८७. पिच्छादित्विलो
८८. सीलादितो वो
८९. मायामेधाहि वी
९०. सिस्सरे आम्युवामी
९१. लक्ख्या णो अ च
९२. अङ्गा नो कल्याणे

---

५०. सति-उति-ईस-आस-दसन्ताधिकारस्मिं। ५३. नं+इ। ५५. एका क-आकी असहाये। ५८. ल-इया। ६२. अणु-आवितो इमो। ६४. तर-तम-इस्सिक-इय-इट्ठा अतिसये। ७३. निय, आ। ७४. वितो-इको। ७८. तं एत्थ अस्स अत्थि, इति मन्तु। ७९. न्तु+अ०। ८०. तो+इ०। ८४. तो अ। ८६. लु+अ०। ८७. तो+इ०। ९०. आमी-उवामी।

९३. सो लोमा
९४. इमिया
९५. तो पञ्चम्या
९६. इतोतेत्तो कुतो
९७. अभ्यादीहि
९८. आद्यादीहि
९९. सब्बादितो सत्तम्या त्र-त्था
१००. कत्थेत्थकुत्रात्र क्वेहिध
१०१. धि सब्बा वा
१०२. या हिं
१०३. ता हं च
१०४. कुहिं कहं
१०५. सब्बेकञ्ञयतेहि काले दा
१०६. कदा कुदा सदाधुनेदानि
१०७. अज्जसज्ज्वपरज्ज्वेतरहि करहा
१०८. सब्बादीहि पकारे था
१०९. कथमित्थं
११०. धा संख्याहि
१११. वेकाज्झं
११२. द्वितीहेधा
११३. तब्बति जातियो
११४. वारसंख्याय क्खत्तुं
११५. कतिम्हा
११६. बहुम्हा धा च पच्चासत्तियं
११७. सकिं वा
११८. सो वीच्छाप्पकारेसु
११९. अभूततब्भावे करासभूयोगे विकारा ची
१२०. दिस्सन्तञ्ञे'पि पच्चया
१२१. अञ्ञस्मि
१२२. सकत्थे
१२३. लोपो
१२४. सरानमादिस्सायुवण्णस्साएओ णानुबन्धे
१२५. संयोगे क्वचि
१२६. मज्झे
१२७. कोसज्जाज्जवपारिसज्जसुहज्ज मद्दवारिस्सासभाजञ्ञथेय्यबाहुसच्चा
१२८. मनादीनं सक्
१२९. उवण्णस्सावङ् सरे
१३०. यम्हि गोस्स च

---

९६. इतो, अतो, एत्तो, कुतो। १००. कत्थ, एत्थ, कुत्र, अत्र, क्व, इह, इध। १०५. सब्ब-एक-अञ्ञ-य-त॰। १०६. सदा अधुना इदानि। १०७. अज्ज, सज्जु, अपरज्जु, एतरहि, करहा। १०९. थं+इ॰। १११. वा एका ज्झं। ११२. हि+ए॰। ११९. अभूत-तब्भावे कर-अस-भू-योगे विकारा ची। १२०. न्ति+अ॰। १२४. सरानं आदिस्स अ-इ-उवण्णस्स आ-ए-ओ ण-अनुबन्धे। १२७. कोसज्ज-अज्जव-पारिसज्ज-सुहज्ज-मद्दव-आरिस्स-आसभ-आजञ्ञ-थेय्य-बाहुसच्चा। १२९. स्स+अ॰।

१३१. लोपो' वण्णिवण्णानं
१३२. रानुवन्धे'न्त सरादिस्स
१३३. किसमहुतमिमे कस्महा
१३४. आयुस्सायस्मन्तुम्हि
१३५. जो वुद्धस्सियिट्ठेसु
१३६. वाळ्हन्तिकपसत्थानं साधने दसा
१३७. कणकनाप्पयुवानं
१३८. लोपो वीमन्तु-वन्तूनं
१३९. डे सतिस्स तिस्स
१४०. एतस्सेट् त्तके
१४१. णिकस्सियो वा
१४२. अधातुस्स के 'स्यादितो घे'स्सि

इति (मोग्गल्लाने व्याकरणे) णादिकण्डो चतुत्थो

पञ्चमो कण्डो

(खादि)

१. तिज-मानेहि ख-सा खमा-वी मंसासु
२. किता तिकिच्छा-संसयेसु छो
३. निन्दायं गुप-वधा वस्स भो च
४. तुंस्मा लोपो चिच्छायं ते
५. ईयो कम्मा
६. उपमानाचारे
७. आधारा
८. कत्तुतायो
९. च्यत्थे
१०. सद्दादीनि करोति
११. नमोत्वस्सो
१२. धात्वत्थे नामस्मि
१३. सच्चादीहापि
१४. क्रियत्था
१५. चुरादितो णि
१६. पयोजकव्यापारे णापि च
१७. क्यो भावकम्मेस्वपरोक्खेसु मानन्तत्यादिसु
१८. कत्तरि लो

---

१३१. अवण्ण-इवण्णानं। १३३. किस-महतं इमे कस्-महा। १३४. स्स+आ०। १३५. वुद्धस्स इय-इट्ठेसु। १३६. वाळ्हअन्तिक-पसत्थानं साध-नेद-सा। १३७. कण-कना अप्पयुवानं। १४१. स्स+इ०। १४२ घे अस्स इ।

पञ्चमो कण्डो

४. च+इ०। ६. ना+आ०। ८. तो+आयो। ९. ची+अत्थे। ११. नमोतो अस्स ओ। १७. क्यो भाव-कम्मेसु अपरोक्खेसु मान-न्त-ति आदिसु।

१९. मं च रुधादीनं
२०. णिणाप्यापीहि वा
२१. दिवादीहि यक्
२२. तुदादीहि को
२३. ज्यादीहि क्ना
२४. क्यादीहि क्णा
२५. स्वादीहि क्णो
२६. तनादित्वो
२७. भावकम्मेसु तब्बानीया
२८. घ्यण्
२९. आस्से च
३०. वदादीहि यो
३१. किच्च-घच्च-भच्च-भब्ब-लेय्या
३२. गुहादीहि यक्
३३. कत्तरि ल्तु-णका
३४. आवी
३५. आसिंसायमको
३६. करा णनो
३७. हातो वीहि-कालेसु
३८. विदा कू
३९. वितो ञातो
४०. कम्मा
४१. क्वचण्
४२. गमा रू
४३ समानञ्ञभवन्तयादितुपमाना दिसा कम्मे रीरिक्खका
४४. भावकारकेस्वघण्-घका
४५. दाधात्वि
४६. वमादीहथु
४७. क्वि
४८. अनो
४९. इत्थियमणक्तिकयक्या च
५०. जा-ह्राहि नि
५१. करा रिरियो
५२. इ-कि-ती सरूपे
५३. सीलाभिक्खञ्ञावस्सकेसुणी
५४. थावरित्तरभङ्गुरभिदुरभासुर भस्सरा
५५. कत्तरि भूते क्तवन्तु-क्तावी
५६. क्तो भाव-कम्मेसु
५७. कत्तरि चारम्भे
५८. ठास-वस-सिलिस-सी-रुह-जर-जनीहि
५९. गमनत्थाकम्मकाधारे च

---

२०. णि-णापि-आपीहि वा। २३. जि+आ०। २४. की+आ०। २५. सु+आ०। २६. तो+ओ। २९. आस्स+ए। ३०. व+आ०। ३२. हु+आ०। ३५. यं+अको। ४१. क्वचि अण्। ४३. समान-अञ्ञ-भवन्त-य आदितो उपमाना दिसा कम्मे री-रिक्ख-का। ४४. सु+अ०। ४५. दा-धातो इ। ४६. वम-आदीहि अथु। ४९. इत्थियं अ, ण, क्ति, क, यक्, या च। ५३. ल+आ०। ञ्ञ+आ०। ५४. थावर-इत्तर-भङ्गुर-भिदुर-भासुर-भस्सरा। ५७. च+आ०।

६०. आहारत्था
६१. तुं-ताये-तवे भावे भविस्सति क्रियायं तदत्थायं
६२. पटिसेधे' लंखलूनं तून-क्त्वा-नक्त्वा वा
६३. पुब्बेककत्तुकानं
६४. न्तो कत्तरि वत्तमाने
६५. मानो
६६. भाव-कम्मेसु
६७. ते स्सपुब्बानागते
६८. ण्वादयो
६९. खछसानमेकस्सरोदि द्वे
७०. परोक्खायञ्च
७१. आदिस्मा सरा
७२. न पुन
७३. यथिद्दठं स्यादिन्तो
७४. रस्सो पुब्बस्स
७५. लोपो' नादिव्यञ्जनस्स
७६. ख-छ-सेस्वस्सि
७७. गुपिस्सुस्स
७८. चतुत्थदुतियानं ततियपठमा
७९. कवग्ग-हानं चवग्ग-जा
८०. मानस्स वी परस्स च मं
८१. कितस्सासंसये ति वा
८२. युवण्णानमे ओप्पच्चये
८३. लहुस्सुपन्तस्स
८४. अस्सा णानुबन्धे
८५. न ते कानुबन्धनागमेसु
८६. वा क्वचि
८७. अञ्ञत्रापि
८८. प्ये सिस्सा
८९. एओनमयवा सरे
९०. आयावा णानुबन्धे
९१. आस्साणापिम्हि युक्
९२. पदादीनं क्वचि
९३. मं वा रुधादीनं
९४. क्विम्हि लोपो' न्तव्यञ्जनस्स
९५. पररूपमयकारे ब्यञ्जने
९६. मनानं निग्गहीतं
९७. न ब्रूस्सो
९८. कगा चजानं घानुबन्धे
९९. हनस्स घातो णानुबन्धे
१००. क्विम्हि घो परिपच्च समोहि
१०१. परस्स घं से

---

६७. ते (=न्तमाना) सपुब्बा अनागते। ६८. णु+आ०। ६९. ख-छ-सानं एक-स्सरोदि द्वे। ७३. यथा+इद्दठं। ७६. ख-छ-सेसु अस्स इ। ७७. स्स+उ०। ८१. स्स+आ०। ८२. इ+उ=यु। नं ए-ओ। ८३. स्स+उ०। ८४. अस्स आ। ८५. न ते (ए-ओ-आ) क+अनुबन्ध—न+आगमेसु। ८८. सिस्स आ। ८९. ए-ओनं अय-अवा सरे। ९०. आय-आवा णानुबन्धे। ९१. स्स+आ०। ९६. म-नानं। ९७. ब्रूस्स+ओ।

१०२. जि-ह्रानं गिं
१०३. घास्स ह्रो
१०४. णिम्हि दीघो दुसस्स
१०५. गुहिस्स सरे
१०६. मुह-वहानञ्च ते कानुबन्धेऽत्वे
१०७. वहस्सुस्स
१०८. धास्स हि
१०९. गमादि-रानं लोपोऽन्तस्स
११०. वचादीनं वस्सुट् वा
१११. अस्सु
११२. वद्धस्स वा
११३. यजस्स यस्स टियी
११४. ठास्सि
११५. गा-पानमी
११६. जनिस्सा
११७. सासस्स सिस् वा
११८. करस्सा तवे
११९. तुं-तून-तब्बेसु वा
१२०. वास्स ने जा
१२१. सकापानं कुक्कु णे
१२२. नितो चिस्स छो
१२३. जर-सदानमीम् वा
१२४. दिसस्स पस्स दस्स दस् द दक्खा
१२५. समाना रो री-रिक्ख-केसु
१२६. दहस्स दस्स डो
१२७. अनघणस्वापरीहि ळो
१२८. अत्यादिन्तेस्वत्थिस्स भू
१२९. अआस्साआदिसु
१३०. न्तमानान्तियियुंस्वादि लोपो
१३१. पादितो ठास्स वा ठहो क्वचि
१३२. दास्सियङ्
१३३. करोतिस्स खो
१३४. पुरस्मा
१३५. नितो कमस्स
१३६. युवण्णानमियङ्वङ् सरे
१३७. अञ्ञादिस्सास्सी क्ये
१३८. तनस्सा वा
१३९. दीघो सरस्स
१४०. सानन्तरस्स तस्स डो
१४१. कसस्सिम् च वा
१४२. घस्तो-अस्ता
१४३. पुच्छादितो

---

१०६. ते=तकारे। १०७. स्स+उ०। १०९. रानं=रकारन्तानं। ११०. स्स+उद्। १११. अस्स उ। ११४. ठास्स इ। ११५. गा-पानं ई। ११६. जनिस्स आ। ११८. स्स+आ। १२१. क+आ०। १२३. नं ईम्। १२७. अन-घणसु आ-परीहि ळो। १२८. ति+आ०। सुव-अ०। १२९. अ-आ-स्सा आदिसु। १३०. न्त-मान-अन्त-इय-इयुंसु आदि लोपो। १३२. स्स+इ०। १३६. इ-उवण्णानं इयङ्-उवङ् सरे। १३७. अ-आदिस्स आस्स ई क्ये। १३८. स्स+आ। १४०. स+अ०। १४१. स्स+इ०।

१४४. सास-वस-संस-ससा थो
१४५. घो धहभेहि
१४६. दहा ढो
१४७. वहस्सुम् च
१४८. रुहादीहि हो ळ च
१४९. मुहा वा
१५०. भिदादितो नो क्त-क्तवन्तूनं
१५१. दात्विन्नो
१५२. किरादीहि णो
१५३. तरादीहि रिण्णो
१५४. गो भञ्जादीहि
१५५. सुसा खो
१५६. पचा को
१५७. मुचा वा
१५८. लोपो वड्ढा क्तिस्स
१५९. क्विस्स
१६०. णिणापीनं तेसु
१६१. क्वचि विकरणानं
१६२. मानस्स मस्स
१६३. ञिलस्से
१६४. प्यो वा त्वास्स समासे
१६५. तुं याना
१६६. हना रच्चो
१६७. सासाधिकरा चचरिच्चा
१६८. इतो च्चो
१६९. दिसा वानवा स् च
१७०. ञि व्यञ्जनस्स
१७१. रा नस्स णो
१७२. न न्तमानत्यादीनं
१७३. गमयमिसासदिसानं वा च्छङ्
१७४. जर-मराणमीयङ्
१७५. ठा-पानं तिट्ठ-पि वा
१७६. गम-वद-दानं घम्म-वज्ज-दज्जा
१७७. करस्स सोस्स कुब्ब-कुरु-कयिरा
१७८. गहस्स घेप्पो
१७९. णो निग्गहीतस्स

इति (मोग्गल्लाने व्याकरणे) खादिकण्डो पञ्चमो

---

१४५. घ-ह-भेहि =घकारन्त-हकारन्त-भकारन्तेहि क्रियत्थेहि। १४७. स्स+उ०। १५१. दातो इन्नो। १६३. ञि-लस्स ए। १६७. स-आस-अधिकरा च-च-रिच्चा। १६९. दिसा वान-वा स् च। १७३. गम-यम-इस-आस-दिसानं वा च्छङ्। १७४. णं+ई०।

छट्ठो कण्डो

(त्यादि)

१. वत्तमाने ति अन्ति, सि थ, मि म, ते अन्ते, से व्हे, ए म्हे
२. भविस्सति स्सति स्सन्ति, स्ससि स्सथ, स्सामि स्साम, स्सते स्सन्ते, स्ससे स्सव्हे, स्सं स्साम्हे
३. नामे गरहाविम्हयेसु
४. भूते ई उं, ओ त्थ, इं म्हा, आ ऊ, से व्हं, अ म्हे
५. अनज्जतने आ ऊ, ओ त्थ, अ म्हा, त्थ त्थुं, से व्हं, इं म्हसे
६. परोक्खे अ उ, ए त्थ, अ म्ह, त्थ रे, त्थो व्हो, इ म्हे
७. एय्यादो वातिपत्तियं स्सा स्संसु, स्से स्सथ, स्सं स्सम्हा, स्सथ स्सिंसु, स्ससे स्सव्हे, स्सं स्साम्हसे
८. हेतुफलेस्वेय्य एय्युं, एय्यासि एय्याथ, एय्यामि एय्याम, एथ एरं, एथो एय्यव्हो, एय्यं एय्याम्हे
९. पञ्हपत्थनाविधिसु
१०. तु अन्तु, हि थ, मि म,; तं अन्तं, स्सु व्हो, ए आमसे
११. सत्यरहेस्वेय्यादि
१२. सम्भावने वा
१३. मायोगे ई आ आदि
१४. पुब्बपरच्छक्कानमेकानेकेसु तुम्हाम्हसेसेसु द्वे द्वे मज्झिमुत्तमपठमा
१५. आ-ईस्सादिस्वञ् वा
१६. अआदिस्वाहो ब्रूस्स
१७. भुस्स वुक्
१८. पुब्बस्स अ
१९. उस्संस्वाहा वा
२०. त्यन्तीनं टटू
२१. ई-आदो वचस्सोम्
२२. दास्स दं वा मि-मेस्वद्वित्ते
२३. करस्स सोस्स कुं
२४. का ई आदिसु
२५. हास्स चाहङ् स्सेन
२६. लभ-वस-च्छिद-भिद-रुदानं च्छङ्
२७. मुज-मुच-वच-विसानं क्खङ्
२८. आ ई आदिसु हरस्सा
२९. गमिस्स
३०. डंसस्स च छङ्
३१. हूस्स हे-हेहि-होहि स्सच्चावो
३२. णा-नासु रस्सो

---

११. सत्ति-अरहेसु एय्य आदि । १४. नं+ए० । म्ह+अ० । म+उ० । १५. सु+अ० । १६. सु+आ० । १९. उस्स अंसु आहा वा । २०. ति-अन्तीनं ट-टू । २१. स्स+ओ । २८. स्स+आ । ३१. स्सति+आवो ।

३३. आ ई ऊ म्हा स्सा स्सम्हानं वा
३४. कुसरुहेहीस्स छि
३५. अ ई स्सादीनं ब्यञ्जनस्सिञ्
३६. ब्रूतो तिस्सीञ्
३७. क्यस्स
३८. एय्याथस्से अ आ ई थानं ओ अ अं त्थ त्थो व्होक्
३९. उं स्सिं स्संसु
४०. एओत्ता सुं
४१. हूतो रेसुं
४२. ओस्स अ इ त्थ त्थो
४३. सि
४४. दीघा ईस्स
४५. म्हात्थानमुञ्
४६. इंस्स च सिञ्
४७. एय्युं स्सुं
४८. हिस्सतो लोपो
४९. क्यस्स स्से
५०. अत्थितेय्यादिच्छन्नं स-सु-सस्थ सं-साम
५१. आदिद्विन्नमिया इयुं
५२. तस्स थो
५३. सि-हिस्वट्
५४. मि-मानं वा म्हि-म्हा च
५५. एसु सु्
५६. ई आदो दीघो
५७. हिमिमेस्वस्स
५८. सका णास्स ख ई आदो
५९. स्से वा
६०. तेसु सुतो क्णोक्णानं रोट्
६१. आस्स सनास्स नायो तिम्हि
६२. आम्हि जं
६३. एय्यस्सियाना वा
६४. ई सच्चादिसु क्नालोपो
६५. स्सस्स हि कम्मे
६६. एतिस्मा
६७. हना छेखा
६८. हातो ह
६९. दक्खखहेहि होहीहि लोपो
७०. कयिरेय्यस्सेय्युमादीनं
७१. टा
७२. एथस्सा
७३. लभा इंईनं थंथा वा
७४. गुरुपुब्बा रस्सा रे न्ते न्ती नं
७५. एय्येय्यासेय्यन्नं टे
७६. ओ-विकरणस्सु परच्छक्के
७७. पुब्बच्छक्के वा क्वचि
७८. एय्यामस्सेमु च

इति (मोग्गल्लाने ब्याकरणे) त्यादिकण्डो छट्ठो

---

३४. कुस-रुहेहि ईस्स छि। ३५. स्स + इञ्। ३६. स्स + ईञ्। ५०. अत्थितो + एय्यादि०। ५१. न्नं + इ०। ५३. सु + अट्। ५७. सु + अ०। ७६. स्स + उ। ७८. एय्यामस्स एमु च।

दूसरा परिशिष्ट

मोग्गल्लान धातु-पाठ

दूसरा परिशिष्ट

मोग्गल्लान-धातुपाठो

अ-अन्तो उच्चारणत्थो, सेसा धात्वत्था

संख्या

२५ अग्घ (भू) अग्घने=योग्य होना, बराबरी करना, कीमत का होना

३ अंक (भू) लक्खणे=निशान बनाना, लिख लेना

४५१ अङ्क (चु) लक्खणे=निशान बनाना, लिख लेना

२२ अङ्ग (भू) गमनत्थे=जाने के अर्थ में

४५९ अच्च (चु) पूजायं=पूजा करना

३८ अच्च (भू) पूजायं=पूजा करना

४८ अज (भू) गमने[1]=जाना

६१ अज्ज (भू) गमने=जाना

३७ अञ्च (भू) गमने=जाना

४६९ अञ्च (चु) पूजायं=पूजा करना

४३ अञ्छ (भू) आयामे=खींचना। निकालना

५८ अञ्ज (भू) व्यत्ति मक्खन०=व्यक्त करना, मालिश करना, जाना

५८ अञ्ज (भू) व्यत्तिमक्खनगतिकन्तिसु=व्यक्त करना, मालिश करना, जाना, चमकना

---

१. अज ('सम' पूर्वक)+य=समज्जा। ५.४९

संख्या

४६४ अज्ज (चु) मज्जने=साफ करना
७० अट (भू) गमनत्थे=घूमना
९६ अण (भू) सद्दत्थे=शब्द करना.
४९७ अत्थ (चु) याचने[2]=माँगना
१३० अछ (भू) भक्खने=खाना
१३२ अछ (भू) गतियाचनेसु=जाना; माँगना
१४९ अन (भू) पाणने=जीना, रक्षा करना
११७ अन्द (भू) बन्धने=बान्धना
१९२ अम (भू) गमने=जाना
१६८ अम्ब (भू) सद्दे=शब्द करना
१९५ अय (भू) गमनत्थे=जाना
२१२ अर (भू) गमने[3]=जाना
२६८ अरह (भू) पूजायं=पूजा करना
२३० अव (भू) रक्खणे=रक्षा करना
४२२ अस (जि) भोजने=खाना
३७३ अस (दि) क्खेपने=फेकना
३०३ अस (भू) भुवि[4]=होना

---

२. अत्थ+आपि=अत्थापेति। ५.१३
३. ०+अन=अरण। ५.१७१
४. विधि ६.५०—

अस्स अस्सु
अस्स अस्सुथ
अस्सं अस्साम

०+एय्य=सिया। ०+एय्युं=सियुं। ६.५१
०+ति=अत्थि। ०+तु=अत्थु। ६.५२
०+सि=असि। ०+हि=अहि। ६.५३

संख्या
२३७ अस (भ) अदने=खाना
४८८ आण (चु) पेसने=भेजना, आज्ञा देना
४२७ आप (की) पापुणने=पाना
४२४ आप (त) पापुणने=पाना

०+मि=अम्हि। ०+म=अम्ह। ६.५४
०+मि=अस्मि। ०+म=अस्म। ६.५५
भूत ६.५६—
आसि आसु
आसि आसित्थ
आसिं आसिम्हा
०+अ (परोक्खे)=बभूव
आ (अनज्जतने)=अभवा
स्सा=अभविस्सा
स्सति=भविस्सति। ५.१२१.
०+न्त=सन्तो
मान=समानो
न्ति=सन्ति
न्तु=सन्तु
एय्य=सिया
एय्युं=सियुं
५. ०+स, ति=असिसिसति। ५.७१:७५
०+क्त=आसितं। ५.५६
६. ०('प' पूर्वक)+न्त=पापुणन्तो
ति=पापुणोति; पापेति। ५.१२१
तब्ब=पापुणितब्बं
तुं=पापुणितुं। ५.८५

संख्या

२४० आस (भू) उपवेसने[३]=बैठना
२८८ इ (भू) अज्झने गति कन्तिसु[४]=पढ़ना। जाना
१३ इक्ख (भू) दस्सने=देखना
२२ इङ्ग (भू) गमनत्थे=जाना
३४५ इध (दि) सेसिद्धियं=बढ़ना। उन्नति करना
११८ इन्द (भू) परमिस्सरिये=मालिक बनना। ऐश्वर्य-लाभ करना
१४७ इन्ध (भू) दित्तियं=प्रदीप्त होना
२३८ इस (भू) इच्छायं[५]=चाहना।
२५२ इस्स (भू) इस्सायं=डाह करना
५१९ ईर (चु) खेपे=फेकना। प्रेरणा करना
२४ ईस (दि) इस्सरिये=ऐश्वर्य करना

---

७. ०('उप' पूर्वक)+अन=उपासना। ५.४९
+क्त (भाव; कर्म)=उपासितो। ५.५८
+क्त=आसितं (आधारे, कत्तरि, भावे, कम्मे)। ५.५९
+ति=अच्छति
न्त=अच्छन्तो
मान=अच्छमानो। ५.१७३
८. ०सीले; निपात=इत्वणे। ५.५४
०('अधि' पूर्वक)+प्य=अधिच्च
त्वा=अधीयित्वा
०('सम' पूर्वक)+प्य=समेच्च
त्वा=समेत्वा। ५.१६८
९. ०+स्सति=एहिति; एस्सति। ६.६६
९. ०+तब्ब=एसितब्बं। ५.८३
+ति=इच्छति
न्त=इच्छन्तो

संख्या

२८२ ईह (भू) घट्टने[1] =चेष्टा करना
४२ उञ्छ (भू) उञ्छे=कणों को चुनना
१९८ उसूय (भू) दोसाविकरणे=दोष का आरोप करना
५४६ ऊह (चु) विम्हापने=ठगना
२८३ ऊह (भू) वितक्के=वितर्क करना
६८ एज (भू) कम्पने=काँपना
१७७ उद्रम (भू) अद्रमे=खाना
१२१ उन्द (भू) किलेदने=भिगोना
६९ उञ्छ (भू) उस्सगे=छोड़ना
१४० एध (भू) वुद्धियं=वृद्धि करना
२३९ एस (भू) मग्गने=खोजना
१७ कङ्ख (भू) इच्छायं=चाहना
७७ कट (भू) मद्दने=चूर चूर करना
९२ कड्ढ (भू) कड्ढने=निकालना
९६ कण (भू) सद्दत्थे=शब्द करना
९५ कण (भू) निमीलने=मूँदना
४७७ कण्ठ (चु) सोके=शोक करना
८४ कण्ड (भू) भेदने=तोड़ना
४७८ कण्ड (चु) भेदने=तोड़ना
२३३ कण्डुव (भू) कण्डुवने=खुजलाना
४८७ कण्ण (चु) सवने=सुनना
३१० कत (रु) छेदने=छेदना । काटना
१०४ कत्थ (भू) सिलाघायं=प्रशंसा करना
४८६ कथ (चु) वाक्यापवन्धे=कहना

मान=इच्छमानो । ५.१७३

१०. ० +अ =ईहा । ५.४९

संख्या

१५० कन (भू) दितिगतिकन्तिसु=चमकना; जाना
११४ कन्द (भू) व्हानरोदनेसु=पुकारना; रोना
१६२ कप्प (भू) सामत्थिये=समर्थ होना
५१३ कप्प (चु) वितक्के=वितर्क करना
१८२ कम (भू) पदविक्खेपे=टहलना
५१६ कम (चु) इच्छायं[11]=चाहना
१५६ कम्प (भू) चलने=काँपना
१६६ कम्ब (भू) संवरणे=आच्छादित करना
४४३ कर (त) करणे[12]=करना

---

११. ०+ति (पुनः पुनः)=चङ्कमति। ५.७०
०('नि' पूर्वक)+ति=निक्खमति। ५.१३५
१२. ०+णि=कारेति (प्रेरणार्थक)
णापि=कारापेति (प्रेरणार्थक)। ५.१६ : १६०
०+णि=कारेन्तो; कारयन्तो
णापि=कारापेन्तो; कारापयन्तो; कारापेति; कारापयति। ५.२०
०+तब्ब, अनीय=कत्तब्बं। करणीयं। ५.२७
०+घ्यण्=कारियं। ५.२८
०+य=किच्चं। ५.३१
०+णन=कारणं (कत्तरि)। ५.३६
०+अण=कुम्हकारो। ५.४१
०+अ=करो (भाव)। ५.४४
०+अ (कर्म)=ईसक्करो; दुक्करो; सुकरो
०+ण=कारा
अन=कारणा। ५.४९
०+रिरिय=किरिया। ५.५१
०+णी (सीले)=अवस्सकारी। ५.५३

संख्या

५२६ कल (चु) संख्याने=गिनना

---

० + क्त = कतो । ५.५६
० ('प' पूर्वक) + क्त = पकतो (क्रियारम्भ में) । ५.५७
० + तुं, ताये, तवे = कातुं, कत्ताये, कातवे । ५.६१
० + णक = कारक । ५.८४
० + क्त = कतो । ५.१०६
० + तवे = कातवे । ५.११८
० + तुं = कातुं, कत्तुं
तून = कातून, कत्तून
तब्बं = कातब्बं, कत्तब्बं
० ('सं' पूर्वक) + यण = सङ्खारो (कम्मं) सङ्खरीयति । ५.१३३
० ('पुर' पूर्वक) निपात = पुरक्खत्वा; पुरेक्खारो । ५.१३४
० + मान = कराणो
० ('स', 'असं', 'अधि' पूर्वक) + य्य = सक्कच्च, असक्कच्च, अधि-
किच्च । ५.१६७
० + न्त = करोन्तो
मान = कुब्बमानो
न्ति = करोन्ति । ५.१७२
० + ति = कुब्बति, कयिरति, करोति
न्त = कुब्बन्तो, कयिरन्तो, करोन्तो
मान = कुब्बमानो, कयिरमानो, कराणो
ते = कुब्बते, कुरुते, कयिरते । ५.१७७
० + मि = कुम्मि, करोमि
म = कुम्म, करोम । ६.२३
० + ई = अकासि, अकरि
उं = अकंसु, अकरिंसु

संख्या

२४५ कस (भू) गतिहिंसा विलेखनेसु"=जाना । मारना । जोतना
३२२ का (दि) सद्दे=शब्द करना
२५५ कास (भू) दित्तियं=शोभित होना
३५ किब्ब (भू) मद्दने=तोड़ना । चूर चूर कर देना
१०० कित (भ) निवासे"=रहना

आ=अका, अकरा । ६.२४
०+स्सति=काहति, करिस्सति
स्सा=अकाहा; अकरिस्सा । ६.२६
०+ई=अकासि, अका । ६.४४
०+इं=अकासिं, अकरिं
इम्हा=अकासिम्हा, अकरिम्हा
त्थ=अकासित्थ, अकरित्थ । ६.४६
कर (=कयिर)+एय्युं=कयिरुं
एय्यासि=कयिरासि
एय्याथ=कयिराथ
एय्यामि=कयिरामि
एय्याम=कयिराम । ६.७०
०+एय्य=कयिरा । ६.७१
०+एथ=कयिराथ । ६.७२
०+एय्य=करे, करेय्य
एय्यासि=करे, करेय्यासि
एय्यं=करे, करेय्यं । ६.७५
१३. ०+क्त=किट्ठं, कट्ठं
तब्ब=कसितब्बं । ५.१४१
१४.०+छ (संसये)=विचिकिच्छति; विचिकिच्छा । ५.२
०+छ (तिकिच्छायं)=तिकिच्छति; तिकिच्छा । ५.२:८१

संख्या

४९३ कित्त (चु) संसद्दे=बार बार, या विशेष रूप से कहना
३९८ किर (तु) विकिरणे[15]=बिखेर देना
१८७ किलम (भू) गिलाने=ग्लानि को प्राप्त होना
३६८ किलिस (दि) उपतापे=क्लेश पाना
४२३ की (की) दब्बविनिमये[16]=खरीदना
२२४ कील (भू) बन्धे=बाँधना
२८५ कीळ (भू)=खेल करना
२ कु (भू) सद्दे=शब्द करना
८९ कुण्ड (भू) दाहे=जलाना
३८६ कुच (तु) संकोचे=सिकोड़ना.
३४३ कुध (दि) कोपे=क्रोध करना
६४ कुज (भू) अव्यत्ते सद्दे=पक्षियों का आवाज करना
३९० कुट (तु) कोटिल्ये=टेढ़ा होना
७५ कुट (भ) च्छेदने=काटना
४७ कुट (भू) च्छेदने=काटना
४७१ कुट (चु) आकोटने=मारना पीटना
१९६ कुण (भू) सद्दत्थे=शब्द करना
३५४ कुप (दि) कोपे[17]=क्रोध करना
४०१ कुर (तु) सद्दे=शब्द करना
४०६ कुरु (तु) च्छेदने=काटना
२५१ कुस (भू) अक्कोसे आव्हाने च[18]=बुरा-भला कहना। पुकारना

---

१५. ०+क्त=किण्णो। +क्तवतु=किण्णवा। ५.१५२
१६. ०+ति=किणाति। ६.३२
१७. ०+अ (परोक्खे)=चुकोप। ५.७९
१८. ०+ई (भूत)=अक्कोच्छि; अक्कोसि। ६.३४
०+तब्ब=कोसितब्बं

संख्या

५३८ कुस (चु) अक्कोसे=बुरा-भला कहना
२२५ कूल (भू) आवरणे=ढकना
२२७ केल (भू) चलने=हिलना
४७० कोह (चु) च्छेदने=छेदना
७५ कोह (चु) च्छेदने=छेदना
३६८ क्लम (भू) गिलाने=परेशान होना
३६८ क्लिस (दि) उपतापे=क्लेश उठाना
६७ खञ्ज (भू) गतिवेकल्ले=लंगड़ाना
१५१ खण (भू) अवदारले=फाड़ना
८७ खण्ड (भू) च्छेदने=काटना
४७८ खण्ड (चु) च्छेदने=काटना
१५१ खन (भू) अवदारणे[19]=खनना
१८३ खम (भू) सहने=सहना। क्षमा करना
१७५ खम्भ (भू) पतिबन्धे=आड़ देना
२८९ खर (भू) विनासे=नाश होना
५२४ खल (भ) सोचेय्ये=साफ करना
२१६ खल (भू) कम्पने=काँपना
२८९ खा (भू) कथने=कहना
३८१ खा (दि) पकासने=प्रकाशित होना
३३८ खिद (दि) असहने=खिन्न होना
३३६ खिद (दि) दीनभावे[20]=दुःखित होना
३९५ खिप (तु) पेरणे=फेंकना
४०५ खिल (तु) भेदने=तोड़ना
४१८ खिप (जि) क्खेपे[21]=फेंकना

---

१९. ०+क्त=खतो। ५.१०९
२०. ०+क्त=खिन्नो। क्तवन्तु=खिन्नवा
२१. ०+क=खिपो। ५.४४
०+णक=खिपको। ५.८७

संख्या

२५ खी (दि) खये =क्षय होना
९ खी (भू) खये = ,,
४२५ खी (की) खये[22]= ,,
४३८ खी (सु) खये = ,,
१३६ खुद (भू) जिघच्छायं=भूख लगना
३५९ खुभ (दि) सञ्चलने=क्षुब्ध होना
१७२ खुभर (भू) सञ्चलने= ,,
४०२ खुर (तु) च्छेदनविलेखनेसु=काटना। खुरेदना
२२७ खेल (भू) चलने=खेलना
२८९ ख्या (भू) कथने=कहना
६३ गज्ज (भू) सद्दे =गरजना
४८६ गण (चु) संख्याने=गिनना
१२४ गद (भू) व्यत्तवचने=साफ साफ बोलना
४९५ गन्थ (चु) गन्थने=गूथना
५०६ गन्ध (चु) सूचने=सूचित करना
१७६ गब्भ (भू) पागब्भिये=बकवाद करना
१९२ गम (भू) गमने[23]=जाना

---

२२. ०+क्त=खीणो। +क्तवन्तु=खीणवा। ५.१५२
२३. ०+आ=अगमा; गमा
ई=अगमी; गमी
स्सा=अगमिस्सा; गमिस्सा। ६.१५
०+स्सं=गच्छं; गच्छिस्सं। ६.२६
०+आ=अगा; अगमा। +ई=अगा; अगमी। ६.२९
०+आ=अगञ्छा; अगच्छा। +ई=अगञ्छि; अगच्छि। ६.३०
०+आ=गमा; गम
ई=गमी; गमि

संख्या

२०९ गर (भू) सेचने=सींचना

२७७ गरह (भू) निन्दायं=निन्दा करना

२३७ गस (भू) अदने[१४]=खाना

२१७ गल (भू) अदने= ,,

२३९ गवेस (भू) मग्गने=खोजना

३१८ गह (रू) उपादाने[१५]=पकड़ना

ऊ=गमू; गमु

म्हा=गमिम्हा; गमिम्ह

स्सा=गमिस्सा; गमिस्स

म्हा=गमिस्सम्हा; गमिस्सम्ह। ६.३३

०+उं=अगमिंसु; अगमंसु; अगमुं। ६.३९

०+म्हा=अगमुम्हा; अगमिम्हा

त्थ=अगमुत्थ; अगमित्थ। ६.४५

०+हि=गच्छ; गच्छाहि। ६.४८

०+एय्युं=गच्छुं; गच्छेय्युं। ६.४७

०+न्ति; न्ते=गच्छरे। गमिस्सरे। ६.७४

०+य=गम्मं। ५.३०

०+रू=वेदगू; पारगू। ५.४२

०+अन=गमनं। ५.४८

०+अ (परोक्खे)=जगाम। ५.७०

०+तब्ब=गन्तब्बं। ५.९६

०+क्त=गतो। ५.१०९

०+ति, न्त मान=गच्छति; गच्छन्तो; गच्छमानो। ५.१७३

०+ति, न्त, मान=घम्मति; घम्मन्तो; घम्ममानो। ५.१७६

२४. ०+क्वी=(भत्तं गसन्ति गण्हन्ति वा एत्थ) भत्तग्गं। ५.९४:४७

२५. ०+अ (भाव)=पग्गहो; निग्गहो। ५.४४

संख्या
३२२ गा (दि) सद्दे[26]=गाना
१४१ गाध (भू) पतिठ्ठायं=प्रतिष्ठित होना
२८४ गाह (भू) विलोळने=थाह लेना
४३४ गि (सु) सद्दे=कहना
४२६ गि (किं) सद्दे= ,,
२ गिर (भू) निगिरणे=निगलना
३९९ गिर (तु) निगिरणे=निगलना
४०४ गिल (तु) अदने=खाना
३६२ गिला (दि) हासक्खणे=दुःखित होना
६४ गुज (भू) अव्यत्तेसद्दे=गूँजना
३ गुण (भू) आमन्तणे=आमन्त्रित करना
१५३ गुण (भू) रक्खणे[27]=रक्षा करना
४७६ गुण्ठ (चु) वेठने=लपेटना
२६ गुध (दि) परिवेठने=चारो ओर से लपेटना
२७४ गुह (भू) संवरणे[28]=ढकना

०+क्वी=सलाकग्गं। ५.४७
०+क्वी (भत्तं गण्हन्ति एत्थ)=भत्तग्गं। ५.४९
०+त्वा=गहेत्वा। ५.१६३
०+ति, न्त, मान=घेप्पति; घेप्पन्तो; घेप्पमानो। ५.१७८
०+तब्ब, तुं, न्त=गण्हितब्बं, गण्हितुं, गण्हन्तो
२६. ०+क्त=गीतं। +त्वा=गायित्वा। ५.११५
२७. ०+छ (निन्दायं)=जिगुच्छा। जिगुच्छति। ५.३
०+अ=जिगुच्छा। ५.४९:६९:७७
२८. ०+यक्=गुय्हं। ५.४९:१०५
०+क=गुहा। ५.४९
०+य, अन=गुय्हं, निगूहनं। ५.१०५
०+क्त=गूळ्हो। ५.१०६:१४८

संख्या

८० घट (भू) ईहायं=चेष्टा करना
२३७ घस (भू) अदने[29]=खाना
४६९ घट्ट (चु) घट्टने=चेष्टा करना
७३ घट्ट (भू) घट्टने= ,,
२०९ घर (भ) सेचने=सींचना
२५९ घंस (भू) घंसने=रगड़ना
३२३ घा (दि) गन्धोपादाने=सूँघना
४०३ घुर (तु) भीमे=घुरघुराना
५३५ घुस (चु) सद्दे=घोषित करना
४ घुस (भू) सद्दे=घोषित करना
१३ चक्ख (भू) दस्सने=देखना
५४ चज (भू) हानियं[30]=छोड़ना
४७३ चट (चु) भेदने=कूटना
११६ चन्द (भू) दित्तिह्लिादनेसु=चमकना, प्रसन्न होना–करना
२०३ चर (भ) गतिभक्खणेसु[31]=चलना, खाना, चरना
२१६ चल (भू) कम्पने=काँपना
१९७ चाय (भू) पूजायं=पूजना
४१२ चि (जि) चये[32]=चुनना

---

२९. ०+छ=जिघच्छा; जिघच्छति। ५.४
३०. ०+ण्यण (भाव)=चागो। ५.४४
३१. ० ('परि' पूर्वक)+य=परिचरिया। ५.४९
३२. ०+ण्यण=चेय्यं। ५.२८
०+अ (भाव)=चयो। ५.४४
०+तब्ब=चेतब्बं। ५.८२
०+क्त, तब्ब, तुं=चितो, चिनितब्बं, चिनितुं। ५.८५
०+('नि' पूर्वक)+अ=निच्छयो। ५.१२२

संख्या

१६ चिक्ख (भू) वचने=कहना
४९२ चित (चु) संचेतने=होश में होना
४८९ चिन्त (चु) चिंतायं=चिन्ता करना
१५८ चुप (भू) मन्द गमने=धीरे चलना
४८५ चुण्ण (चु) संचुण्णने=चूर्ण करना
१६४ चुम्ब (भू) वदन संयोगे=चूमना
४४७ चुर (तु) थेय्ये[33]=चोरी करना
२२७ चेल (भू) चलने=गति करना
४८३ छड्ड (चु) छड्डने=फेंकना
५०४ छद्द (चु) वमने=उलटी करना
५०१ छन्द (भू) इच्छायं=चाहना
५०० छद (चु) संवरणे[34]=छिपाना
३१२ छिद (रु) द्वेधाकरणे[35]=टुकड़े करना
३३५ छिद (दि) द्वेधाकरणे=काटना, टुकड़े करना
३९६ छु (तु) सम्फस्से=छूना।
१९ जग्ग (भू) निद्दाखये=जागना
२४ जग्घ (भू) हसने=हँसना

०+क्य (कर्म)=चीयते। ५.१३९
०+क्त=चिण्णो; क्तवन्तु=चिण्णवा। ५.१५३
३३. ०+णि=चोरयति। ५.१५
०+णि (प्रेरणार्थ)=चोरेति, चोरयति, चोरेन्तो, चोरयन्तो। ५.२०
३४. ०+क्त=छन्नो। +क्तवन्तु=छन्नवा। ५.१५०
३५. ०+स्सा=अच्छेच्छा; अच्छिन्दिस्सा; +स्सति=छेच्छति; छिन्दिस्सति उं=अच्छेच्छुं; अच्छिन्दिंसु। ६.२६
०+अ (परोक्खे)=चिच्छेद। ५.७८
०+क्त, क्तवन्तु=छिन्नो, छिन्नवा। ५.१५०

संख्या

७९ जट (भू) सङ्घाते=ढेर होना
३५२ जन (दि) जनने[36]=उत्पन्न करना
१५७ जप (भू) वचने=बोलना
१७४ जम्भ (भू) गत्तविनामे=जँभाई लेना
२११ जर (भू) जीरणे[37]=जीर्ण होना
२१९ जल (भू) दित्तियं[38]=जलना
जा (की) वयोहानियं[39]=उम्र घटना
२१३ जागर (भू) निद्दाखये[40]=जागना
२९० जि (भू) जये[41]=जीतना

---

३६. ० ('अनु' पूर्वक)+क्त (भाव, कर्म)=अनुजातो। ५.५८
०+घ=जङ्घा। ५.९६
०+क्त, त्वा=जातो, जनित्वा। ५.११६

३७. ० ('अनु' पूर्वक)+क्त (भाव, कर्म)=अनुजिण्णो। ५.५८
०+अन, ति, णापि, अ=जीरणं, जीरति, जीरापेति, जरा। ५.१२३
०+क्त=जिण्णो। +क्तवन्तु=जिण्णवा। ५.१५३
०+न्त=जीयन्तो; जीरन्तो
मान=जीयमानो; जीरमानो
ति=जीयति; जीरति। ५.१७४

३८. ०+ति (अधिक के अर्थ में)=वद्दल्लति। ५.७०

३९. ०+नि=जानि (भाव)। ५.५०

४०. ०+य=जागरिया। ५.४९

४१. ०+स (इच्छायं)=जिगिंसति; जिगिंसा। ५.४
०+घ्यण्=जेय्यं। ५.२८
०+अ (भाव)=जयो। ५.४४:८९
० ('वि' पूर्वक)+क्तवन्तु=विजितवा। +क्तावी=विजितावी। ५.५५

संख्या

४६ जि (भू) जये=जीतना
४११ जि (जि) जये=जीतना
२२९ जीव (भू) पाणधारणे[१२]=जीना
४७ जु (भू) जवे=वेग में होना
९८ जुत (भू) दित्तियं=चमकना
५१२ झप (चु) दाहे=जलाना
३३० झा (दि) चिन्तायं[४३]=चिन्ता करना (शास्त्र आदि की), ध्यान करना
५१० ञप (चु) मरण तोसननिसाने=मरना, संतुष्ट होना, तेज करना
४१२ ञा (जि) अवबोधने[४४]=जानना
८ टीक (भू) गमनत्थे=जाना
२९२ ठा (भू) गतिविधाने[४५]=ठहरना

---

० ('वि' पूर्वक)+स, अ=विजिगिंसा। ५.१०२
०+ति=जयति। ५.१२६

४२. ०+अक (आशीर्वादार्थक)=जीवको। ५.३५

४३. ०+अण्=मन्तज्झायो। ५.४१

४४. ०+ति=ञायति; जानाति। ६.६१
०+एय्य=जञ्ञा; जानेय्य। ६.६२
०+एय्य=जानिया; जञ्ञा; जानेय्य। ६.६३
०+ई (भूत)=अञ्ञासि; अजानि
स्सति=ञस्सति; जानिस्सति। ६.६४
० ('वि' पूर्वक)+कू=विञ्ञू। ५.३९:४०
०+तुं, न्त, ति, क्त=जानितुं, जानन्तो, जानेति, ञातो। ५.१२०

४५. ०+क्य (कर्म, भाव)=ठीयमानं, ठीयते। ५.१७
सीले; निपात=थावर। ५.५४
० ('उप' पूर्वक)+क्त (कर्म, भाव)=उपट्ठितो। ५.५८
०+न्त=तिट्ठन्तो।+मान=तिट्ठमानो। ५.६४:६५

संख्या

२९३ डी (भू) आकासगमने[६१]=उड़ना
२५३ डंस (भू) दंसने[६०]=डसना
४५० तक्क (चु) वितक्के=तर्क करना
४१ तच्छ (भू) तनुकरणे=छीलना, पतला करना
४६३ तज्ज (चु) संतज्जने=डराना, धमकाना
६२ तज्ज (भू) हिंसायं=हिंसा करना
४३६ तन (त) वित्थारे[६६]=फैलाना
१५४ तप (भू) संतापे=तपाना
३५५ तप (दि) संतापे=तपाना
१६० तप्प (भू) संतप्पने=तृप्त करना
२०१ तर (भू) तरणे[६१]=तरना

०+मान (भाव, कर्म)=ठीयमानं। ५.६६
०+न्त, मान (भविष्यत्)=ठस्सन्तो; ठस्समानो
मान (भाव, भवि०)=ठीयिस्समानं। ५.६७
०+क्त=ठितो।+त्वा=ठत्वा। ५.११४
० ('सं' पूर्वक)+न्त, ति=सण्ठहन्तो, सन्तिट्ठन्तो। सण्ठहति, सन्तिट्ठति। ५.१३१
०+ति=तिट्ठति, ठाति
मान, न्त=तिट्ठमानो, तिट्ठन्तो। ५.१७५
४६. ०+क्त=डीनो।+क्तवन्तु=डीनवा। ५.१५०
४७. ०+आ=अडञ्छा; अडंसा
ई=अडञ्छि; अडंसि। ६.३०
४८. ०+क्य (कर्म, भाव)=तायते; तञ्ञते। ५.१३८
०+क्ति=तन्ति। ५.४९
०+क्त=ततो। ५.१०९
०+ते=तनुते। ६.७६
४९. ०+ण=तारा। ५.४९

संख्या

५५१ तळ (चु) पतिट्ठायं=प्रतिष्ठित करना
२६१ तस (भू) उब्बेगे[५०]=सताना
३६९ तस (दि) पिपासायं=पाना, चाहना
३३१ ता (दि) पालने=पालना
१९६ ताप (भू) संतापे=क्लेश देना, तपाना
४६६ तिज (चु) निसाने=तेज़ करना
५२ तिज (भू) निसाने[५१]=तेज़ करना
५२१ तीर (चु) कम्मसमत्तियं=तरना, काम ख़तम करना
३८३ तुद (तु) व्यथने=तकलीफ़ देना, सताना
३८४ तुल (चु) उम्माने=तोलना
२४९ तुस (भू) तुट्ठियं[५२]=खुश करना
३७० तुस (दि) तुट्ठियं=खुश करना
२६१ त्रस (भू) उब्बेगे=सताना
४४९ थक (चु) पतिघाते=रोकना
५०८ थन (चु) देवसद्दे=गर्जना (मेघ का)
१७५ थम्भ (भू) पतिबन्धे=रोकना
२०२ थर (भू) सत्थरणे=फैलाना
१०२ थु (भू) अभित्थवे=तारीफ़ करना
४१४ थु (जि) अभित्थवे=तारीफ़ करना
३२ थेन (चु) चोरिये=चुराना
५१६ थोम (चु) सिलाघायं=तारीफ़ करना
४८२ दण्ड (चु) दण्डने=सज़ा देना

०+क्त=तिण्णो।+क्तवन्तु=तिण्णवा। ५.१५३
५०. ०+क्त (निपात)=त्रस्तो। ५.१४२
५१. ०+ख, अ=तितिक्खा। ५.१:४९:६९
५२. ०+क्त, क्तवन्तु, तब्ब, क्ति=तुट्ठो, तुट्ठवा, तुट्ठब्बं, तुट्ठि। ५.१४०

संख्या

१९४ दप (भू) दान गतिहिंसादानेसु=देना, जाना, हिंसा करना, लेना
२०७ दा (भू) दारणे=फाड़ना
२१८ दल (भू) विदारणे=फाड़ना
२१९ दल (भू) दित्तियं=दीप्त होना, चमकना
१३३ दलिद्द (भू) दुग्गतियं=निर्धन होना
२६९ दह (भू) भस्मीकरणे[52]=भस्म करना
१०७ दा (भू) दाने[53]=देना
१२ दिक्ख (भू) मुण्डियोपनयननियमवतादेसेसु=मुण्डन करना, उपनयन करना, नियम करना, व्रत करना, धर्म सिखाना

---

५२. ०+ण=डाहो; दाहो; डहति; दहति। ५.१२६
०+क्त=दड्ढो। ५.१४६
० ('आ' पूर्वक)+अन=आळाहनं। परिळाहो। ५.१२७

५३. ०+मि=दम्मि; देमि; ददामि
म=दम्म; देम; ददाम। ६.२२
०+ई (भूत)=अदासि; अदा। ६.४४
०+घ्यण्=देय्यं। ५.२९
०+अ (कर्म)=अन्नदो; पुरिन्ददो। ५.४४
०+इ=आदि। ५.४५
०+णी (सीले)=सतन्दायी। ५.५३
०+ति=ददाति। ५.७४
०+णक, अन, णापि=दायको, दानं, दापयति। ५.९१
०+त्वा=अनादियित्वा।+ति=समादियति।
+प्य=आदाय। ५.१३२
०+क्य (कर्म, भाव)=दीयते। ५.१३७
०+क्त, क्तवन्तु=दिन्नो, दिन्नवा। ५.१५१
० ('अ' पूर्वक)+अन्ति=अदेन्ति। ५.१६३
०+ति, न्त, मान=दज्जति, दज्जन्तो, दज्जमानो। ५.१७६

संख्या

३५६ दिप (दि) दित्तियं=चमकना

३१९ दिव (दि) कीलाविजिगिंसा ब्योहारज्जुतित्थुतिगतिसु	खेलना, जीतने की इच्छा करना, =व्यापार करना, चमकना, तारीफ़ करना, जाना

४०९ दिस (तु) अतिसज्जने[^]=इनाम देना

३७२ दिस (दि) अप्पीतियं=घृणा करना

२४३ दिस (भू) पेक्खने[^]=देखना

२४४ दिस (भू) अतिसज्जने=इनाम देना

५४० दिस (चु) उच्चारणे=उच्चारण करना

२७३ दिह (भू) उपचये=बढ़ना

३८३ दी (दि) अवखंडने=टुकड़े करना

३३३ दी (दि) खये[^]=नष्ट होना, क्षीण होना

---

५४. ०+ति, न्त, मान=विच्छति, विच्छन्तो, विच्छमानो। ५.१७३

५५. ०+आवी=भयदस्सावी। ५.३४

०+री, रिक्ख, क=सरी, सदी; सरिक्खो, सदिक्खो, सरिसो, सदिसो। ५.४३:१२५

०+स्सति=दक्खति; दक्खिस्सति। ६.६९

०+क्त=दिट्ठो। ५.८५

०+आ, ई, स्सति=अद्दा, अद्दक्खि, दक्खिस्सति। (कर्म) दिस्सति। ५.१२४

०+अन, ति तब्ब, तुं, अ, आ=दस्सनं, दस्सेति, दट्ठब्बं, दट्ठुं, दुद्दसो, अद्दस। ५.१२४

०+अन, तुं, ति, ई=विपस्सना, विपस्सितुं, विपस्सति, सुदस्सी-पियदस्सी-धम्मदस्सी। ५.१२४

०+त्वा=दिस्वा, पस्सित्वा, दिस्वान। ५.१६९

५६. ०+क्त, क्तवन्तु=दीनो, दीनवा। ५.१५०

संख्या

१०९ दु (भू) द्रवे=पिघलना
१०८ दु (भू) गमने=जाना
३३ दुभ (चु) जिघंसायं=हिंसा की इच्छा करना
५२९ दुल (चु) उक्खेपे=ऊपर फेंकना
३७२ दुस (दि) अप्पीतियं[57]=घृणा करना
२७५ दुह (भू) प्पपरणे[58]=दुहना
४३८ दू (त) परितापे=पछताना
१७८ दूभ (भू) जिघंसायं=हिंसा की इच्छा करना
२३१ देव (भू) गमने=जाना
२५३ दंस (भू) दसने=डसना
* धन (चु) सद्दे=आवाज़ करना
१९१ धम (भू) सद्दे=बजाना (शङ्ख आदि का)
२०६ धर (भू) धारणें=धारण करना
५२० धर (चु) धारणे=धारण करना
२५९ धंस (भू) धंसने[59]=ध्वंस करना
१३८ धा (भू) धारणे[60]=धारण करना
२३४ धाव (भू) गतिसुद्धियं=दौड़ना
४१५ धू (जि) कम्पने[61]=हिलाना

---

५७. ०+णि, क्त=दूसितो। ५.१०४
५८. ०+यक्=दुय्हं। ५.३२
०+क्त=दुद्धं। ५.१४५
५९. ०+क्त (निपात)=धस्तो। ५.१४२
६०. ०+ति=वहति। ५.१०३
०+इ=निधि; वालधि। ५.४५
० ('नि' पूर्वक)+क्त, क्तवन्तु=निहितो, निहितवा। ५.१०८
६१. ०+ति=धुनाति। ६.३२

संख्या

१३९ धे (भू) पाने=पीना
५ धोव (भू) धोवने=धोना
६ नच्च (भू) नच्चने=नाचना
४७२ नट (चु) नाटये=नाटय (अभिनय) करना
७२ नट (भू) नच्चे=नृत्य करना
१२९ नद (भू) अव्यत्ते सद्दे=नाद करना
११२ नन्द (भू) समिद्धियं[६२]=समृद्ध होना
१८९ नम (भू) नमने=झुकना, नमस्कार करना
१९५ नय (भू) गमनत्थे=जाना
३७६ नस (दि) अदस्सने=नष्ट होना
३७९ नह (दि) बन्धने=बाँधना
३५० नहा (दि) सोच्चे=नहाना
१०५ नाथ (भू) याचनोपतापिस्सरियासिंसासु=माँगना, बीमार होना, श्रीमान् होना, आशिष देना
११३ निन्द (भू) गरहायं=निन्दा करना
२९४ नी (भू) पापुणने[६३]=पहुँचाना, प्राप्त कराना
२२३ नील (भू) वण्णे=रँगना, नीला रँगना
३८४ नुद (तु) खेपे[६४]=फेंकना

०+तब्ब, तुं, अन=धुनितब्बं, धुनितुं, धुननं
+णि-तब्ब, णापि-तब्ब, णि-तुं=धुनयितब्बं, धुनापेतब्बं, धुन-
यितुं। ५.८५

६२. ०+अक (आशीर्वादार्थक)=नन्दको। ५.३५

६३. ०+तुं=नेतुं; नयितु। ६.४०
०+तब्ब=नेतब्बं। ५.८२
०+णि-ति=नायति। ५.९०

६४. ० ('प' पूर्वक)+अन=पनूदनं। ५.८७

संख्या

३३ पच (भू) पाके[६५]=पकाना
४५७ पच (चु) वित्थारे=फैलाना
७० पट (भू) गमनत्थे=जाना
८१ पठ (भू) उच्चारणे[६६]=उच्चारण करना, पढ़ना
९४ पण (भू) व्यवहारत्थुतिसु=व्यापार करना, बड़ाई करना
४८० पण्ड (चु) परिहारे=खण्डन करना, नष्ट करना
९६ पण्ड (भ) लिङ्गवैकल्ये
९९ पत (भू) पतने=गिरना
१०१ पत (भू) गमने=जाना
२०२ पत्थर (भ) संथरणे=विछाना
३९४ पथ (तु) वित्थारे=फैलाना
१०१ पथ (भू) गमने=जाना
३३९ पद (दि) गमने[६७]=जाना

---

६५. ०+ल-मान, न्त, ति=पचमानो, पचन्तो, पचति। ५.१८
०+घ (कारक)=निपको। ५.४४
०+घ्यण (भाव)=पाको। ५.४४
०+अ (भाव)=पचो। ५.४४
०+ति (सरूपे)=पचति। ५.५२
०+मान (भाव, कर्म)=पच्चमानो। ५.६६
०+मान (कर्म-भविष्य)=पचिस्समानो। ५.६७
०+क्त, क्तवतु=पक्को, पक्कवा। ५.१५६
०+क्य (कर्म)=पचीयति, पच्चति। ६.३७
०+मि, म, हि=पचामि, पचाम, पचाहि। ६.५७
६६. ०+णक, ल्तु=पाठको, पठिता। ५.३३
६७. ०+घ्यण (कारक)=पादो। ५.४४
० ('आ' पूर्वक)+अ=आपदा। ५.४९

संख्या

१९५ पय (भू) गमनत्थे=जाना
२९७ पा (भू) रक्खणे=रक्षा करना
२९६ पा (भू) पाने[६८]=पीना
७ पाण (भू) चागे=त्यागना
५२२ पार (चु) सामत्थिये=सकना, समर्थ होना
५२३ पाल (चु) रक्खने=पालना
७९ पिट (भू) सङ्घाते=ढेर करना
४८१ पिण्ड (चु) सङ्घाते=ढेर करना
२१५ पिलु (भू) गमनत्थे=जाना
५३४ पिस (चु) गमने=जाना
५४७ पिह (चु) इच्छायं=चाहना
२६० पिंस (भू) संचुण्णने=पीसना
५०९ पी (चु) तप्पने[६९]=तृप्त करना
५४९ पीळ (चु) बाधायं=तकलीफ देना

---

० ('नि' पूर्वक)+तब्ब, तुं, अन=निपज्जितब्बं, निपज्जितुं, निप-
ज्जनं। ५.९२
० ('उ' पूर्वक)+क्त, क्तवन्तु=उप्पन्नो, उप्पन्नवा। ५.१५०
० ('उ' पूर्वक)+ई (परोक्खे)=उदपादि। ५.१६१

६८. ०+स-अ=पिपासा। ५.४९:७६
०+णी (सीले)=खीरपायी। ५.५३
०+क्त=पीतं (आधारे, कम्मे, कत्तरि, भावे)
०+क्त, त्वा=पीतं, पीत्वा। ५.११५
०+ति, न्त, मान=पिवति, पातिं, पिवन्तो, पिवमानो। ५.१७५

६९. ०+क=पियो। ५.४४
०+तब्ब, तुं, अन, ति=पीनेतब्बं, पीनयितुं-पीनितुं, पीननं, पीन-
यति। ५.८५
०+क्त, क्तवन्तु=पीनो, पीनवा। ५.१५०

संख्या

३९ पुच्छ (भू) पुच्छने[70]=पूछना
४५ पुञ्छ (भू) पुञ्छने=पोंछना
४७३ पुट (चु) भेदने=तोड़ना
३९२ पुण (तु) कम्मनि सुभे=धर्म कृत्य करना
३९४ पुथ (तु) वित्थारे=फैलना
१६३ पुप्फ( )विकसने=फूलना
५३२ पुल (चु) महत्ते=ऊँचा होना
५३१ पुल (चु) समुस्सये=ढेर करना
२४८ पुस (भू) पोसने=पोसना; पालना
५३७ पुस (चु) पोसने=पोसना; पालना
४१६ पू (जि) पवने=पवित्र करना
१५२ पू (भू) पवने=पवित्र करना
४६७ पूज (चु) पूजायं=पूजना
२०४ पूर (भू) पूरणे[71]=भरना
२२७ पेल (भू) चलने=चलना
२१५ प्लु (भू) गमनत्थे=जाना
८ फण (भू) फरणे=व्याप्त होना
११५ फन्द (भू) किञ्चि चलने=धड़कना, हिलना
८ फर (भू) फरणे=व्याप्त होना
२२१ फल (भू) निप्फत्तियं=फलना
१९९ फाय (भू) वुद्धियं=वढ़ना
४०० फुर (तु) चलने=फड़कना
२२० फुल्ल (भू) विकसने=फूलना

---

७०. ०+क्त=पुट्ठो। ५.८५
०+क्त, त्वा=पुट्ठो, पुच्छित्वा
७१. ०+क्त=पुण्णो।+क्तवन्तु=पुण्णवा। ५.१५२



संख्या

४१० फुस (तु) सम्फस्से=छूना
३१४ वध (रु) वन्धने[७२]=बँधाना
१४६ वध (भू) वन्धने=बाँधना
९ वल (भू) पाणने=साँस लेना
२८१ वह (भ) वुद्धियं[७३]=बढ़ना
१४२ वाध (भू) निवाधायं=पीड़ा देना
३४१ वुध (दि) अवगमने=जनाना, समझना
२८१ व्रह (भू) वुद्धियं=वढ़ना
२९८ व्रू (भू) वचने[७४]=बोलना
२८१ व्रूह (भू) वुद्धियं=वढ़ना
१४ भक्ख (भू) अदने=खाना
४५३ भक्ख (चु) अदने=खाना
५० भज (भू) सेवायं[७५]=सेवा करना
६५ भज्ज (भू) पाके[७६]=भूनना

---

७२. ०+छ=बीभच्छा, बीभच्छति (निन्दायं)। ५.३
७३. ०+क्त=वाळ्हो। ५.१०६
०+क्त=वुड्ढो। ५.१४७
७४. ०+आ, उ=आह, आहु इत्यादि। ६.१६
०+उ=आहंसु, आहु। ६.१९
०+ति, अन्ति=आह, आहु। ६.२०
०+ति=अवीति; व्रूति। ६.३६
०+मि, इ=व्रूमि; अब्रवि। ५.९७
०+णि-ति, न्ति=ब्रूति, ब्रुवन्ति
७५. ०+क्ति=भत्ति। ५.४९
०+घ्यण्=भाग्यं। ५.९८
७६. ०+क्त=भट्ठो। ५.१४३

संख्या

५७ भञ्ज (भू) ओमद्दने[77]=नष्ट करना
७८ भट (भू) भतियं=नौकरी करना
९३ भण (भू) भणने=स्पष्ट कहना
४८० भण्ड (चु) परिहासे=उपहास करना
३०३ भद्द (चु) कल्याणे=शुभ कर्म करना, सुखी होना
११९ भद्द (भू) कल्याणे=शुभ कर्म करना, सुखी होना
१८४ भम (भू) अनवट्ठाने=घूमना
१० भर (भू) भरणे[78]=पालना
३७५ भस (दि) अधोपतने=नीचे गिरना, निन्दित होना
२६४ भस (भू) भस्मीकरणे=भस्म करना
२९० भा (भू) दित्तियं[79]=चमकना
२९१ भा (भू) अवबोधने=जनाना, प्रकाशित करना
२५६ भास (भू) वचने=बोलना
११ भिक्ख (भू) याचने[80]=माँगना
३११ भिद (रु) विदारणे[81]=तोड़ना, फोड़ना, चीरना
३३४ भिद (दि) विदारणे=तोड़ना, फोड़ना, चीरना

---

७७. ० (सीले-निपात)=भङ्गुर। ५.५४
० + क्त, क्तवन्तु=भग्गो, भग्गवा। ५.१५४

७८. ० + य=भच्चो (निपात)। ५.३१

७९. ० (सीले-निपात)=भासुर, भस्सर। ५.५४

८०. ० + अ=भिक्खा। ५.४९

८१. ० + रसा=अभेच्छा, अभिन्दिस्सा। ६.२६
० + क्ति=भित्ति। ५.४९
० (सीले-निपात)=भिदुर। ५.५४
० + तब्ब=भेत्तब्बं, भिन्दितब्बं। ५.९५
० + क्त, क्तवन्तु=भिन्नो, भिन्नवा। ५.१५०

संख्या

१६९ भी (भू) भये=डरना
३८८ भुज (तु) कोटिल्ले=टेढ़ा होना
३०९ भुज (रु) पालनज्झोहारेसु[२]=पालना, खाना
५३६ भूस (चु) अलङ्कारे=सजाना
२५४ भूस (भू) अलङ्कारे=सजाना
१ भू (भू) सत्तायं[१]=होना

---

८२. ०+ख (इच्छायं)=बुभुक्खति, बुभुक्खा। ५.४:७८
०+स्सा=अभोक्खा, अभुञ्जिस्सा
स्सति=भोक्खति, भुञ्जिस्सति। ६.२७
०+य=भोज्जं। ५.३०
०+क=भुजो। ५.४४
०+णी (सीले)=उण्हभोजी। ५.५३
०+क्त=भुत्तं (आधारे, कम्मे, कत्तरि, भावे)। ५.६०
०+तुं=भुञ्जितुं, भोत्तुं ('तुं' प्रत्ययके प्रयोग)। ५.६१:१७०
८३. ०+अ=बभूव। ६.१७:१८
०+त्थ, स्सा, स्सति=बभूवित्थ-अभवित्थ, अभविस्सा, अनुभविस्सति, अनुभोस्सति। ६.३५
०+एय्याथ, स्से=भवेय्याथो, भवेय्याथ, अभविस्से, अभविस्स;
+अ, आ=अभवं, अभव; अभवित्थ, अभवा;
+ई, थ=भवथव्हो, भवथ। ६.३८
०+ओ=अभव, अभवि, अभवित्थ, अभवित्थो, अभवो। ६.४२
० ('अनु' पूर्वक)+क्य-स्सा=अन्वभविस्सा, अन्वभूयिस्सा,
+स्सति=अनुभविस्सति, अनुभूयिस्सति। ६.४९
०+एय्याम=भवेमु, भवेय्यामु, भवेय्याम। ६.७८
०+य=भव्वं। ५.३१
०+अ (भाव)=भवो। ५.४४:८९

संख्या

२८७ भू (भू) सत्तायं=होना
४५४ मक्ख (भू) मक्खने=जाना
१८ मग्ग (भू) अन्वेसने=खोजना
४५६ मग्ग (चु) अन्वेसने=खोजना
२१ मङ्ग (भू) मङ्गल्ये=मङ्गल होना
११ मज्ज (भू) संसुद्धियं=संशोधन करना, साफ करना
९६ मण (भू) सद्दत्थे=शब्द करना
४७९ मण्ड (चु) भूसायं=सजाना
८५ मण्ड (भू) भूसने=सजाना
१०३ मथ (भ) विलोळने=मथना
२७ मद (दि) उम्मादे"=नशे में होना, पागल होना
१३१ मद्द (भू) मद्दने=मसलना
३५१ मन (दि) आने"=जानना
४४१ मन (त) बोधने=विचारना, मनन करना

०+घ्यण (भाव)=भावो। ५.४४
०+क्वी=अभिभू, सयम्भू। ५.४७ : १५९
०+क्ति=भूति। ५.४९
०+तब्ब=भवितब्बं। ५.८२
०+णि-ति=भावयति। ५.९०
०+ति=भवति। ५.१३६
० ('अभि' पूर्वक)+त्वा, प्य=अभिभवित्वा, अभिभूय। ५.१६४

८४. ०+य=मज्जं। ५.३०
० ('प' पूर्वक)+तब्ब, तुं=पमज्जितब्बं, पमज्जितुं,
+अन, ण=पमज्जनं, पावो। ५.९२

८५. ०+स=वीमंसा, वीमंसति। ५.१ : ४९ : ६९ : ८०
०+क्त=मतो। ५.१०९

संख्या

४६० मन्त (चु) गुत्तभासने=सलाह करना
१०३ मन्थ (भू) विलोळने=मथना
१६५ मय (भू) गमनत्थे=जाना
२०५ मर (भू) पाणचागे⁸⁶=मरना
२४६ मस (भू) आमसने=माफ करना
४५६ मह (चु) अन्वेसने=खोजना
२६८ मह (भू) पूजायं=पूजना
५०७ मान (चु) पूजायं=पूजना
२८ मिद (दि) स्नेहने=स्नेहयुक्त होना
१३५ मिद (भ) सिनेहे=स्नेहयुक्त होना
१२ मिथ (भू) सङ्गमे⁸⁷=जोड़ना, युक्त करना
३४० मिध (दि) अभिकंखायं=चाहना
३६३ मिला (दि) गत्तविनामे=अँगड़ाई लेना
५४४ मिस्स (चु) सम्मिस्से=मिलाना
२७१ मिह (भू) सेचने=गीला करना, सींचना
२६६ मिह (भू) ईसं हसने=मुसकराना
५४८ मिह (चु) पूजायं=पूजना
३०६ मुच (रु) मोचने⁸⁸=छुड़ाना, मुक्त करना
३५ मुच (चु) पमोचने=छुड़ाना, मुक्त करना
४० मुच्छ (भू) मोहे=मुरझाना

---

८६. ०+न्त, मान ति=मीयन्तो, मरन्तो; मीयमानो, मरमानो; मीयति, मरति। ५.१७४

८७. ०+अ=मेधा। ५.४१

८८. ०+क्त, क्तवन्तु=मुक्को, मुत्तो; मुक्कवा, मुत्तवा। ५.१५७
०+स्सा=अमोक्खा, अमुञ्चिस्सा
स्सति=मोक्खति, मुञ्चिस्सति। ६.२७

· संख्या

५१ मुज्ज (भू) मुज्जने[८९]=गोता लेना
८८ मुण्ड (भू) खण्डने=मूँड़ना
१२२ मुद (भू) तोसे[९०]=संतुष्ट होना
४०७ मुस (तु) थेय्ये=चोरी करना, ठगना
२८० मुह (भू) मुच्छायं[९१]=मूर्च्छित होना, मुरझाना
३८० मुह (दि) वेचित्ते=मोहित होना, मूढ़ होना
४१७ मी (जि) हिंसायं=हिंसा करना
१३ मील (भू) निमीलने=मूँदना
५२७ मील (चु) निमीलने=मूँदना
४१९ मू (जि) बन्धने=बाँधना
१८१ मू (भू) बन्धने=बाँधा
१२ मेघ (भू) सङ्गमे=लड़ाई करना
४५५ मोक्ख (चु) मोचने=छुड़ाना
५१ यज (भू) देवपूजा सङ्गति करण दानेसु[९२]=देवपूजा करना, मिलना, देना
४९४ यत (चु) निय्यातने=बाहर भेजना

---

८९. ० ('नि' पू०)+क्त, क्तवन्तु=निमुग्गो, निमुग्गवा। ५.१५४

९०. ०+क=मुदा। ५.४९
०+क्त=मुदितो, मोदितो। ५.८६
. ० ('अनु' पू०)+त्वा=अनुमोदित्वा, अनुमोदियान। ५.१६५

९१. ० निपात—मोमुहो। ५.७०
०+क्त=मूळ्हो। ५.१०६
+क्त=मूल्हो, मुद्धो। ५.१४९

९२. ०+यक्=इज्जा। ५.४९
०+क्ति=इट्ठि। ५.४९
०+क्त, त्वा=इट्ठं, यिट्ठं; यजित्वा। ५.११३ : १४३

संख्या

४९१ यन्त (चु) संकोचने=सकुचना
१८० यम (भू) मेथुने[93]=विवाहित होना
१९० यम (चु) उपरमे=रुकना
३७४ यस (दि) पयतने=यत्न करना
३०० या (भू) पापुणने[94]=प्राप्त करना
३१ याच (भू) याचने=माँगना
३२८ युज (दि) समाधिम्हि=ध्यान करना
४६६ युज (चु) संयमे=संयम करना
३०८ युज (रु) योगे=जोड़ना
३४२ युध (दि) सम्पहारे[95]=लड़ना, जूझना
१५ रक्ख (भू) पालने=पालना
२२ रङ्ग (भू) गमनत्थे=जाना
४६१ रच (चु) पतियतने
५५ रञ्ज (भू) रागे=रँगना
३२७ रञ्ज (दि) रागे=रँगना
७१ रट (भू) परिभासने=रटना
९६ रण (भू) सद्दत्थे=आवाज करना
१३४ रद (भू) विलेखणे=खोदना
१५७ रप (भू) वचने=बोलना
१४ रभ (भू) राभस्से=जल्दी में होना
८८ रम (भू) कीळायं[96]=खेलना

---

९३. ०+ति, न्त, मान=यच्छति, यच्छन्तो, यच्छमानो । ५.१७२
९४. ०+क्त=यातं (आधारे, कत्तरि, भावे, कम्मे) । ५.५९
९५. ० ('आ' पूर्वक)+क=आयुधं । ५.४४
०+कि=युधि । ५.५२
९६. ०+क्त=रतो । ५.१०९

संख्या

१७१ रम (भू) आरम्भे=शुरू करना
१६५ रम्ब (भू) अवसेसने=बचाना
१९५ रम (भू) गमनत्थे=जाना
५४२ रस (चु) अस्साद स्नेहनेसु=स्वाद लेना, गीला होना, प्यार करना
२६३ रस (भू) अस्सादनेसु=स्वाद लेना
२७६ रह (भू) चागे=त्यागना
५४२ रह (चु) चागे=त्यागना
३०१ रा (भू) आदाने=लेना
४९ राज (भू) दित्तियं=शोभा देना
३४५ राध (दि) संसिद्धियं=सिद्ध होना
३४८ राध (दि) हिंसायं=हिंसा करना
२३ रिच (क) विरेचने=दस्त आना
३२५ रिच (दि) विरेचने=दस्त आना
३६ रिञ्च (भू) रिञ्चने=खाली होना
२०० रु (भू) सद्दे[17]=शब्द करना
३८७ रुज (तु) भङ्गे=टूटना
३७ रुच (चु) भासने=चमकना
३६ रुच (चु) रोचने=पसन्द आना
२९ रुच (दि) रोचने=पसन्द आना
३० रुच (भू) दित्तियं=चमकना
३२४ रुच (दि) रोचने=पसन्द आना
३८७ रुज (तु) भङ्गे[18]=बुरा होना, पीड़ा होना, पीड़ा देना
३९१ रुठ (तु) उपसंघाते=मारना, लूटना

---

१७. ०+अ (भाव)=रवो। ५.४४
१८. ०+क=रुजा। ५.४९
०+घ्यण् (कारक)=रोगो। ५.४४

संख्या

१२० रुद (भू) रोदने[99]=रोना
३०५ रुध (रु) आवरणे[100]=रोकना, घेर लेना
३४६ रुध (दि) आवरणे=रोकना, घेर लेना
३६१ रुस (दि) रोसे=रूसना, नाराज़ होना
२४६ रुस (भू) रोसे=रूसना, नाराज़ होना
५३६ रुस (चु) फारुसिये=कठोर होना
२७१ रुह (भू) जनने[101]=उगना
४३२ लक्ख (चु) दस्सणे=देखना
२२ लङ्घ (भू) गमनत्थे=जाना, लांघना
२६ लङ्घ (भू) गतिसोसनेसु=जाना, सूखना
६० लज्ज (भ) लज्जने=लजाना, शरमाना
४४ लञ्छ (भू) लक्खणे=निशान करना
५११ लप (भू) वचने=बोलना, बातचीत करना
१५७ लप (भू) वचने=बोलना, बातचीत करना
२० लभ (भू) सङ्गे[102]=आसक्त होना, पाना

---

९९. ०+स्सा=अरुच्छा; अरोविस्सा
स्सति=रुच्छति; रोविस्सति। ६.२६
०+क्त=रुवितं, रोवितं। ५.८६

१००. ०+ल-ति, मान, न्त=रुन्धति, रुन्धमानो, रुन्धन्तो। ५.१६
०+तुं, ण=रुन्धितुं, रुज्झितुं; निरोधो

१०१. ० ('अभि' पू०)+ई=अभिरुच्छि, अभिरुहि। ६.३४
० ('आ' पू०)+क्त (भाव, कर्म)=आरूळ्हो। ५.५८
०+क्त, तुं=अरूळ्हो, आरोहितुं। ५.१४८

१०२. ०+स्सा=अलच्छा, अलभिस्सा
+स्सति=लच्छति, लभिस्सति। ६.२६
०+घ्यण=लाभो। ५.४४
२६

संख्या

१७० लभ (भू) लाभे=पाना

१६५ लम्ब (भू) अवसंसने=लटकना

५५२ लळ (चु) उपसेवायं[103]=पालना; पोसना

२८६ लळ (भू) विलासे=ऐश करना

५३३ लल (चु) इच्छायं=चाहना

२६२ लस (भू) कन्तियं=शोभा देना

३०१ ला (भू) आदाने=ग्रहण करना

३८५ लिख (तु) लेखने=खोदना (लोहे की लेखनी आदि से अक्षर आदि का)

३१५ लिप (रु) लिम्पने=लीपना

३६७ लिस (दि) लेसे=आलिङ्गन करना

२७२ लिह (भू) अस्सादने[104]=चाटना

३६४ ली (दि) सिलेसन द्रवीकरणेसु[105]=चिपकाना, पिघलाना

३२९ लुज (दि) विनासे=नाश करना

१५ लुञ्च (भू) अपनयने=उखाड़ना (बाल आदि का)

३९१ लुठ (तु) उपसंघाते=मारना-लूटना

३१६ लुप (रु) छेदने[106]=काटना

३५७ लुप (दि) च्छेदने=काटना

३५८ लुभ (दि) लोभे=लोभ करना

---

० + ई (भूत) = अलत्थ, अलभि
इं (भूत) = अलत्थं, अलभिं । ६.७३
० + क्त = लद्धं । ५.१४५

१०३. ० + णि = लाळयति । ५.१५

१०४. ० + य = लेय्यं । ५.३१

१०५. ० + क्त, क्तवन्तु = लीनो, लीनवा । ५.१५०

१०६. ० निपात—लोलुपो । ५.७०

संख्या

४२० लू (जि) छेदने[107]=काटना
४४८ लोक (चु)= देखना
४४८ लोच (चु) दस्सने=देखना
६ वक (भू) आदाने=लेना
५ वङ्क (भू) कोटिल्लो=टेढ़ा होना
२२ वङ्ग (भू) गमनत्थे=जाना
३७ वच (चु) भासने[108]=बोलना=बातचीत करना
३८ वच (चु) भासने=बोलना=बातचीत करना
२९ वच (भू) व्यत्तवचने=बोलना
४६० वच्च (चु) अज्झेने=पढ़ना
४८ वज (भू) गमने[109]=जाना
४६२ वज्ज (चु) वज्जने=मना करना
४५८ वञ्च (चु) पलम्भने=ठगना
३७ वञ्च (भू) गमने=जाना
१४० वड्ढ (भू) वुद्धियं[110]=बढ़ना

---

१०७. ०+अण्=सरलावो । ५.४१
०+क्त, क्तवन्तु=लूनो, लूनवा । ५.१५०
१०८. ०+ई=अवोच । ६.२१
स्सा, स्सति=अवक्खा, अवचिस्सति; वक्खति, वचिस्सति । ६.२७
०+घ्यण्=वाक्यं । ५.२८ : ९८
०+अ (भाव)=वचो । ५.४४
०+घ (भाव)=वको । ५.४४
०+इ (स्वरूप)=वचि । ५.५२
+क्त=उत्तं, वुत्तं, उत्थं, वुत्थं । ५.११० : १११
१०९. ० ('प' पूर्वक)+य=पब्बज्जा । ५.४१
११०. ०+क्ति=वड्ढि । ५.१५८

संख्या

९१ वड्ढ (भू) वड्ढने=बढ़ाना
१४८ वण (भू) सम्हत्तियं=आवाज़ करना
४७४ वण्ट (चु) विभाजने=बाँटना
७६ वण्ट (भू) विभाजने=बाँटना
४८४ वण्ण (चु) वण्णने=वर्णन करना
९७ वत्त (भू) वत्तने=होना
११० वद (भ) वचने[१११]=बोलना
१४३ वध (भू) हिंसायं[११२]=हिंसा करना
४४० वन (त) याचने[११३]=माँगना
५०२ वन्द (चु) अभिवादनथुतिसु[११४]=नमस्कार करना, तारीफ़ करना
१११ वन्द (भू) अभिवादनथुतिसु=नमस्कार करना, तारीफ़ करना
१५९ वप (भू) बीजनिक्खेपे=बोना
१८६ वम (भू) उग्गिरणे[११५]=उलटी करना
५१४ वम्ह (चु) गरहायं=निन्दा करना
१९५ वप (भू) गमनत्थे=जाना
५१८ वर (चु) आवरणिच्छासु=छिपाना, चाहना
२१४ वर (भू) वारणसम्भतिसु=मना करना, विभाग करना
२२६ वल (भू) संवरणे=छिपाना
२२६ वल्ल (भू) संवरणे=छिपाना
५४१ वस (चु) अच्छादने=ढकना

---

१११. ०+य=वज्जं । ५.३०
०+ति, न्त, मान=वज्जति, वज्जन्तो, वज्जमानो । ५.१७६
११२. ०+णक्=वधको । ५.८७
११३. ०+ति=वनुति, वनोति । ६.७७
११४. ०+अन=वन्दना । ५.४१
११५. ०+थु=वमथु । ५.४६

संख्या

१७	वस	(भू)	निवासे[116]	=रहना
१६	वस्स	(भू)	सेवने	=सेवन करना
७४	वह	(भू)	वहने	=ढोना
२७०	वह	(भ)	पापुणने[117]	=पाना
३६५	वा	(दि)	गतिबन्धनेसु	=जाना, बाँधना
३०२	वा	(भू)	गमने	=जाना
३८९	विज	(तु)	भयचलनेसु[118]	=डरना, काँपना
३४०	विद	(दि)	सत्तायं	=होना
३९३	विद	(तु)	ञाणे[119]	=जानना
३१३	विद	(रु)	लाभे	=पाना
४९८	विद	(चु)	ञाणे[119]	=जानना
३४६	विध	(दि)	वेधने	=बींधना
१४५	विध	(भू)	वेधने	=बींधना
४०८	विस	(तु)	पवेसने[120]	=घुसना

---

११६. ०+स्सा=अवच्छा, अवसिस्सा
　　स्सति=वच्छति, वसिस्सति । ६.२६
　० ('अनु' पू०)+क्त (भाव, कर्म)=अनुवुसितो । ५.५८
　०+क्त=वुत्थं । ५.१४४
११७. ०+क्त=वूळ्हो । ५.१०७ : १४८
११८. ० ('सं' पू०)+क्त=संविग्गो ।+क्तवन्तु=संविग्गवा । ५.१५४
११९. ०+णि-ति=वेदियति । ५.१३६
　०+यक्=विज्जा । ५.४९
　०+अन=वेदना । ५.४९
　०+क्व=विदू (लोकविदू) । ५.३८
१२०. ० ('प' पूर्वक)+स्सा=पावेक्खा, पाविसिस्सा
　　स्सति=पवेक्खति, पविसिस्सति

संख्या

३०२ वी (भू) गमने=जाना

२२८ वी (भू) तन्तसन्ताने=बुनना (कपड़े का)

६६ वीज (भू) वीजने=हवा करना

४२९ वु (की) संवरणे=ढकना

४३३ वु (सु) संवरणे=ढकना

४७५ वेठ (चु) वेठने=लपेटना

१५६ वेप (भू) चलने[१२१]=काँपना

२२७ वेल (भू) चलने=हिलना

१०६ व्यथ (भू) दुखभयचलनेसु=दुःखी होना, डरना, काँपना

२६७ व्हे (भू) अव्हाने=पुकारना

४३७ सक (त) सत्तियं[१२२]=सकना; समर्थ होना

४३४ सक (कि) सत्तियं[१२२]=सकना; समर्थ होना

४३५ सक (सु) सत्तियं[१२२]=सकना; समर्थ होना

८ सक्क (भू) गमनत्थे=जाना

४ सङ्क (भू) सङ्कायं=सन्देह करना

५१७ सङ्गाम (चु) युद्धे=लड़ाई करना

३४ सच (भू) समवाये

५३ सज (भू) विस्सजनालिङ्गननिम्मानेसु=छोड़ना, गले लगाना, बनाना

ई=पावेक्खि, पाविसि । ५.२७

०+व्यण (कारक)=वेसो । ५.४४

१२१. ०+थु=वेपथु । ५.४६

१२२. ०+न्त, ति=सक्कुणन्तो; सक्कुणोति, सक्कोति । ५.१२१

०+ई, उं (भूत)=असक्खि, असक्खिसु । ६.५८

०+स्सा=सक्खिस्सा; सक्कुणिस्सा

स्सति=सक्खिस्सति; सक्कुणिस्सति । ६.५९

०+स्सति=सक्खति; सक्खिस्सति । ६.६९

संख्या

३२६ सज (दि) सङ्गे=आसक्त होना
६१ सज्ज (भू) अज्जने=उपार्जन करना
४६४ सज्ज (चु) अज्जने=उपार्जन करना
५६ सञ्ज (भू) सङ्गे=आसक्त होना
८२ सठ (भू) केतवे=ठगना
१२६ सद (भू) विसरणगत्यवसादनादानेसु[१२३]=जीर्ण होना, जाना, नीचे गिराना, लेना
४३९ सन (त) दाने=दान करना
१२५ सन्द (भू) पस्सवने=टपकना
१५५ सप (भू) अक्कोसे=कोसना, शाप देना
१६१ सप्प (भू) गमने=जाना, रेंगना
३६० सम (दि) उपसमखेदेसु[१२४]=(व्रत आदि से) शान्ति प्राप्त करना, पसीना छूटना
१८५ सम (भू) परिस्समे=थकना
४६८ समाज (चु) पीतिदस्सने=खातिर करना
१६७ सम्ब (भू) मण्डने=सजाना
१७९ सम्भ (भू) विस्सासे=भरोसा रखना
४२८ सम्भु (की) पापुणने=इकट्ठा करना; प्राप्त करना
२०८ सर (भू) गतिहिंसाचिन्तासु[१२५]=आना, हिंसा करना, सोचना=चिन्ता करना
२१५ सल (भू) गमनत्थे=जाना

---

१२३. ० ('नि' पूर्वक)+तब्ब=निसीदितब्बं।+अन=निसीदनं।
+तुं=निसीदितुं।+ति=निसीदति। ५.१२३
०+क्त, क्तवन्तु=सन्नो; सन्नवा। ५.१५०
१२४. ०+क्त=सञ्ञतो। ५.१०९
१२५. ०+अन=सरण। ५.१७१. ०+घ्यण् (कारक)=सारो। ५.४४

संख्या

२४२ सस (भू) गतिहिंसापाणनेसु=जाना, हिंसा करना, साँस लेना
२५८ संस (भू) पसंसने[126]=बड़ाई करना
२७८ सह (भू) मरिसने=क्षमा करना
३७८ सा (दि) तनूकरणावसानेसु=पैना करना-शान धरना, खतम करना
१२३ साद (भू) अस्सादने=स्वाद लेना
३४५ साध (दि) संसिद्धियं=सिद्ध करना
११३ साय (भू) सायने=चाटना
२४१ सास (भू) अनुसिट्ठियं[127]=अनुशासन करना
४२१ सि (जि) बन्धने[128]=बाँधना
४४५ सि (त) वन्धने=बाँधना
२३५ सि (भू) सेवायं[129]=टहल करना
१० सिक्ख (भू) विज्जोपादाने=सीखना (विद्या आदि का)
२७ सिङ्घ (भू) घायने=सूँघना
३०७ सिच (रु) क्खरणे=टपकना
३३७ सिद (दि) पाके[130]=पकाना
१३७ सिद (भू) पाके=पकाना
१४४ सिध (भू) गमने=जाना
३४५ सिध (दि) संसिद्धियं=सिद्ध होना
* सिना (दि) सोचेय्ये=नहाना=पवित्र होना

---

१२६. ०+क्त=पसत्थं, सत्थं। ५.१४४
१२७. ०+क्ति=सिट्ठि। ५.४१. ०+क्त=सिट्ठं, सत्थं। ५.११७
०+क्त, तुं=सत्थं, सासितुं। ५.१४४
०+यक्=सिस्सो। ५.३२
१२८. ०+ति=सिनोति। ५.८५
१२९. ० ('नि' पूर्वक)+ण्य=निस्साय। ५.८८
१३०. ०+क्त, क्तवन्तु=सिन्नो, सिन्नवा। ५.१५०

संख्या

३८२ सिनिह (दि) पीणने=स्नेह करना
२३ सिलाघ (भू) कत्थने=वखान करना
३६६ सिलिस (दि) आलिङ्गने[131]=गले लगाना
७ सिलोक (भू) संघाते=शब्द योजना (काव्य आदि के रूप में) करना
५४३ सिस (चु) विसेसने=वचाना; वाकी रखना
२३८ सिंस (भू) इच्छायं=चाहना
३२० सिव (दि) तन्तुसन्ताने=सीना
३०४ सी (भू) सये[132]=सोना
२२२ सील (भू) समाधिम्हि=शील पालन करना
५२८ सील (चु) उपधारणे=चुनना, कन कन उठाना
४३१ सु (सु) सवने[133]=सुनना
४३० सु (की) सवने[133]=सुनना
४४६ सु (त) अभिसवे=नहाना
* सुच (चु) पेसुञ्ञे=सूचना (खवर) देना
३२ सुच (भू) सोके=शोक करना

---

१३१. ० ('आ' पूर्वक)+क्त (भाव, कर्म)=आसिलिट्ठो। ५.५०
१३२. ०+य=सेय्या ५.४६. ० ('अधि' पूर्वक)+क्त (भाव, कर्म)=अधिसयितो। ५.५८
१३३. ०+क्य=सूयमानं, सूयते। ५.१७: १३६. ०+तून=सोतून, सुत्वानः सुत्वा ('अलं-खलु' के साथ)। ५.६२.०+तब्बं=सोतब्बं। ५.८२. ०+क्त, तब्ब, तुं=सुतो, सुणितब्बं, सुणितुं। ५.८५.
०+ति= सुनोति। ५.८५.
०+उं=अस्सोसुं, अस्सुं। ६.४०
०+ई (भूत)=अस्सोसि, असुणि
+स्स=अस्सोस्सा, असुणिस्सा
+स्सति=सोस्सति, सुणिस्सति। ६.५०.

संख्या

३४४ सुच (दि) सोचेय्ये=शोधना; पवित्र करना
३९७ सुप (तु) सये[१३४]=सोना
१७३ सुभ (भू) सोभने=शोभा देना
३७७ सुस (दि) सोसने[१३५]=सूखना
२३६ सू (भू) पसवे=पैदा करना
१८ सू (भू) पस्सवने[१३६]=उत्पन्न करना
१२७ सूद (भू) क्खरणे=टपकना
१९ सूल (भू) रुजायं=दर्द होना
२३२ सेव (भू) सेवने=सेवा करना
२५८ संस (भू) संसने=बड़ाई करना
३८२ स्निह (दि) पीणने=प्रेम करना
८३ हठ (भू) बलक्कारे=हठ करना
३५३ हन (दि) हिंसायं=हिंसा करना, मारना
२९५ हन (भू) हिंसायं[१३७]=हिंसा करना, मारना
* हनु (भू) अपनयने=छिपाना
३६१ हर (दि) लज्जायं=लजाना, शरमाना

---

१३४. ० ('प' पूर्वक)+क्त=पसुत्तं। ५.५७

१३५. ०+क्त, क्तवन्तु=सुक्खो, सुक्खवा। ५.१५५

१३६. ०+क्त, क्तवन्तु=सूनो, सूनवा। ५.१५०

१३७. ०+य=घच्चो । ५.३१. ०+स्साम=हञ्छेम; हनिस्साम। पटिहंखामि; पटिहनिस्सामि। ६.६७. ० ('आ' पूर्वक)+क्त= आघातो। ५.९९. ० ('परि' पूर्वक)+क्वी=पलिघो। ० ('पटि' पूर्वक)+क्वी=पटिघो । निपात-अघं, संघो, ओघो । ५.१००. ०+स, अ=जिघंसा । ५.१०१. ०+क्त=हतो । ५.१०९. ०+ति=हन्ति । ५.१६१. ० ('आ' पूर्वक)+प्य=आहच्च; आहनित्वा। ५.१६६.

संख्या

* हर (भू) हरणे[१३८]=हरना, चुराना
२५० हस (भू) हसने=हँसना
* हस (भू) आलिक्ये=ठट्ठा करना, मज़ाक करना
२६५ हा (भू) चागे[१३९]=त्यागना, छोड़ना
३८१ हा (दि) परिहाने=हानि होना
४४२ हि (त) गतियं[१४०]=जाना
६० हिण्ड (भू) आहिण्डने=भटकना, खोजते फिरना
१२५ हिलाद (भू) सुखे=सुखी होना
५०५ हिलाद (चु) सुखे=सुखी होना
३६१ हिरि (दि) लज्जायं=लजाना, शरमाना
५५० हीळ (चु) निन्दायं=निन्दा करना
३१७ हिंस (रु) हिंसायं=हिंसा करना, मारना
२१५ हुल (भू) गमनत्थे=जाना
२८७ हू (भू) सत्तायं[१४१]=होना

---

१३८. ०+आ=अहा, अहरा ।+ई=अहासि, अहरि । ६.२८. ०+ण=हारा । ५.४१. ०+अन=हारणा । ५.४१. ०+स-अ=जिगिंसा । ५.१०२. ० ('अभि' पूर्वक)+तुं=अभिहट्ठुं । +त्वा=अभिहरित्वा । ५.१६५.

१३९. ०+स्सति=हायिस्सति, हाहति । +स्सा=अहाहा, अहायिस्सा । ६.२५. ०+णन=हायना (वीहि) । हायनो (संवच्छरो) । ५.३७. ०+नि=हानि । ५.५०. ०+स्सति=हाहति, जहिस्सति । ६.६८. ०+ति, तब्ब, तुं=जहाति, जहितब्बं, जहितुं । ५.७०:७१

१४०. ०+ति, तब्ब=हिनोति, पहिणितब्बं
+तुं, अन=पहिणितुं, पहीणनं

१४१. ०+स्सति=हेस्सति; हेहिस्सति; होहिस्सति । ६.३१
०+रेसुं=अहेसुं; अभवुं । ६.४१

संख्या

२४९ हुंस (भू) तुट्ठियं=सन्तुष्ट होना

०+घो=महोसि; महुवो। ६.४३

० (=हेहि)+स्सति=हेहिति; हेहिस्सति। ६.६९

० (=होहि)+स्सति=होहिति; होहिस्सति। ६.६९

तीसरा परिशिष्ट

मोग्गल्लान गण-पाठ

नमो तस्स भगवतो अरहतो सम्मासम्बुद्धस्स

तीसरा परिशिष्ट

मोग्गल्लान गण-पाठो

व्याकरण में कुछ ऐसे नियम आते हैं, जो कुछ निश्चित शब्द अथवा धातु पर ही लागू होते हैं। जैसे—

घ्यादीहि युत्ता २.९—अर्थात् 'धि' आदि शब्दों के योग में दुतिया विभक्ति होती है। *'धि' आदि शब्द आठ हैं*—धि, हा, अन्तरा, अन्तरेन, अभितो, परितो, सब्बतो, उभयतो।

ऊपर के सूत्र में, इन आठों शब्दों का उल्लेख न करके, सरलता के लिए, उनका बोध 'धि-आदि' से कर लिया गया है। इस तरह, इन आठ शब्दों का एक गण हुआ, जिसका नाम 'ध्यादि' पड़ा; क्योंकि यह गण 'धि' शब्द से आरम्भ होता है।

मोग्गल्लान व्याकरण में ऐसे अस्सी गण हैं। कुछ तो छोटे छोटे गण हैं, जिन में दो या तीन ही शब्द या धातु हैं; परन्तु, बड़े बड़े गणों में उनकी संख्या तीस-चालीस तक भी है।

किसी गण को आसानी से खोज निकालने के लिए, अ-कारादि क्रम से गणों की एक सूची दे दी जाती है—

मोग्गलान गण-पाठ की सूची

अङ्गुलि	आदि	४.३५	अभिज्झा	आदि	४.८६
अज्ज	,,	४.२१	अम्मा	,,	२.६३
अणु	,,	४.६२	आदि	,,	४.१८

वद	आदि	५.३०	सद्धा	आदि	४.८४
विध	,,	३.९१	सब्ब	,,	२.१०१
विधवा	,,	४.३	साखा	,,	४.३५
वस	,,	५.४६	स	,,	५.४३
सक्करा	,,	४.३५	सील	,,	४.८८
सच्च	,,	५.१३	सुमेध	,,	२.१३०
सत	,,	३.९४:५३	सोत	,,	३.७२
सद्द	,,	५.१०	हर	,,	२.५

पठमो कण्डो

तदमिनादीनि। १.४७

तदमिना, सकदागामी, एकमिदाहं, संविदावहारो, वलाहको, जीमूतो, सुसानं, उदुक्खलं, पिसाचो, मयूरो, दोवारिको, सीहो, नियको, मेखला, मागविको, सोवग्गिको, लोलुपो, मोमुहो, महिंसो, पिसोदरं, पुरेक्खारो, आकासानञ्चं, अञ्ञोञ्ञं, दुस्स, विहगो, द्विजो, कळभो, दक्खिति, अभिसंखासि, पिदहति, पिदहन्तिच्चादयो, अपिपुब्बदधातिना, निप्फत्रा, लुत्ता, कारा, सद्दा, इति तदमिनादि। (आकतिगणोऽयं)

(यं यं लक्खणेनानुपपन्नं तं सब्बं तदमिनादिपक्खेन साधेतब्बं।)

दुतियो कण्डो

गतिबोधाहारसद्दत्थाकम्मकभज्जादीनं पयोज्जे। २.४.

भज्ज=पाके, कुट कोट्ट=च्छेदने, थर=सन्थरणे इति भज्जादि।

हरादीनं वा। २.५.

हर=हरणे, अज्झोपुब्ब-हर=अज्झोहारे, कर=करणे, दिस=पेक्खने, अभिवादि=(नाम धातु) अभिवादने इति हरादि।

न खादादीनं। २.६.

खाद=भक्खने, अद=भक्खने, व्हे=अव्हाने, सद्दाय=(नाम धातु) सद्दकरणे, कन्द=व्हान रोदनेसु, नी=पापुणने, (अनियन्तुके कत्तरि गम्यमाने) वह=पापणे, (अहिंसायं गम्यमानायं) भक्ख=अदने, इति खादादि।

ध्यादीहि युत्ता। २.९.

धि, हा, अन्तरा, अन्तरेन, अभितो, परितो, सब्बतो, उभयतो, इति ध्यादि (आकतिगणोयं)।

ल्तुपितादीनमा सिम्हि। २.५९.

पितु, मातु, भातु, धीतु, दुहितु, जामातु, नत्तु, होतु, पोतु, इति पितादयो।

घ ब्रह्मादिते। २.६२.

ब्रह्म, कत्तु, इसि, सख, मुनि, भदन्त, इति ब्रह्मादि। (आकतिगणोयं)

नाम्मादीहि। २.६३.

अम्मा, अन्ना, अम्बा, ताता, इति अम्मादि। (आकतिगणोयं)
[सम्बोधने गस्स एकारलाभिनो घसञ्ञा सब्बे एत्थ दट्ठब्बा।]

अम्ब्वादीहि। २.८०.

अम्बु, पंसु, इच्चादि अम्बु—आदि। (अयञ्चाकतिगणो)

[यस्स सद्दस्स सत्तम्येकवचने नि-आदेसो वा दिस्सति, सोऽयं अम्ब्वादिसु दट्ठब्बो।]

कम्मादितो। २.८१.

कम्म, चम्म, वेस्म, भस्म, ब्रह्म, अत्त, आतुम, घम्म, मुद्ध, (कालद्धान वाचि) अद्ध, अस्म, गाण्डीवधन्व, अणिम, लघिम, कसिम, महिम, इच्चादि कम्मादि। (अयम्पाकतिगणो)

[यस्स सद्दस्स सत्तम्येकवचने वा नि आदेसो, ततियेकवचने वा एनादेसो च दिस्सति, अयं कम्मादिसु दट्ठब्बो।]

जन्त्वादितो णो च। २.८६.

जन्तु, गोत्रभू, सहभू एवमादि जन्त्वादि। (अयमाकतिगणो)
[यतो परेसं योनं वो-नो-आदेसा वा दिस्सन्ति, अयं जन्त्वादिसु दट्ठब्बो।]

सब्बादीनं नम्हि च। २.१०१.

सब्ब, कतर, कतम, उभय, इतर, अञ्ञ, अञ्ञतर, अञ्ञतम, (ववत्थायं असञ्ञायं वत्तमाना) पुब्ब, पर, अपर, दक्खिण, उत्तर, अधर, य, त्य, त, एत, इम, अमु, किं, एक, तुम्ह, अम्ह इति सब्बादि।

[किञ्चापि कच्चानेन त्यसद्दो सब्बादिसु न पठितो, तथापि 'खिड्डा पणिहिता त्यासु रति त्यासु पतिट्ठिता' त्यादि पाळियं पयोगस्स दिस्समानत्ता 'सो' पि सब्बादिसु दट्ठब्बो।]

पदादीहि सि। २.१०७.

पद, बिल इति पदादि।

कोधादीहि। २.१०९.

कोध, अत्थ इति कोधादि
[मुखदमादीहपि परस्स नास्स सादेसो दिस्सते देसनायं।]

एकच्चादीहतो। २.१३७.

एकच्च, एस, स, पठम, कतिपय, इच्चादि एकच्चादि।

मनादीहि स्मिं-सं-ना-स्मानं सि-सो-ओ-सा-सा। २.१४६

मन, तम, तप, तेज, सिर, उर, वच, ओज, रज, यस, पय, (जलासयवाचि) सर, (अक्खयवाचि) वय, (लोहवाचि) अय, (पटवाचि) वास, (मनोवाचि) चेत, छन्द, इति मनादि।

[अञ्ञे हि तु अह-रह-सद्दापि मनादिसु पठीयन्ते; तथापि 'अह' सद्दस्स मनादिसु कारियासम्भवा, 'रह-'सद्दस्स च निपातत्ता न इह ते मनादिसु दट्ब्बानि परिक्खित्ता। यदिपि रहसीति च पयोगो दिस्सते पाळियं, तथापि एत्थापि न सत्तम्यन्तो रह-सद्दो। किंत्वयमपि सत्तम्यन्तपतिरूपको विसुं येव निपातो।

'मनादीनं सक्' इति ४.१२८ एत्थ तु सुमेघादयो'पि मनादिसु पठीयन्ते, णानुबन्धप्पच्चये परे सकागमत्थ सकागमसुत्तमन्तरेन अञत्र तु ते'पि न मनादिसु दट्ठब्बा।]

सुमेधादीनमवुद्धि च (५)

सुमेध, भूरिमेध, मन्दमेध, अप्पमेध, इच्चादि सुमेधादि।

[पाणिनीयेहि समासन्तानं विधानावसरे नञ्दुसु इच्चेतेहि परेहि अकारन्ते हि त्थियलिङ्गेहि पजा-मेधासद्देहि "नित्यमसिच् प्रजामेधयोः ५.४.१२४" इच्चनेन सुत्तेन अस् विधाय सकारन्ता "अप्रजस्, दुष्प्रजस्, सुप्रजस् अमेधस्, दुर्मेधस्, सुमेधस्" इच्चेते सद्दा निप्फादीयन्ते।

[चन्दव्याकरणे तु "प्रजाया असिच् ४.४.१०७ मन्दाल्पाच्च मेधायाः ४ ४. १०८" इति सुत्तेहि द्वीहेतेहि यथावुत्ता चेव पाणिनीया तदधिका "मन्दमेधस्, अल्पमेधस्" इति सद्दा च निप्फादीयन्ते।

अस्मिमपि सद्दलक्खणे 'सुमेधादीनम वुद्धि च इति गण-सुत्तेनानेन यथावुत्तेसु तेसु सकारन्तेसु ये ये बुद्धवचने दिस्सन्ति तेसमेव सद्दानं गहणन्ति मञ्ञाम।]

राजादियुवादित्वा। २.१५६.

राज, ब्रह्म, सख, अत्त, आतुम, अस्म, मुद्ध, (कालद्धानवाचि) अद्ध, गाण्डीव-धन्व, (अञ्ञत्थे वत्तमानधम्मसद्दन्ता) दळ्हधम्म, पञ्चक्खधम्म, कल्याणधम्म, अधीतधम्म (इच्चादयो विकप्पेन, भावे, इमप्पच्चयन्ता) अणिम, लघिम, महिम, कसिम् इच्चादयो च राजादयो।

युव, सा, सुवा, मघव, पुम, वत्तह इच्चादयो युवादयो।

(इमे'पि द्वे आकतिगमणा'व, तेन यथागममञ्ञे'पि सद्दा एत्थ दट्ठब्बा।)

दिवादितो। २.१७७.

दिव, भू, इति दिवादि।

पितादीनमनत्वादीनं। २.१७९.

पितादयो दस्सितपुब्बा'व। नत्तु, होतु, पोतु, इति नत्तादि।

(इति स्यादि कण्डो दुतियो)

ततियो पाठो

तिट्ठग्वादीनि । ३.७.

तिट्ठगु, वहग्गु, आयतिगवं, खलेयवं, लूनयवं, लूयमानयवं, संहटयवं, उम्मत्त-गङ्गं, लोहितगङ्गं, समम्भूमि, समम्पदाति, सुसमं, विसमं केसाकेसि, मुट्ठामुट्ठि, दण्डादण्डि, मुसलमामुसलि, (इच्चादयो च्यन्ता), पातनहानं, सायनहानं, पातकालं, सायकालं, पातमेघं, सायमेघं, पातमग्गं, सायमग्गं, इच्चादि तिट्ठग्वादि ।(आकतिगणोयं)

कुपादयो निच्चमस्यादि विधिम्हि । ३.१३.

प, परा, अप, सं, अनु, अव, ओ, नि, दु, वि, अधि, अपि, अति, सु, उ, अभि, पति,परि, उप, आ, इति पादि ।

(किञ्चापि कच्चानेहि ओ-उपसग्गं पहाय 'वि-नी' इति द्वे उपसग्गा पठिता, तथापि इह यथा दूरक्ख-वीतिहार-अतीसारादिसु 'दू-वी-अतीनं' दीघेन सिद्धि, तथेव नी-सद्दस्सापि दीघेन सिद्धि भवतीति, नी-सद्दं पहाय ओ-उपसग्गो पठितो।)

नदादितो ङी। ३.२७.

नद, मह, कुमार, तरुण, वरुण, नगर, ब्राह्मण, सूकर, हंस, कुक्कुट, किसोर, कलभ, हरीतक, देव, मातामह, पितामह, विसालक्ख, सख, काळ, अतस, नीलि, पालि, भूरि, खज्जूर, वदर, कुरर, संवर, मेर, दब्बि, धमनि, वत्तनि, सकुन, सकुण, पुत्त, सोणि, दोणि, वलि, वल्लि, पञ्चम, छट्ठ, छट्ठम, सत्तम, अट्ठम, नवम, दसम, कतिमादयो (पूरणत्थपच्चयन्ता) ; नन्दन्त, जीवन्त, सवन्त, रोदन्त, अवन्तादयो (अन्तप्पच्चयन्ता); पचन्त, महन्त, भवन्तादयो (न्तप्पच्चयन्ता); वासिट्ठ, गोतम, माणव, ओपगव, मानुस, तापस, कोसम्ब, काकन्द, माकन्द, साहस्स, फुस्स, वेसाख, मागसिरादयो (णप्पच्चयन्ता) वच्छतर, उक्खतर अस्स-तर, उसभतर, महत्तरादयो (केचि तर-पच्चयन्ता); वेनतेय्य, सामणेरादयो (णेय्य-णेरन्ता); नाविकादयो (णिकन्ता); गुणवन्त, सुतवन्त, सतिमन्त, गोम-न्तादयो (न्त्वन्ता); गो (विकप्पेन); पुंयोगतो इत्थियं वत्तमाना पुमुनो सञ्ञाभूता अपालकन्ता सद्दा इच्चादि नदादि। (आकतिगणोयं)

[यतो यतो नामस्मा इत्थियं ङीपच्चयो दिस्सते, सो नदादिसु दट्ठब्बो। कुतोचि नामस्मा ङीपच्चयो विकप्पेन भवति। कुतोचि निच्चं। तस्मा यथा यथा जिनवचने दिस्सति, तथा तथा एव ङीपच्चयो नदादितो दट्ठब्बो।]

यक्खादित्थिनी च। ३.२८

यक्ख, नाग, सीह, सपत्ति, इच्चादि यक्खादि। (आकतिगणोयं)

आरामिकादीहि। ३.२९.

आरामिक, अनन्तरायिक, राज, दोहळ, (सञ्ञायं गम्यमानायं) मानुस एवमादि आरामिकादि। (आकतिगणोयं)

घरण्यादयो। ३.३२.

घरी, पोक्खरी, उदरी, वपुलत्थप्पकासी, मनोरथपूरी, पपञ्चसूदी, तिरोकरी, आचरिय एवमादि घरण्यादि। (आकतिगणोयं)

मातुलादित्वानी भरियायं। ३.३३.

मातुल, वरुण, इन्द, गहपति, आचरिय, (अभरियायं) खत्तिय, अय्यक एवमादि मातुलादि।

पापादीहि भूमिया। ३.४१.

पाप, जाति इति पापादि।

मनाद्यपादीनमो मये च। ३.५९.

मानदि वुत्तपुब्बं। आप, दिसा, अह, रह, वाय, सरद इच्चादि आपादि। (आकतिगणोयं)

कुम्भादिसु वा। ३.७२.

कुम्भ, पत्त, विन्दु इच्चादि केम्भादि। (आकतिगणोयं)

सोतादिसू लोपो। ३.७३.

सोत, रक्खस, आसय इच्चादि सोतादि। (आकतिगणोयं)

[येसु सद्देसु परेसु उदकसद्दस्स उकारो लुप्यते, ते सद्दा सोतादिसु दठ्ठब्बा। केचि तु दकसद्दमेविच्छन्ति, नेवुलोपं।]

नखादयो। ३.७६.

नख, नकुल, नपुंसक नक्खत्त, नाक, नमुचि, नक्क, एवमादि नखादि। (आकति-गणोयं)

समानस्स पक्खादिसु वा। ३.८३.

पक्ख, जोति, जनपद, रत्ति, पत्तिनि, पत्ती, नाभि, वन्धु, ब्रह्मचारी, नाम, गोत्त, रूप, ठान, वण्ण, वयो, वचन, धम्म, जातिय, घच्च इति पक्खादि।

विधादिसु द्विस्स दु। ३.९१.

विध, पट्ट, रत्ति, अङ्ग, (हळादेसलाभि) हृदय, इति विधादि।

दि गुणादिसु। ३.९२.

गुण, रत्ति, गो, पद, सत, सहस्स, वचन, इति गुणादि।

आ संख्यायासतादो' नञ्ञत्थे। ३.९४.

सह, सहस्स, सतसहस्स, लक्ख, कोटि, एवमादि सतादि।

चत्तालीसादो वा। ३.९६.

चत्तालीस, पञ्ञास, सट्ठि, सत्तति, असीति, नवुति, इति चत्तालीसादि।

(इति समासकण्डो ततियो)

चतुत्थो कण्डो

वच्छादितो णान-णायना। ४.२.

कच्छ, कच्च, कातिय, मोग्गल्ल, सकट, (ब्राह्मणे) कण्ह, अस्सल, वदर, अग्गि-वेस्स, मुञ्ज, कुञ्ज, हरित, गग्ग, दक्ख, दोण एवमादि वच्छादि। (आकतिगणोयं)

[उभो णान-णायना उभिन्नमञ्ञतरो वा येहि दिस्सते ते सब्बे वच्छादिसु दट्ठब्बा।]

कत्तिकाविधवादीहि णेय्य-णेरा। ४.३.

कत्तिका, विनता, भगिनी, रोहिनी, अत्ति, पण्हि, गङ्गा, नदी, अन्त, अहि, कपि, सुचि, बाला, इच्चादि कत्तिकादि। (आकतिगणोयं)

[येभुय्येन घपसञ्जन्ता अञ्ञे च केचि अत्ति पण्हि इच्चादयो एत्थ दट्ठब्बा।]

विधवा, बन्धकी, नाळिकी, समण, चटक, गोधा, काण, दासी इच्चादि विधवादि। (आकतिगणोयं)

[यतो णेर-प्पच्चयो दिस्सति सो विधवादिसु दट्ठब्बो।]

ण्य दिच्चादीहि। ४.४.

दिति, अदिति, कुण्डनी, गग्ग, भातु, कत, मुग्गल, वच्छ, अग्गिवेस्स, इच्चादि दिति-आदि। (आकतिगणोयं)

[येहि ण्यो दिस्सति ते दिच्चादिसु दट्ठब्बा। सक्कते गग्गादिगणतोपि यो यो इध जिनवचने लब्भति सो' पि एत्थेव दट्ठब्बो।]

अज्जादीहि तनो। ४.२१.

अज्ज, स्वे, हिय्यो, सायं इति अज्जादि।

मज्झादित्विमो। ४.२४.

मज्झ, अन्त, हेट्ठा उपरि, ओर, पार, पच्छा, अब्भन्तर, पच्चन्त इति मज्झआदि।

गवादीहि यो। ४.३५.

गो, कवि, दु इति गो-आदि।

साखादीहि इयो (४३)

साखा, मेघ, कुसग्गिय इति साखा-आदि।

मुखादीहि यो (४४)

मुख, जघन, इति मुखादि।

सक्करादीहि णो (४६)

सक्करा, कपालिका इति सक्करादि।

अङ्गुल्यादीहि णिको (४७)

अङ्गुलि, मुनि, वाल, कुलिस, एकसाला, कक्क, लोहित इति अङ्गुल्यादि।

सञ्जातं तारकादित्वितो। ४.४५.

तारका, पुप्फ, पल्लव, फल, कण्णक, कण्टक, सुत्त, मुत्त, उच्चार, विचार, पचार, मुकुळ, कुसुम, थवक, किसलय, कुतूहल, निद्दा, मुद्दा, तन्दा, बुभुक्खा, पिपासा, मुच्छा, जिगुच्छा, संका, आसंका, सद्द, सुख, दुक्ख, उक्कण्ठा, बाधा, आबाधा, भर, व्याधि, अन्ध, वधिर, पण्ड, संसय, विम्हय, एवमादि तारकादि। (आकतिगणोयं)

तस्स पूरणेकादसादितो वा। ४.५१.

एकादस—अट्ठारस, एकूनवीसति—एकूनतिंसति—एकूनचत्तालीस—एकूनपञ्ञास—अट्ठपञ्ञास इति एकादसादि।

म पञ्चादिकतीहि। ४.५२.

पञ्च, सत्त, अट्ठ, नव, दस—अट्ठादस, एकूनवीसति—एकूनतिंसति इच्चादि पञ्चादि।

[छ-सङ्ख्याय सतादीहि च विना तदितरेहि येहि संख्यासद्देहि मप्पच्चयो दिस्सते ते सब्बे पञ्चादिसु दट्ठब्बा।]

सतादीनमि च। ४.५३.

सत्त—दससत, सहस्स—सतसहस्स इति सतादि।

वच्छादीहि तनुत्ते तरो। ४.५६.

वच्छ, उक्ख, अस्स, उसभ, इति वच्छादि।

अण्वादित्विमो। ४.६२.

अणु, लघु, महन्त, किस, गरु इति अण्वादि।

जनादीहि ता। ४.६९.

जन, गज, वन्धु, गाम, सहाय, नगर इति जनादि।

चक्खुवादितो स्सो । ४.७१.

चक्खु, आयु इति चक्खवादि ।

कथादित्विको । ४.७४.

कथा, धम्मकथा, सङ्गाम, पवास, उपवास इति कथादि ।

पथादीहि णेय्यो । ४.७५.

पथ, सपति, पदीप इति पथादि ।

दण्डादित्विक ई वा । ४.८०.

दण्ड, गन्ध, रूप, रस, सीस, केस, सस, धम्म, सङ्घ, ञाण, गण, चक्क, पक्ख, दाठा, रट्ठ, कुट्ठ, जटा, छत्त, मन्त, योग, भोग, भाग, चाग, काम, धज, यान, कर, कुसल, मुसल, कंखा, विचिकिच्छा, धनसद्दो, (असम्पत्ते वत्तब्बे) अत्थसद्दो, पुञ्ञत्थ, धम्मत्थ, धनत्थादयो ('अत्थ' सद्दन्ता) । ब्रह्मवण्ण, देववण्ण, सुवण्ण, वण्णादयो (वण्णन्ता); (जातियं गम्यमानायं) हत्थ, दन्तसद्दा; (ब्रह्मचारिणि वाचिनि) वण्णसद्दो; (देसे वत्तब्बे) पोक्खर, उप्पल, कुमुद,भिस, मुळाल, सालूक, पदुम, कद्दमादि, पोक्खरादि; (क्वचि अदेसे'पि) पदुमसद्दो, नावासद्दो, सुख, दुक्खसद्दा च, सिखा, माला, सील, वल, मेखला, वीणा, सञ्ञा, वळवा, अट्ठका, वलाका, पताका, कम्म, वम्म, उस्साह, कूल, मूल, आयाम, वायाम, उपयाम, आरोह, अवरोह, एवमादि सिखादि; वाहुवल, ऊरुवल सद्दा च इच्चादि दण्डादि । (आकति-गणोयं)

तपादीहि स्सी । ४.२१.

तप, यस, तेज, मन, पय, इति तपादि ।

मुखादितो रो ४.८२.

मुख, सुसि, ऊस, मधु, ख, कुञ्ज, नग, नख, (उन्नतदन्ते वत्तब्बे) दन्त, रुचि, सुभ, सुचि, इति मुखादि ।

तुट्ठ्यादीहि भो । ४.८३.

तुट्ठि, सालि, वलि, इति तुट्ठ्यादि ।

आल्वभिज्झादीहि। ४.८६.

अभिज्झा, सीत, धज, दया, सद्धा, निद्दा, इति अभिज्झादि।

पिच्छादित्विलो। ४.८७.

पिच्छ, फेण (फेन), जटा, वाचा, तुण्ड इच्चादि पिच्छादि। (आकतिगणोयं)

सीलावितो वो। ४.८८.

सील, केस, अण्ण, (सञ्ञायं वत्तब्बायं) गाण्डी, राजी च एवमादि सीलादि। (आकतिगणोयं)

अभ्यादीहि। ४.९७.

अभि, परि, पच्छा, हेट्ठा, ओर, पार, पुरादि अभ्यादि।

आद्यादीहि। ४.९८.

आदि, मज्झ, अन्त, पिट्ठि, पस्स, मुख, य, एवमादि आद्यादि।

[ससंख्येहि तन्तुल्येहि चापञ्चम्यन्तेहि येहि तो दिस्सति ते आद्यादिसु दट्ठब्बा।]

(इति णादिकण्डो चतुत्थो)

पञ्चमो कण्डो

सद्दादीनि करोति। ५.१०.

सद्द, वेर, कलह, धूप, अब्भ, मेघ, अट्ट, सुदिन, दुद्दिन, नीहार, इच्चादि सद्दादि।

सच्चादीहापि। ५.१३.

सच्च, अत्थ, वेद, सुक्ख, सुख, दुक्ख, एवमादि सच्चादि।

चुरादितो णि। ५.१५.

चुरादि, भुवादि, रुधादि, दिवादि, तुदादि, ज्यादि, क्यादि, स्वादि, तनादि, इच्चेते धातुगणा धातुपाठतो येवावगन्तब्बा।

वदादीहि यो। ५.३०.

वद=वचने, मद=उम्मादे, भ्रम, गम=गमने, गद=वचने, पद=गमने, अद, खाद=भक्खने, दम=दमने, (अन्ते'भिधेय्ये) भुज=पालनज्झोहारेसु (सञ्ञायं वत्तब्बायं), भर=भरणे एवमादि वदादि। (आकतिगणोयं)

गुहादीहि यक्। ५.३२.

गुह=संवरणे, दुह=प्पपूरणे, सास=अनुसिट्ठियं, एवमादि गुहादि। (आकतिगणोयं)

समानञ्ञभवन्तयादितूपमाना दिसा कम्मे रीरिक्खका। ५,४३.

य, त्य, त, एत, इम, अमु, किं, एक, तुम्ह, अम्ह, इति यादि।

वमादीहथु। ५.४६.

वम=उग्गिरणे, वेप, कम्प=चलने, दू=परितापे, सी=सये इति वमादि।

पदादीनं क्वचि। ५.९२

पद=गमने, मद=उम्मादे, बुध=ञाणे, युध=सम्पहारे, मन=ञाणे, रुध=आवरणे, मुह=वेचित्ते, तुस=तुट्ठियं, नस=अदस्सने, भस=अधोपतने, सुस=सोसे, कुप=कोपे, सीव=तन्तुसन्ताने, पूज=पूजायं इच्चादि पदादि। (आकतिगणोयं)

गमादिरानं लोपो'न्तस्स। ५.१०९.

भ्रम, गम=गमने, खन, खण=अवदारणे, हन=हिंसायं, मन=ञाणे, तन=वित्थारे, यम=उपरमे, रम=कीळायं, नम=नमने, एवमादि गमादि। (आकतिगणोयं)

अञ्ञादिस्सास्सि क्ये। ५.१३७.

ञा=अवबोधने, ता=पालने, पा=रक्खने, खा-ख्या=कथने, वा=गमने, झा=चिन्तायं, दा=अवखण्डने, गिला=हासक्खये, मिला=गत्तविनामे इच्चादि ञादि। (आकतिगणोयं)

पुच्छादितो। ५.१४३.

पुच्छ=पुच्छने, भज्ज=पाके, यज=देवपूजासंगतिकरणदानेसु, सज=सङ्गे, सज=विस्सज्जनालिङ्गननिम्मानेसु, मज्ज=संसुद्धियं, हर=हरणे, इच्चादि पुच्छादि। (आकतिगणोयं)

रुहादीहि हो ळ च। ५.१४८.

रुह=जनने, गुह=संवरणे, वह=पापुणने, वह-ब्रह-ब्रूह=वुद्धियं, इच्चादि रुहादि। (आकतिगणोयं)

भिदादितो नो क्तक्तवन्तूनं। ५.१५०.

भिद=विदारणे, छिद=द्वेधाकरणे, छद=संवरणे, खिद=असहने, पद=गमने, सिद=पाके, सद=विसरणगत्यवसादनादानेसु, पी=तप्पने, सु=पसवे, दी=खये, डी-ळी=आकासगमने, ली=सिलेसने, लू=च्छेदने, रुद=रोदने, एवमादि भिदादि। (आकतिगणोयं)

किरादीहि णो। ५.१५२.

किर=विकिरणे, पूर=पूरणे, खी=खये, तुद=व्यथने, एवमादि किरादि। (आकतिगणोयं)

तरादीहि रिण्णो। ५.१५३.

तर=तरणे, जर=वयोहानियं, चि=चये, एवमादि तरादि। (आकतिगणोयं)

गो भञ्जादीहि। ५.१५४.

भञ्ज=ओमद्दने, लग=सङ्गे, मुज्ज=मुज्जने, विज=भयचलनेसु एवमादि भञ्जादि। (आकतिगणोयं)

(इति खादिकण्डो पञ्चमो)

(इधाम्हेहि आकतिगणत्तेन नोपदिट्ठापि आदिसद्दोपलक्खिता सब्बे आकतिगणोयेव। यतो इध वुत्तानमादिसद्दोपलक्खितगणानमाकारमादस्सयमिदमाह सद्-

लक्खणकत्तायेव। यथा चायमाकतिगणो तथा ञ्ञत्रापि आदिसद्दोपलक्खिता गणा आकतिगणाति दस्सेतुमाह एवमञ्ञत्रापि।

आकति इति

च जाति वुच्चति: तप्पधाना गणा आकतिगणा।)

इति मोग्गल्लान गण-पाठो

चौथा परिशिष्ट

समास, स्त्री-प्रत्यय, समासान्त

समास-तालिका

पूर्व पद	उत्तर पद	विकार	उदाहरण	सूत्र संख्या	पृष्ठ संख्या
न	×	अ ×	न ब्राह्मणो—अब्राह्मणो	३.१२; ७४	२७४
कुच्छितो	×	कु ×	कुच्छितो ब्राह्मणो—कुब्राह्मणो	३.१३	२७५
ईसकं	×	कद ×	ईसकं उण्हं—कदुण्हं	३.१३	२७५
×	(अप्रधान) घ, प	× ह्रस्व	बहुमालो पोसो। निक्कोसम्बि	३.२४	२७०
×	गो	× गु	चित्ता गावो यस्स—चित्तगु	३.२५	२७०
इम	×	इदं ×	इमेसं पच्चया—इदप्पच्चया	३.५५	२७३
पुम	×	पुं ×	पुमस्स लिङ्गं—पुंलिङ्गं	३.५६	२७३
न्त, न्तु	×	अ ×	भवम्पतिट्ठा मयं—भगवम्मूलको नो धम्मो।	३.५७	२७०
न्तु	×	न्त ×	गुणवन्तपतिट्ठो.	३.५८	२७०
मन	×	मनो ×	मनोसेट्ठा। मनोमया	३.५९	२७०
पर	(संख्या-वाचक)	परो ×	परोसतं। परोसहस्सं	३.६०	२६९
पुथ	जनो	पुथु ×	पुथुज्जनो	३.६१	२७५
छ	अहं। आयतनं	स ×	साहं (=छाहं)। सळायतनं	३.६२	२७५
ल्तु	×	तार ×	सत्थुनो दस्सनं—सत्थारदस्सनं	३.६३	२७३
ल्तु	(विज्जा, योनि)	ता ×	होतापोतारो	३.६४	२८०
पितु	पुत्त	पिता ×	पितापुत्ता	३.६५	२८०
(इत्थियं)	(समाना-धिकरणं)	(पुमेव) ×	कुमारी भरिया यस्स सो—कुमारभरियो	३.६७	२७१
(इत्थियं) सब्बादि	(वुत्तिमत्तं)	(पुमेव) ×	तस्सा मुखं—तस्मुखं	३.६९	२७४
जाया	पति	जयं ×	जाया च पति च—जयम्पती	३.७०	२८०
उदक	× (सञ्ञायं)	उद ×	उदकस्स पानं—उदपानं	३.७१	२७८

पूर्व पद	उत्तर पद	विकार	उदाहरण	सूत्र संख्या	पृष्ठ संख्या
उदक	सोतं	दक ×	उदकस्स सोतं—दकसोतं	३.७३	२७४
न	(स्वर)	अन ×	न अक्खातं—अनक्खातं	३.७५	२७४
सह	×(अञ्ञ-त्थे)	स ×	सपुत्तो (सहपुत्तो)	३.७८-८२.	२६८, २७१
समान	(पक्खादि)	स ×	समानो पक्खो—सपक्खो	३.८३-८५	२७१, २७६
तुम्ह	×	तं ×	तंसरणा। तन्दीपा	३.८९	२७१
अम्ह	×	मं ×	मंसरणा। मन्दीपा	३.८९	२७१
द्वि	विध(आ-दि)	दु ×	दुविधो। दुप्पटं	३.९१	२७२
द्वि	गुण(आदि)	दि ×	दिगुणं। दिरत्तं। दिगु	३.९२	२७२
द्वि	ति	द्व ×	द्वत्तिक्खत्तुं	३.९३	२७२
द्वि	(असातादि संख्या)	द्वा ×	द्वादस। द्वावीसति	३.९४	१६८
ति	,,	ते ×	तेरस। तेवीसति।	३.९५	१६८
ति	(चत्ताली-सादि)	ति, ते×	तेचत्तालीस। तिचत्तालीस	३.९६	१७१
द्वि	(अचत्ता-लीसादि)	बा ×	बारस। बावीसति	३.९८	१६८
पञ्च	दस	पन्न ×	पन्नरस (पञ्चदस)	३.९९	१६८
पञ्च	वीसति	पण्ण ×	पण्णुवीसति (पञ्चवीसति)	३.९९.	१६८
चतु	दस	चु, चो×	चुद्दस, चोद्दस, चतुद्दस	३.१००	१६८
छ	दस	सो ×	सोळस	३.१०१	१६९
एक	दस	एका×	एकादस	३.१०२	१६८
अट्ठ	दस	अट्ठा×	अट्ठादस.	३.१०२	१६८
(संख्यावा-चक)	दस	× रस	एकारस (एकादस)	३.१०३	१६८
छ। ति	दस	× ळस	सोळस(सोरस)। तेळस (तेरस)	३.१०४	१६८
कु (अप्पत्थे)	×	का ×	अप्पकं लवणं—कालवणं	३.१०८	२७५
कु	पुरिस	का ×	कापुरिसो	३.१०९	२७५
(पुब्बादि)	अह	× अन्ह	पुब्बन्हो। सायन्हो	३.११०	२७६

स्त्री प्रत्यय

प्रत्यय	प्रयोग-स्थान	उदाहरण	सूत्र संख्या	पृष्ठ
आ	अकारान्ततो	धम्मदिन्ना	३.२६	२३९,२४२
ङी	नदादितो	नदी, मही, कुमारी	३.२७	२४०
ङी	न्तन्तूनं तो वा	गच्छती, गच्छन्ती। सील-वती, सीलवन्ती।	३.३६	२४०
ङी	भवतो भोतो	भोती, भवन्ती	३.३७	२४०
ङी	गोस्सावङ्	गावी	३.३८	२४०
ङी	पुथुस्स पथव-पुथवा	पथवी, पुथवी	३.४०	२४०
इनी	यक्खादितो	यक्खिनी, यक्खी	३.२८	२४०
इनी	आरामिकादीहि	आरामिकिनी	३.२९	२४१
नी	इ-उवण्णेहि	दण्डिनी, भिक्खुनी	३.३०	२४१
नी	क्तिम्हा अञ्ञत्थे	साहं अहिंसारतिनी	३.३१	२४१
आनी	मातुलादितो	मातुलानी (-भरियायं)	३.३३	२४२
ऊ	उपमानादिपुब्बा	करभोरू, वामोरू	२.३४	२४२
ति	युवा	युवति	३.३५	२४२

समासान्त प्रत्यय

अ	पापादीहि भूमिया	पापभूमं। जातिभूमं	३.४१	२८४
अ	संख्याहि भूमिया	द्विभूमं। तिभूमं	३.४२	२८४
अ	नदी गोदावरीनं	पञ्चनदं। सत्तगोदावरं	३.४३	२८४
अ	अङ्गुल्या	निग्गतमङ्गुलीहि–निरङ्गुलं	३.४४	२८४
अ	रत्तिया	दीघरत्तं। अहोरत्तं	३.४५	२८४
अ	'गो' सद्दा	राजगवो। परमगवो	३.४६	२८५
अ	अक्खिस्मा	विसालक्खो	३.४९	२८५
अ	अङ्गुलन्ता (दारुम्हि)	पञ्चङ्गुलं दारु	३.५०	२८५
चि	वीतिहारे	केसाकेसि। दण्डादण्डि	३.५१	२८५
क	ल्तु-ई-ऊ कारन्तेहि	बहुकत्तुको। बहुकुमारिको	३.५२	२८६
क	अञ्ञेहि अञ्ञपदत्थे	बहुमालको	३.५३	२८६

पाँचवाँ परिशिष्ट

तद्धित



नमो तस्स भगवतो अरहतो सम्मासम्बुद्धस्स

पाँचवाँ परिशिष्ट

तद्धित प्रत्यय लगाने के साधारण नियम

साधारण नियम

'ण' अनुबन्ध

१. प्रत्यय में यदि 'ण' अनुबन्ध लगा हो, तो शब्द के प्रथम 'अ', 'इ' तथा 'उ' का क्रमशः 'आ', 'ए' तथा 'ओ' होता है। जैसे:—रघु+ण=राघवो।

२. यदि 'ण' अनुबन्ध वाला कोई स्वरादि प्रत्यय हो, तो शब्द के अन्त्य 'उ' का 'अव' होता है। जैसे:—रघु+ण=राघवो।

३. शब्द के प्रथम 'अ', 'इ' तथा 'उ' से परे, यदि कोई संयुक्त अक्षर हो, तो उनका कभी-कभी 'आ', 'ए' तथा 'ओ' नहीं भी होता है। जैसे:—कत्तिका+णेय्य=कत्तिकेय्यो।

४. कभी-कभी, बीच के 'अ-इ-उ' का भी 'आ-ए-ओ' हो जाता है। जैसे:—वसिट्ठ+ण=वासेट्ठो!

'र' अनुबन्ध

५. प्रत्यय में यदि 'र' अनुबन्ध लगा हो, तो शब्द के अन्तिम स्वर से ले कर आगे के अंश का लोप होता है। जैसे:—पितु+रेय्यण=('पितु' के 'इतु' का लोप) पेत्तेय्यं।

---

(१) ४.१२४। (२) ४.१२६। (३) ४.१२५। 'कात्तिकेय्यो' नहीं हुआ, क्योंकि 'क' से परे संयुक्त अक्षर 'त्त' है। (४) ४.१२६। (५) ४.१३२।

'ड' प्रत्यय

६. 'ड' प्रत्यय आने से, 'सत्यन्त' संख्या वाचक शब्द* के 'ति' का लोप होता है। जैसे :—वीसति+ड=वीसं। तिंसं।

स्त्री प्रत्यय लगने पर

७. ककारान्त शब्द से परे, यदि स्त्री-प्रत्यय 'आ' आवे, तो 'क' के पर्व 'अ' का बहुधा 'इ' होता है। जैसे बालक+आ=बालिका। कारिका।

---

(६) ४.१३४।
* जैसे—विंसति।
(७) ४.१४२।

तद्धित प्रत्ययों की सूची

क्रम संख्या	प्रत्यय	उदाहरण	प्रयोग-स्थान	सूत्र संख्या	पृष्ठ संख्या
१	अ	सद्धो	तं एत्थ अस्स अत्थि	४.८४	१९६
२	अच्चो	अमच्चो	तत्र भवे	४.२३	२६१
३	अय	उभयं, द्वयं	परिमाणे	४.४९	२४८
४	आकी	एकाकी	असहाये	४.५५	२४८
५	आमह	मातामहो	मातापितुसु	४.३८	२६९
६	आमी	सामी	तं एत्थ अस्स अत्थि	४.९०	१९७
७	आलु	अभिज्झालु	,,	४.८६	१९६
८	आवन्तु	यावन्तं, तावन्तं	,,	४.४३	२४६
९	इक	दण्डिको	,,	४.८०	१९४
१०	इक	कथिको	तत्थ साधु	४.७४	२६३
११	इट्ठ	पापिट्ठो	अतिसये	४.६४	२४८
१२	इत	तारकितं	संजातं इच्चत्थे	४.४५	२४७
१३	इम	पाकिमं	भावा तेन निब्बते	४.६३	२५२
१४	इम	अणिमा, लघिमा	भावे	४.६२	२०६
१५	इम	सतिमो, सहस्सिमो	पूरणे.	४.५३	१७६
१६	इम	मज्झिमो, अन्तिमो	तत्र भवे	४.२४	२६२
१७	इम	पुत्तिमो	तं एत्थ अस्स अत्थि	४.९४	१९२
१८	इय	पापियो	अतिसये	४.६४	२४८
१९	इय	अधिपतियं, पण्डि-तियं	भावे	४.५९	२०३
२०	इय	देवियो	तेन दत्ते	४.५८	२५२
२१	इय	गामियो, उदरियो	तत्र भवे	४.२५	२६२
२२	इय	खत्तियो	अपच्चे	४.७	२५६
२३	इय	पुत्तियो	तं एत्थ अस्स अत्थि	४.९४	१९२
२४	इय	उपादानियं	तस्स हिते	४.७०	...
२५	इल	पिच्छिलो	तं एत्थ अस्स अत्थि	४.८७	१९६
२६	इस्सिक	पापिस्सिको	अतिसये	४.६४	२४८
२७	ई	दण्डी	तं एत्थ अस्स अत्थि	४.८०	१९४
२८	उवामी	सुवामी	,,	४.९०	१९७
२९	एधा	द्वेधा	पकारे	४.११२	२१९

क्रम संख्या	प्रत्यय	उदाहरण	प्रयोग-स्थान	सूत्र संख्या	पृष्ठ संख्या
३०	क	राजञ्ञकंमानुस्सकं	समूहे	४.६८	२६०
३१	क	एको	असहाये	४.५५	२४८
३२	क	एकको	असहाये	४.५५	२४८
३३	क	पञ्चकं, छक्कं	तं अस्स परिमाणं	४.४१	२४६
३४	क	समणको	निन्दिते	४.४०	२४६
३५	क	अस्सको(कस्सायं?)	अञ्ञाते	४.४०	२४६
३६	क	तेलकं, घतकं	अप्पत्थे	४.४०	,,
३७	क	वलिवद्दको (वलिवद्दो विय)	पटिभागत्थे	४.४०	,,
३८	क	मानुसको, रुक्खको	रस्से	४.४०	,,
३९	क	पुत्तको, वच्छको	दयायं	४.४०	,,
४०	क	मोरको	सञ्ञायं	४.४०	,,
४१	क	पदको	तं अधीते, तं जानाति	४.१४	२४९
४२	कण्	मागधको, आरञ्ञको	तत्र भवे	४.२५	२६२
४३	क्खत्तुं	द्विक्खत्तुं	वारे	४.११४	२१९
४४	ची	धवली (करोति)	अभूततब्भावे	४.११९	२२०
४५	छ	मातुच्छा	मातितो, पितितो भगिनियं	४.३७	२५८
४६	जातियो	पटुजातियो	पकारे	४.११३	२६०
४७	ज्झं	एकज्झं	,,	४.१११	२१९
४८	ञ्ञो	राजञ्ञो	जातियं	४.६	२५६
४९	ञ्ञ	कम्मञ्ञं	तत्थ साधु	४.७३	२७३
५०	ठ	छट्ठो	पूरणे	४.५४	१७५
५१	ठम	छट्ठमो	पूरणे	४.५४	१७५
५२	ड	एकादसो, वीसो	तस्स पूरणे	४.५१	१७५
५३	ड	वीसं (सतं)	अधिकायं संख्यायं	४.५०	१७३
५४	ण	काकं	समूहे	४.६८	२६०
५५	ण	आयसं, ओदुम्बरं	तस्स विकारावयेसु	४.६६	२५९
५६	ण	कच्चायनं	तस्सेदं	४.३४	२५८
५७	ण	गारवं, अज्जवं	भावे	४.५९	२०३
५८	ण	पोरिसं	उद्धं परिमाणे	४.४८	२४८
५९	ण	पुराणो	तत्र भवे	४.२८	२५०

क्रम संख्या	प्रत्यय	उदाहरण	प्रयोग-स्थान	सूत्र संख्या	पृष्ठ संख्या
६०	ण	ओदको, मागधो	तत्र भवे	४.२०	२६१
६१	ण	ओदुम्बरो	तं इध अत्थि	४.१९	२४५
६२	ण	कोसम्बी	तेन निब्बत्ते	४.१८	२५१
६३	ण	वेदिसं	अदूर-भवे	४.१७	२५७
६४	ण	सेब्बो	निवासे	४.१६	२५७
६५	ण	वास्सतो	तस्स विसये देसे	४.१५	२५७
६६	ण	वेय्याकरणो	तं अधीते, तं जानाति	४.१४	२४२
६७	ण	सोगतो	तस्स देवता	४.१३	२४४
६८	ण	फुस्सी (रत्ति)	नक्खत्तेन युत्ते	४.१२	२५१
६९	ण	हालिद्दं	तेन रत्तं	४.११	२५१
७०	ण	[illegible]	अपच्चे	४.९	२५७
७१	ण	वासिट्ठो	अपच्चे	४.१	२५८
७२	ण	[illegible]	तं एत्थ अस्स अत्थि	४.८१	१६५
	([illegible])				
७३	ण	[illegible]	"	४.८५	१६६
७४	णान	वच्छानो	अपच्चे	४.२	२५८
७५	णायन	वच्छायनो	अपच्चे	४.२	२५८
७६	णि	[illegible]	"	४.५	२५६
७७	णिक	वेनयिको, सुत्तन्तिको	तं अधीते, तं जानाति	४.१४	२४२
७८	णिक	[illegible]	तत्र भवे	४.२६	२६२
७९	णिक	[illegible]	तस्सस्स सिप्पं	४.२३	२४५
८०	णिक	[illegible]	तस्सस्स सीलं	४.२३	"
८१	णिक	[illegible]	तस्सस्स पण्यं	४.२३	"
८२	णिक	[illegible]	तस्सस्स पहरणं	४.२३	"
८३	णिक	[illegible]	तस्सस्स पयोजनं	४.२३	"
८४	णिक	[illegible]	तं [illegible]	४.२८	२५०
८५	णिक	[illegible]	तं [illegible]	४.२८	"
८६	णिक	[illegible]	तं [illegible]	४.२८	"
८७	णिक	[illegible]	तं [illegible]	४.२८	"
८८	णिक	[illegible]	तं [illegible]	४.२८	"
८९	णिक	[illegible]	तेन [illegible]	४.२९	[illegible]

क्रम संख्या	प्रत्यय	उदाहरण	प्रयोग-स्थान	सूत्र संख्या	पृष्ठ संख्या
६०	ण	ओदको, मागधो	तत्र भवे	४.२०	२६१
६१	ण	ओदुम्बरो	तं इध अत्थि	४.१९	२४५
६२	ण	कोसम्बी	तेन निब्बते	४.१८	२५१
६३	ण	वेदिसं	अदूर-भवे	४.१७	२५७
६४	ण	सेव्यो	निवासे	४.१६	२५७
६५	ण	वास्यतो	तस्स विसये देसे	४.१५	२५७
६६	ण	वेय्याकरणो	तं अधीते, तं जानाति	४.१४	२४९
६७	ण	सोगतो	सास्स देवता	४.१३	२४४
६८	ण	फुस्सी (रत्ति)	नक्खत्तेन युत्ते	४.१२	२५१
६९	ण	हालिद्दं	तेन रत्तं	४.११	२५१
७०	ण	मागधो	अपच्चे	४.९	२५७
७१	ण	वासिट्ठो	अपच्चे	४.१	२५४
७२	ण	लक्खणो	तं एत्थ अस्स अत्थि	४.८१	१९५
	(अवयद)				
७३	ण	तापसो	,,	४.८५	१९६
७४	णान	वच्छानो	अपच्चे	४.२	२५४
७५	णायन	वच्छायनो	अपच्चे	४.२	२५४
७६	णि	वारुणि	,,	४.५	२५६
७७	णिक	वेनयिको, सुत्तन्तिको	तं अधीते, तं जानाति	४.१४	२४९
७८	णिक	सारदिको	तत्र भवे	४.२६	२६२
७९	णिक	वेणिको	तमस्स सिप्पं	४.२७	२४५
८०	णिक	पंसुकूलिको	तमस्स सीलं	४.२७	,,
८१	णिक	तेलिको	तमस्स पण्यं	४.२७	,,
८२	णिक	चापिको, मुग्गरिको	तमस्स पहरणं	४.२७	,,
८३	णिक	ओपधिकं	तमस्स पय्योजनं	४.२७	,,
८४	णिक	साकुणिको	तं हन्ति	४.२८	२५०
८५	णिक	सन्दिट्ठिकं	तं अरहति	४.२८	,,
८६	णिक	पारदारिको; मग्गिको	तं गच्छति	४.२८	,,
८७	णिक	सामाकिको	तं उञ्छति	४.२८	,,
८८	णिक	धम्मिको	तं चरति	४.२८	,,
८९	णिक	कायिकं	तेन कतं	४.२९	२११

क्रम संख्या	प्रत्यय	उदाहरण	प्रयोग-स्थान	सूत्र संख्या	पृष्ठ संख्या
९०	णिक	सातिकं	तेन कीतं	४.२९	२११
९१	णिक	आयसिको,पासिको	तेन बद्धं	४.२९	,,
९२	णिक	घातिकं, दाधिकं	तेन अभिसङ्खतं, संसट्ठं	४.२९	,,
९३	णिक	जालिको	तेन हतंहन्ति वा	४.२९	,,
९४	णिक	अक्खिकं	तेन जितं जयति वा	४.२९	,,
९५	णिक	कुद्दालिको	तेन खणति	४.२९	,,
९६	णिक	नाविको,गोपुच्छिको	तेन तरति	४.२९	,,
९७	णिक	रथिको	तेन चरति	४.२९	,,
९८	णिक	अंसिको, सीसिको	तेन वहति	४.२९	,,
९९	णिक	वेतनिको, भतिको	तेन जीवति	४.२९	,,
१००	णिक	पोनोभविको	तस्स संवत्तति	४.३०	२५२
१०१	णिक	मत्तिकं, पेत्तिकं	ततो संभूतमागतं	४.३१	२५३
१०२	णिक	रुक्खमूलिको	तत्थ वसति	४.३२	२६२
१०३	णिक	लोकिको	तत्थ विदितो	४.३२	,,
१०४	णिक	चातुम्महाराजिको	तत्थ भत्तो	४.३२	,,
१०५	णिक	दोवारिको	तत्थ नियुत्तो	४.३२	,,
१०६	णिक	सङ्घिकं	तस्सेदं	४.३३	२५७
१०७	णिक	दोणिको	तं अस्स परिमाणं	४.४१	२४६
१०८	णिक	कप्पासिकं	तस्स विकारावयेसु	४.६६	२५९
१०९	णिक	आपूपिकं	समूहे (=अचतेनमें)	४.६८	२६०
११०	णिय	आलसियं, कालुसियं	भावे	४.५९	२०३
१११	णेय्य	पब्बतेय्यो	तत्र भवे	४.२५	२६२
११२	णेय्य	दक्खिणेय्यो	अरहत्थे	४.७६	२५०
११३	णेय्य	पाथेय्यं	तत्थ साधु	४.७५	२६३
११४	णेय्य	एणेय्यं, कोसेय्यं	तस्स विकारावयेसु	४.६६	२५९
११५	णेय्य	सोचेय्यं,आधिपत्तेय्यं	भावे	४.५९	२०३
११६	णेय्यक	बाराणसेय्यको	तत्र भवे	४.२५	२६२
११७	ण्य	सब्भो, पारिसज्जो	तत्थ साधु	४.७२	२६३
११८	ण्य	आलस्यं, ब्राह्मञ्ञं	भावे	४.५९	२०३
११९	ण्य	कोरब्यो	रञ्ञे	४.१०	२५७
१२०	तग्घ	जाणुतग्घं	उद्धं पारिमाणे	४.४७	२४७

क्रम संख्या	प्रत्यय	उदाहरण	प्रयोग-स्थान	सूत्र संख्या	पृष्ठ संख्या
१२१	तन	अज्जतनो	तत्र भवे	४.२१	२६१
१२२	तम	तापतमो	अतिसये	४.६४	२४८
१२३	तर	पापतरो	अतिसये	४.६४	२४८
१२४	तर	वच्छतरो	तनुत्ते	४.५६	२५१
१२५	ता	नीलता	भावे	४.५९	२०३
१२६	ता	जनता	समूहे	४.६९	२६०
१२७	ति	युवति	स्त्री	४.३५	२५८
१२८	तो	गामतो	पञ्चम्यत्ये	४.९५	२१५
१२९	त्त	नीलत्तं	भावे	४.५९	२०३
१३०	त्तक	यत्तकं	तं अस्स परिमाणं	४.४२	२४६
१३१	त्तन	वेदनत्तनं,पुथुज्जन-त्तनं	भावे	४.५९	२०३
१३२	त्थ	सब्बत्थं	सत्तम्यन्ते	४.९९	२१६
१३३	त्र	सब्बत्र	,,	४,९९	२१६
१३४	था	सब्बथा	पकारे	४.१०८	२१०
१३५	दा	सब्बदा	सत्तम्यन्ते	४.१०५	२१७
१३६	धा	द्विधा, बहुधा	पकारे	४.११०	२१८
१३७	धि	सब्बधि	सत्तम्यन्ते	४.१०१	२१६
१३८	नण्	योब्बनं	भावे	४.६१	२०६
१३९	निय	कम्मनियं	तत्थ साधु	४.७३	२६३
१४०	नो	अङ्गना	तं एत्थ अस्स अत्थि	४.८२	१९५
१४१	ब्य	दासब्यं	भावे	४.६०	२०६
१४२	भ	तुण्डिभो	तं एत्थ अस्स अत्थि	४.८३	१९५
१४३	म	पञ्चमो	पूरणे	४.५२	१७८
१४४	मत्त	पलमत्तं	तमस्स परिमाणं	४.४६	२४७
१४५	मन्तु	बुद्धिमा	तं एत्थ अस्स अत्थि	४.७८	१९४
१४६	मय	तिणमयं	तस्स विकारावयेसु	४.६६	२५९
१४७	य	दिब्बो, गम्मो	तत्र भवे	४.२५	२६२
१४८	य	खत्यो	अपच्चे	४.७	२५६
१४९	रतम	कतमो	निद्धारणे	४.५७	२४८
१५०	रतर	कतरो	,,	४.५७	,,
१५१	रति	कति, तति		४.४४	२४७

क्रम संख्या	प्रत्यय	उदाहरण	प्रयोग-स्थान	सूत्र संख्या	पृष्ठ संख्या
१५२	राय	घातेतायं, पब्बाजेतायं	अरहत्थे	४.७७	२५०
१५३	रित्तक	कित्तक	तमस्स परिमाणं	४.४४	२४७
१५४	रीव	कीव	,,	४.४४	,,
१५५	रीवतक	कीवतकं	तमस्स परिमाणं	४.४०	२४६
१५६	रेय्यण	मत्तेय्यो	हिते	४.३९	२५९
१५७	रेय्यण	पेत्तेय्यो	पितितो भातरि	४.३६	२५८
१५८	रो	मुखरो	तं एत्थ अस्स अत्थि	४.८२	१९५
१५९	ल	देवलो	तेन दत्ते	४.५८	२५२
१६०	ल्ल	दुट्ठुल्लं, वेदल्लं	तन्निस्सिते	४.६५	२५०
१६१	वन्तु	गुणवा	तं एत्थ अस्स अत्थि	४.७९	१५४
१६२	वो	सीलवो	,,	४.८८	१५७
१६३	वी	मायावी	,,	४.८९	१५७
१६४	स	खण्डसो, एकसो	वीच्छायं	४.११८	२२०
१६५	स	लोमसो	तं एत्थ अस्स अत्थि	४.९३	१९८
१६६	सण्	मानुसो	अपच्चे	४.८	२५६
१६७	स्सी	तपस्सी	तं एत्थ अस्स अत्थि	४.८१	१९५
१६८	स्स	मनुस्सो	अपच्चे	४.८	२५६
१६९	स्स	चक्खुस्सं	तस्स हिते	४.७१	२६०
१७०	स्सण्	जातुस्सं	तस्स विकारावयेसु	४.६७	२५९
१७१	हं	तहं	सत्तम्यन्ते	४.१०३	२७१
१७२	हिं	यहिं	,,	४.१०२	२१७

छठा परिशिष्ट

कृदन्त

छठा परिशिष्ट

कृदन्त प्रत्ययों के लगाने के साधारण नियम

१. धातु के उपान्त 'इ' तथा 'उ' का, क्रमशः 'ए' तथा 'ओ' हो जाता है। जैसे:—

इस+तब्ब=एसितब्बं। कुस+तब्ब=कोसितब्बं।

२. प्रत्यय आने से, धातु के अन्त्य 'इ' ताथा 'उ' का, क्रमशः 'ए' तथा 'ओ' होता है। जैसे:—

नी+तब्ब=नेतब्बं। सु+तब्ब=सोतब्बं।

३. स्वरादि प्रत्यय परे हो, तो धातु के अन्त्य 'ए' तथा 'ओ' का क्रमशः 'अय' तथा 'अव' होता है। जैसे:—

जि+अ=जे+अ=जयो। भू+अ=भो+अ=भवो।

४. स्वरादि प्रत्यय परे हो, तो धातु के अन्त्य 'इ' तथा 'उ' का क्रमशः 'इय' तथा 'उव' होता है। जैसे:—

वेदि+अ-ति=वेदियति। ब्रू+अ+अन्ति=ब्रुवन्ति।

५. रकारान्त धातु से परे, प्रत्यय के 'न' का 'ण' होता है। जैसे:—अर+अन=अरणं।

'ण'-अनुबन्ध

६. 'ण'-अनुबन्ध वाला प्रत्यय परे हो, तो धातु के उपान्त 'अ' का 'आ' होता है।

---

(१) सूत्र—५.८३। (२) ५.८२। (३) ५.८९। (४) ५.१३६। (५) ५.१७१। (६) ५.८४।

पठ+णक=पाठको।

७. 'ण' अनुबन्ध वाला स्वरादि प्रत्यय परे हो, तो धातु के अन्त्य 'ए' तथा 'ओ' का क्रमशः 'आयं' तथा 'आव' होता है। जैसे :—

नी+णी-ति=ने+णि-ति=नायति । भू+णि-ति=भो+णि-ति=भावयति।

८. 'णापि' को छोड़, अन्य 'ण' अनुबन्ध वाला प्रत्यय परे हो, तो आकारान्त धातु से परे 'य' का आगम होता है। जैसे :—

दा+णक=दायको।

'क' अनुबन्ध

९. 'क' अनुबन्ध वाला प्रत्यय परे हो, तो धातु के उपान्त 'इ', 'उ' या 'अ' का 'ए', 'ओ' तथा 'आ' नहीं होता है। जैसे :—

दिस+क्त=दिट्ठो।

'र' अनुबन्ध

१०. 'र' अनुबन्ध वाला प्रत्यय परे हो, तो धातु के अन्तिम स्वर से ले कर आगे के भाग का लोप होता है। जैसे :—

वेद-गम+रू=वेद-ग्+रू=वेदगू।

'घ' अनुबन्ध

११. 'घ' अनुबन्ध वाला प्रत्यय परे हो, तो धातु के अन्तस्थित 'च' तथा 'ज' का क्रमशः 'क' तथा 'ग' हो जाता है। जैसे :—

वच+घ्यण=वाक्यं। भज+घ्यण्=भाग्यं।

ख-छ-स प्रत्यय

१२. 'ख-छ-स' प्रत्यय परे हो, तो धातु के 'प्रथम एकस्वर शब्दरूप' का द्वित्व होता है : जैसे :—

---

(७) ५.६१। (८) ५.६२। (९) ५.८५। (१०) ४.१३२। (११) ५.६२। (१२) ५.६६।

तिज+ख-अ=तितिक्खा। जिगुच्छा। वीमंसा।

१३. द्वित्व होने पर, पूर्व 'अ' का 'इ' होता है। जैसे:—

पा+स-ति=पिपासति।

१४. द्वित्व होने पर, पूर्व चतुर्थ तथा द्वितीय वर्ण का क्रमशः तृतीय तथा प्रथम वर्ण होता है। जैसे:—

भुज+ख-ति=बुभुक्खति।

'क्वि' प्रत्यय

१५. धातु से परे, 'क्वि' प्रत्यय का लोप होता है। जैसे:—

अभिभू+क्वि=अभिभू।

१६. 'क्वि' प्रत्यय परे हो, तो अन्त्य व्यञ्जन का लोप होता है। जैसे:—

भत्तं गसन्ति एत्थाति=भत्तग्गं। भत्त-गस+क्वि=भत्त-ग=(सरम्हा द्वे) भत्तग्गं।

*'क्य' प्रत्यय

(कर्म, भाव)

१७. 'क्य' प्रत्यय के पूर्व, 'ई' का विकल्प से आगम होता है। जैसे:—

पच+क्य-ति=पचीयति।

१८. 'आ' धातु को छोड़, अन्य धातु के अन्त्य 'आ' का 'ई' होता है। जैसे:—

दा+क्य-ति=दीयति।

१९. स्वरान्त धातु का दीर्घ होता है। जैसे:—

चि+क्य+ते=चीयते।

'ञि' (आगम)

२०. व्यञ्जनादि प्रत्यय के पूर्व, विकल्प से 'इ' का आगम होता है। जैसे:—

भुञ्जितुं, भोत्तुं।

---

(१३) ५.७६। (१४) ५.७८। (१५) ५.१५६। (१६) ५.९४। (१७) ६.३७। (१८) ५.१३७। (१९) ५.१३९। (२०) ५.१७०।

* 'क्य' का 'य' रह जाता है। 'क्' अनुबन्ध है।

कृदन्त प्रत्ययों की सूची

प्रत्यय	उदाहरण	प्रयोग-स्थान	सूत्र संख्या	पृष्ठ संख्या
अ	जयो, पग्गहो	भाव-कारकेसु	५.४४	२००
अ	तितिक्खा, वीमंसा	,, इत्थियं	५.४६	२०१
अक	जीवको, नन्दको	कत्तरि (आशीर्वादे)	५.३५	१९२
अण	कुम्भाकारो	कत्तरि (कम्मतो)	५.४१	१९३
अथु	वमथु, वेपथु	भाव-कारकेसु	५.४६	२०१
अनीय	करणीयो	भाव-कम्मेसु	५.२७	१५०
अनो	गमनं, दानं	भाव-कारकेसु	५.४८	२०२,२७८
अस्स	नमस्सति	तं करोति, (नामधातु)	५.११	२३६
आपि	सच्चापेति	नाम धातु	५.१३	२३७
आय	सद्दायति	तं करोति (नाम धातु)	५.१०	२३६
आय	मुसायति	च्यत्थे (नाम धातु)	५.४	२३२
आय	पब्बतायति	कत्तुतो उपमानाधारे	५.८	२३६
आवी	भयदस्सावी	कत्तरि	५.३४	१९२
इ	अतिहत्थयति	नाम धातु	५.१२	२३७
इ	वचि	सरूपे	५.५२	२०३
ईय	पुत्तीयति	उपमानाचारे (कम्मा) नाम धातु	५.५६	१४२
ईय	कुटीयति	,, (आधारा)	५.७	२३६
क	पियो, आयुधं	भाव-कारकेसु	५.४४	२००
क	सदिसो	कम्म-कारके	५.४३	२७६
क	गुहा, रुजा	भाव-कारकेसु (इत्थियं)	५.४९	२०१
क्वि	युधि	सरूपे	५.५२	२०३
कू	सब्बञ्ञू	कत्तरि (कम्मा)	५.४०	१९२
कू	विञ्ञू	कत्तरि	५.३९	१९२
कू	लोकविदू	,,	५.३८	१९२
क्त	आसितं, कतो	भाव कम्मेसु	५.५६	१४२
क्त	पक्तो	कत्तरि च आरम्भे	५.५७	१४३
क्त	यातं (इदमेसं)	कत्तरि, कम्मे, भावे	५.५९	१४३
क्त	उपट्ठितो	,,	५.५५	१४२
क्त	भुत्तं (इदमेसं)	,,	५.६०	१४३

प्रत्यय	उदाहरण	प्रयोग-स्थान	सूत्र संख्या	पृष्ठ संख्या
क्तवन्तु	विजितवन्त	कत्तरि भूते	५.५५	१४२
क्तावी	विजितावी	(कत्तरि) भूते	५.५५	,,
क्ति	इट्ठि, भूति	भावकारकेसु (इत्थियं)	५.४६	२०१
क्य	ठीयते, सूयते	कम्मे, भावे	५.१७	१८०
क्वि	अभिभू, सयम्भू	भाव-कारकेसु	५.४७	२०१
ख	बुभुक्खति	इच्छायं	५.४	२३२
ख	तितिक्खा	खन्तियं	५.१	१८६
घ	वको, निपको	भाव-कारकेसु	५.४४	२००
घण्	पाको, चागो	,,	५.४४	,,
घ्यण्	वाक्यं	भाव-कम्मेसु	५.२८	१५०
घ्यण्	देय्यं	,,	५.२६	१५०
छ	जिघच्छति	इच्छायं	५.४	२३२
छ	जिगुच्छा, बीभच्छा	निन्दायं	५.३	१८७
छ	तिकिच्छा, विचि-किच्छा	तिकिच्छा-संसयेसु	५.२	१८६
ण	कारा, हारा	भाव-कारकेसु (इत्थियं)	५.४६	२०१
णक	पाठको	कत्तरि	५,३०	१५१
णन	हायनो	,,	५.३७	१६२
णन	कारणनं	,,	५.३६	१६२
णापि	कारापेति	प्रेरणार्थक	५.१४	२१०
णि	कारेति	,,	५.१६	२०६
णी	उण्ह भोजी	सीले (कत्तरि)	५.५३	१६३
तब्ब	कत्तव्वं	भाव-कम्मेसु	५.२७	१५०
तवे	कातवे	तदत्थायं (निमित्तार्थक)	५.६१	१५२
ताये	कत्ताये	,,	५.६१	,,
ति	पचति	सरूपे	५.५२	२०३
तुं	कातुं	तदत्थायं (निमित्तार्थ)	५.६१	१५२
तून (अलं)	अलं सोतून	पटिसेधे	५.६२	१५४
त्वा	अलं सुत्वा	पटिसेधे	५.६२	,,
त्वा	सुत्वा	पूर्वकालिक अव्यय	५.६३	,,
त्वान	अलं सुत्वान	पटिसेधे	५.६२	,,

प्रत्यय	उदाहरण	प्रयोग-स्थान	सूत्र संख्या	पृष्ठ संख्या
त्वान	सुत्वान	पूर्वकालिक	५.६३	१५४
नि	हानि	भाव-कारकेसु (इत्थियं)	५.५०	२०३
न्त	तिट्ठन्तो	वत्तमाने कत्तरि (करते हुए)	५.६४	६२
मान	ठीयमानं, पच्चमानो	भावे, कम्मे	५.६६	१८०
मान	तिट्ठमानो	वत्तमाने कत्तरि (करते हुए)	५.६५	६२
य	वज्जं	भाव-कम्मेसु	५.३०	१५१
य	सेय्या, समज्जा	भाव-कारकेसु	५.४६	२०१
यक्	विज्जा	,, (इत्थियं)	५.४६	,,
यक्	गुम्हं	भाव-कम्मेसु	५.३२	१५२
रिक्ख	सदिक्खो	कम्म-कारकेसु	५.४३	२७६
रिरिय	किरिया	,, (इत्थियं)	५.६१	१५२
री	सदी	कम्म-कारकेसु	५.४३	२७६
रू	वेदगू	कत्तरि (कम्मतो)	५.४२	१६३
ल	पचति, न्त, मान (अपरोक्खे)	+	५.१२	२३७
ल	कारेति, कारयति	+	५.२०	२१०
ल्तु	पठिता	कत्तरि	५.३३	६४,१६१
स	जिगिंसति	इच्छायं	५.४	२३२
स्सन्त	ठस्सन्तो	अनागते कत्तरि	५.६७	६२
स्समान	ठस्समानो	,,	५.६७	६२

सातवाँ परिशिष्ट

१. सूत्र-सूची



नमो तस्स भगवतो अरहतो सम्मासम्बुद्धस्स

सातवाँ परिशिष्ट

मोग्गल्लान सूत्र-सूची

आठवाँ परिशिष्ट

एवादि वृत्ति में सिद्ध किए गए शब्दों की अनुक्रमणिका



आठवाँ परिशिष्ट

'णवादि' वृत्ति में सिद्ध किए गए शब्दों की अनुक्रमणिका

अ

ण्वादि
सूत्र-संख्या

१४. अक्को, (अर=गमने, क)=सूर
८. अक्खि, (इक्ख, चक्ख=दस्सने, इ नपु०)=आँख
३१. अक्खो, (अर=गमने, ख)=अक्ष; पासा
१६४. अगारं, (अग=कुटिलगमने, आर)=घर
३२. अग्गो, (अज, वज=गमने, गक्)=अग्र
३४. अग्गि, (अग=कुटिल गमने, गि)=आग
१४७. अङ्कुरो, (अङ्क=लक्खणे, उर)=अङ्कुर
२१५. अङ्कुसो, (अङ्क=लक्खणे, सक्)=अङ्कुश
१६४. अङ्गारो, (अङ्ग=गमनत्थे, आर)=आग
१९५. अङ्गुलं, (अङ्ग=गमनत्थे, उल)=अङ्गुली, एक नाप
१९५. अङ्गुलि, (अङ्ग=गमनत्थे, उलि)=अङ्गुली
७. अच्चि, (अञ्च, अञ्च=पूजायं, इ)=आँच
४३. अच्छो, (अस=खेपने, छ)=भालू
१५६. अच्छरा, (अस=खेपने, छर)=देवकन्या, चुटकी
१०२. अजिनं, (अज, वज=गमने, इन)=चमड़ा
१०२. अजिरं, (अज, वज=गमने, किर)=आँगन
१०१. अज्जुनो, (अज्ज, सज्ज=अज्जने, कुन)=राजा, वृक्ष विशेष

ण्वादि

सूत्र-संख्या

१९६. अञ्जलि, (अञ्ज=व्यत्तिमक्खनगतिकन्तिसु, अलि) =अञ्जलि
११२. अटनि, (अट, पट=गमनत्थे, अनि) =पाया
२. अणु, (अण=सद्दत्थे, उ) =सूक्ष्म, धान्य विशेष
५८. अण्डो, (अम=गमने, ड) =अण्डा
२१७. अतसो, (अत=सातच्चगमने, अस)=वायु
९३. अतिथि, (अत=सातच्चगमने, इथि) =पाहुन
८२. अत्ता, (अत=सातच्चगमने, त)=मन
८८. अत्थो, (अर=गमने, थक्) =धन
९९. अद्धं, (अर=गमने, ध) =मार्ग, काल
९९. अद्धा, (अर=गमने, ध) =मार्ग, काल
१३७. अधमो, (अस=खेपने, म) =नीच
१८९. अनिलो, (अन=पाणने, इल) =हवा
८२. अन्तो, (अम, गम=गमने, त) =समाप्ति, आँत
२. अन्दु, (अन्द=बन्धने, उ) =जंजीर
९८. अन्धो, (अन=पाणने, ध) =अंधा
११४. अप्पं, (आप=पापुणने, प) =थोड़ा
१२८. अब्भं, (अव=रक्खने, भ) =मेघ।
८१. अमत्तं, (अम=गमने, अत्त) =भाजन
१२१. अम्बो, अम्बा, (अम=गमने, ब) =आम
२. अम्बु, (अम्ब=सद्दे, उ) =जल
१३६. अम्मा, (अम=गमने, म) =माता
२२२. अम्हं, (अम=गमने, ह) =पत्थर
५१. अरञ्ञं, (अर=गमने, ञ) =जंगल
९२. अरणि, (अर=गमने, अणि) =अरणि
२. अरु, (अर=गमने, उ) =व्रण
१०१. अरुणो, (अर=गमने, कुन) =सूरज
२१७. अलसो, (अल=बन्धने, अस) =आलसी

ण्वादि

सूत्र-संख्या

८०. अलातं, (अल=बन्धने, आतक)=तितकी, लुकारी
४. अलाबू, (लम्ब=अवसंसने, ऊ)=तुम्बा, लौका
२१. अलिकं, (अल=बन्धने, किक)=झूठा
१६८. अल्लि, (अर=गमने, लि)=वृक्ष
११२. अवनि, (अव=रक्खने, अनि)=पृथ्वी
७६. अवन्ती, अव=रक्खने, अन्त=इस नाम का जनपद
११२. असनि, अस=खेपने, अनि=वज्र
७. असि, अस=खेपने, इ=तलवार
२. असु, अस=खेपने, उ=प्राण
१४७. असुरो, अस=खेपने, उर=दैत्य
२१३. अस्सो, अस=खेपने, स=घोड़ा
२१२. अस्सु, अस=खेपने, सु=आँसू
८. अहि, अंह=गमने, इ=साँप
१६४. अळारो, अल=बन्धने, आर=मटमैला रंग
२१३. अंसो, अन=पाणने, स=कंधा; हिस्सा
६. आखु, खण=अवदारणे, कु=चूहा
२१४. आमिसं, मि=पक्खेपे, सक्=आहारादि
१. आयु, अय=गमनत्थे, णु=आयु
२०२. आलुवो, अल=बन्धने, णुव=एक गाछ
८५. आवसथो, वस=निवासे, अथ=घर
५४. आवाटो, अव=रक्खने, आटण्=गढ़ा
१. आसु, अस=खेपने, णु=शीघ्र
२६. इट्ठका, इस=इच्छायं, ठकण्=ईंट
६४. इत्थी, इस=इच्छायं, थी=स्त्री
१०५. इनो, इ=अज्झेनगतिसु, नक्=स्वामी
२. इन्दु, इन्द=परमिस्सरिये, उ=चाँद
१२७. इभो, इ=अज्झेनगतिसु, भक=हाथी

ण्वादि

सूत्र-संख्या

६७. इरिणं, ईर=कम्पने, ण=ऊसर
९. इसि, इस=इच्छायं, कि=ऋषि
२३. इसीका, इस=इच्छायं, कीक=उजला
१५. उक्का, उस=दाहे, क=उल्का
३१. उक्खो, उस=दाहे, ख=वैल
८. उक्खलि, उस=दाहे, इ=ओखल
३३. उच्चालिङ्गो, चल=कम्पने, गक्=एक उजला कीड़ा
४२. उच्छु, उस=दाहे, छुक=ईख
४५. उजु, अर=गमने, जु=सीधा
७१. उतु, अर=गमने, तु=ऋतु
१५. उदकं, उन्द=किलेदने, क=जल
९६. उद्दो, उन्द=किलेदने, दक्=ऊद विलाव
१४८. उन्दुरो, उन्द=किलेदने, उर=चूहा
१५. उपचिका, चि=चये, क=दीमक
८६. उपोसथो, वस=निवासे, अथ=तिथि विषेश, हस्ति-कुल
१८४. उप्पलं, पा=पाने, कल=कमल
१५. उम्मुकं, उस=दाहे, क=लुआठी, मशाल
१४६. उरो, उस=दाहे, रक्=छाती
६ उरु, अर=गमने, कु=वड़ा
२६. उलूको, उल=पवेसने, णूक=उल्लू
१२६. उसभो, उस=दाहे, कभ=श्रेष्ठ
१६९. उसीरं, वस=निवासे, कीर=खस
५. उसु, उस=दाहे, कु=वाण
१३०. उसुमं, उस=दाहे, कुम=गरम
१३७. उस्मा, उस=दाहे, म=तेजो धातु
२२४. उस्सोळ्ही, सह=सहने, ही=वीर्यं
१५. ऊका, ऊह=वितक्के, क=जूँ

ण्वादि
सूत्र-संख्या

१०७. ऊनो, ऊह=वितक्के, न=कम
१३९. ऊमि, ऊह=वितक्के, मि=तरंग
६. ऊरु, अर=गमने, कु=जाँघ
१४. एको, इ=अज्झेनगतिकन्तिसु, क=अकेला
५९. एरण्डो, ईर=क्खेपे, ड=रेंड़, व्याघ्रपुच्छ
१८८. एला, इ=अज्झेन गतिकन्तिसु, ल=मुँह का लार
५५. ओट्ठो, उस=दाहे, ठ=ओठ, ऊँट
१०७. ओदनो, उन्द=किलेदने, न=भात
१४. कक्को, कर=करणे, क=एक तरह का रंग
४. कक्कन्धु, कर=करणे, ऊ=वैर का फल
२१८. कक्कसो, कर=करणे, कस=कर्कश
२२७. कक्खळो, कर=करणे, ळक्=क्रूर
३६. कङ्गु, कम=इच्छायं, गु=धान्य विशेष
४३. कच्छो, कच्=वन्धने, छ=तराई
४२. कच्छु, कस=विलेखने, छुक्=खुजली
४९. कञ्ञा, कम=इच्छायं, ञ=कुमारी
१८. कटकं, कट=मद्दने, अक=नगर
२२३. कटाहो, कट=मद्दने, छ=कड़ाही
१८२. कठलं, कठ=किच्छजीवने, अल=कपाल-खंड
१७३. कठोरो, कठ=किच्छजीवने, ओर=कठोर
५५. कट्ठं, कस=गमने, ठ=काठ
५५. कण्ठो, कम=इच्छायं, ठ=कण्ठ
५८. कण्डो, कम=पदविक्खेपे, ड=वाण, परिच्छेद
१९२. कण्डुलो, कण्ड=च्छेदने, कुल=वृक्ष
६५. कण्णो, कर=करणे, ण=कान
२२३. कण्हो, कस=विलेखने, ह=काला
७३. कतु, कर=करणे, रतु=यज्ञ

णवादि
सूत्र-संख्या

२८. कत्तिका, कर=करणे, तिक=कार्तिक
१२२. कदम्बो, कद=सुत्तियोघातु, ब=वृक्ष
१८. कनकं, कन=दित्तिगतिकन्तिसु, अक=सोना
९५. कन्दो, कम=इच्छायं, दक=मूल विशेष
१५९. कन्दरो, कन्द=व्हानरोदनेसु, अर=कन्दरा
१८६. कपालं, कप्प=सामत्थिये, काल=घटादि खंड
८. कपि, कम्प=चलने, इ=वानर
१९१. कपिलो कम्प=चलने; कव=वण्णे, कील=मटमैला रंग
७५. कपोतो, कप=अच्छादने, ओत=कबूतर
१९४. कपोलो, कप=अच्छादने, ओल=गाल
२१८. कप्पासो, कर=करणे, पास=कपास
१०३. कप्पिनो, कंप्प=सामत्थिये, इन=राजा
१७२. कप्पूरं, कप्प=सामत्थिये, ऊर=कपूर, घनसार
५३. कमठो, कम=इच्छायं, अठ=बौना
५६. कमठो, कम=इच्छायं, ठ=भिक्षा-भाजन
१८२. कमलं, कम=इच्छायं, अल=कमल
२. कम्बु, कम्ब=संवरणे, उ=शङ्ख
१३६. कम्मं, कर=करणे, म=कर्म, सुखदुक्खफलदं
१६७. कम्मारो, कर=करणे, मार=लोहार
२१५. कम्मासो; कम्मासं, कल=सङ्ख्याने, सक्=चितकबरा
१८. करको; करका, कर=करणे, अक=बनउरी, ओला
५३. करटो, कर=करणे, अट=कौआ
५७. करण्डो, कर=करणे, अण्ड=भाण्ड विशेष
१२४. करभो, कर=करणे, अभ=ऊँट
२१०. करीसं, कर=करणे, ईस=गुह
१०१. करुणा, कर=करणे, कुन=दया
८१. कलत्तं, कल=संख्याने, अत्त=भार्या

ण्वादि

सूत्र-संख्या

१२४. कलभो; कळभो, कल=संख्याने, अभ=हाथी का बच्चा
१८२. कललं, कल=संख्याने, अल=गर्भ की एक अवस्था, कीचड़
२१७. कलसो, कल=सङ्ख्याने, अस=कलश
२२३. कलहो, कल=संख्याने, ह=विवाद
७. कलि, कल=संख्याने, इ=पाप
२२. कलिका, कल=संख्याने, कीक=कली
३३. कलिङ्गो, कल=सद्दे, गक्=एक जनपद
१८६. कलिलं, कल=संख्याने, इल=गहन
१६६. कलीरो, कल=संख्याने, कीर=बाँस का कोंपल (अंकुर)
१८८. कल्लं, कल=संख्याने, ल=युक्त
१६४. कल्लोलो, कल्ल=सद्दे, ओल=समुद्र की लहर
५४. कवाटं, कु=सद्दे, आट=किवाड़
७. कवि, कु=सद्दे, इ=कवि
५३. कसटं, कस=गमने, अट=बुरा, अप्रिय
७. कसि, कस=विलेखने, इ=कृषि
६०. कसिणं, कस=गमने, किण=अशेष
१४६. कसिरं, कस=गमने, किर=थोड़ा
१७७. कसेरु, सी=सये, रु=पानी में जमने वाला एक कन्द
२७. कस्सको, कस=विलेखने, सक=कृषक
२१३. कंसो, कम=इच्छायं, स=एक नाप
१६४. कळारो, कल=संख्याने, आर=मटमैला रंग
१४. काको, का=सद्दे, क=कौवा
२४. कामुको, कम=इच्छायं, णुक्=कामी
१. कारु, कर=करणे, णु=शिल्पी, इन्द्र, विश्वकर्मा
१. कासु, कस=विलेखने, णु=गढ़ा
२२५. काळो; काळि, का=सद्दे, ळ=जंगली जानवर
२००. कितवो, किन=निवासे, अव=ठग, जुवारी

ण्वादि

सूत्र-संख्या

२१२. किब्बिसं, कर=करणे, रिब्बिस=पाप

८. किमि, कम=पद विक्खेपे, इ=कीड़ा

१०४. किरणा, किर=विकिरणे, कन=किरण

८०. किरातो, किर=विकिरणे, आतक्=एक जंगली जात

५२. किरीटं, किर=विकिरणे, कीट=मुकुट

८५. किलमथो, किलम, क्रम=गिलाने, अथ=परिश्रम

८०. किलातो, किर=विकिरणे, आतक्=एक जंगली जात

१४२. किसलयं, कस=गमने, य=पल्लव

१७४. किसोरो, कस=गमने, ओर=किशोर, अश्व

२२. किङ्कणिका, कण=सद्दत्थे, णीक=छोटी घण्टियाँ

५४. कुक्कुटो, कुक, वक=आदाने, कुटक=मुर्गा

१४८. कुक्कुरो, कुक, वक=आदाने, उर=कुत्ता

२२७. कुक्कुळं; कुक्कुळो, कुक, वक=आदाने, ळ=एक नरक

१३१. कुङ्कुमं, कम, इच्छायं, कुम=केसर

४१. कुच्छि, कुस=अक्कोसे, छिक=पेट

१६०. कुटिलो, कुट=कोटिल्ये, किल=टेढ़ा

१२२. कुटुम्बं, कुट=कोटिल्ये, ब=परिवार, कुटुम्ब

५६. कुट्ठं, कुस=अक्कोसे, ठ=कुष्ट

१२२. कुडुबो, कण्ड=च्छेदने, ब=पैला

११६. कुणपो, कुथ=पूतिभावे, अप=मृतक

१८६. कुणालो, कुण=सद्दत्थे, काल=एक महासर

५६. कुण्ठो, कुण=सद्दत्थे, ठ=जिसका हाथ पैर कटा हो

५६. कुण्डं, कम=इच्छायं, ड=भाजन

१८२. कुण्डलं, कुण्ड=दाहे, अल=कुण्डल

८४. कुत्तं, कर=करणे, तक्=क्रिया

८४. कुन्तो, कम=पदविक्खेपे, तक्=एक हथियार

६६. कुन्दो, कम=इच्छायं, दक्=एक प्रकार का फूल

ण्वादि
सूत्र-संख्या

१६५. कुमारो, कम=इच्छायं, आर=कुमार
१०३. कुमिनं, कम=पदविक्खेपे, इन=मछली बझाने का झोप (टाप)
१२९. कुम्भो, कम=इच्छायं; अथवा उम्भ=पूरणे, ह=घड़ा
१३७. कुम्मो, कर=करणे, म=कछुआ
२१५. कुम्मासो, कुल=सन्ताने, सक=एक खाद्य
१४३. कुरं, कु=सद्दे, रकू=भात
१५५. कुररो, कुररी, कुर=सद्दे, कुर=एक पक्षी (कुररी)
५. कुरु, कुर=सद्दे, कु=राजा
५. कुरवो, कुर=सद्दे, कु=जनपद
१७२. कुरूरो, कर=करणे, ऊर=पापकारी
१८५. कुललो, कुल=सन्ताने, काल=टिटिहरी (पक्षी विशेष)
१८५. कुलालो, कुलं=सन्ताने, काल=कुम्भकार, कोहाँर
२१५. कुलिसं, कुल=संवरणे, सक्=वज्र
१७५. कुवेरो, कु=सद्दे, एरक्=कुवेर महाराज
२१४. कुसो, कु=सद्दे, सक्=कुश घास
८४. कुसीतो, कुस=अक्कोसे, तक्=काहिल
१३०. कुसुमं, कुस=अक्कोसे अव्हाने च, कुम=फूल
१२९. कुसुम्भं, कुस=अक्कोसे अव्हाने च, भ=एक फूल जिससे रंग तैयार किया जाता है।
१२९. कुसुम्भो, कुस=अक्कोसे अव्हाने भ=सोना
१७०. कुलीरो; कुळीरो, कुल=सन्ताने, कीर=कर्कट, केकड़ा
११५. कूपो, कु=सद्दे, प=कूंआ
६१. केणि; केणी, की=दब्बविनिमये, णि=क्रय
२. केतु, कित=निवासे, उ=ध्वजा
१६६. केदारं, क्लेद, क्लिद=अल्हाभावे, आर=खेत
१८२. केवलं, केव=सेवने, अल=सारा
८. केळिं; कीळ=विहारे, इ=क्रीड़ा

ण्वादि

सूत्र-संख्या

१८६. कोकिलो, कुक, वक=आदाने, इल=कोयल
४३. कोच्छो, कुच=संकोचे, छ=पीढ़ा
५५. कोट्ठो, कुस=अक्कोसे, ठ=अनाज रखने की कोठी
६५. कोणो, कु=सद्दे, ण=पास, अंश, वीणा आदि का दण्ड
५६. कोण्ठो, कुस=अक्कोसे, ठ=जिसका हाथ पैर कटा हो
८६. कोत्थु, कुस=अक्कोसे, थु=सियार
१८. कोरको, कुर=सद्दे, अक्=कली
७८. कोलितो, कुल=सन्ताने, इत=द्वितीय अग्र श्रावक (एक ग्राम का नाम)
१६६. कोविळारो, विद=लाभे, आर दुगना हुआ
१२२. कोसम्बो, कुस=अक्कोसे, ब=वृक्ष
१७१. खज्जूरो-खज्जूरी, खज्ज=खज्जने, ऊर=खजूर
५८. खण्डो, खन, खण=अवदारणे, ड=खांड
१५०. खदिरो, अद, खाद=भक्खने, किर=खैर
६८. खन्धो, खन, खण=अवदारणे, ध=स्कन्ध; समूह
६४. खाणु, खन, खण=अवदारणे, णु=ठूंठ
११६. खिप्पं, खिप=प्पेरणे, पक्=शीघ्र
१४३. खीरं, खी=खये, रक्=दूध
६५. खुद्दो, खिद=असहने, दक्=क्षुद्र
८२. खेत्तं, खिप=प्परणे, त=खेत
१३६. खेमो, खी=खये, म=क्षेम; कुशल
२२५. खेळो, खी=खये, ळ=थूक
१३६. खोमं, खु=सद्दे, म=अतसि
१०७. गगनं, गम=गमने, न=आकाश
३२. गग्गो, गद=वचने, गक्=एक ऋषि
१५२. गग्गरो, गर, घर=सेचने, गर=गड़गड़ाहट, हंस की आवाज़
३२. गङ्गा, गम=गमने, गक=गंगा नदी
७. गण्ठि, गन्थ=गन्थने, इ=गाँठ

ण्वादि
सूत्र-संख्या

५८. गण्डो, गम=गमने, ड=व्याधि, गाल
८२. गत्तं, गह=उपादाने, त=शरीर
९९. गद्धो, गिध=अभिकङ्खायं, ध=गिज्झो अत्यंत लोभाभिभूत
१२५. गद्रभो, गद=व्यत्तवचने, रभ=गदहा
७०. गन्तु, गम=गमने, तु=जाने वाला
१२१. गब्बो, गर=सेपने, ब=अभिमान
१५१. गब्भरं, गर=सेचने, भर,=गुहा
१२८. गब्भो, गर=सेचने, भ=गर्भ
१७०. गभीरो; गम्भीरो, गम=गमने, कीर=गहरा
२१. गमिको, गम=गमने, किक=जाने वाला
२. गरु, गर=सेचने, उ=गुरु, आचार्य
६२. गहणि, गह=उपादाने, अणि=जठराग्नि
८८. गाथा, गा=सद्दे, थक्=पद्यविशेप
१३६. गामो, गा=सद्दे, म=गाँव
११. गामी, गम=गमने, ईण्=जानेवाला
२२३. गाळ्हं, गाह=विलोळने, ह=दृढ़
४०. गिज्झो, गिध=अभिकङ्खायं, झक्=गीध
२२३. गिम्हो, गम=गमने, ह=ग्रीष्म
९. गिरि, गिर=निगिरणे, कि=पहाड़
२०३. गीवा, गा=सद्दे, ईव=गला
४४. गुच्छो, गुप=गोपने, छ=गुच्छा
२०. गुवाको, गु=सद्दे, आक्=सुपारी
२२६. गुळो, गु=सद्दे, ळक्=गुड़
८८. गूपो, गुप=गोपने, थक्=गूह
६७. गोणो, गम=गमने, ण=बैल
८२. गोत्तं, गुप=गोपने, त=गोत्र
१४६. गोत्रं, गुप=गोपने, रक्=गोत्र

ण्वादि

सूत्र-संख्या

१३२. गोधुमो, गुध=परिवेठने, उम=गेहूँ
१२०. गोप्फो, गुप=गोपने, फ=गुल्फ, पैर की एँड़ी के ऊपर का भाग
२२६. गोळो, गु=सद्दे, ळक्=गुड़
८३. घतं, घर=सेचने, तक=घी
१३६. घम्मो, गर, घर=सेचने, म=ग्रीष्म
१०. घाति, हन=हिंसायं, इण्=हथियार
१७३. चकोरो, चक=परिवितक्के, ओर=पक्षी विशेष
२. चक्खु, चक्ख=दस्सने, उ=आँख
१५२. चच्चरं, चर=गतिभक्खनेसु, चर=चौराहा
१९२. चटुलो, चट=भेदने, कुल=खुसामदी
१८७. चण्डालो, चण्ड=चण्डिको, णाल=चाण्डाल
१४७. चतुरो, चत=याचने, उर=चतुर
१८४. चपलो, चुप=मन्दगमने, कल=चपल, चञ्चल
२१७. चमसो, चम=अदने, अस=चमचा, श्रुवा
४. चमू, चम=अदने, ऊ=सेना
११४. चम्पा, चम=अदने, प=एक नगर (वर्तमान 'भागलपुर')
१३३. चरिमं, चर=गतिभक्खनेसु, इम=पिछला
२. चरु, चर=गतिभक्खनेसु, उ=हव्यपाक
१. चाटु, चट; पुट=भेदने, णु=खुसामद
१. चारु, चर=गतिभक्खनेसु, णु=सुन्दर
८३. चित्तं, चित=सञ्चेतने, तक्=विज्ञान; चित्र
८०. चिलातो, चिल=वसने, आतक=एक प्रकार की मछली
१०७. चीनो, चि=चये, न=चीन देश
१४४. चीरं, चि=चये, रक्,=वल्कल
१५४. चीवरं, चि=चये, क्वर=कषाय वस्त्र
१९८. चुल्लि, चुद=चोदने, लि=चूल्हा
२२५. चूळा, चु=चवने, ळ=जूरा

ण्वादि

सूत्र-संख्या

१६७. छल्लि, छद=संवरणे, लि=छल्ली

२०८. छवि, छद=संवरणे, रवि=शोभा;

१४०. छाया, छा=छादने, य=छाया

६५. छिड्डं, छिद=द्वेधाकरणे, दक्=छेद

११७. छेप्पं, छुप=सम्फस्से, पक्=अँगूठा

१०७. जघनं, हन=हिंसायं, न=जाँघ

३७. जङ्घा, जन=जनने, घ=जाँघ

१५२. जज्जरो, जर=वयोहानियं, जर=जर्जर

१६१. जठरं, जन=जनने, अर=उदर, पेट

६४. जण्णु, जन=जनने, णु=घुटना

७३. जतु, जन=जनने, रतु=लाह

७०. जत्तु, जर=वयोहानियं, तु=पंसली

१८. जनको, जन=जनने, अक=पिता

७०. जन्तु, जन=जनने, तु=जीव

४. जम्बू, जन=जनने, ऊ=जामुन

१३६. जम्मो, जम=अदने, म=नीच, मूर्ख

२६. जलूका, जल=दित्तियं, ऊक=जोंक

१६४. जाणु, जन=जनने, णु=घुटना

७२. जामाता, जन=जनने, तु=दामाद

१४१. जाया, जन=जनने, य=स्त्री

१०४. जिनो, जि=जये, नक्=बुद्ध

२२२. जिव्हा, जीव=पाणधारणे, ह=जीभ

६६. जीवन्तो, जीव=पाणधारणे, अन्त=एक औषधि

२२३. जुण्हा, जुत=दित्तियं, ह=चाँदनी

१६८. तम्बोलं, [illegible], ओल=एक फल

१६३. तण्डुलो, [illegible], डुल=चावल

२२३. तण्हा, तस=पिपासायं, ह=[illegible]

ण्वादि

सूत्र-संख्या

१४२. तनयो, तन=वित्थारे, य=पुत्र

२. तनु, तन=वित्थारे, उ=शरीर

४. तनू, तन=वित्थारे, ऊ=शरीर

८२. तन्तं, तन=वित्थारे, त=ताँत

७०. तन्तु, तन=वित्थारे, तु=सूत्र

१२. तन्दी, तन्द=आलस्से, ई=आलस्य

१८०. तम्बुलं, तम=भूसने, बूल=पान

१८. तरको, तर=तरणे, अक=नाव

६२. तरणि, तर=तरणे, अणि=समुद्र, सूरज

२. तरु, तर=तरणे, उ=वृक्ष

१०१. तरुणो, तर=तरणे, कुन=तरुण

१५९. तसरो, तस; त्रस=पिपासायं, अर

६०. तसिणा, तस=पिपासायं, किन=तृष्णा

६५. ताणं, ता=पालने, ण=त्राण

८२. तातो, ता=पालने, त=पिता

२११. तालीसं, तल=पतिट्ठायं, ईस=एक दवा का गाछ

१. तालु, तल=पतिट्ठायं, णु=तालु

६०. तिखिणं, तिज=निसाने, किण=तेज

६७. तिणं, तिज=निसाने, ण=तृण

८. तित्तिर, तर=तरणे, इ=तितर पक्षी

८८. तित्थं, तर=तरणे, थक्=घाट

९३. तिथि, ता=पालने, इथि=तारीख

५. तिपु, तप=सन्तापे, कु=सीसा धातु

१४९. तिमिरं, तिम=तेमने, किर=अन्धकार; जल

२०९. तिमिसं, तिम=तेमने, किस=अन्धकार

५२. तिरीटं, तर=तरणे, कीट=पगड़ी

१४५. तीरं, ता=पालने, रक्=किनारा

ण्वादि
सूत्र-संख्या

१५४. तीवरो, ता=पालने, क्वर=एक नीच जाति
४४. तुच्छं, तुस=तुट्ठियं, छ=असत्य, सारहीन
५९. तुण्डं, तनु=वित्थारे, ड=मुँह, चोंच
८८. तुत्थं, तुद=व्यथने, थक्=दवा
१९३. तुमुलो, तम=छेदने, कुल=व्याप्त, सङ्कुल
१०३. तुहिनं, तुद=व्यथने, इन=पाला
७. थनि, थनं=सद्दे, इ=शब्द
६. थरु, तर=तरणे, रु=तलवार की मूठ
१८४. थलं, ठा=गतिनिवत्तियं, कल=स्थल
१८. थवको, थु=अभित्थवे, अक=फूल का गुच्छा
१५०. थिरं, ठा=गतिनिवत्तियं, किर=स्थिर
२१४. थुसो, थु=अभित्थवे, सक्=भूसा
६७. थूणं, थु=अभित्थवे, ण=एक नगर; थूणो=खम्भा
११५. थूपो, थु=अभित्थवे, प=चैत्य
१०७. थेनो, ठा=गतिनिवत्तियं, न=चोर
२०६. थेवो, थु=अभित्थवे, रेव=जलविन्दु
६०. दक्खिणा, दक्ख=वुड्ढियं, क्षिण=दक्षिणा, पूजा
५८. दण्डो, दम=उपसमे, ड=दण्ड
१५२. दद्दरं, दर=विदारणे, दर=एक पक्षी
९७. दद्दु, दद=दाने, दु=दाद
१५१. दद्दुरो, दद=दाने, दुर=मेढ़क
८. दधि, धा=धारणे, इ=दही
८२. दन्तो, दम=उपसमे, त=दाँत
९८. दन्धो, दम=उपसमे, ध=मूढ़
१२३. दब्बि-दब्बी, दर=विदारणे, बि=कलछूल
८५. दमथो, दम=उपसमे, अथ=इन्द्रिय-दमन
२१९. दस्सु, दंस, डंस=दंसने, सु=चोर

ण्वादि

सूत्र-संख्या

२२३. दळ्हं, दह=दाहे, ह=दृढ़

५६. दाठा, दंस; डंस=दंसने, ड=दाढ़

१. दारु, दर= दरणे, णु=लकड़ी

१०१. दारुणो, दर=विदारणे, कुन=कर्कश

१०३. दिन्नं, दा=दाने, इन=दिन

२१८. दिवसो, दिव=कीळाविजिगिंसावोहारज्जुतिथुतिगतिसु, सक्=दिन

१०५. दीनो, दी=खये, नक्=दीन

६. दुट्ठु, ठा=गतिनिवत्तियं, कु=बुरा

७२. दुहिता, दुह=प्पपूरणे, तु=बेटी

८३. दूतो, दू=परितापे, तक्=दूत

१४४. दूरं, दु=गमने, रक्=दूर

५३. देवटो, देव=देवने (पूजने) अट=ऋषि

१५९. देवरो, दिव=कीळादिसु, अर=देवर

६५, दोणो, दु=गमने, ण=द्रोण

६१. दोणि-दोणी, दु=गमने, णि=नाव

१८८. दोला, दु=परितापे, ल=हिंडोला

२. धनु, धन=सद्दे, उ=धनुष

११२. धमनि-धमनी, धम=सद्दे, अनि=सिरा

१३६. धम्मो, धर=धारणे, म=धर्म

६२. धरणि, धर=धारणे, अणि=पृथ्वी

७२. धातु, धा=धारणे, तु=धातु

१०६. धाना, धा=धारणे, न=भूजा

७२. धीता, धा=धारणे, तु=बेटी

१४५. धीरो, धा=धारणे, रक्=धैर्य्य

१५४. धीवरो, धा=धारणे, ब्बर=मल्लाह

१३४. धूमो, धू=कम्पने, मक्=धूँआ

१५८. धूसरो, धू=कम्पने, सर=धूसर

ण्वादि

सूत्र-संख्या

१११. धेनु, धा=धारणे, नुक्=गौ

७२. नत्ता, नह=बन्धने, तु=नाती

७६. नन्दन्ती, नन्द=समिद्धियं, अन्त=सखी

१८. नरको, नर=नये, अक=नरक

१०. नाभि, नभ=हिंसायं, इण् नाभी

३१. निक्खो, कन=दित्तिगतिकन्तिसु, ख=निष्क

१९३. निचुलो, चि=चये, कुल=एक गाछ

३८. निदाघो, दह=भस्मीकरणे, घ=ग्रीष्म

९६. निद्दा, निन्द=गरहायं, दक्=निद्रा

१३९. निमि, नी=पापुणने, मि=एक राजा

१२२. निम्बो, नम=नमने, ब=नीम

१९८. निल्लि, निल्ली, नीलि, नीली, नी=नये, लि=वृक्षविशेष

६१. निस्सेणि, निस्सेणी, सि=सेवायं, णि=निसेनी

११६. नीपो, नी=नये, पक्=वृक्ष

१४३. नीरं, नी=पापुणने, रक=जल

१५४. नीवरं, नी=पापुणने, क्वर=घर

८४. नेत्तं, नी=पापुणने, तक्=आँख

८४. नेता, नी=पापुणने, तक्=नेता

१३८. नेमि, नी=पापुणने, मि=चक्के की परिधि

१७७. नेरु, नी=नये, रु=सुमेरु पहाड़

१५. पङ्को, कम्प=चलने, क=कीचड़

२२७. पङ्गुळो, खञ्ज=गतिवेकल्ले, लक्=लंगड़ा

७९. पचतो, पच=पाके, अत=रसोइया

४१. पच्छि, पस=बाधने, छिक्=खाँची, डाली

१०७. पज्जुन्नो, पद=गमने, न=इन्द्र; मेघ

३३. पटगो-पटङ्गो, पत; पथ=गमने, गक्=फतिङ्गा

१८२. पटलं, पट=गमने, अल=समूह

ण्वादि

सूत्र-संख्या

२२३. पटहो, पट=गमने, ह=एक बाजा
२. पटु, पट=गमने, उ=दक्ष, पटु
१९४. पटोलो, पट=गमने, ओल=एक सब्जी
१३३. पठमं, पठ=उच्चारणे, अम=प्रथम् श्रेष्ट
१९९. पणवो, पण=व्यवहारत्थुतिसु, अव=एक तरह का ढोल
६५. पण्णो, पण=व्यवहारत्थुतिसु, ण=पत्ता
२२४. पण्हि, पण=व्यवहारत्थुतिसु, हि=एँड़ी
१९. पताका, पत; पथ=गमने, आक=ध्वजा
६९. पति, पा=रक्खने, अति=पति
१०८. पत्तनं, पत; पथ=गमने, तन=नगर
१३०. पदुमं, पद=गमने, कुम=कमल
२१७. पनसो, पन=थुतियं, अस=कटहल
२१५. पप्फासं, फाय=वुद्धियं, सक्=फुसफुस
६. पभङ्गु, भज्ज=ओमद्दने, कु=अंकुर
२२२. पाम्हं, अम; गम=गमने, ह=प्रमुख
१८६. पलालं, पल=गमने, काल=पुआर
८४. पलितं, पाल=रक्खने, तक=बाल का पकना
१८२. पल्ललं, पल्ल=गमने, अल=जलाशय
१९९. पल्लवं, पल्ल=गमने, अव=पल्लव
१९८. पल्लि, पाल=रक्खने, लि=कुटी; छोटी बस्ती
२. पसु, पस=बाधने, उ=चौपाय
१७२. पसूरो, पस=बाधने, ऊर=दूर, व्यञ्जन
२. पंसु, पंस=नासने, उ=धूलि
१८४. पाटलं, पत, पथ=गमने, कल=फल
१०. पाणि, पण=व्यवहारत्थुतिसु, इण्=हाथ
१८७. पातालं, पत, पथ=गमने, णाल=रसातल
२४. पादुका, पद=गमने, णुक=खड़ाउं

ण्वादि

सूत्र-संख्या

११४. पापं, पा=रक्खने, प=अकुशल कर्म
१९८. पालि-पाली, पाल=रक्खने, लि=पंक्ति, बुद्ध-वचन, मूल
२२८. पाळि, पा=रक्खने, ळि=तन्ति भाषा
२०. पिञ्ञा को, पण=व्यवहारत्थुतिसु, आक=तिल का पीना, खरी
१६२. पिठरो, पच=पाके, अर=पकाने का बर्तन
७२. पिता, पा=रक्खने, तु=पिता
२०. पिनाको, पा=पाने, आक=शिवजी का धनुष
१८६. पियाल्पे, पी=तप्पने, काल=एक फल
२१५. पीयूसं, पी=तप्पने, सक्=अमृत
१५३. पीवरं, पी=तप्पने, क्वर=स्थूल
४४. पुच्छो, पुस=पोसने, छ=पूँछ
५०. पुञ्ञं, पुण=कम्मनि सुभे, ञ=कुशल कर्म
८३. पुत्तो, पुस=पोसने, तक्=पुत्र
५. पुथु, पुथ; पथ=वित्थारे, कु=फैलाव
१५. पुथुको, पुथ; पथ=वित्थारे, क=अज्ञ
१९२. पुथुलो, पुथ, पथ=वित्थारे, कुल=विस्तृत
२०९. पुरिसो, पूर=पूरणे, किस=आदमी
२११. पुरीसं, पूर=पूरणे, ईस=गूह
९६. पुलिन्दो, पुल=महत्तहिंसागणेसु, क्वक्=एक नीच जाति
२१५. पुस्सं, पुस=पोसने, सक=एक फल
११६. पूपो, पू=पवने, पक्=पूआ
६८. पूरणो, पूर=पूरणे, अण=पूरा करने वाला
१९९. पेलवो, पिल=वत्तने, अव=पतला
१८८. पेलो, पी=तप्पने, ल=बेंत की बनी डलिया
१८२. पेसलो, पिस=गमने, अल=प्रियशील
२२५. पेळा, पी=तप्पने, ळ=पेड़ा
१६८. पोक्खरं, पुस=पोसने, खर=कमल

ण्वादि

सूत्र-संख्या

८२. पोतो, पू=पवने, त=बच्चा

२१५. फस्सो, फुस=सम्फस्से, सक्=स्पर्श

५६. फुट्ठो, फुस=सम्फस्से, ठ=स्पर्श

३३. फुलिङ्गो, फुट=चलने, यक्=चिनगारी

२१५. फुस्सो, फुस=सम्फस्से, सक्=एक नक्षत्र

३६. फेग्गु, फल=निप्फत्तियं, गु=असार

१६०. बदरं-बदरी, वद=वचने, अर=बैर का फल

१४९. बधिरो, वध=बाधने, कीर=बहरा

२. बन्धु, वन्ध=वन्धने, उ=बन्धु

११७. बप्पो, वम=उग्गिरणे, पक्=आँसू

१९. बलाका, बल=पाणने, आक=एक पक्षी

७. बलि, बल=पाणने, इ=सिकुड़न

१८४. बहलं, वंह=वुद्धियं, कल=घना

२. बहु, वह=वुद्धियं, उ=बहुत

२१५. बळिसो, वल=संवरणे, सक्=बंसी

६. बाहु, वह=पापुणने; अथवा बाध=विबाधायं, कु=भुजा

२२३. बाळ्हं, वह=वुद्धियं, ह=दृढ़, बहुत अधिक

६. बिन्दु, विद=लाभे, कु=स्वल्प

१२२. बिम्बं, वम=उग्गिलणे, ब=शरीर

१८६. बिळालो, वल=पाणने, काल=बिलाव

९६. बुन्दो, बु=संवलणे, वक्=मूल, जड़, वृक्ष का मूल

२०२. बेलुवो, विल=भेजने, णुव=एक लता

३६. भगु, भर=भरणे, गु=एक ऋषि

७६. भवन्तो, भद्द=कल्याणे, अन्त=प्रव्रजित

१४६. भद्र, भद्द=कल्याणे, रक्=सुन्दर

१५९. भमरो, भम=अनवट्ठाने, अर=भौंरा

२. भमु, भम=अनवट्ठाने, उ=भौं

ण्वादि
सूत्र-संख्या

१६. भयानकी, भी=भये, आनक=भयानक
७९. भरतो, भर=भरणे, अत=नर्त्तक
२. भरु, भर=भरणे, उ=पति
१४६. भस्त्रा, भस=भस्मीकरणे, रक=भाथी
१३७. भस्मं, भस=भस्मीकरणे, म=राख
६३. भाणु, भा=दित्तियं, णु=किरण
७२. भाता, भा=दित्तियं, तु=भाई
११०. भानु, भा=दित्तियं, नुक्=सूरज
११. भावी, भू=सत्तायं, ईणु=होने वाला
२. भिक्खु, भिक्ख=याचने, उ=श्रमण
१६६. भिङ्कारो, भर=भरणे, आर=सोने की झारी
३३. भिङ्गो, भम=अनवट्ठाने, गक्=भौंरा
१५. भीको, भी=भये, क=भीरु
१३५. भीमो, भी=भये, मक्=भयानक
१७९. भीरु, भी=भये, रुक्=भयानक (?) डरपोक
१३५. भीसनो, भी=भये, रीसनो=भयानक
२१५. भुसं, भू=सत्तायं, सक्=भुस्सा
४. भू, भम=अनवट्ठाने, ऊ=भौं
१३९. भूमि, भू=सत्तायं, मि=पृथ्वी
१७६. भूरि, भू=सत्तायं, रिक्=बहुत
१७६. भूरी, भू=सवायं, रिक्=मेधा
१४. भेको, भी=भये, क=मेढ़क
१४६. भेरी, भी=भये, रक्=भेरी
१३७. भेस्मा, भी=भये, म=भयानक
५४. मकुटं, मक्क=मण्डने, उट=मुकुट
१४८. मकुरो, मक्क=मण्डने, उर=आइना, रथ, मछली
२२७. मकुळो, मक्क=मण्डने, ळक्=कली

ण्वादि
सूत्र-संख्या

३८. मघा, मह=पूजायं, घ=मघा नक्षत्र
१८२. मङ्गलं, मङ्ग=मङ्गल्ये, अल=मङ्गल
१४८. मङ्गुरो, मङ्ग=मङ्गल्ये, उर=एक तरह की मछली
४०. मच्चु, मर=पाणचागे, चु=मृत्यु
४०. मच्चो, मर=पाणचागे, चो=मनुष्य
४३. मच्छो, मस=आमसने, छ=मछली
१५७. मच्छरं, मच्छेरं, मस=आमसने, छर, छेर=मात्सर्य
१६४. मज्जारो, मज्ज=संसुद्धियं, आर=विलाव
४६. मञ्जु, मन=ञाणे, जु=मञ्जुल
२१५. मञ्जूसा, मन=ञाणे, सक्=बक्सा
८. मणि, मन=ञाणे, इ=मणि
५८. मण्डो, मन=ञाणे, ड=मांड
११९. मण्डपो, मण्ड=भूसने, अप=मण्डप
१८२. मण्डलं, मण्ड=भूसने, अल=गोलाकार
२५. मण्डूको, मण्ड=भूसने, णुक=मेढ़क
८१. मत्तं, मा=माने, अत्त=मात्र
१५. मत्थकं, मस=आमसने, क=माथा
८९. मत्थु, मस=आमसने, थु=मट्ठा
१४७. मथुरा, मथः मन्थ=विलोळने, उर=एक शहर
१४९. मदिरा, मद=उम्मादे, किर=शराव
९५. मद्दो, मद=हासे, दक्=एक जनपद
६. मधु, मन=ञाणे, धु=मधु
२६. मधुको, मन=ञाणे, णुक=वृक्ष
२. मनु, मन=ञाणे, उ=प्रजापति; महासम्मत
९६. मन्दो, मन=ञाणे, दक्=मढ़
१५९. मन्दरो, मन्द=मोदनत्थुतिजळत्तेसु, अर=एक पर्वत
१४९. मन्दिरं, मन्द=मोदनत्थुतिजळत्तेसु, किर=घर

ण्वादि

सूत्र-संख्या

१४०. मन्दुरा, मन्द=मोदनत्थुतिजळत्तेसु, उर=अस्तवल
१३६. मम्मं, मर=पाणचागे, म=मर्मस्थान
१५२. मम्मरो, मर=पाणचागे, मर=मर्मर शब्द
३१. मयूखो, मय=गमने, ख=किरण
४०. मरीचि, मर=पाणचागे, ईचि=किरण
२. मरु, मर=पाणचागे, उ=देव
७. मसि, मस=आमसने, इ=राख
१७१. मसूरो, मस=आमसने, ऊर=एक दाल
२१६. मस्सु, मस=आमसने, सु=दाढ़ी
२२. महिका, मह=पूजायं, किक=हिम
१८६. महिला, मह=पूजायं, इल=स्त्री
२१५. महेसी, मह=पूजायं, सक्=पटरानी
१७४. महोरो, मह=पूजायं, ओर=वल्मीक
२१३. मंसं, मन=आणे, स=मांस
७२. माता, पा=पाने, तु=मां
२०२. मालुवा, मल, मल्ल=धारणे, णुव=एक लता (अमरवेल)
२२५. माळो, मा=माने, ळ=एक कूट वाला
८३. मित्तो, मिद्=स्नेहने, तक=मित्र
१९१. मिथिला, मथ, मन्थ=विलोळने, किल=एक जनपद
१०१. मिथुनं, मिथ=सङ्गमे, कुन=जोड़ा
८४. मिहितं, मिह=ईसंहसने, तक=मुस्कुराहट
१०५. मीनो, मी=हिंसायं, नक्=मछली
१४४. मीरो, मि=पक्खेपने, रक्=समुद्र
२२३. मीळ्हं, मील=निमीलने, ह=गूह
३१. मुखं, मू=बन्धने, ख=मुंह
३२. मुग्गो, मुद=तोसे, गक्=मूंग
५९. मुण्डो, मन=आणे, ड=शिर मुड़ाया हुआ

ण्वादि

सूत्र-संख्या

२००. मुतवो, मू=बन्धने, अव=चण्डाल
८४. मुत्तं, मिह्=सेचने, तक्=मूत्र
५. मुदु, मुद=तोसे=नरम
६५. मुद्दा, मुद=तोसे, दक्=अंगूठी
२२. मुद्दिका, मुद=तोसे, किक=अंगूठी
६६. मुद्धा, मुद=तोसे, ध=शिर
८. मुनि, मन=आणे, इ=श्रमण
२००. मुरवो, मुर=संवेठने, अव=मृदङ्ग
१८३. मुसलो, मुस=खण्डने, कल=अयोग्य
१८६. मुळालं, मील=निमीलने, काल=मृणाल
२१. मूसिको, मुस=थेय्ये=चूहा
३८. मेघो, मिह्=सेचने, घ=मेघ, बादल
१७७. मेरु, मी=हिंसायं, रु=मेरु पर्वत
२२५. मेळा, मि=पक्खेपे, ळ=राख
३८. मोघो, मुह्=मुच्छायं, घ=निकम्मा
१७४. मोरो, मी=हिंसायं, ओर=मोर
३१. यक्खो, यस=पयतने, ख=यक्ष
७६. यजतो, यज=देवपूजायं, अत=अग्नि
२. यजु, यज=देवपूजायं, उ=एक वेद
४६. यञ्ञो, यज=देवपूजासंगतिकरणदानेसु, ञ=यज्ञ
१०१. यमुना, यम=उपरमे, कुन=एक नदी
२१७. यवसो, यु=मिस्सने, अस=तृणविशेष
३५. यागु, या=पापुणने, गु=यवागू
१४६. यात्रा, या=पापुणने, रक्=यात्रा
१३६. यामो, या=पापुणने, म=दिन का छठा या आठवाँ भाग
८८. यूथो, यु=मिस्सने, थक्=झुण्ड
११५. यूपो, यु=मिस्सने, प=यज्ञ की लाठ

ण्वादि

सूत्र-संख्या

८२. योत्तं, युज=संयमने, त=रस्सी
११३. योनि, यु=मिस्सने, नि=भग-इन्द्रिय
६. रघु, रङ्घ=गमने, कु=एक राजा
७६. रजतं, रञ्ज=रागे, अत=चाँदी
१०७. रजनी, रञ्ज=रागे, न=रात
४६. रज्जु, रुध=आवरणे, जु=रस्सी
५८. रण्डा, रम=कीळायं, ड=विधवा
१०६. रतनं, रम=कीळायं, तनक्=रत्न
८७. रथो, रम=कीळायं, थक्=रथ
६८. रन्धं, रम=कीळायं, ध=बिल
६८. रवणो, रु=सद्दे, अण=कोयल
७. रवि, रु=सद्दे, इ=सूरज
१३६. रस्मि, रस=अस्सादने, मि=किरण
७. राजि, राज=दित्तियं, इ=पंक्ति
१२६. रासभो, रास=सद्दे, अभ=गदहा
१०. रासि, रस=अस्सादने, इण्=समूह
१. राहु, रह=चागे, णु=इस नाम का असुरेन्द्र
६. रिपु, रप=वचने, कु=शत्रु
३१. रुक्खो, रुह=जनने, ख=वृक्ष
६. रुचि, रुच=दित्तियं, कि=अभिलाषा
१४६. रुचिरं, रुच=दित्तियं, किर=सुन्दर
६५. रुद्दो, रुद=अस्सुविमोचने, दक्=रुद्र
१४६. रुधिरं, रुध=आवरणे, किर=लहू
१७६. रुरु, रु=सद्दे, रुक्=मिगो
७६. रुहन्तो, रुह=जनने, अन्त=वृक्ष
१४६. रुहिरं, रुह=जनने, किर=लहू
११७. रूपं, रूप=रुप्पने, पक्=रूप

ण्वादि
सूत्र-संख्या

६३. रेणु, री=पस्सवने, णु=धूलि
७६. रोदन्ती, रुद=रोदने, अन्त=एक औषधि
१२. लक्खी, लक्ख=दस्सने, ई=लक्ष्मी
६. लघु, लङ्घ=गतिसोसनेसु, कु=हलका
५८. लण्डो, लम=हिंसायं, ड=लेंड
६७. लवण, ली=सिलेसनद्रवीकरणेसु; लिह=अस्सादने, साद अस्सादने, क्लेद=अद्दभावे, णक=नमक
६. लघु, लङ्घ=गतिसोखनेसु, कु=हलका
९५. लुद्दो, रुद=अस्सुविमोचने, दक्=वहेलिया
६५. लेणं, ली=निलीयने, ण=गुहा
६७. लोणं, ली=लिह=साद=क्लेदानं लोआदेसे रूपं, णक=नमक
१३६. लोमं, लू=च्छेदने, म=रोंआ
२२३. लोहं, लू=च्छेदने, ह=लोहा
१४. वक्कं, कुकः वक=आदाने, क=वृक्क (Kidney)
३२. वग्गो, अज, वज=गमने, गक्=समूह
३५. वग्गु, वल् वल्ल=संवरणे, गु=मनोज्ञ
३९. वच्चं, वर=वरणसम्मत्तिसु, च=गूह
४३. वच्छो, वद=वचने, छ=वत्स
१५६. वच्छरो, वस=निवासे, छर=वरस
१४९. वजिरं, अज, वज=गमने, किर=वज्र
४८. वञ्झो, वञ्झा, वन=याचने, झक्=वाँझ
१३१. वटुमं, अज, वज=गमने, कुम=मार्ग
१९२. वट्टुलो, वट्ट=वट्टने, कुल=परिमण्डल
१६१. वठरो, वद=वचने, अर=मूर्ख
६५. वण्णो, वर=वरणे, ण=रंग
८३. वत्तं, वर=वरणसम्मत्तिसु, तक्=व्रत
११२. वत्तनि, वत्त=वत्तने, अनि=मार्ग

ण्वादि

सूत्र-संख्या

११२. वत्तनी, वत्त=वत्तने, अनि=मार्ग

९०. वत्थि, वस=निवासे, थि=पेडू

८९. वत्थु, वस=निवासे, थु=वस्तु

३. वधू, वन्ध=बन्धने, ऊ=वहू

११४. वप्पो, वप=वीजनिक्खेपे, प=खेत

१५. वम्मिको, वम=उग्गिरणे, क=दीयंड़

१८. वरको, वर=वरणसम्भत्तिसु, अक=धान्य विशेप

६८. वरणो, वर=वरणे, अण=चहार दिवारी

५७. वरण्डो, वर=वरणे, अण्ड=मुखरोग

८१. वरत्तं, वर=वरणे, अत्त=रस्सी लगाम

२२३. वराहो, वर=वरणे, ह=सूअर

१०१. वरुणो, वर=वरणसम्भत्तिसु, कुन=वरुण

७. वलि-वली, वल; वल्ल=संवरणे, इ=सिकुड़न

१२४. वल्लभो, वल, वल्ल=संवरणे, अभ=प्रिय

७. वल्लि, वल्ली, वल, वल्ल=संवरणे, इ=लता

१७१. वल्लूरो, वल; वल्ल=संवरणे, ऊर=सूखा मांस

६९. वसति, वस=निवासे, अति=घर, वस्ती

७६. वसन्तो, वस=निवासे, अन्त=वसन्त ऋतु

१२४. वसभो, वस=निवासे, अभ=बैल

१८२. वसलो, वस=निवासे, अल=शूद्र

२. वसु, वस=निवासे, उ=धन

२१३. वस्सं, वस=निवासे, स=वर्ष

२१३. वंसो, वनः सन=सम्भत्तियं, स=वंश, बाँस

२००. वळवा, वल, वल्ल=संवरणे, अव=अश्वराज

१४. वाको, वा=गतिवन्धनेसु, क=वल्कल

१६३. वाकरा, कुकः वक=आदाने, अरणू=जाल

८२. वातो, वी : वा=गमने, त=हवा

ण्वादि

सूत्र-संख्या

१०६. वानं, वी, वा=गमने, न=तृष्णा
१०. वापि, वप=बीजनिक्खेपे, इण्=कूँआ
२१८. वायसो, अय=वय=पय=मय=रय=नय गमनत्था, असण्=कौआ
१. वायु, वा=गतिबन्धनेसु, णु=हवा
१०. वारि, वर=वरणसम्भत्तिसु, इण्=जल
१५८. वासरो, वी : वा=गमने, सर=दिन
१०. वासि, वस=निवासे, इण=वसुला
२२५. वाळो, वी; वा=गमने, ळ=जंगली जान
१४६. विचित्रं, चित=संचेतने, रक्=विचित्र
२१. विच्छिको, विच्छ=गमने, फिक=विच्छू
४८. विज्झो, वन=याचने, झक्=एक पर्वत
११६. विटपो, वट=वेठने, अप=डाली
८३. वित्तं, विद=लाभे, तक्=धन
२०. विदाको, विद=आणे, आक=पण्डित
२२०. विद्दसु, विद=आणे, वसुक्=पण्डित
६६. विद्धं, विध=वेधने, ध=निर्मल
२०५. विद्वा, विद=आणे, क्वा=पण्डित
५. विधु, विध=वेधने, कु=चाँद
१४८. विधुरो, विध=वेधने, उर=रंडुआ
१०३. विपिनं, वप=बीजनिक्खेपे, इन=जंगल
११७. विप्पो, वप=बीजनिक्खेपे, पक=ब्राह्मण
१८६. विसालो, विस=प्पवेसने, काल=विशाल
३१. विसिखा, सि=सेवायं; विस=प्पवेसने, ख=गली
६६. वीणा, वी=तन्तसन्ताने, णक्=वीणा
६१. वीथि, वी; वा=गमने, थिक्=गली
१४३. वीरो, वी, वा=गमने, रक्=वीर
६१. वेणि-वेणी, वी=तन्तसन्ताने, णि=जूरा

ण्वादि
सूत्र-संख्या

६३. वेणु, वी, वा=गमने, णु=वाँस
१०८. वेतनं, वी, वा=गमने, तन=वेतन
२१७. वेतसो, वेत=सुत्तियोधातु, अस=वेंत
१०६. वेनो, वी; वा=गमने, न=एक नीच जाति
१३६. वेमो, वी=तन्तसन्ताने, म=करघा
१३७. वेस्मं, विस=प्पवेसने म=घर
२२६. वेळु, वी, वमने, ळु=वाँस
५३. सकटो, सक=सत्तियं, अट=गाड़ी
१८२. सकलं, यक=सत्तियं, अल=सारा
१०१. सकुणो-सकुणी, सक=सत्तियं, कुनं=पक्षी
१०१. सकुनो-सकुनी, सक=सत्तियं, कुन=पक्षी
७४. सकुन्तो, सक=सत्तियं, उन्त=पक्षी
१४. सक्को, सक=सत्तियं, क=इन्द्र
१६८. सक्खरा, सर=गतिहिंसाचिन्तासु, खर=सक्कर
३१. सखो, सह=मरिसने, ख=मित्र
२. सङ्कु, सङ्क=सङ्कायं, उ=शूल
३०. सङ्खो, सम=उपसमखेदेसु, ख=शङ्ख
३६. सच्चं, सर=गतिहिंसाचिन्तासु, च=सत्य
४८. सज्झं, सज्झ=सङ्गे, झक्=रजत
१८६. सठिलो, सठ=केतवे, इल=शठ
५८. सण्डं, सम=उपसमे, ड=समूह
७०. सत्तु, सच=समवासे, तु=सत्तू
६०. सत्थि, सक=सत्तियं, थि=जाँघ
६५. सद्दो, सप=गमने, दक्=शब्द
८५. सपथो, सप=अक्कोसे, अथ=कसम
७. सप्पि, सप्प=गमने, इ=घी
१८२. सम्बलं, सम्ब=मण्डने, अल=पाथेय, राह-खरच

ण्वादि

सूत्र-संख्या

१५. सम्बुको, सम्ब=मण्डने, क=एक जल-जन्तु
१३६. सम्मा, सम=उपसमे, म=यथार्थ, ठीक तरह
१८. सरको, सर=गतिहिंसाचिन्तासु, अक=प्याला
६२. सरणि, सर=गतिहिंसा चिन्तासु, अणि=मार्ग
१२४. सरभो, सर=गतिहिंसाचिन्तासु, अभ=एक मृग
४. सरभू, सर=गतिहिंसाचिन्तासु, ऊ=एक नदी
२०१. सरावो, सर=गतिहिंसाचिन्तासु, आव=प्याला
१६९. सरीरं, सर गतिहिंसाचिन्तासु, कोर=शरीर
१२४. सलभो, पिलु=प्लु=हुल—गमनत्था, अभ=फतिंगा
२०. सलाका, पिलु=हुल-गमनत्था, आक=वैद्यो के चीर-फाड़ का एक औज़ार
१८९. सलिलं, पिलु=हुल–गमनत्था, इल=जल
७६. सवन्ती, सू=पसवे, अन्त=नदी
१४७. ससुरो, सस=गति हिंसापाणनेसु, उर=ससुर
२१३. सस्सं, सस=गतिहिंसापाणनेसु, स=धान
२१९. सस्सु, सस=गतिहिंसापाणनेसु, सु=सास
१५६. संवच्छरो, वस=निवासे, छर=वर्ष
१५४. संवरी, सम=उपसमे, क्वर=रात
१. सादु, सद=अस्सादने, णु=स्वादु
१. साधु, इध=सिध=राध=साध-संसिद्धियं, णु=साधु
१. सानु, वन, सन=सम्भत्तियं, णु=चोरी
१३६. सामो, सा=तनुकरणावसानेसु, म=काल
२०. सामाको, सा=तनुकरणावसानेसु, आक=तृणधान्य
९२. सारथि, सर=गतिहिंसाचिन्तासु, रथिण्=सारथि
२५. सालूकं, सल=गमनत्थोदण्डकोधातु, णुक=उत्पल कन्द
११८. सासपो, सास=अनुसिट्ठियं, अप=सरसो
२००. साळवो, सल=गमने, अव=एक खाद्य
१५. सिक्का, सक=सत्तियं, क=उपकरण विशेष

ण्वादि
सूत्र-संख्या

५६. सिखण्डो, सि=सेवायं, ड=चोरी
३१. सिखा, सि=सेवायं; सी=सये, ख=शिखा
३३. सिङ्गं, सी=सये, गक्=सींग
१६४. सिङ्गारो, सिङ्गि=नामधातु, आर=शृङ्गार
१८६. सिङ्गालो-सिगालो, सर=गतिहिंसाचिन्तासु, काल=सियार
१७. सिङ्घाणिका, सिङ्घ=घायने, आणिक=पोटा
८३. सितो, सि=सेवायं, तक=उजला
८४. सितं, मिह=ईसंहसने, तक्=मुस्कुराहट
८८. सित्थं, सिच=क्खरणे, थक्=मोम
१६१. शिथिलं, सह=खमायं, किल=पूथिल
१७८. सिनेरु, सिना=सोचेय्ये, एरु=सुमेरु पर्वत
६. सिन्धु, सन्द=पस्सवने, कु=एक नदी
११७. सिप्पं, सप=गमने, पक्=शिल्प
२२. सिप्पिका, सप्प=गमने, किक=सीपी
१४३. सिरो, सि=सेवायं, रक्=शिर
१४३. सिरा, सि=वन्धने, रक्=नाड़ी
२११. सिरीसो, सर=गतिहिंसाचिन्तासु, ईस=वृक्ष
१८१. सिला, सि=सेवायं, लक्=शिला
१३१. सिलेसुमो, सिलिस=आलिङ्गने, कुम=कफ
२०७. सिवो, सम=उपसमे, रिव=शिव, सिवं=शान्ति, सिवा
१५०. सिसिरो, इस, सिंस=इच्छायं, किर=एक ऋतु
३८. सीघं, सी=सये, घ=शीघ्र
८४. सीता, सि=वन्धने, तक्=हल की जोत
१००. सीधु, सी=सये, धुक्=एक प्रकार की सुरा
७७. सीमन्तो, सी=सये, अन्त=माँग (केश की रेखा)
१४३. सीरो, सी=सये, रक्=फाल
२१४. सीसं, सी=सये, सक्=शिर, सीसा

ण्वादि

सूत्र-संख्या

२२१. सीहो, सस=गति-हिंसा-पाणनेसु, रीह=सिंह

१५. सुक्कं, सुच=सोके, क=उजला

१३०. सुखुमं, सुख=तक्रियायं, कुम=सूक्ष्म

९. सुचि, सुच=सूचने, कि=पवित्र

६. सुट्ठु, ठा=गतिनिवत्तियं, कु=अच्छा

६६. सुणो, सु=सवने, णक्=कुत्ता

२१६. सुणिसा, सु=सवने, णिसक्=पतोहू

९५. सुद्दो, सूद=क्खरणे, दक्=शूद्र

१०३. सुपिन, सुप=सये, इन=नींद, सपना

११६. सुप्पं, सुप=सये, पक्=सूप

१४३. सुरा, सु=सवने, रक्=देवता

१४३. सुरा, सु=सवने, रक्=मदिरा

१४२. सुरियो, सर=गति-हिंसा-चिन्तासु, य=सूरज

२०४. सूवो, सु=सवने, क्व=सुग्गा

२०४. सुवा, सु=सवने, क्वा=सुग्गा

६. सुसु, सस=गति-हिंसा-पाणनेसु, कु=शिशु

११०. सूनु, सू=पसवे, नुक्=पुत्र

११६. सूपो, सू=पसवे, पक्=व्यञ्जन

८४. सूरतो, रम=कीळायं, तक्=सुख संवास

१७६. सूरि, सू=पसवे, रिक=विचक्षण

६१. सेणि, सेणी, सि=सेवायं, णि=समान शिल्पियों का समूह (श्रेणि)

८२. सेतो, सि=सेवायं, त=उजला

७०. सेतु, सि=सेवायं, तु=पुल

१०६. सेना, सि=बन्धने, न=सेना

१०६. सेनो, सि=बन्धने, न=बाज़

१८१. सेलो, सि=सेवायं, लक्=पर्वत

१८१. सेवालो, सि=सेवायं, वाल=सेवाट

ण्वादि
सूत्र-संख्या

६५. सोणो, सु=सवने, ण=कुत्ता, मनुष्य
६१. सोणि, सु=पसवे, णि=चूतड़
८२. सोतं, सु=सवने, त=कान
१२९. सोब्भं, सिद=सीदने, भ=दरार
१२९. सोब्भो, सिद=सीदने, भ=एक जलाशय
१३६. सोमो, सु=सवने, म=चाँद
८८. हत्थो, हस=हसने, थक्=हाथ
१४२. हदयं, हर=हरणे, य=हृदय
२. हनु, हन=हिंसायं, उ=ठुड्डी
१४२. हम्मियं, हर=हरणे, य=प्रासाद
६७. हरिणो, हर=हरणे, ण=मृग
७८. हरितो, हर=हरणे, इत=हरा रंग
६४. हरेणु, हर=हरणे, णु=गन्ध-द्रव्य
२१३. हंसो, हन=हिंसायं, स=हंस
१५. हाको, हा=चागे, क=क्रोध
१०. हारि, हर=हरणे, इण्=मनोज्ञ
३६. हिङ्गु, हि=गतियं, गु=हींग
१३४. हिमं, हि=गतियं, मक्=हिम, पाला
५१. हिरञ्ञं, हा=चागे, ञ=धन, सोना
१०७. हीनो, हि=गतियं, न=हीन
१४४. हीरं, हि=गतियं, रक्=हीरा
७०. हेतु, हि=गतियं, तु=कारण
१३६. हेमं, हि=गतियं, म=सुवर्ण, सोना
७७. हेमन्तो, हि=गतियं, अन्त=हेमन्त-ऋतु
७२. होता, हु=हवने, तु=हवन करने वाला
१३६. होमो, हु=हवने, म=होम
५३. मक्कटो मक्क=सुत्तियो धातु (श्रौत धातु), अट=वानर
१८८. माला, मा=माने, ल=माला

नवाँ परिशिष्ट

उदाहृत पदों की अनुक्रमणिका

नमो तस्स भगवतो अरहतो सम्मासम्बुद्धस्स

नवाँ परिशिष्ट

उदाहृत पदों की अनुक्रमणिका

अ

पृष्ठ संख्या

पृष्ठ संख्या

-o-

फ

-o-

-o-

भ

-o-

अभ्यासों के लिए संकेत

अभ्यासों के लिए संकेत

दूसरा अभ्यास

१—गाथा=श्लोक। मेत्ताय—मेत्ता=मैत्री।

३—प्रज्ञा=पञ्ञा। मैत्री=मेत्ता।

तीसरा अभ्यास

१—सङ्खारा=संस्कार। अनत्ता=अनात्म। "दण्डस्स तसन्ति"=दण्ड से डरते हैं (यहाँ, 'दण्डस्स' पद में पञ्चमी विभक्ति के स्थान पर षष्ठी का प्रयोग किया गया है। पालि में ऐसे विभक्ति-व्यत्यय बहुत देखे जाते हैं)। पत्तिया—पत्ति=योग। सम्बोधिया—सम्बोधि=परम ज्ञान।

चौथा अभ्यास

१—तावतिंसेहि=त्रयस्त्रिंश नामक देवता। पञ्च सिखो=गन्धर्व का नाम। वेद-पटिलाभं सोमनस्स-पटिलाभं=उत्साह—उमङ्ग। निब्बिदाय=निर्वेद के लिए=वैराग्य के लिए। संबोधाय=ज्ञान-लाभ के लिए। सक्को=शक्र। वेय्याकरणस्मि=धार्मिक व्याख्या।

२—चङ्कमेन=चंक्रमण करते हुए, चहल कदमी करते हुए। आवरणेहि धम्मेहि=अज्ञान-मूलक धर्मों से। मारो=यम=पाप-राज। बोधिमण्डं=वह आसन जिस पर भगवान ने बुद्धत्व प्राप्त किया था। जातिया खो सति=जन्म ग्रहण करने पर। विञ्ञाणे=विज्ञान। नाम-रूपं=चित्त और शरीर। आसवेहि=आश्रव।

पाँचवाँ अभ्यास

१—जिनो=बुद्ध। निच्चं पज्जलिते सति=(संसार के) नित्य प्रज्वलित होते रहने पर। अब्भा=बादल से। पापो=पापी। खमनीयं, यापनीयं=कुशल

मंगल। यस्स दानि कालं मञ्ञसि=अब आप जैसा उचित समझें। उय्यान-भूमि=उद्यान। जिण्णो=बूढ़ा। ओरको=बुरा। कारुञ्ञतं परिच्च=करुणा करके। उप्पलिनियं वा पदुमिनियं वा पुण्डरीकिनियं=उत्पल-पद्म-पुण्डरीक वाले जलाशय में। अन्तो निमुग्गपोसीनि=जो पानी के भीतर ही भीतर बढ़ रहे हों। समोदकं=पानी के बराबर। अप्परजक्खे=अल्प 'रज' वाले।

छठा अभ्यास

१—पसहति=गिरा देता है। तप्पति=अनुताप करता है। मग्गं न विन्दति=पीछा नहीं करता है। परिळाहो=चित्त-संताप।

२—सङ्घ के शरण=सङ्घं सरणं।

सातवाँ अभ्यास

१—कल्याणे मित्ते=सन्मार्ग पर ले जाने वाले मित्रों को। चारित्तं न आपज्जितब्बं=बहुत हेल-मेल नहीं करना चाहिए। समन्नागतो=युक्त। सयनासनो=वास-स्थान। विपाको=फल। गहपतानी=गृहस्थ स्त्री। पतिट्ठापेतुं वट्टति=स्थापित करना चाहिए।

२—निदान=अवसर, आधार।

आठवाँ अभ्यास

१—संबोधि=बुद्धत्व। गहकारक=घर बनाने वाला=तृष्णा।

नवाँ अभ्यास

१—उट्ठानवतो=उत्साह-शील। सतिमतो=स्मृति-युक्त। मेत्ताविहारी=मैत्री का अभ्यास करने वाला। पसन्नो=श्रद्धायुक्त। अत्तना अत्तानं चोदयति-पटिवासेति=जो अपने आप को (योगाभ्यास में) प्रेरित करता है, लगाता है। काये कायानुपस्सी=काया में कायानुपश्यी (योगाभ्यास की एक क्रिया—देखिए—'दीघनिकाय'—महासतिपट्ठान सूत्र)। आतापी=अपने क्लेशों को (=चित्त-मलों को) तपाने वाला। सम्पजानो=सम्प्रज्ञ। सन्थव=साथ।

दसवाँ अभ्यास

१—सम्पटिच्छि=मान लिया। साणिं परिक्खिपिंसु=पर्दा डाल दिया। सम्पटिच्छिंसु=ले लिया। अत्तमना=प्रसन्न। आसभिं=गौरव-पूर्ण।

३—कापाय=कासावं। घर से बेघर हो प्रव्रजित हुआ=अगारस्मा अनगारियं पब्बजि।

ग्यारहवाँ अभ्यास

१—अयोनिसो=बेठीक से। उपट्ठानं=सेवा टहल। पटिजग्गितब्बा=उनका भरण-पोषण करना चाहिए।

बारहवाँ अभ्यास

१—साराणीयं वीतिसारेत्वा=कुशल-क्षेम पूछ कर। सन्निपतितानं=एकत्रित हुए। पुब्बे-निवास-पटिसंयुत्ता कथा=पूर्व-जन्म के विषय में बातचीत। पञ्ञत्ते आसने=बिछे आसन पर। अनुलोमं=सल्टा। पटिलोमं=उल्टा। अनेकचित्तं विमानं='अनेक चित्त' नामक देवताओं के आवास। तमोक्खन्धं पवालयिं=(अज्ञान) अंधकार को दूर कर दिया। कता ते अनुसासनी=बुद्ध के निर्दिष्ट मार्ग को तै कर लिया। तथागत=बुद्ध। पटिपन्ना=मार्ग पर आरूढ़।

तेरहवाँ अभ्यास

१—अभिसमयो=धर्म-ज्ञान। चतु-सच्चं=चार आर्य सत्य—दुःख, दुःख क कारण, दुःख का निरोध, दुःख-निरोध का उपाय। बाळ्हगिलानो=बहुत बीमार। समादियिंसु=ग्रहण किया। पधानं=योगाभ्यास। कम्मट्ठानं=कर्म-स्थान (योगाभ्यास का आलम्बन)।

चौदहवाँ अभ्यास

१—पटिरूपे=उचित मार्ग पर। लोक-वड्ढनो=संसार को बढ़ाने वाला=आवा-गमन के फेर में पड़ा रहने वाला। मिच्छा दिट्ठि=मिथ्या-दृष्टि, ग़लत धारणा।

धारणा। पधानं पदहेय्य=योगाभ्यास में लग जाना चाहिए। पटिभातु श्रायुस्मन्तं एतस्स भासितस्स अत्थोति=आयुस्मान् इस कहे गए का अर्थ बतावें।

पन्द्रहवाँ अभ्यास

१—सज्झायति=पाठ करता है। फासु=आराम। सप्पिस्स=सप्पिना (विभक्ति-व्यत्यय)। पुत्तस्स=पुत्तं (विभक्ति-व्यत्यय)। पसन्नो=श्रद्धायुक्त। वज्जेसु=निन्द्य कर्मों में।

सोलहवाँ अभ्यास

१—अस्सुतवा=अश्रुतवान्=अपण्डित। पुथुज्जनो=पृथक्जन=तृष्णा के बन्धन में पड़ा। सप्पुरिस-धम्मे=सत्पुरुष के धर्म्म में=बुद्ध के धर्म में। अविनीतो=अशिक्षित। सब्बं अभिनन्दति=सभी में आनन्द=मौज करता है। वुसितवन्तानं=ब्रह्मचर्यवास जिनका पूरा हो गया है=अर्हत्। भव-संयोजन=संसार का बन्ध। मुतं=सूँघा, चखा, और स्पर्श किया गया। सब्बं अनिच्चतो पच्चवेक्खितब्बं=सभी को अनित्य के ऐसा प्रत्यवेक्षण करना चाहिए।

गतद्धिनो=जिसने अध्व=मार्ग को तै कर लिया है। परिलाहो=संताप। सम्मदञ्ञविमुत्तस्स=सम्यक् प्रज्ञा से विमुक्त हो गया।

सत्तरहवाँ अभ्यास

१—कुसलं=पुण्य। अकुशलं=पाप। कल्याण-मित्तो=धर्म के मार्ग पर लाने वाला मित्र। भोग-क्खन्धं विस्सज्जेत्वा=सारी भोग-विलास की चीज़ों को हटा कर। चङ्कमं च मापेत्वा=चहल कदमी करने के लिए स्थान बनवा।

अट्ठारहवाँ अभ्यास

१—ब्यापादो पटीयति=द्वेष-भाव शान्त हो जाता है। आरञ्ञिको=जंगल में वास करने वाला। भत्त-संमोदनं=भोजन कर लेने के बाद, दाता के दान का सम्मोदन करना। अञ्ञातावी=जिसने प्रज्ञा का लाभ कर लिया है।

उन्नीसवाँ अभ्यास

१—सञ्ञोजन=बन्धन। सम्बोज्झङ्ग=सम्बोध्यङ्ग=सम्बोधि लाभ

करने के अङ्ग। अनुपस्सना=योग की एक क्रिया। सम्मप्पधान=सच्चा उत्साह। बहुलो करणीया=खूब अभ्यास करना चाहिए।

बीसवाँ अभ्यास

१—उदानं उदानेति=प्रीति-वाक्य निकालते हैं। फस्स-पच्चया=स्पर्श के प्रत्यय (=हेतु) से। सति अधिट्ठातब्बा=स्मृति उपस्थित करनी चाहिए। ब्रह्म-विहार=योग का एक अभ्यास। बुद्ध-धातु=बुद्ध के फूल।

इक्कीसवाँ अभ्यास

१—पाटिहीर=ऋद्धि-सिद्धि के कार्य। सन्धाविस्सं=भटकता रहा (काल-व्यत्यय)।

२—बुद्ध-मन्दिर=विहार।

बाइसवाँ अभ्यास

१—थेय्यसंखातं=चोरी करने की नियत से। सम्पजान-मुसा=जान-बूझ कर झूठ। कतञ्ञू=कृतज्ञ। अकथंकथी=संशय-रहित।

तेइसवाँ अभ्यास

१—वज्जं=दोष। जानि=हानि। इन्द्रिय-गुत्ति=इन्द्रिय-संयम। संवरो=संयम। पटिसन्थार-वुत्ति=मीठा आचरण वाला। समथ, वमथ इत्यादि=योग के अभ्यास। विपस्सना=विदर्शना।

२—सब दिशाओं में व्याप्त करना=सब्बासु दिसासु फरणं।

पच्चीसवाँ अभ्यास

२—दिन दोपहर को=दिवादिवं।

इकतीसवाँ अभ्यास

१—कायगता-सति=शरीर की गन्दगियों पर मनन करना। तिरो-कुड्डं=दीवाल के आर पार। अनुलोमं पटिलोमं=सलटा-पलटा।

वेल्लितग्गा=जिसका अग्र भाग घुंघरूदार। साणवास-सदिसा=सन की तरह।



